

एक महान विवाह का निर्माण

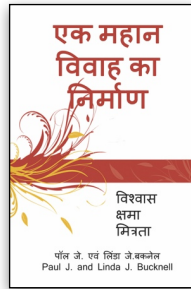


विश्वास
क्षमा
मित्रता

पॉल जे. एवं लिंडा जे.बकनेल
Paul J. and Linda J. Bucknell

विवाह का निर्माण!

विश्वास, क्षमा, और मित्रता की खोज



पॉल जे. एवं लिंगा जे बकनेल

विवाह का निर्माण! : विश्वास, क्षमा, और मित्रता की खोज

Translated from English: Building a Great Marriage

by Paul and Linda Bucknell

Copyright © 2018 by Paul J. Bucknell

Translated by Revive India

E-Book in Hindi:

ISBN-13: 978-1-61993-182-4

Also in English paperback:

ISBN-13: 978-1-61993-027-8 (paperback)

ISBN-13: 978-1-61993-016-2 (e-Book)

All Rights reserved.

Permission allowed to copy without request for educational and nonprofit counseling purposes. One is not allowed to post more than five pages of quotes on the internet.

Published by Paul J. Bucknell. All profits go to Biblical Foundations for Freedom, a nonprofit organization releasing God's truth to the world!

www.foundationsforfreedom.net

3276 Bainton St.

Pittsburgh, Pennsylvania, 15212 USA

info@foundationsforfreedom.net

समर्पण

प्रभु परमेश्वर की खूबसूरती के लिए समर्पण में
सौंदर्य और पूर्णता, केवल उन्हीं में पाया गया है
हमारा परमेश्वर, हमारा निर्माणकर्ता, हमारा सृष्टिकर्ता
इसी कारण से प्यार की सबसे बड़ी
ऊंचाइयों में एक झलक प्रदान करता है।
विवाहित जीवन में उन्होंने एक तस्वीर बनायीं है,
हमने मसीह के अटूट प्रेम को महसूस
और उसके प्रति प्रतिक्रिया दी है
और हमारा विवाह एक प्रदर्शन बन जाता है
इस निचली ठंडी दुनिया में उनके उदार प्यार की।

विषय – सूची

समर्पण	5
विषय – सूची	7

अनुभाग # 1: विश्वास 12

अध्याय # 1-4

विवाह के प्रति परमेश्वर की दृष्टि को प्राप्त करना

#1 अपनी विवाह के लिए आशा को पुनः स्थापित करना	13
अध्याय 1# अध्ययन के लिए सवाल	34
#2 बेशर्त प्रेम: जीवन सिद्धांत 1	37
अध्याय #2 अध्ययन के लिए सवाल	69
#3 विनम्र आधीनता: जीवन का सिद्धांत 2	71
अध्याय # 3 अध्ययन के लिए सवाल	105
#4 एकता हमेशा के लिए: जीवन सिद्धांत 3	107
अध्याय # 4 अध्ययन के लिए सवाल	133

संभाग #2: क्षमा 135

अध्याय # 5-7

टूटे हुए विवाहों का पुनः स्थापना

# 5 समझ और संघर्ष पर काबू पाने	137
अध्याय #5 के लिये अध्ययन के सवाल	158

#6 संकट को सुलझाना और संघर्षों से बचना	161
अध्याय # 6 अध्ययन के लिए सवाल	188
#7 विवाह की कड़वाहट को क्षमा से बदलना	189
अध्याय # 7 अध्ययन के लिए सवाल	220

विभाग #3: मित्रता 223

अध्याय #8-10

एक महान विवाह को बनाना!

# 8 विवाह के अंतरंगत यौन सम्बन्ध बनाना	225
अध्याय # 8 अध्ययन के लिए सवाल	258
# 9 विश्वास और अंतरंगता का विकास	259
अध्याय # 9 अध्ययन के लिए सवाल	284
# 10 प्रेम कभी हारता नहीं	287
अध्याय # 10 अध्ययन के लिए सवाल	312
आपके लिये हमारी इच्छा!	313
परिशिष्ट, 1: लेखक पर और	315

प्रस्तावना

क्या आपको वह भव्य उम्मीदें याद हैं जो आपकी शादी के लिए थीं? बहुत जल्दी से उन्हें दूर ना करें। परमेश्वर इन आशाओं का उपयोग हमारे लिए अद्भुत विवाहों को प्रेरित करने के लिए करता है।

हालांकि युगल अपने विवाह की शुरुआत उच्च आदर्शों के साथ शुरू करते हैं, इनमें से बहुत से युगल कठिन शब्दों और विचारों के कारण फीका पढ़ जाने से एक अद्भुत विवाह के सपनों को छोड़ देते हैं। और कम से कम वांछनीय विवाह को बनाये रखने के लिए खुद को त्याग देते हैं। यहां तक कि सप्ताह या एक गौरवशाली समारोह के दिनों के भीतर, वे टूटी आत्माओं के लिए अपने कीमती सपनों के व्यापार के लिए तैयार हो सकते हैं। वादे, आशाओं और चमचमाती खुशी सभी ज़िंदगीभर के अविश्वास और स्वार्थीपन में बदल जाती हैं। वे अपने खुले भरोसे को वापस खींचने लगते हैं और लंबी घेराबंदी के लिए तैयार हो जाते हैं।

यह समय है की हम एक बार फिर से अपने उन सपनों को खोजे और एक बार फिर से उन महान विवाहों के लिए परमेश्वर को ढूंढें। हमारे परमेश्वर ने हमको यह भव्य आशाएं दी हैं क्योंकि यही वह सचमुच हमारे जीवन के लिए चाहते हैं। सपने खूबसूरत होते हैं, और जो परमेश्वर हमारे जीवन के लिए चाहते हैं उनको स्वाद देने के लिए होते हैं। आखिर, विवाह का निर्माण उन्हीं ने किया है और वह यह बेहतर जानते हैं की, हमारे लिए क्या सबसे अच्छा है। समस्या यह नहीं की यह लक्ष्य हमारे पहुँच से परे हैं, परन्तु हम इन्हें बहुत आसानी से पा लेना चाहते हैं। जैसे की यह काम करने की बजाये मेहेज़ एक तोहफा था। महान विवाहों को निर्मित करने की आव्यशकता है। यह अचानक से नहीं आ जाते।

अगर हमारे विवाह सावधानी पूर्वक हमारे निर्माणकर्ता (परमेश्वर) के अनुसार निर्मित किये गए होते, तो मज़बूत नींव हमारे लिए सुरुचिपूर्ण और गौरवशाली मिलन का निर्माण करने के लिए सक्षम हो जाते। यह पुस्तक किस प्रकार एक अद्भुत विवाह का निर्माण करें, पर व्यवहारिक सुझाओं से भरी है चाहे आप के साथ सब ठीक हो या आप गंभीर वैवाहिक समस्याओं का सामना कर रहे हों। प्रत्येक अध्याय के अंत में सवालों के अध्ययन उपलब्ध हैं।

एक महान विवाह का निर्माण तीन निर्माणधीन इमारतों पर केंद्रित है: विश्वास, क्षमा और मित्रता। विश्वास, अध्याय-1 से 4, विवाह के प्रति परमेश्वर की दृष्टि का लाभ लेने के लिए सक्षम बनाता है। इसमें हम विवाह के प्रति उनके (परमेश्वर) निर्माण कार्य को और किस तरह वह संचालित होता है सीखते हैं। क्षमा, अध्याय-5 से 7, बताता है कि, किस प्रकार टूटे हुए विवाहित रिश्ते पुनर्स्थापित हों सकते हैं, जिससे कि युगल परमेश्वर के अनुसार बनायीं रूपरेखा पर निर्मित हों सकें। मित्रता, अध्याय- 8 से 10, एक खूबसूरत अंतरंग विवाह के लिए मार्ग का वर्णन करता है।

जैसे कि कदम पीछे रखते हुए हम विवाह में रहस्यमय और शक्तिशाली सिद्धांतिक कार्यों को समझने लगते हैं, हमारी आशाओं को एक गति मिल जाती है, परमेश्वर के तरीके हमारे हृदय और रिश्तों में वांछित हों जाते हैं, और हम उन्हें इस क्षेत्र में ढूंढने लगते हैं। हम एक अद्भुत विवाह का हिस्सा बन सकते हैं बेशर्त अगर हम उनके अनुग्रह और उनके कार्यों पर निर्भर रहें।

विवाह के सिद्धांतों को समझना मुश्किल नहीं है। वे वास्तव में अविश्वसनीय रूप से सरल हैं। परन्तु हिमपात के एक खूबसूरत खंड कि तरह, वह ढाँचे में जटिल और बड़े सरलता से नष्ट हो रहे हैं। अगर हम कभी भी इन अविश्वसनीय सिद्धांतों को अपने विवाह में लागू करने जा रहे हैं, तो हमें संसार कि आवाज़ों से परे रहना होगा और बारीकी से परमेश्वर कि आवाज़ को विवाह के सम्बन्ध में सुनना होगा। वह हमें अपने वायदों कि परिपूर्णता में कदम-कदम पर मार्गदर्शित करते रहेंगे, भले ही हम वर्तमान में उन सपनों को प्राप्त करने के लिए दूर हैं।

कई वैवाहिक किताबें और सम्मेलन अपने विवाह में सुधार करने के लिए वास्तविक दुनिया से अपने आप को दूर करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। मैं साफ़ रीती से इस विचार से असहमत हूँ। अगर एक विवाह बढ़ती-बढ़ती के साथ-साथ कामयाब हो रहा है तो वास्तविक स्थितियों में ऐसा होना स्वाभाविक है - सीमित बजट, थक जाना, प्राप्त करने में असमर्थ, आदि। आठ बच्चों में से चार वर्तमान में घरेलु शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं, हमारे पास वह ख्याली प्यार भरी छुट्टियां ज़्यादा नहीं हो सकती! परमेश्वर के सिद्धांत, तथापि, हमारे विशिष्ट और कठिन वैवाहिक परिस्थितियों में शक्तिशाली रूप से कार्यरत होती हैं।

परमेश्वर ने हमारे दिलों में उच्च आशाओं को विकसित किया है ताकि वैवाहिक जीवन बढे, कामयाब हो और परमेश्वर के अद्भुत कामों को प्रतिबिंबित करे। क्या हमें उनकी और उनके वचन कि ओर नहीं फिरना चाहिए ताकि हम एक समृद्ध, घनिष्ठ और खूबसूरत वैवाहिक जीवन का निर्माण उनके अनुसार कर सकें? आइये हम सब मिलकर इस बात को सीखें कि किस प्रकार हम इस तरह के वैवाहिक रिश्तों का निर्माण कर सकें। प्रत्येक अध्याय में व्यक्तिगत युगल या एक छोटे समूह के लिए एक गहरी समझ और प्रमुख सिद्धांतों के आवेदन की सुविधा के लिए अध्ययन सवाल है।

पॉल .जे. बकनेल अगस्त, 2012

पैंतीस वर्षों से खुशी से विवाहित

स्वतंत्रता के लिए बाईबल नींव के संस्थापक और अध्यक्ष

अनुभाग # 1: विश्वास

अध्याय # 1-4

विवाह के प्रति परमेश्वर की दृष्टि को प्राप्त करना



#1 अपनी विवाह के लिए आशा को पुनः स्थापित करना

"कौन सी बातें एक महान विवाह को जन्म देती हैं?" इस सवाल का जवाब आप किस प्रकार दे सकते हैं? बहुत से लोगों को एक अद्भुत विवाह के तत्वों का वर्णन करने में कठिनाई होती है। इन दंपतियों में से अधिकांशो ने एक अद्भुत विवाह का परिचालन होते हुए नहीं देखा है। कोई आश्चर्य नहीं कि महान विवाह बहुत दुर्लभ हैं। सभी नमूने कहाँ चले गए हैं? हमने उन्हें नहीं देखा है। यहाँ तक कि हम इस बात को भी परिभाषित नहीं कर सकते कि एक महान अद्भुत विवाह किसके सामान होता है।

खोई हुई आशा

यदि हम एक सर्वेक्षण लें, तो हम पाते हैं कि एक स्तर तक थोड़े भी ऐसे जोड़े नहीं हैं, जिन्होंने अपने विवाह के समक्ष आशा को छोड़ दिया है। हम केवल उन लोगों कि बात नहीं कर रहे जो तलाकशुदा हैं, या अलग हैं परन्तु उन लोगों की जो आज भी एक साथ रहते हैं। हम केवल तलाकशुदाओं की बात नहीं कर रहे हैं या फिर वे लोग यदि ईमानदार होते तो वे लोग अपने विवाह की समीक्षा बुरे से लेकर भयानक तक कर पाते। शायद आप उन जीवन साथियों में से हैं जिन्होंने आशाओं को छोड़ दिया है ताकि चीजे बेहतर हो सकें। आप अकेले नहीं हैं।

विवाह परेशानियों को बढाती हैं ना की उन्हें हल करती

कुछ ऐसे चिन्ह हैं जो आपकी खोई हुई आशा की कहानी बयाँ करती है। गरीब विवाह के लिए हृदय के संकेत जिसके अंतर्गत किसी भी विवाह को सामान्य रूप से

असंतोष जानना शामिल है। अनादर और कड़वाहट ने एक जीवन साथी के लिए उत्साह और खुशी का स्थान ले लिया है। विश्वासघात के अधिक दुखद संकेत के साथ-साथ अश्लील साहित्य और यौन मामलों (चाहे सोच में है या हकीकत में) भी शामिल हैं। जब एक व्यक्ति अपने घर से असंतुष्ट होता है तो वह विचलित होकर भटक जाता है। और अक्सर एक ऐसे व्यक्ति को खोज लेता है जो वर्तमान में जीवन साथी से अधिक वादों को उससे करता है।

बातें पहले अलग थीं

क्या बातें पहले अलग नहीं थीं? संकेतों के बावजूद कि आप और आपके मंगेतर के बीच बातें सही नहीं थी, शुरूआत में आप खामियों को नज़रअंदाज़ करने को तैयार थे। आप अपने जीवन को और जो कुछ आपके पास था अपनी एक दुसरे के साथ प्रतिबद्ध करने के लिए तैयार थे। यह इसलिए है क्योंकि आपके पास आशा थी। आपने सोचा की वह समस्याएं उस खास व्यक्ति की तुलना में कुछ भी नहीं हैं, जिससे विवाह किया जा रहा है। शायद थोड़े सीधे मन से आपने सोचा होगा की कोई आपसे विवाह कर ले जिससे की समस्याएं अपने आप ही सुलझ जाएं। जो लोग विवाहित हो चुके हैं उन्होंने इस बात को महसूस किया होगा की विवाह समस्याओं को और बढ़ा देता है न की उसको कम करता है! परन्तु क्या आशाहीन हो जाना ही समाधान है? हरगिज़ नहीं!

आशा को पुनर्स्थापित करना ही इस अध्याय का विषय है। आशा समस्याओं का समाधान नहीं करता, परन्तु यह बिलकुल हमें एक सही मार्ग पर चलने को प्रेरित करता है ताकि हम उन छोटी और बड़ी कठिनाइयों पर काम कर सकें जिन्हे हम अपने विवाह में पाते हैं। आशा के बिना, आप और मैं समस्याओं को अनदेखा करें जब तक की आपत्तिजनक फैसले आपके विवाहित रिश्ते को आगे चलके धीरे-धीरे नष्ट करना शुरू ना कर दें।

कुछ लोगों ने यह सुझाव दिया कि जोड़ों के लिए तर्क करना अच्छा है (मैं सोच नहीं सकता कि यीशु इस तरह अपने चेलों से संवाद कर सकता है)। मतलब, मैं सोचता हूँ कि कम से कम इन जोड़ों को अभी भी विवाह के लिए उम्मीद है। वे अभी भी संवाद कर रहे हैं। अन्यथा, वे तर्क ना करते और झगड़ा कर लेते। यह एक सीमित अर्थों में सच भी हो सकता है, परन्तु यह तर्क जीवन का एक संवाद बनाने के

#1 अपनी विवाह के लिए आशा को पुनः स्थापित करना

लिए मददगार नहीं है। वे निश्चित रूप से हमारे विवाह के लिए अंत तक लक्ष्य नहीं हैं।

हम सुलह पर ध्यान केंद्रित करना पसंद करते हैं, जो शांति और आशा कि ओर ले जाती है। बहुत से जोड़े शांतिपूर्वक विभिन्नताओं को हल करना और घनिष्ठ बातचीत को कामयाब बनाना नहीं जानते। उनके पास विभिन्नताओं और गलतफहमियों के माध्यम से काम करने का कोई सुराग नहीं होता। वह सिर्फ यह जानते हैं कि हम किस प्रकार से तर्क और झगड़े के माध्यम से अपने विशेषाधिकारों और अधिकारों को सुरक्षित रख सकते हैं। आशा, यद्यपि, आपको एक प्रकार का जोड़ा बनाने में मदद करेगा, जहाँ आप इस बात को सीख पाएंगे कि परमेश्वर के साथ किस तरह आप अपने विवाह में कार्य कर सकते हैं।

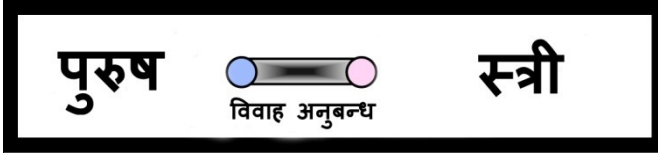
विवाह के प्रति परमेश्वर कि दृष्टि

विवाह, कानूनी जटिलता के साथ एक मात्र मानव समझौता नहीं है जैसा कि ज्यादातर लोगों का मानना है। यह विवाह का धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण है। परमेश्वर का वचन, यद्यपि, हमें एक सटीक परिप्रेक्ष्य देता है। परमेश्वर ने स्वयं विवाह को स्थापित किया है। परमेश्वर ने उत्पत्ति 2:24 में दो को एक तन होने की घोषणा की है। परमेश्वर के सृजनात्मक शब्दों की वजह से विवाह प्राकृतिक रूप से ईश्वरीय है।

“इस कारण पुरुष अपने माता-पिता को छोड़कर

अपनी पत्नी से मिला रहेगा, और वे एक ही तन बनें”।

यह अधिक स्पष्ट रूप से यीशु के द्वारा मरकुस 10:9 में देखा गया है "इसलिए परमेश्वर ने दोनों को जोड़ा है, कोई इन्हे अलग ना करे।" हर एक विवाह को परमेश्वर के द्वारा जोड़ा गया है। कोई भी व्यक्ति विवाह को महज एक मनुष्य द्वारा बनाया हुआ संघ ना समझे यहाँ तक की विश्वासियों में भी।



यह विवाह के प्रति परमेश्वर की परिकल्पना नहीं है

चाहे विवाह चर्च में हो या अदालत में, एक पुरुष और स्त्री को अपने शक्तिशाली सृष्टिकर्ता के सामने शपथ लेते हैं। हर एक विवाह में तीन घातक होते हैं: परमेश्वर, पति और पत्नी। इसलिए विवाह के दौरान जब एक जोड़ा परमेश्वर को गंभीरता से लेते हैं, अद्भुत आशाएं बहने लगती हैं।¹ अब एक के पास बहुमत है। परमेश्वर हर एक विवाह में अपने अनुग्रह के कामों को डालने की महान इच्छा रखते हैं। परमेश्वर ऐसे जोड़ों की तलाश करता है जो उनके वचन को गंभीरता से पालन करे।



दिव्या विवाह संस्था का मतलब है की दोनों मसीही समाज और अविश्वासी समाज जिस प्रकार से अपने जोड़ों के साथ व्यवहार करते हैं और आम तौर पर उनके वैवाहिक जीवन में भूमिका और कर्तव्य निभाने में उनकी मदद करते हैं, परमेश्वर के प्रति जवाबदेही हैं। विवाह मनुष्य के द्वारा बनाया संस्थान नहीं है, यह एक ईश्वरीय वाचा है।

हम किस प्रकार आशा को पुनर्जीवित कर सकते हैं? इस अध्याय में हम निराशा की समस्या से निपटना चाहते हैं। हम अच्छे परिवर्तन को तब तक नहीं देख

¹ एक महान विवाह की आशा करना मनमोहक विश्वास नहीं है। आशा खुद एक संरचित वायदा के साथ है। परमेश्वर की वचनों का सिद्धान्त व उद्देश्य है। उदाहरण के लिये, क्या एक पत्नी जिसने अपने पहले पति को एक दूसरे आदमी के लिये छोड़ दिया हो उसे नया विवाह करने की आशा रखनी चाहिये? कोई आशा है उस नये विवाह में कि उस व्यभिचार से पश्चाताप करके जड़ों को मजबूत कर सके। जब तक पश्चाताप का फल आना सिद्ध नहीं होता, तब एक महान विवाह की मोहक आशा एक चौड़े मार्ग की ओर ले जाती है जो कि विनाश की ओर ले जाती है।

#1 अपनी विवाह के लिए आशा को पुनः स्थापित करना

सकते जब तक विश्वास और आशा पुनर्जीवित ना हो।² सिर्फ उसके बाद ही हम विवाह में बढ़ौतरी देख सकते हैं।

विवाह के निरीक्षण

सबसे पहले विवाह के कुछ बुनियादी अवलोकनों की पहचान कर लेते हैं

- अच्छा विवाह परमेश्वर की सृष्टि का पालन करे
- बुरे विवाह परमेश्वर की सृष्टि का पालन नहीं करते
- औसत दर्जे के विवाह ने पूरी तरह से परमेश्वर की सृष्टि को ग्रहण नहीं किया है।

इस बात का ध्यान रखा जाए की सदभावों के लिए हमारा मानक परमेश्वर की सृष्टि पर केंद्रित है, किसी व्यक्ति की भावनाओ पे नहीं। यद्यपि परमेश्वर ने विवाह की स्थापना की है, तो जितनी ज़्यादा मूल योजना को हम अपनाते हैं उतना ही बेहतर विवाह होगा। यह दोनों सकारात्मक और नकारात्मक रूप से सच है। अगर विवाहित जीवन अच्छा चल रहा है, तो जोड़े एक हद तक सही कार्यों को कर रहे हैं। लेकिन अगर विवाहित जीवन खुशहाल नहीं है तो

उन्हें इस बात को पहचानना ज़रूरी है, वे लोग परमेश्वर की योजना से अलग हो चुके हैं।

यह विचारधारा हमें एक सही दृष्टिकोण को खोजने के लिए सक्षम बनाता है। अगर एक जोड़े का विवाहित जीवन निर्बल है तो उन दोनों के लिए एक दूसरे पर आरोप लगाना आसान होगा और शायद परमेश्वर पर भी दोष लगाया जाए। यह व्यवहार दोनों के बीच दुष्टता को जन्म देता है जो की आशाहीन है। परन्तु वही जोड़ा अगर इस बात को स्वीकार करता है की, वे परमेश्वर की योजना से गिराये जा चुके हैं भले ही उन्हें नहीं पता कैसे, तब वे उन्नति की आशा से परमेश्वर की और अपने मनो को फ़िरा सकते हैं। उन्हें सिर्फ परमेश्वर के अनुग्रह से उनके सिद्धांतों को ढूँढने और उनका पालन करने की आवश्यकता है।

² यह सिद्धांत बिल्कुल सत्य है चाहे वह हमारी शादी के लिये हो या फिर एक मसीही जीवन का से हो।

विश्वास की ओर मुड़ना!

चार तरह से निरीक्षण किया गया है की परमेश्वर किस प्रकार से हमारे जीवन में और विवाह में कार्य करते हैं। इन्हे हमारे विवाह और दूसरों के लिए याद रखने की आवश्यकता है। अगर हम बाईबल के इन स्वरूपों को स्वीकार नहीं करते कि किस प्रकार परमेश्वर अपने लोगो से बातचीत करता है, तो हम किसी भी वास्तविक सुधार को देखने से पहले उम्मीद को छोड़ देंगे।

- परमेश्वर महान विवाह का निर्माण करना चाहते हैं
- परमेश्वर के पास टूटे हुए विवाहो के नवीकरण के लिए रास्ते हैं
- परमेश्वर उनके साथ काम करते हैं जो उन्हें सुनते हैं
- परमेश्वर अपनी योजनाओं के अनुसार हमारी अगुवाई करते हैं

यह सत्य परमेश्वर के लोगो के लिए सदैव ही अच्छे होते हैं। हमारे कुछ पाठक परमेश्वर को अभी तक नहीं जानते। परमेश्वर को यीशु मसीह के द्वारा जानना ज़रूरी है जिससे कि परमेश्वर ख़ास रीती से हमारी देखभाल और मदद कर सके। हम यीशु के अनुयायी हैं, हमें ना सिर्फ हमारी अनाज्ञाकारिता के लिए क्षमा मिलती है, वरन हम परमेश्वर कि संतान बन जाते हैं।

उदहारण के लिए, अगर पत्नि यह सीखती है कि किस प्रकार परमेश्वर यीशु मसीह उसके लिए क्रूस पर मरा पे विश्वास करने के माध्यम से उसको उसके विद्रोहपन और ज़िद्दीपन के लिए क्षमा करते हैं, तो वह परमेश्वर कि मदद उसके निर्दयी पति पर उनका अनुग्रह पारित करने के लिए प्राप्त कर सकती है। इस पुस्तक के प्रयोजनों के लिए, हम मानते है कि पाठकों ने मसीह यीशु में परमेश्वर के अनुग्रह को पाया है।

आशा छोड़ देना!

उससे कोई फर्क नहीं पड़ेगा
तुमने पहले भी कोशिश की थी
तुम नहीं कर सकते।

सदैव आशा की ओर फिरो

सदैव आशा की और फिरो। विवाहों का नवीकरण करने के लिए यह पहला कदम है। आप, दुसरो कि तरह, इसमें कोई संदेह नहीं कि अपने विवाह पर देने के बारे में विचारों का सामना करना पड़ेगा। आपके के अंदर यह विचार आ सकता है कि आप उन परिवर्तनों को ला सकते हैं या आपका साथी कभी बदल नहीं सकता।

हम हमारे विवाह के कुछ पहलुओं में सुधार करने में सक्षम होने पर आशामय होने के बाद हम वांछनीय स्थितियों को कम बर्दाश्त कर पाते हैं। हम यह घटित एक आदमी के अंदर देख पाते हैं जब वह अश्लील साहित्य को त्याग देने का विचार बना लेता है। उसको अक्सर यह सुनाई देता है, "तुम नहीं कर सकते" "तुम इससे पहले कोशिश कर चुके हो" "इससे कोई फर्क नहीं पड़ेगा"। यह सारे बयां एक ही निष्कर्ष का समर्थन करते हैं कि दुष्टता आपको बनें चाहती है- छोड़ दीजिये!

एक पत्नी ओवन में फिर से ज़रूरत से ज़्यादा खाना बना सकती है। उसका पति सोचेगा कि शायद वह रोगी है परन्तु यह तीसरी बार है। वह बहुत चिड़चिड़ा और अविवेकी है और साथ ही कुछ कठोर टिप्पणियां कर देता है। वह एक उज्जड प्रतिक्रिया देने के बारे में सोचती है। "मैं उसकी वही सेवा करूंगी जिसका वह हकदार है-एक जला हुआ खाना।" "जब वह घर आया उसने मुझसे मेरे दिन के बारे में तक नहीं पुछा!" "मैं अपने सच्चे दोस्तों के साथ बहार जाउंगी। शायद वह मुझे सराहाना करना सीख जाए।"

दो संकेत

त्याग देने के दो संकेत होते है। आवक संकेत जावक संकेत के सामान स्पष्ट नहीं हैं परन्तु दोनों का पता लग जाता है अगर उनमें से एक उनके इंतज़ार में है। उदाहरण के लिए, एक पति के साथ असंतोष के कारण अक्सर एक बहुत व्यस्त जीवन की जावक संकेत में यह परिणाम देखने को मिलता है। क्यों एक दूसरे के साथ समय व्यतीत करें अगर जो उन्हें चाहिए वो घर पर नहीं मिल रहा है। इसके साथ ही एक नयी सोच आती है कि एक साथ होना थोड़ा आकर्षण का केंद्र होगा। यह इस तरह से देखा जा सकता है जिस तरह एक व्यक्ति दूसरे से ज़्यादा आकर्षित हो जाता है फिर वो चाहे रोमांटिक उपन्यास हो या टेलीविज़न श्रंखला हो।

छोड़ने के चिन्ह

आंतरिक चिन्ह	बाहरी चिन्ह
संतोष की कमी	व्यस्त जीवन के द्वारा भटक जाना
"ठन्डे कंधे"	विवेचनात्मक स्वाभाव
कड़वाहट या बदला लेने वाली भावना	अश्लीलता और मोहक फिल्में
माफ़ न करने वाली भावना	जल्दी से गुस्सा करना
अनुचित स्वाभाव	साथी के बारे में अनुचित शब्दों का प्रयोग

हृदय की कड़वाहट (आंतरिक संकेत) यौन सुख के लिए एक थोड़ा सा कक्ष पाता है तो एक या दोनों पति-पत्नी अश्लील साहित्य, मोहक फिल्मों या मामलों में संलग्न हो जाते हैं। एक गैर क्षमाशील भावना आंतरिक कितनी आसानी से जा सकती है, कि एक पति या पत्नी छोटी-छोटी बातों पर नाराज हो जाते हैं। पति के लिए अनादर एक आवक निशानी है, यद्यपि यह असभ्य शब्दों के द्वारा देखा जा सकता है।

फिर, हम देखते हैं कि कैसे ये आकर्षक विचार चतुराई से पिरोये जाते हैं। वे हमें उम्मीद छोड़ने और पाप में प्रतिक्रिया देने के लिए निर्देशित करते हैं।³ हालांकि, परमेश्वर हमें प्रेरित करते हैं कि हम आशा की दिशा की ओर फिरें। यहाँ हमें उसकी इच्छा पूरी करने की सामर्थ प्राप्त होती है।

³ एसे कई शब्द व वाक्यांश है जो कि छोड़ देने की आत्मा को प्रगट करती है। यह अधिक महत्वपूर्ण है कि आप इसका पता लगायें कि यह वाक्यांश आपको किस तरफ इशारा करती है। ताकी आप उस से जल्दी अस्वीकार कर सकें। इन वाक्यांशों को लिखें और यह देखें कि कैसे शैतान आपके जीवन व विवाह से खेलता है, इन विचारों के जरीये। उन विचारों को परमेश्वर के विचारों से बदलिये (विचार वचनों के द्वारा, जो कि सत्य है एवं अच्छा है (देखें फिलिप्पियों 4:8-9)।

व्यक्तिगत आवेदन: एक विवाह भवन परियोजना

व्यवहारिक रूप से देखते हैं। अपने जीवन साथी के बारे में सोचें। (अगर आप विवाहित नहीं हैं तो अपने भूतकाल के रिश्ते के बारे में सोचिये या फिर अपने माता पिता के रिश्ते के बारे में सोचिये)। शायद एक या एक से अधिक क्षेत्रों में शायद तुम दोनों ने उम्मीद छोड़ दी हो। यही परियोजना है।

• ऐसे तीन या चार क्षेत्रों के बारे में लिखें जब आपने अपने वैवाहिक रिश्ते कि उम्मीद छोड़ दी हो। और ज़्यादा सफाई और उदाहरण के लिए पढ़ते रहे।



• इस सूची में आप उन क्षेत्रों को भी जोड़ सकते हैं, जिनमें आपको अभी भी उम्मीद हो और आप उस पे कार्यान्वित हों।

यही आपकी "आशा की सूची" होगी क्योंकि इन्हीं क्षेत्रों में हमें आशा कि उम्मीद होती है।

जितना हो सके उतना इसे सकारात्मकता में लिखें। ये उम्मीदें अक्सर हमारी मान्यताओं और जीवन के बारे में अपेक्षाओं के पीछे छिपा करती हैं। इस काम को पूरा करने के क्रम में, हमें मन में कई सवाल रखने की जरूरत होगी।

(1) आप कैसे इन खोयी हुई आशा के क्षेत्रों को पहचानते है?

अगर आप हाल ही में शादी कर रहे थे, तो आप अपनी शादी से पहले कुछ भव्य उम्मीदों से अधिक जागरूक हो जाते। लेकिन अब कुछ चोंकाने वाले स्थितियों के माध्यम से, आपकी आशाएं गायब हो गयी हैं। आपने उम्मीद छोड़ दी है। इन आशाओं और अपेक्षाओं को लिख लें।

दूसरे तो कुछ समय के लिए शादी कर चुके हैं। आप अपने संघर्ष के क्षेत्रों से अपनी खोयी हुई आशा के इन क्षेत्रों को हाजिर कर सकते हैं। आप किस बारे में निराश हैं? आप किस बारे में बहस करते हैं? असली मुद्दों की जड़ तक जाओ। एक कुएं के स्रोत की तरह, आपकी उमीदें गहरी सतह में हैं।

कुछ बातों का पता लगाने से पहले थोड़ा समय लग जाएगा। दूसरी बातें आपके होठों पर हैं! इस वाक्य को पूरा करें, "काश मेरे पति /पत्नी....." अपने विचारों को लिखें।

विवाह का निर्माण!

मैं एक उदाहरण आपको देता हूँ, उदाहरण स्वरूप आप चाहें हैं कि आपकी पत्नी वो करे जो आप चाहते हैं, लेकिन हर बार जब आप चाहें (या ऐसा लगता है), वह एक प्रतियोगी भावना में आ जाती है। आप उससे झगड़ना नहीं चाहते लेकिन अधिक बार नहीं, आप आखिरकार उस पे चिल्ला देते हैं। कड़ुवाहट अब घर कर गयी है। आप उसे टालने लगते हैं। आप उम्मीद छोड़ने लगते हैं, और इस प्रकार अपने वायदों को घटाने लगते हैं। इस आशा को लिख लें, "मैं आशा करता हूँ कि मेरी पत्नी पूर्ण तरह हंसमुख भावना के साथ मुझको समर्पित होगी"। इस बात का विशेष ध्यान रखें कि आप वो लिखें जो आप चाहते हैं न कि वह जिससे आपकी निराशा या गुस्सा प्रगट हो। उदाहरण स्वरूप, "काश मेरी घटिया पत्नी थोड़ा अकार ले ले"। यह पूरी रीति से नकारात्मक है।

(2) कहीं ज़्यादा देर तो नहीं हो गयी?

शायद कुछ उम्मीदें जो लिखी गयीं नामुमकिन लगें। मुद्दे प्रबंधन से बहार चले गए हैं। ध्यान विवेक संरक्षण से स्थानांतरित होके क्षति को नियंत्रित करने कि ओर लग गया है - चीज़ों को न होने देना पूरी तरह से लापरवाही बन जाती है। एक उदाहरण कि ओर दृष्टि लगाते हैं।

आप पूरी उम्मीद लगाती हैं कि आप अपने जीवन के विभिन्न मुद्दों के बारे में अपने पति से विस्तार से बात करेंगी, लेकिन वो रुचि लेते हुए प्रतीत नहीं होते और अपने आप को व्यस्त कर लेते हैं अपनी ही गतिविधियों में। अब आप धीरे धीरे कड़ुवाहट से भर जाती हैं जब वो बजाये आपको समय देने के, अपने दोस्तों में और टेलीविज़न में अपना समय व्यतीत करते हैं। यद्यपि आप एक विवाहित जोड़े कि तरह रहते तो हैं, मगर आप पूर्ण तरह दो अलग ज़िन्दगी बनकर जीते हैं जहाँ एक दूसरे पर विश्वास नहीं होता।

अभी भी देर नहीं हुई है। क्या ये जोड़े अभी भी विवाहित हैं और जीवित हैं? परमेश्वर चाहें हैं कि हर विवाहित जोड़ा उसकी ओर मदद के लिए फिरे। ये मायने नहीं रखता कि कितना समय निकल गया है, २० साल ही क्यों नहो। आप अभी भी उम्मीद पा सकते हैं क्योंकि आप जानते हैं कि परमेश्वर आपके विवाहित जीवन का एक हिस्सा है। परमेश्वर अद्भुत कार्य करता है।

#1 अपनी विवाह के लिए आशा को पुनः स्थापित करना

परिस्थितियां तब खराब होती हैं, जब विवाहित जोड़े परेशानियों को ठीक करने के लिए साथ नहीं होते। उनके पास जब कोई आशा नहीं होती तब वे परेशानियों का सामना करते हैं। लेकिन जब हमारे पास आशा होती है और जब हम परमेश्वर के कामों में विश्वास रखते हैं, तब परिवर्तन आता है। इसमें कोई शक नहीं कि महान विवाह को बनाने में समय लगता है। लेकिन जब एक जोड़ा विवाह के बंधन में उग्र भर के लिए बंधता है, तब ही से उसे सुधारने के कार्य करने चाहिए !

(3) क्या हम सब के पास अशाहीनता के क्षेत्र हैं ?

हमारी आशा का खोना अलग अलग प्रतीत होता है जब हम विवाहित जीवन के अलग अलग चरणों से होके गुजरते हैं। यहाँ तक कि अच्छी शादियां भी बेहतर हो सकती हैं। हमें ये जानने कि ज़रूरत है कि हमारी उम्मीदें आशाएं सही हैं या नहीं। कभी-कभी हमारी उमीदें एक भौतिकवादी और खुशी की दुनिया के द्वारा जादुई सी हो जाती हैं। हमें इन महत्वाकांक्षाओं को अस्वीकार करना होगा। हम जानते हैं, अधिक से अधिक बार नहीं, हमारी शादी के कुछ प्रमुख तत्व खो रहे हैं।

सफल विवाह में, जीवन साथी एक या दो समस्या क्षेत्रों में सुधार के लिए आशा खो सकते हैं। एक पति अपने गंदे कपड़ों के बारे में लापरवाह हो सकता है। एक पत्नी वित्त को लेके चिंतित रह सकती है। एक पति ज़रूरी चीजों को भूल के खुद की ज़रूरतों के ऊपर खर्चा कर सकता है। कुछ जोड़े सुधार की ज़रूरत के प्रमुख क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करते हैं जबकि कुछ कम ज़रूरी इच्छाओं पर।

एक बड़ी समस्या जोड़ों के लिए तब होती है, जब उन्हें मालुम नहीं होता कि एक महान विवाह किस प्रकार से बनता है। उन्हें ज्ञात नहीं होता कि विवाह में अच्छी बातें क्या हो सकती हैं। इस भ्रम से समझ में आता है। अगर हमारे माता-पिता का विवाह खुशहाली से ना हुआ होता तो, हमारे पास विवाहित जीवन के लिए एक सही नमूना नहीं होता। एक महान अद्भुत विवाह कि खोज हमारे लिए कदम से कदम आ जाएगी। हमें सब से पहले विवाह के एक क्षेत्र को सुधारने कि आवश्यकता है और उसके बाद ही हम दूसरे का सामना कर सकते हैं। हमें आसानी से हतोत्साहित किया जायेगा। वह जोड़े जो एक अच्छे विवाहित जीवन को जी रहे हैं अक्सर ऐसे कदम उठाते हैं, हालाँकि सुधार का क्षेत्र और भी ज़्यादा शिष्ट है।

(4) जो हमारे पास नहीं है, क्या उस पर केंद्रित होना खतरनाक नहीं है?

विवाह एक कली है। विवाह एक खूबसूरत फूल का उत्तर है। यद्यपि हम असंतोष के क्षेत्रों से बहार इशारा कर रहे हैं परन्तु यह एक अच्छे उद्देश्य के लिए है। जिन क्षेत्रों में परमेश्वर काम करना चाहते हैं हम उन क्षेत्रों को उजागर कर रहे हैं। उन्हें टालने से असंतोष और कड़वाहट उत्पन्न होती है जब तक कोई संकट नहीं आता। सही रीती से प्राथमिकता देने और इन समस्याओं का वितरण करने से, जोड़े एक खूबसूरत मोती के सामान जो कि रेत के कण द्वारा परेशान सीप के द्वारा विकसित होता है, एकता में फलते हैं।

आशा हमें जो होना चाहिए उसका स्मरण कराती है। आशा परमेश्वर के अनुग्रह और उनकी समर्थ पर भरपूरी के लिए निर्भर करती है। समस्याओं को देखते हुए हम अपने अंदर कमियों के साथ मिल जाते हैं। चमत्कारी कृपा के लिए उनकी ओर देखते हुए हम बहुत बार हमारे जीवन के अंधेरे क्षेत्रों में प्रकाश को देखने लग जाते हैं। ठीक उसी समय हम उन बुरे व्यवहारों का पर्दाफाश कर देते हैं जो शायद कई क्षेत्रों में हमको बढ़ने से रोकते हैं। हम अपने जोड़े से झगड़ा नहीं कर रहे परन्तु परमेश्वर के साथ उनकी मर्जी के अनुसार अपने विवाह को सूक्ष्म रीती से सुधरने कि कोशिश करते हैं।

आशा ही प्रार्थना को प्रेरित करती है और हमको सही मार्ग पर वापस ले आती है। ध्यान देने वाली बात है कि भजन 37 के 3 और 5 में किस तरह परमेश्वर दाऊद के खुद के निर्देशों में काम करते है।

यहोवा पर भरोसा रखो, और भला कर; देश में बसा रह, और सच्चाई में मन लगाये रह।

यहोवा को अपने सुख का मूल जान और वह तेरे मनोरथों को पूरा करेगा।

अपने मार्ग कि चिंता यहोवा पर छोड़; और उस पर भरोसा रख, वही पूरा करेगा।

हम अपने कीमती आशाओं और निराशाओं को लेके परमेश्वर के पास आते हैं। हम परमेश्वर के साथ हमारे रिश्तों कि ओर अपने ध्यान को केंद्रित करते हैं और उनकी ओर समाधान के लिए देखते हैं। हमारा भरोसा उनके ऊपर है। वो बहुत से कठिन समस्याओं का समाधान देना शुरू कर देंगे चाहे उनमें संचार कि कमी हो, या असंगति हो, या यौन अन्तर्गत में कमी हो। "उन्ही पर भरोसा रखो, वही करेंगे।"

सत्य: महान विवाह संभव हैं!

जैसे कि हम आशा के इस मुद्दे से निपटते हैं, हमें सीधे रूप से एक सता विचार का सामना करना पड़ेगा, "उसके लिए यह कहना आसान है, परन्तु वह स्पष्ट रूप से मेरे साथी के साथ नहीं है!" मैंने व्यक्तिगत रूप से सुना है कि "अनुभवी" जोड़े वास्तविक विवाहित जीवन के तथ्यों के बारे में जो लोग जल्दी विवाह करने वाले हैं, कुछ उपयोगी टिप्पणी पारित करने कि कोशिश करते हैं। उनका मतलब भला होता है। अनुभवी जोड़े कभी इस तरह कि खूबसूरत विवाहित जीवन प्राप्त नहीं कर पाये थे और इसलिए विवाहित जीवन के बारे में युवा जोड़े चेतावनी देते हैं। यह प्रतिक्रियाएं कभी कभी बहुत आलोचनात्मक होती हैं और अशाहीनता से भरी होती हैं।

नए विवाहित जोड़े इन "अंतर्दृष्टियों" को तोड़कर पार करते हुए प्रवेश करेंगे। वे सोचते हैं की वे सबसे अलग हैं (अन्यथा वे कभी विवाह की योजना तैयार नहीं करते)। दुर्भाग्यपूर्ण, जब जोड़ों को अपनी नयी विवाह में कुछ निराशाओं का सामना करना पड़ता है, वे अक्सर अपनी अनिच्छा से वह भयभीत अंतर्दृष्टियों को स्वीकार कर लेते हैं, जो अनुभवी जोड़ों द्वारा उन्हें पहले दिया गया है। "शायद वह सही थी, विवाह वह नहीं जिसकी हमने आशा की थी।"

हमें इन जोड़ों को आशा का सेवन करना चाहिए या निराशा का? क्या हम ईमानदार हैं जब हम उन्हें आशा दे रहे हैं? ज़रूर, इसका यह मतलब नहीं की वह समस्याओं का सामना नहीं करना पड़ेगा। उन्हें समस्याओं का सामना करना पड़ेगा क्योंकि हम में से हर एक पापी स्वाभाव का है। हमें उनके साथ रह कर काम करने की ज़रूरत है जिससे की वो इस बात को सीख पाये की किस प्रकार हमको परमेश्वर के अनुग्रह पर निर्भर होने की और अद्भुत रीती से समस्याओं के बीच जिनका वे सामना करते हैं काम करने की आवश्यकता है।

विवाह के लिए चार बाईबल के सिद्धांत

बाईबल के चार सिद्धांतों पर नजर डालते हैं जो हमारे विवाह के लिए आशा और आत्मविश्वास देते हैं। परमेश्वर का वचन के अलावा और कोई बेहतर जगह नहीं जहाँ जाय जा सके। यहाँ उत्पत्ति 2:18-22 में विवाह के रूपांकक विवाह के उनके विचारों को प्रकट करते हैं।

1 परमेश्वर विवाह को बनाता है (उत्पत्ति 2:18-22)

“फिर यहोवा परमेश्वर ने कहा, आदम का अकेला रहना अच्छा नहीं; मैं उसके लिये एक ऐसा सहायक बनाऊंगा जो उससे मेल खाए। और यहोवा परमेश्वर भूमि में से सब जाति के बनैले पशुओं, और आकाश के सब भौँति के पक्षियों को रचकर आदम के पास ले आया कि देखें, कि वह उनका क्या क्या नाम रखता है; और जिस जिस जीवित प्राणी का जो जो नाम आदम ने रखा वही उसका नाम हो गया। सो आदम ने सब जाति के घरेलू पशुओं, और आकाश के पक्षियों, और सब जाति के बनैले पशुओं के नाम रखे; परन्तु आदम के लिये कोई ऐसा सहायक न मिला जो उससे मेल खासके। तब यहोवा परमेश्वर ने आदम को भारी नीन्द में डाल दिया, और जब वह सो गया तब उसने उसकी एक पसली निकाल कर उसकी सन्ती मांस भर दिया। और यहोवा परमेश्वर ने उस पसली को जो उसने आदम में से निकाली थी, स्त्री बना दिया; और उसको आदम के पास ले आया। “

एक सिद्ध व्यक्ति। एक आदर्श स्थान। आदम के पास वह सब कुछ था जो उसे चाहिए था। वह जरूरत सब कुछ था। परमेश्वर ने इस खूबसूरत स्थिति जो उसने बनाई और एक निश्चित अवलोकन साझा किया, "आदम का अकेले रहना अच्छा नहीं"। परमेश्वर की एक योजना थी। वह उसके लिए एक उपयुक्त सहायक बनाने जा रहा था। एक गहरी प्रशंसा का विकास करने के लिए कि परमेश्वर क्या कर सकता है, वह आदम कि जानवरों के नाम रखने कि जरूरत को बुद्धिमानी से जानता था। आदम को यह विश्वास हो गया कि इन जानवरों में से कोई भी उसकी गहरी जरूरत को नहीं समझ सकता। यह उस बिंदु पर था जब परमेश्वर आता है और अपने विशेष कार्य को करता है। उसने पसली के साथ आरम्भ किया लेकिन उसे एक स्त्री के रूप में निखार दिया। आदम ने उसका नाम हव्वा रखा।

उसके गठन के बाद, परमेश्वर ने एक जोड़ी बनाने वाले कि तरह उसका परिचय आदम से कराने में समय लगाया। हालांकि, परमेश्वर ने जोड़ेको, लगभग खरोंच से तैयार किया गया था।⁴

उसे आदम के लिए एक प्रति योगी होने के बजाय एक पूरक होना था। वह उसकी एक उपयुक्त सहायक थी जिसे खास तरीके से आदम कि पसली से तैयार

⁴ इसके द्वारा हम एक महान आशा को प्राप्त कर सकते है कि परमेश्वर एक साथी के चयन में विचारता व शामिल है। यह फर्क पडता है कि हम किससे विवाह करते है!

#1 अपनी विवाह के लिए आशा को पुनः स्थापित करना

किया गया था। तो परमेश्वर ने विवाह कि ओर ले जाने वाले सभी आवश्यक कारकों को बनाया।

हम कभी कभी शादी को एक बाध्यकारी रिश्ते के रूप में सोचते हैं और उन महत्वपूर्ण तत्वों के बारे में भूल जाते हैं जो एक विवाह को संभव बनाते हैं। लेकिन परमेश्वर नहीं! परमेश्वर ने मर्द और औरत को एक अंतरंग और लम्बे समय तक चलने वाले रिश्ते के लिए बनाया है।

2 परमेश्वर ने बहुलता को बनाया: आदमी और औरत (उत्पत्ति 2:23)

“और आदम ने कहा अब यह मेरी हड्डियों में की हड्डी और मेरे मांस में का मांस है: सो इसका नाम नारी होगा, क्योंकि यह नर में से निकाली गई है।”

आदमी खुश था। उसे एहसास हुआ कि जिसने उसे सबसे ज्यादा उत्साहित किया वह उसके साथ खड़ी थी : "औरत" नाम इसलिए रखा क्योंकि वह आदम से ली गई थी। महिलाओं को अपने पति के पक्ष के साथ काम करने के लिए विशेष रूप से रूपांकक किया गया था। दो लिंगों के बीच एक समानता है लेकिन एक अर्थपूर्ण विभिन्नता के साथ बावजूद इसके कि आधुनिक समाज हमें क्या समझाने की कोशिश कर रहा हो।

यह समानता और विभिन्नता इब्रानी और अंग्रेजी में आदमी और महिला दोनों के लिए देखि जाती है।

महिला के लिए इब्रानी शब्द आदमी के लिए इब्रानी शब्द के आखिरी में एक अक्षर जोड़ देता है (चार्ट देखें ; ध्यान आहें कि इब्रानी दाहिनी ओर से पढ़ी जाती है) अंग्रेजी शब्द के man में wo जोड़ेंगे तो woman बनता है और अंग्रेजी शब्द के male में fe जोड़ेंगे तो Female बनता है।⁵⁵

man	אָדָם	male
woman	אִשָּׁה	female

⁵⁵ इब्रानी शब्द अधिक स्पष्ट है और जाहिर है क्यों शब्द एक समान आरम्भ होता है। महिलाओं के लिये दो शब्द अंग्रेजी में भिन्न है शब्द के अन्त के बजाय शुरुआत में पर यह इतना ध्यान देने की बात नहीं है।

3 परमेश्वर द्वारा बनायीं एकता (उत्पत्ति 2:24)

इस कारण पुरुष अपने माता-पिता को छोड़कर अपनी पत्नी से मिला रहेगा, और वे एक ही तन बने।

ना ही यौन क्रिया और ना ही लिंगों की बहुलता एक विवाह को तैयार कर सकती है। 'शब्द 'एक देह पति और पत्नी के बीच के यौन सम्बन्ध से कहीं ज़्यादा संदर्भित करता है। वाक्यांश 'एक देह' पूर्ण रिश्ते को दर्शाता है; यौन संघ इस बात का केवल एक विशेष अभिव्यक्ति है।

हम इस बारे में कैसे जानते हैं? इस एकता का गठन कैसे हुआ और कैसे इसको बनाये रखे के दोबारा हम यह कह सकते हैं की यौन संघ की तुलना में एकता के लिए और अधिक है। एकता एक आदमी द्वारा बनाई गयी है, जहाँ वह अपने माता और पिता के अधिकारी क्षेत्र को छोड़ देता है और सीधे अपनी आजीवन साथी के साथ परमेश्वर के तहत अलग इकाई को गठित कर लेता है। यह विशेष एकता बच्चों में फल लाती है जैसा की हम आदम और हव्वा के मामले में देखते हैं।

4 परमेश्वर ने अपनी महिमा को विवाह में प्रकाशित होने के लिए बनाया है (उत्पत्ति 2:25)

और पुरुष और स्त्री दोनों ही नंगे थे और लजाते ना थे

विवाहित रिश्तों के द्वारा रहस्यमय सत्य प्रकाशित होते हैं। दो लोग असाधारण लेकिन निश्चित रूप से एक बनने के लिए शामिल हो चुके हैं। इस नई इकाई की महिमा पुरुष और स्त्री की निर्बाध पारदर्शिता है।

वे शर्मिदा नहीं थे। यह पूरी रीती से संभव है की मूल महिमा वो रौशनी थी जो उनमें से उत्पन्न हुए थी जैसे की वे परमेश्वर की महिमा को दर्शाते हैं। परमेश्वर के खिलाफ विद्रोह करने के बाद, दोनों पुरुष और स्त्री को कपड़े दिए गए।⁶

यह दर्शाता है की मूल जोड़े के बीच खुलापन आसानी से आ जा नहीं सकता। अब इस रास्ते में बहुत साड़ी बातें थी। यह सिर्फ शारीरिक रूप से ही सच नहीं है

⁶ हमने इसे कई स्थानों से एकत्रित किया है: (1) पाप पर उनकी नग्न भावना प्रगट हो गयी; (2) मूसा प्रकामान हुआ परमेश्वर के साथ उसके संवाद से; (3) बढ़ते हुये महीमा की अपेक्षा परमेश्वर के लोगों के रूप में होने लगी उनकी आपसी घनिष्ठ बातचीत से।

देखें wwwFOUNDATIONSforfreedom.net/Topics/Devotions/Devotions012.html आगे की प्रकाशन के लिये।

#1 अपनी विवाह के लिए आशा को पुनः स्थापित करना

परन्तु भावनात्मक और आत्मिक रूप से भी। कपडे मसीह के पूर्वानुभव थे जो की परमेश्वर से अलग और विद्रोह करने के दाग को छुपा सकते थे। हम बाद में पौलुस के विचारों को "एकता" के रहस्यों के विषय में जानेंगे।

हमको यह याद रखना चाहिए की यह सब मनुष्य के पतन के पहले से ही सुस्पष्ट कर दिया गया था। विवाह मनुष्यों के लिए इस पृथ्वी पर एक भव्य रचना रही है। क्या विवाह काम करेगा के बारे में अपना संदेह दूर कर सकते हैं। परमेश्वर की कृपा और उनकी इच्छा से यह कर सकते हैं। एक महान विवाह तात्कालिक नहीं है। पाप के कारण, अतिरिक्त कड़ी मेहनत करने की आवश्यकता है। विवाह हमेशा शुरुआती दौर में अच्छी हो सकती है परन्तु हमें इसको उपजाऊ बनाने की आवश्यकता है।

निराशा को सम्भालना

हम में से कई लोग हमारे विवाह में भव्य चीजों के घटने की उम्मीद करते हैं। ज्यादातर मामलो में, यह आशाएं अच्छेपन को दर्शाता है जिसको परमेश्वर हमारे विवाहित जीवन के लिए स्थापित करना चाहता है। हालाँकि, हम हमारे विवाह में अन्य अहसाओं की खोज कर लेते हैं। यह आशाएं और अपेक्षाएं हमारा लक्ष्य बन जाते हैं।

जब वह परमेश्वर के शब्दों के साथ सहमत है, तो हम इस बात पर यकीन कर सकते हैं वे हमारे जीवन के लिए परमेश्वर द्वारा निर्धारित लक्ष्य है। हमारे विवाह में पुनर्स्थापना की शुरुआत तब होती है जब हम परमेश्वर की योजनाओ पर अपने ध्यान को केंद्रित करने लग जाते हैं। हमारी उम्मीदों पर निराशा हमें हताशा और संदेह की ओर ले जाती है। कभी-कभी हम अपने पति या पत्नी के इरादों पर सवाल और कभी कभी परमेश्वर के उद्देश्य पर शक करते हैं। उद्धरण के लिए हमें ऐसा लगता है की शायद परमेश्वर ने हमको छोड़ दिया है। वास्तव में ऐसा नहीं है, जबकि इस परीक्षा में गिरना हमारे लिए आसान हो जाता है जब हम निराशा की परिस्थिति को सही तरीके से संभल नहीं पाते।

अब तक हमें विवाह के उन क्षेत्रों की सूची पर काम शुरू कर देना चाहिए था जिसमें आशा की कमी है। हमने हमारे विवाह के कुछ पहलुओं में सुधार की

विवाह का निर्माण!

उम्मीद छोड़ दी है। हमारा काम हमारे विवाह के लिए परमेश्वर के लक्ष्य के प्रकाश में अपने आदर्शों का मूल्यांकन करना है। ना सिर्फ एक औसत दर्जे के विवाह के लिए परन्तु एक बार फिर से एक महान विवाह के लिए परमेश्वर की ओर फिरने की आवश्यकता है। हमें आने वाले दिनों में उस 'आशा सूची' के बारे में विचार करने की ज़रूरत है।

#1 प्रतीक्षा करना

सीधे तरीके से अपनी सूची के बारे में कि कैसे आपका विवाह बेहतर हो सकता है के बारे में बात नहीं करनी चाहिए। यह कोई सूचीबद्ध करना नहीं है कि आपका साथी कितना बुरा रहा! ईमानदारी से कहूं तो, आप में से कुछ को कभी भी अपने साथी के साथ यह सूची को साझा करने का अवसर नहीं मिला हो।

#2 अंगीकार करना

जब आप त्याग देने की परीक्षा में गिर गए, तब आपको परमेश्वर के सामने अपने पापों का अंगीकार करने की आवश्यकता है। परमेश्वर नहीं चाहते की आप उनकी अच्छी योजनाओं पर शक करें। जल्द ही आपको शायद अपने जीवन में पापों के उन क्षेत्रों का पता चल जाए जिसके लिए कभी आपने अंगीकार किया हो। याद रखें पाप हमें परमेश्वर की सृष्टि को प्राप्त करने के लिए हतोत्साहित करता है।

#3 प्रश्न करना

निराशाजनक क्षेत्रों में आशा को स्थापित करने के लिए परमेश्वर से पूछें। यह कुछ आसान हो सकता है कि आपका साथी आपकी कड़ी मेहनत लिए अपनी कृतज्ञता व्यक्त करे। या फिर यह प्रेम और दया में अपने स्वार्थी साथी के साथ रहने कि क्षमता हो सकती है। इसका यौन अन्तर्गता के साथ भी सम्बन्ध हो सकता है।

#4 पूर्वानुमान करना

परमेश्वर को अपने समय और तरीके में आपकी प्रार्थनाओं का उत्तर देने का अवसर प्रदान करें। हमें उन्हें और अपने आप को बताने कि आवश्यकता है कि आप क्या चाहते हैं, आप क्यों सोचते हैं कि आपके विवाह में उन चीजों को होना चाहिए, कुछ होने के लिए क्या किये जाने की आवश्यकता की लालसा रखना इसके

#1 अपनी विवाह के लिए आशा को पुनः स्थापित करना

बावजूद कि लम्बा समय लगना है। पत्नियों को किसी प्रकार से दोष लगाकर, संकेत देकर या हेरफेर करके अपनी लालसाओं को नहीं मनवाना चाहिए। पतियों को भी अपनी लालसाओं के लिए पत्नियों को आदेशित देने से बचना चाहिए।

#5 बांटना

अपने साथी के साथ सूची बाटने कि चाहत रखना स्वाभाविक है। यदि आपका साथी सूची सुनना चाहता है, तब आप उसको उसके साथ बाटने के लिए स्वतंत्र है। अगर वे नहीं पूछते हैं तो, उसको अपने और परमेश्वर के बीच ही रखिए। आप "दो" याद रखें, 'परमेश्वर' और 'आप', आशा में एक साथ काम कर रहे एक टीम हैं। प्रत्येक दिन आप इन बातों के लिए उन्हें खोजते हैं और देखते हैं कि इस काम को वो कैसे पूरा करते हैं।

चमत्कारो के लिए आशा

परमेश्वर चमत्कार करने वाला परमेश्वर है। यहाँ तक की सबसे हताश परिस्तिथियों में भी परमेश्वर सुन्दर और अद्भुत विवाह का निर्माण कर सकते हैं। आशा विश्वास का बीज है। हम महान और अद्भुत काम के लिए परमेश्वर में अपने भरोसे को व्यक्त कर रहे हैं। अपनी आशा पर दृढ़ बने रहो। अपने विवाह को जीवन भर के लिए एक लम्बी प्रक्रिया बनाने के बारे में सोचो। हमें सिर्फ अंत के लक्ष्य को ही पोषित करना नहीं सीखना चाहिए परन्तु परमेश्वर और अपने साथी के करीब आना भी सीखना चाहिए। जैसे आप परमेश्वर और उनके वायदों पर दृढ़ है, वह हमें चकित कर देते हैं जिस प्रकार हमें किन चीजों की आवश्यकता है बाधाओं को दूर करने के लिए।

जिन बातों पर हमारा विश्वास है उन पर हमारी आशा होनी चाहिए। यह अब्राहम की तरह था। परमेश्वर ने उससे वायदे की संतान के बारे में बातें करी। क्या हुआ? वो संतान जब तक अब्राहम 99 साल का नहीं हुआ उत्पन्न नहीं हुई! मुझे विश्वास है की अब्राहम ने दो बार अपनी पत्नी को अन्य पुरुष के लिए छोड़ दिया था जिसके लिए परमेश्वर को उसको दंड देने की आवश्यकता है। परमेश्वर को अपना वायदा याद था। वायदा अभी भी असली और जीवित था परन्तु अब्राहम के जीवन में किसी बात को लेकर परिवर्तन होना था, इसके पहले की वो इसको पूरा होते

देखे। परमेश्वर अपने बेटे के लिए एक बुरा उदाहरण नहीं चाहते। एक प्रकार से, इस बात पर चर्चा करना निरर्थक है की क्यों अब्राहम को इतने लम्बे समय का इंतज़ार करना पड़ा। इस प्रकार से जीवन उसके लिए साबित हुआ।

शायद यह छोटा किया जा सकता था यदि वह कुछ सकारात्मक बदलाव पहले ही कर देते तो। उसने स्पष्ट रूप से अपने पाप और बच्चे की कमी के बीच का सम्बन्ध नहीं देखा था। उसको बदलने के लिए बहुतेरा समय चाहिए था और परमेश्वर ने उसको दिया।

एक आशा पर दृढ़ बने रहना

अब्राहम के बारे में एक महान बात यह है कि उसने अपना भरोसा परमेश्वर पर रखा ताकि उनके वायदे पर दृढ़ रह सके। और अपने समय के साथ परमेश्वर अपने वायदे को पूरा करते। उसकी आशा इसहाक और उसके वंश के माध्यम से पुरुस्कृत कि गई। इसहाक के वंशज अभी भी इस्त्राएल के देश में देखा जाता है।

हम हमेंशा से यह समझ नहीं पाए कि हमारे विवाह में तीव्र गति से सुधार क्यों नहीं होता। हमें बहुत जल्दी से अपने साथी पर दोष नहीं लगाना चाहिए। अधिकतर दोनों पक्षों कि तरफ से ही गड़बड़ी होती है। हमारी आशा परमेश्वर कि ओर अपने हृदय को खोलने के लिए सक्षम बनती है ताकि हम अपने विवाह और अपने जीवन में उच्च मानको को ला सकें! आशापूर्वक यह तब होगा जब हम अब्राहम कि तरह 11 साल के हो जायेंगे! पवित्र शास्त्र में सबसे शक्तिशाली आशा छंद रोमियों 4 में हैं: 18-21। वे इब्राहीम के लगातार आशा का वर्णन है।

“उस ने निराशा में भी आशा रखकर विश्वास किया, इसलिये कि उस वचन के अनुसार कि तेरा वंश ऐसा होगा वह बहुत सी जातियों का पिता हो। और वह जो एक सौ वर्ष का था, अपने मरे हुए से शरीर और सारा के गर्भ की मरी हुई की सी दशा जानकर भी विश्वास में निर्बल न हुआ। और न अविश्वासी होकर परमेश्वर की प्रतिज्ञा पर संदेह किया, पर विश्वास में दृढ़ होकर परमेश्वर की महिमा की। और निश्चय जाना, कि जिस बात की उस ने प्रतिज्ञा की है, वह उसे पूरी करने को भी सामर्थी है।

#1 अपनी विवाह के लिए आशा को पुनः स्थापित करना

इस पूरी प्रक्रिया के पीछे की यह धरना है कि परमेश्वर वास्तव में हमारे विवाहों में सुधार करना चाहते हैं। वह हमारे साथ स्वयं काम करने के रूप में पुनःस्थापना कि प्रक्रिया को पूरा करते हैं। हमें कभी परमेश्वर के द्वारा इस्तेमाल किये हुए साधनों को भूलना नहीं चाहिए। जिन क्षेत्रों में हम पहले से ही आशीषित हैं वे भरपूर रीती से आशाओं से भरी हुए हैं। कुछ पत्नियां अपने पतियों को गंभीर रूप से ना लेते हुए यह सोचती है कि उन्हें घर कि ज़रूरतों कि चिंता नहीं है। उन्हें ऐसा नहीं करना चाहिए। मैं ऐसे कई पुरुषों के बारे में जनता हु जो अपनी कमाई नशा पदार्थ वस्तु में गवां देते हैं।

दूसरी तरफ, पतियों को ये नहीं भूलना चाहिए कि जब उनकी पत्नियां बड़ी विश्वासयोग्यता के साथ उनके और परिवार के लिए खाना बनाती हैं तब परमेश्वर उनके साथ होते हैं। यह अधिकतर दुर्लभ होता जा रहा है कि पत्नियां आधुनिक संस्कृति से प्रभावित होकर अपने पतियों से अधिक स्वतंत्र जीवन जी रही हैं।

महान विवाह का विकास एक प्रक्रिया है। प्रत्येक चरण रोमांच और मज़ेदार हो सकता है इसके बावजूद कि परिक्षण हर कोने में छुपा हुआ है। परमेश्वर हमारे जीवन के द्वारा कई महान कार्यों को करना चाहते हैं। अपने हृदय के दरवाज़ों को खोले और उनका अपने विवाह में स्वागत कीजिये। आशा हमको सही दिशा देती है और हमारे व्यक्तिगत और विवाहित जीवन में उनके प्रेम और सामर्थ के अद्भुत कार्यों कि और ले चलती है।

**परमेश्वर चमत्कार
करने वाला परमेश्वर
है।**

**परिवर्तन में कभी
कभी समय लगता है**

**आशा एक दृढ़
विश्वास का
आश्वसन देता है।**

अध्याय 1# अध्ययन के लिए सवाल

1. सबसे अच्छे विवाहों में से आप किनके साथ परिचित हैं, 'महान विवाह' के कई प्रमुख तत्वों को सूचित करें?
2. जो जोड़े अपने विवाह के लिए उम्मीद छोड़ चुके हैं उनके क्या लक्षण हैं?
3. आशा समस्याओं का समाधान नहीं है लेकिन
4. विवाह के धर्मनिरपेक्ष और बाईबल का दृष्टिकोण के बीच विभिन्नता क्या है?
5. विवाह के बाईबल दृष्टिकोण के लिए बाईबल में से एक अंश दीजिये?
6. क्या गैर-मसीही जिस तरह अपने विवाह को बर्ताव करते हैं जवाबदेही है? क्यों है और क्यों नहीं?
7. वह विचार जो अच्छे विवाह पर "त्याग देने" की भावना को लेकर आते हैं क्यों परीक्षा के रूप में आते हैं?
8. सुनिश्चित किया जाए कि आपके विवाह के लिए आशा कि सूचि पर आपके पास काम से काम तीन या चार अंश हों। उन्हें नीचे लिखें।
9. असंतोष के क्षेत्रों कि ओर देखते हुए कैसे हमें विवाह में मदद मिल सकती है?
10. परमेश्वर के द्वारा रचित विवाह के बारे में हमें कैसे पता चलेगा कि वह सिर्फ मानव निर्मित नहीं है?
11. परमेश्वर क्यों कहते हैं कि उन्होंने स्त्री को बनाया है?

#1 अपनी विवाह के लिए आशा को पुनः स्थापित करना

12. स्त्रियों को नामांकित क्यों किया गया?
13. जिस "एकता" कि बात परमेश्वर ने उत्पत्ति 2 में कि है यौन संघ को दर्शाता है या उससे अधिक? क्यों?
14. हमने आपसे ये क्यों पुछा कि अपने साथी से अपनी आशा सूची के बारे में बात ना करो जब तक वह पूछे ना?
15. रोमियो 4:18-21 में अब्राहम के जीवन से किन दो बातों को आशा के बारे में सीख सकते हैं?
16. 16 यहाँ पर चिन्ह बनाये जब आप अपनी आशा सूची को प्रभु के पास प्राथना में लाए। प्रतिदिन इसको प्राथना करने कि आदत बनाये

विवाह का निर्माण!



#2 बेशर्त प्रेम: जीवन सिद्धांत 1

एक बड़ी ईमारत एक महान खोके से बनायीं जाती है। ठीक इसी प्रकार, महान विवाह परमेश्वर के महिमान्वित खोके के अनुसार बनायीं जाती है। बुरा विवाह अपूर्ण निर्माण का परिणाम नहीं है, परन्तु उन निर्माणकर्ताओं द्वारा जो परमेश्वर कि योजनाओ के अनुसार निर्माण नहीं करते।



दो प्रमुख खतरों के बारे में पता होना चाहिए। पहला, वो लोग जो सत्य के अनुसार निर्माण नहीं करते। वे सत्य जानने के लिए दावे कर सकते हैं पर वह सिर्फ निर्देशों के अनुसार निर्माण नहीं करते। यीशु ने ऐसे लोगों के लिए कुछ तीखे शब्द कहे थे "परन्तु जो कोई मेरी ये बातें सुनता है और उन पर नहीं चलता वह उस निर्बुद्धि मनुष्य के सामान ठहरेगा जिसने अपना घर बालू पर बनाया" (मत्ती 7:27)

मैंने कई जोड़ो से कहते सुना है कि वे बदल नहीं सकते। "बस इसी तरह हूँ मैं।" इसका वास्तव में मतलब है कि "मैं नहीं बदलूंगा।" दूसरे शब्दों में, वे जानते हैं कि सबसे अच्छा क्या है परन्तु बदलने कि ज़रूरत को अनदेखा कर देते हैं। एक और खतरा है।

बहुत से लोग इस तथ्यों से आश्वस्त हैं कि उनके कर्म परमेश्वर के वचन के अनुसार है जिनकी वजह से बुरे विवाह उत्तेजित हो जाते हैं। वह हमेशा सही नहीं होते। इस प्रकार कि समस्याओं का निराकरण करना और भी मुश्किल होता है क्योंकि अहम एक कारण होता है। वे बदलाव को प्रोत्साहित नहीं करते।

विवाह का निर्माण!

कुछ लोग बदलाव नहीं चाहते जबकि कुछ लोग गलत विचार में हैं। इन मामलों में सृष्टि को दोष नहीं दिया जा सकता परन्तु "निर्माणकर्ता" जो खोके को अनदेखा कर देते हैं। इन्ही वजह से हम विवाह के लिए परमेश्वर के द्वारा खोके पर अपने ध्यान को इन अध्यायों पर केंद्रित करना चाहते हैं जिस प्रकार परमेश्वर के वचन में प्रकाशित किया गया है। विवाह के पीछे यह सत्य इतने समर्थशाली है कि अक्सर इनके कारण मेरे आँखों में आंसू आ जाते हैं। आप सोचते होंगे ऐसा क्यों। इसका कारण मैं समझाता हूँ।

अ) शादी के लिए परमेश्वर का एक परिरूप

परमेश्वर ने सिर्फ समाज को संगठित करने और बच्चों के साथ खुशहाल परिवार के लिए विवाह को नहीं बनाया, परन्तु परमेश्वर के महिमामय सत्यो को समझने के लिए भी।

जब परमेश्वर ने मानव जाति के लिए सबसे अच्छा रिश्ता बनाने का फैसला किया, तो उन्होंने सबसे अच्छा संभव मॉडल लिया। ये कहाँ पाया गया? यह देवत्व में पाया गया। जब हम विवाह के परिरूप कि जांच करते हैं, हम परमेश्वर के हृदय को छेदते हैं। पौलुस इस रहस्य के बारे में इफिसियो में लिखता है,

“इस कारण मनुष्य अपने माता-पिता को छोड़कर अपनी पत्नी से मिला रहेगा, और वे दोनों एक तन होंगे। यह भेद तो बड़ा है, पर मैं यहाँ मसीह और कलीसिया के विषय में कहता हूँ।”

विवाह को एक रहस्य के रूप में वर्णन किया गया है। विवाह सांसारिक है, परन्तु यह परमेश्वर के छुटकारे कि तस्वीर भी है जहाँ हम परमेश्वर के महान प्रेम को अनुभव कर सकते हैं। परमेश्वर हमको आत्मिक रहस्यों को समझने के लिए सांसारिक रिश्तो को बेहतर समझने के द्वारा सक्षम बनाते हैं। नीचे दिए तीन विवाह उपमा हैं

शादी के तीन उपमा

(१) मसीह ने अपने स्वर्गिक पिता को छोड़ा

पति ने अपने पिता को छोड़ा

(२) मसीह ने एक दुल्हन सुरक्षित की (अपने जीवन के साथ)

पति दुल्हन को सुरक्षित करता है (दहेज के साथ)

(३) कलीसिया (उसके लोग) मसीह की मिलकियत है

पत्नी अपने पति की मिलकियत है

परमेश्वर ने विवाह अपने प्रेम को इस धरती पर प्रकट करने के लिए बनाया। पौलुस ने इफिसियों के पांचवे अध्याय में इन रहस्यों की ओर संकेत दिए हैं। हम इन खूबसूरत योजनाओं का पता लगाने की कोशिश करेंगे। यहाँ तीन प्रकार के पहलू हैं जिन्हें जानने की हमको आवश्यकता है। हम सबसे पहले पूर्ण ढाँचे का परिचय देखेंगे और उसके बाद एक महान विवाह के पहलुओं को सम्बोधित करेंगे। याद रखें की यह एक पवित्र सच्चाई है। जैसे की हम परमेश्वर के द्वारा इन सत्यता को खोजने का प्रयास करते हैं, हमें कई प्रकार के खतरनाक क्षणों का अनुभव हो सकता है। परन्तु घबराये न। परमेश्वर के द्वारा इन सत्यता को आपके हृदय से बात करने दें। परमेश्वर एक अच्छी सांसारिक विवाह को हासिल करने के लिए अपने बेहतर तरीके को हम पर प्रकट करना चाहते हैं। हमें न सिर्फ इन सच्चाइयों को सीखना की आवश्यकता है परन्तु इन्हे सावधानी पूर्वक अपने ज़िन्दगी में लागु करने की भी आवश्यकता है जिससे की हम एक महान विवाह को हासिल कर सके।



तीन जैवनिक सिद्धांत होते हैं जिनके द्वारा महान विवाह संपन्न होता है: 1) बेशर्त प्रेम, (2) अंदरूनी पूर्णता, (3) एक साथ हमेशा के लिए। प्रत्येक अलग परन्तु पूरी

विवाह का निर्माण!

तरह से दुसरो के साथ एकीकृत है। जितना ज़्यादा गहराई से हम इन सच्चाईओं में देखेंगे, उतनी ज़्यादा हम परमेश्वर के छुटकारे की योजना की खूबसूरती को हमारे विवाह में उनकी भलाई और अनुग्रह के द्वारा पूरा होते देखेंगे। अब हम अपने ध्यान को पहले सिद्धांत की ओर केंद्रित करेंगे बेशर्त प्रेम।

ब) परमेश्वर के प्रेम का विवरण

पति परमेश्वर के प्रेम के साथ अपनी पत्नी के प्रेम के लिए है। परमेश्वर के प्रेम की कई विशेषताएँ हैं। अगर इन गुणों के लिए हमारा प्रेम काम पड़ता है तो हमें इसको प्रेम नहीं कहना चाहिए।⁷ प्रेरित पॉल ने प्रेम को समझने के लिए 1 कुरिंथियो 13:4-7 में यूनानी शब्द 'अगापे' का इस्तेमाल किया है।⁸

प्रेम धीरज है, प्रेम दयालु है और प्रेम ईर्ष्या नहीं रखता;

प्रेम धीरज है, प्रेम दयालु है और प्रेम ईर्ष्या नहीं रखता

प्रेम अभिमानी नहीं है ना ही अहंकारी है, और ना ही ढोंग करता है;

यह अपने आप से तलाश नहीं करता, उत्तेजित नहीं होता, गलत बात की पुष्टि नहीं करता,

अधर्म में आनंदित नहीं होता, परन्तु सत्यता में आनंदित होता है;

सहनशील है, विश्वासी है, अशारहित है, सभी बातों से उभरता है।

प्यार कभी विफल नहीं होता है।

हम इस बात को आसानी से स्वीकार करते हैं की जब तक परमेश्वर हमारे जीवन और विचारों को नहीं तराशता तब तक हम हमारी पत्नियों से लगातार प्रेम नहीं रख सकते।

⁷ प्रेम का विकास हमारी अपेक्षा से भिन्न रूप में बढ़ता है। जिस प्रकार हम अपने विफलताओं को परमेश्वर के समीक्ष पहुँचने के लिये और परमेश्वर से अपने पापों का अंगीकार करने के लिये करते हैं और जिनसे हम ठोकर खाते हैं, परमेश्वर हमें प्रेम में बढ़ने में मदद करता है।

⁸ "परमेश्वर का अद्भुत स्पर्श" को देखें, और अधिक समझने के लिये 1 कुरिंथियों 13 का सामर्थी प्रेम का संदेश।

हमारा गौरव, इच्छाएं और सामाजिक दबाव हमें एक तरीके से काम करने को प्रेरित करे जैसे कि वह प्यारा लगे लेकिन इन गतिविधियों के उथली जड़े हैं और जीवन के वास्तविक परिक्षण में टूट बने रहने में सक्षम नहीं हैं।

परमेश्वर का प्रेम बेशर्त प्रेम, किसी भी तार का जुड़ा ना होना और हिफाजत के कार्यों द्वारा विशेषित किया गया है। ये प्यारे कार्य प्रेमी हृदय द्वारा निर्मित किये गए हैं। शास्त्र प्रगट करते हैं कि परमेश्वर का स्वाभाव प्रेमी है; "परमेश्वर ही प्रेम है"। उन इच्छाओं द्वारा परमेश्वर के इस दयालु प्रेम को दुनिया में फैलाने कि योजना सामने आई। हम इसको छुटकारे कि योजना के रूप में जानते हैं।

परमेश्वर ने अपने इकलौते पुत्र यीशु मसीह को इस दुनिया में अपने प्रेम और दया को विद्रोही पापियों पर प्रकट करने के लिए भेजा। हम इस प्रकार कि इनायत के हकदार नहीं हैं। हम यहाँ तक कि एक भी पल के लिए इस प्रेम को ग्रहण करने के योग्य नहीं हैं। परन्तु परमेश्वर के प्रेम ने



**बेशर्त
प्रेम**

यीशु मसीह को इस दुनिया में क्रूस पर मरने के लिए भेजा ताकि हमारे पाप क्षमा हो सके।

"हमने प्रेम किया क्योंकि उसने

हमसे पहले प्रेम किया" (1यहुन्ना 4:19)

इस उदहारण में इस बात को पाते हैं कि मसीह पूर्ण रीती से उन लोगो के प्रति प्रेमी थे, जो इसके योग्य नहीं हैं। उनकी प्रतिबद्धता परमेश्वर के लोगो कि प्रतिक्रिया पर निर्भर नहीं थी परन्तु अपने प्रेम को दृढ़ संकल्पता से परमेश्वर पिता के प्रति आज्ञाकारिता में चर्च के लिए फैलाना। तो हम अगापे प्रेम को किस प्रकार वर्णन कर सकते हैं?

अ) बेशर्त

परमेश्वर का प्रेम वचन के पूर्ण सम्बन्ध में बेशर्त प्रेम है। उनका प्रेम हमारे अंदर पायी गई एक भी अच्छी बात पर निर्भर नहीं हैं। हमारे अंदर परमेश्वर द्वारा देखि गई कोई भी अच्छी पर यह निर्भर नहीं हैं। प्रेम अनुग्रह के पीछे चलता है। वास्तविकता में, हम उन्हें ठीक प्रकार से प्रतिक्रिया करने में असमर्थ हैं। मानव जाति भी परमेश्वर

विवाह का निर्माण!

के प्रति प्रतिक्रिया या पहचान करने कि चाहत को हथियाने में लीन है। जब हम इस जैवनिक सिद्धांत का विवाह से अनुवाद करते हैं तब हम पाते हैं कि पति और पुरुषों को साधारण रूप से सिद्धांतों के अनुसार जीना चाहिए ना कि एहसास या परिस्थितियों के अनुसार। हम वो करते हैं जिसे करने के लिए हम बुलाये गए हैं - नियमित रूप से और लगातार अपनी पत्नियों को प्रेम।

बेशर्त, प्यार में कोई तार ना जुड़ा होना विवाह में लम्बी अवधि लाता है क्योंकि यह कोई निर्भर नहीं है कि दिए गए कोई भी क्षण में किस प्रकार पत्नी अपने पति के प्रति प्रतिक्रिया करे। इस प्रकार देखा गया है कि परमेश्वर ने पतियों को एक खास प्रकार का प्रशिक्षण दिया है पत्नी के मासिक धर्म के दौरान जब पत्निया अक्सर मजाज़ और विषम धारणाओं का अनुभव करती है। क्या हमारी दया इस दौरा बदलती है?

ब) दयावान

दयालु प्रेम परमेश्वर कि कोमलता, दया, अनुग्रह और अच्छाई जो हमारे प्रति प्रभु यीशु मसीह में है प्रकट करने का तरीका है। परमेश्वर ने एक ऐसे उद्धारकर्ता कोई नहीं भेजा है जो प्रेम के महान कर्तव्यों का प्रदर्शन महज़ सिर्फ़ फ़र्ज़ के प्रति करे। इसके बजाये हम चाहते हैं कि उद्धारकर्ता एक दम कोमल और शालीन हो जिसकी पहचान हमारी ज़रूरत के अनुसार हो। एक बार फिर से, पति कि बुलाहट परमेश्वर के अच्छाईओं को पत्नियों के प्रति अपने दयालु कार्यों, विचारों, शब्दों और व्यवहार के माध्यम के द्वारा बढ़ाने कि आवश्यकता है।

पतियों को भोजन और आश्रय उपलब्ध करने के पर सोचना चाहिए। यह बातें अच्छी है। वह यहाँ तक कि अपने घर के लिए व्यक्तिगत रूप से बलिदान भी दे सकता है, परन्तु परमेश्वर का प्रेम उसकी पत्नी के बीच रिश्ते को और निखारेगा। उन्हें दयालुता से बात करनी चाहिए। उनको एक सज्जन देखभाल करना चाहिए। गलत समझे जाने पर या गलत आरोप लगने पर उसको धीरज रखना चाहिए। इसके अलावा, पति को अपनी पत्नी की इच्छाओं के प्रति संवेदनशील होना चाहिए। वह अपने पति को बातचीत में लेकर जाना चाहेगी ताकि वह उसको समझ सके। मसीह का प्रेम अलग नहीं किया है परन्तु उसमें सम्मिलित किया गया।

स) समर्पित

परमेश्वर का प्रेम भी एक समर्पित प्रेम है। समर्पित प्रेम एक दयालु कार्य की प्राथमिकता को प्रकट करता है इसके बावजूद जीवन में चुनौतियां और विकर्षण है। हम यह समर्पण यीशु की मृत्यु के पहले उस रात को देखते हैं। "कि हे पिता यदि तू चाहे तो इस कटोरे को मेरे पास से हटा ले, तौभी मेरी नहीं परन्तु तेरी ही इच्छा पूरी हो।" (लूका 22:42)

यीशु ने कहा की इसके अलावा और कोई रास्ता है की परमेश्वर का उद्देश्य पूरा किया जा सके। उनकी उच्च प्राथमिकता बेचैनी, नाराज़गी, शर्मिंदगी, तेज़ दर्द, झेपना, अस्वीकृति, मज़ाक, अन्याय और आखिर मौत से बचने के लिए नहीं थी परन्तु भक्तिपूर्वक खुद को अपने भविष्य की दुल्हन, कलीसिया के खातिर कुर्बान करना थी।⁹

पति होने के रूप में हमारी भक्ति अपरिवर्तनीय और दृढ़ होनी चाहिए। यहाँ तक की संभावित खतरे या क्लेश के मद्देनज़र अपनी पत्नियों को प्राथमिक देखभाल देने के द्वारा, हम परमेश्वर के समर्पण को दर्शाते हैं जो हमारे लिए है। अबराहम ने ठीक विपरीत किया जब उसने अपनी पत्नी राजा को दी। उसको दर था की वो मारा जा सकता है और उसकी खूबसूरत पत्नी उससे छीन ली जाएगी। हमारी पत्नी में हमारा उत्साह उनकी खूबसूरती या रिश्ते में खुशी पर केंद्रित नहीं होना चाहिए परन्तु उनकी देखभाल के लिए हमारी प्रतिबद्धता पर होना चाहिए। इसी से विवाह-शपथ समर्थशाली बनती है। चाहे बीमारी हो या गरीबी या फिर अमीरी पति कि प्रतिबद्धता पत्नी के लिए समर्पण होना चाहिए।

मैंने चर्च में एक अच्छे और विश्वासी भाई कि स्मारक सेवा में भाग लिया था। उन्होंने एक शानदार उदाहरण को हमारी कलीसिया में प्रस्तुत किया। उनकी पत्नी, एक बीमारी कि वजह से, ज़्यादा सुसंगत नहीं थी और व्हीलचेयर पर सहायता चाहती थी। वह हर सप्ताह अपनी पत्नी को चर्च में लाता था। वह उनकी व्हीलचेयर

⁹ यीशु का उदाहरण चेलों के दुर्बलता के विपरीत चमकता है। हर पिछला शिष्य यीशु के सम्बन्ध से अलग कर दिया गया था नाकारात्मक परिणामों के द्वारा। इस निरीक्षण करने के लिए लूका 22 देखें।

पहले सीढ़ियों पर चढ़ाता और उसके बाद अपनी पत्नी कि मदद करता था। यद्यपि वह दुसरो के साथ समय बिताने के बहुत से अवसर खो देता था, अपनी सेवानिवृत्ति के बाद उसने अपना समर्पण अपनी पत्नी कि सेवा में दे दिया। यह परमेश्वर का समर्पित प्रेम जो पुरुष को दिया गया है जिसको वह अपनी पत्नी को दे सके।

हमारी पत्नियाँ हमको जानने लगती हैं जब हम उनके प्रति सिर्फ हमारे एक साधारण प्रेम प्रतिबद्धता कि वजह से समर्पित हो जाते हैं। यह समर्पित प्रेम खुद को अपने छोटी और लम्बी प्राथमिक अवधि के दौरान प्रकट करता है।

सारांश

पतियों के पास स्वाभाविक रूप से बेशर्त, दयालु, और समर्पित प्रेम नहीं है। यह केवल परमेश्वर के सामने अपने जीवन की ज़रूरतमंद को प्रकाश में लाने से प्राप्त होता है। हमें यह निवेदन करना चाहिए की हमारे जीवन के माध्यम से परमेश्वर का प्रेम हमारी पत्नियों को स्वतंत्र रूप से मिलता रहे। हमको यह काबुल करना चाहिए की हम सिर्फ अपने दम पर इसको कर सकते हैं, परन्तु इस पवित्र प्रेम को हम प्रतिबद्धता के माध्यम से प्रकट कर सकते हैं और करना चाहिए।

मैंने व्यक्तिगत रूप से यह पाया की जितना अधिक मैं सिर्फ अपनी पत्नी से प्यार के प्रति प्रतिबद्ध रहूँगा जिस प्रकार यीशु ने मुझसे प्रेम किया, जीवन उतना ही आसान रहेगा।

मैं बेहतर रूप से दूसरी परीक्षाओं को पराजित करने में सक्षम हूँ क्योंकि मैं कोई विचार-विमर्श में नहीं हूँ की मुझे माफ़ करनी चाहिए या मदद ज़्यादातर उग्र लड़ाइयां जिसको हम अनुभव करते हैं इसलिए है क्योंकि हमने जीवन में पूर्ण-हृदय प्रतिबद्धता नहीं ली है। यद्यपि, आपने विवाहित प्रण लिए हैं, मेरी यह सलाह है कि अपने जीवन कि मुख्य उद्देश्य के रूप में एक बार फिर से अपनी पत्नी को प्रेम की प्रतिबद्धता का नवीनीकरण करे। इसको अपने व्यक्तिगत समय में बिना किसी रीती से या जब आपको लगे कि आपकी पत्नी आपको गलत समझ रही है, करते रहे।

जितने ज़्यादा पति अपनी पत्नी को बेशर्त प्रेम करने कि बुलाहट को पहचान सकते हैं, उतना अधिक यह प्रेम फलेगा और दोनों प्राण उत्तेजित होते रहेंगे। मैंने इसको एक दूँ सच जाना है (हालांकि ईमानदारी से यह जिन्दगी कि तरफ असमान

उन्मुखीकरण के लिए और रिश्तों में थोड़ा समय लेता है)। हमें सबसे पहले प्रेम के लिए कदम बढ़ाने हैं और उसके बाद सही तरीके से भावनाएँ और स्नेह बहने लगता है।

परमेश्वर ने पति को अपनी पत्नी को निरंतर रूप से बेशर्त और दयालुता से प्रेम करने कि अगुवाई के लिए बनाया है। परमेश्वर ने पति के प्रेम को असमझौते बलिदान के रूप में इफिसियो 5:28 में बताया है।



“पति को अपने शरीर के रूप में अपनी पत्नी को प्रेम करना चाहिए। जो कोई अपनी पत्नी को प्रेम करता है वह अपने अपने आप से प्रेम करता है”।

स) प्रेम की पसंद

प्रेम सर्वश्रेष्ठ पसंद है। एक पुरुष के पास मसीह यीशु के ज़रिये परमेश्वर के प्रेम के प्रति दो संभव प्रतिक्रिया होती है। वह उसे स्वीकार या अस्वीकार कर सकता है। वह परमेश्वर के प्रेम से प्रभावित हो सकता है या फिर उसको दूर कर सकता है। अगर हम उनके प्रेम को ग्रहण करते हैं और प्रेम के लिए निर्धारित करते हैं, तो हम प्रेम करते हैं। जब हम उनके प्रेम को नकारते हैं, तब हमारी प्रतिक्रिया हमारी खुद की इच्छा, चाहत, और सामाजिक अपेक्षाओं के अनुसार आकार लेती है और हमारा हृदय कठोर हो जाता है।

(1) प्रेम के प्रकार

यूनानी भाषा में हमारे अंग्रेजी शब्द "प्रेम" के लिए तीन शब्द हैं। सिर्फ "अगापे" प्रेम ही एकमात्र ऐसा प्रेम है जो बिना कुछ वापस मिलने पर भी देने का स्वाभाव रखता है। अगापे प्रेम बिना परिस्थिति जाने ही दुसरो की ज़रूरत को पूरा करने के लिए जिम्मेदारी को प्रति क्रिया देता है। किस प्रकार के प्रेम पर आपका विवाह चलता है?

नया नियम ने परमेश्वर के दयालु प्रेम को वर्णन करने के लिए यूनानी शब्द अगापे का उपयोग किया है। जिसमें पति द्वारा अपनी पत्नी को निरंतर प्रेम करने के लिए मजबूर किया है। वह हर किसी को उस समर्पण के साथ प्रेम नहीं कर सकता।

विवाह का निर्माण!

वह अपने आप को अपनी पत्नी से प्रेम के प्रति एक खास प्रकार के विवाहित सन्दर्भ में प्रतिबद्ध करता है। यूनानी शब्द "एरोस" एक भावुक प्रेम का वर्णन करता है जो अक्सर यौन सम्बन्ध में इस्तेमाल होता है (अंग्रेजी शब्द 'इरोटिक' का ध्यान रखे जिसका मतलब 'कामुक' होता है)। 'फिलिआ' दूसरी तरफ दुविधिक प्रेम को दर्शाता है, "आप मेरे लिए अच्छे हो और इसलिए मैं आपके लिए अच्छा हूँ।" इस प्रकार के प्रेम को हम अपने परिवार में या फिर अपने दोस्तों के बीच देख सकते हैं।

3 प्रेम:	अगापे	फिलिआ	एरोस
विवरण	बेशर्त प्रेम	सामाजिक प्रेम	कामुक प्रेम
मानसिकता	प्रेम प्रतिबद्धता के कारण	प्रेम जैसे प्यार किया गया	प्रेम को पाने के लिए प्रेम
उत्तेजित करना	परमेश्वर की आज्ञा और दूसरी ज़रूरतों से उत्तेजना	दूसरों की अपेक्षाओं से उत्तेजना	अभिलाषा और स्वयं आनंद से उत्तेजना
हृदय	बलिदान देने के स्वेच्छा	बराबर हिसाब रखने की कोशिश करना	दूसरों का बलिदान देना

आईये देखते हैं कि ये प्रेम के प्रकार किस तरह विवाह को अकार देते हैं। विवाह तीन प्रकार के प्रेम के आधार पर बना है

1. विवाह वासना पर निर्मित

वासना-उन्मुख उत्साह जो कामुक विवाह प्रदान करता है बहुत जल्दी धूल जाता है। वह लोग जो अपने विवाह को यौन उत्साह पर आधारित रखते हैं वह बहुत जल्दी और भी उत्साह को ढूँढ़ते हैं। यह चाहत पुरुष और स्त्री को वो सब कुछ करने पर मजबूर कर देती है जिसे उन्होंने कभी ना करना चाहा था। हालाँकि, उनका उत्साह बहुत जल्दी गुजर जाता है जैसी ही उत्साहपन खत्म होता है। जब अभद्रता निर्मित

होती है, तब घर पर मस्ती संभव नहीं हो पाती। जो भी वह कर रहे हैं उसके लिए फिर कोई नयी जगह ढूँढ़ते हैं।

2. अपेक्षित दयालुता पर निर्मित विवाह

फिलिआ प्रेम बहुत जल्दी से फीका पड़ जाता है परन्तु उतना जल्दी नहीं जितना कामुख्य प्रेम पड़ जाता है। एक पति अपनी पत्नी से प्रेम इस आशा में करता है कि उसको भी वैसा ही प्रेम मिलेगा। एक दूसरे के प्रति दयालु होने कि वजह से इस उपकरण का लाभ लम्बे समय तक के लिए मिलता है। समस्या ये है कि हम सब पापी प्राणी हैं। यह प्रक्रिया बहुत जल्दी नकारात्मक हो जाती है जब मेरा जीवनसाथी मेरे इशारों के प्रति उदारता से प्रतिउत्तर नहीं देता। अगर मेरे जीवनसाथी से मुझे मतलब है, तो क्या मैं भी उसके साथ वैसा ही दरिद्रपन करूँगा? यह कहाँ जाके खत्म होगा? अगर मेरा व्यवहार मेरे जीवनसाथी के प्रति उसके बर्ताव के अनुसार होगा तो, मृत्यु के प्रति एक धीमी गति शुरू हो जाएगी। हमारे पापी स्वाभाव कि वजह से, हमें ऐसे प्रेम कि आवश्यकता है जो दूसरे के बर्ताव के ऊपर निर्भर न हो।

3. वाचा प्रेम पर निर्मित विवाह

हमारे प्रतिबद्धता कि वजह से अगापे प्रेम (वाचा प्रेम) प्रेम के प्रति सहमत है। हमने प्रेम किया क्योंकि हमें ऐसा करने के लिए आज्ञा मिली है। सिर्फ परमेश्वर का प्रेम ही हमारे लिए पर्याप्त है। अगापे प्रेम के लिए प्रेम का स्रोत परमेश्वर का प्रेम ही है। मसीह ने हमसे पहले प्रेम किया। इस संसार में वह प्रेम का स्रोत है। जितना ज्यादा साफ़ रीती से पति इस बलिदानिक प्रेम के लिए प्रतिबद्ध होगा, उतना ही मजबूत उसका प्रेम होता जायेगा। इस प्रेम कि गहराई पुराने नियम में शब्द "प्रेमकरुणा" (इब्रानी युष्मेसेद) के द्वारा भी समझाई गई है। यह है वाचा के अनुसार प्रेम। मैंने प्रेम किया है क्योंकि मैं उसके लिए प्रतिबद्ध हूँ।

(2) प्रेम कि आवश्यकता

पतियों को प्रेम करने के लिए कहा गया है क्योंकि उनको स्वयं-उन्मुख तरीको (हम सब हैं) में रहने का खतरा होता है। पत्नी के गौरवशाली अवस्था को उपजाऊ

विवाह का निर्माण!

बनाने के लिए प्रेम कि बहुत आवश्यकता है। प्रेम में प्रेरित करने कि समर्थ है इसके बावजूद ये जाने बिना कि सामने वाला मनुष्य किस प्रकार का प्रति उत्तर हमें देगा।

बहुत से किस्सों में हमें यह प्रतीत होता है कि हमारी पत्नियां इस प्रकार के कृत्यों के लायक नहीं है। यह संभवतः एक दम सत्य है। परन्तु यह युग अनुग्रह का है ना कि न्याय का। हमें मसीह को अनुयाई करने के लिए बुलाया है, ना कि न्याय में खड़ा होने के लिए। जबकि फैसला करना परमेश्वर का कर्तव्य है और क्षमा मनुष्य कि जिम्मेदारी है। दया और कृपा कि जिन्दगी जीने के लिए हम अनुग्रह कि कामना करते हैं। हमारा फ़र्ज और कर्तव्य दुसरो के साथ जैसा व्यवहार करने के लिए कहा गया है वैसा ही होना चाहिए क्योंकि वह भी परमेश्वर कि छवि में बनाये गए है।

“हे प्रियो, हम आपस में प्रेम रखें; क्योंकि प्रेम परमेश्वर से है; और जो कोई प्रेम करता है, परमेश्वर से जन्मा है और परमेश्वर को जनता है”। (1 यहून्ना 4:7)

विवाह में इस बेशर्त प्रेम का इज़हार करने लिए बहुत से अवसर होते हैं। कई बार यह सोचने वाली बात होती है कि किस प्रकार खाली समय को बिताएं। क्या वह अपनी पत्नी के साथ बातचीत के एक हिस्से को खर्च करने के लिए चुनता है? क्या वह अपने आकर्षण को उसमें उत्साह के द्वारा प्रदर्शित करता है? अवसर लाजमी प्रेम करने के लिए। हमें यह नहीं सोचना चाहिए कि इस प्रेम को सिर्फ बिस्तर पर ही प्रदर्शित किया जा सकता है! प्रेम हमेशा से यह चाहता है कि हम अपनी पत्नी कि इच्छाओ के प्रति संवेदनशील रहे।

(3) प्रेम कि परीक्षा

विवाह एक उत्कृष्ट प्रशिक्षण केंद्र बन गया है जहाँ ईमानदारी और प्रेम कि गहराई का पता चलता है। दिन के बाद दिन, रात के बाद रात, पतियों को यह अवसर मिलता है कि वह अपनी पत्नी से प्रेम करे। विवाहित जीवन प्रेम का स्तर तेज़ी से विकसित करता है जिसके प्रति एक गहन स्थिति पैदा हो जाती है। हमारी पत्नी के प्रति हमारे प्रेम को प्रदर्शित करने के लिए हमारे पास बहुत से व्यवहारिक अवसर होते हैं। बच्चा रो रहा है और हमारी पत्नी शक्तिहीन हो चुकी है। हमें प्रसन्नतापूर्वक अपने कार्य को छोड़कर बच्चे को सम्भालना है। यद्यपि अगर हम प्रेम

करने कि हमारी जिम्मेदारी से मुह मोड़ लेते हैं तो, हम कड़वेपन के बुरे चक्र को उत्तेजित करते हैं जिसकी वजह से हमारा विवाह डूब भी सकता है। घृणा तेजी से बाद सकती है अगर हम अपने प्रेम में उद्देश्यपूर्ण नहीं हैं।

(4) प्रेम का स्रोत

हमारे अंदर स्वाभाविक रूप से प्रेम के लिए इस प्रकार कि धरना नहीं है। स्व-प्रेम दूसरे प्रेम के साथ हस्तक्षेप करता है। प्रेम के उदाहरण को आस-पास कि परिस्थिति जैसे कि अच्छे माता-पिता का उदाहरण से समझा जाना चाहिए। बिना मसीह के हम बेशर्त प्रेम नहीं कर सकते हैं। जब एक मनुष्य मसीही को ग्रहण करता है, परमेश्वर का प्रेम उसके अंदर प्रत्यारोपित हो जाता है। परमेश्वर कि संतान होने के रूप में, पति परमेश्वर अपनी पत्नी से प्रेम के लिए परेश्वर के उदाहरण और उनकी सामर्थ को आकर्षित करने में सक्षम है जिस प्रकार मसीह ने अपनी कलीसिया से प्रेम किया। यह ईश्वरीय प्रेम मसीही जीवन जीने के लिए इतना आवश्यक है कि परमेश्वर ने कहा कि अगर हमारे अंदर प्रेम नहीं, तो हम उसमें से नहीं।

"यदि कोई कहे, "मैं परमेश्वर से प्रेम रखता हूँ," और अपने भाई से बैर रखे तो वह झूठा है; क्योंकि जो अपने भाई से जिसे उसने देखा है प्रेम नहीं रखता, तो वह परमेश्वर से भी जिसे उसने नहीं देखा प्रेम नहीं रख सकता। उससे हमें यह आज्ञा मिली है, कि जो कोई परमेश्वर से प्रेम रखता है वह अपने भाई से भी प्रेम रखे। 1यहुन्ना 4:20-21

(5) क्षमा और प्रेम

प्रेम का अर्थ हमें दुसरो को क्षमा करना है। हम हमारी पत्नियों को परमेश्वर से क्षमा अनुदान नहीं कर सकते। सिर्फ परमेश्वर ही ऐसा कर सकते हैं। जब एक मनुष्य दूसरे के साथ गलत करता है, वह नैतिक ऋणी हो जाता है। उसने अच्छे और सही प्रक्रिया से उसको वापस खीच लिया जिसका वह हकदार था (इस मामले में उसके साथी को)। जब तक ऋण उन दोनों के बीच खड़ा है, रिश्ते में सभी प्रकार के अविश्वास को सहना पड़ेगा। परन्तु, अगर हम क्षमा करते हैं, तब हम उस नैतिक ऋण से रिहा हो जायेंगे जो उस मनुष्य का है। हम हमारे रिश्तो में विश्वास विकसित करने के लिए प्रयास कर सकते हैं। हमें दुसरो के साथ बदला लेने के बजाए दयालुता से पेश आने का निर्णय लेना चाहिए।

विवाह का निर्माण!

- ❖ हमें क्षमा करना है जैसे मसीह ने क्षमा किया।
- ❖ हमें स्वीकार करना है जैसे मसीह ने स्वीकार किया है।
- ❖ हमें आशा रखनी है जैसे मसीह ने आशा दिखाई।

(6) धीरज और प्रेम

प्रेम यह चाहता है की हम अपनी दुसरो के खातिर अपनी प्राथमिकताएं एक तरफ रख दे। यह विवाह में कितना सच्च है। हमारे साथी को क्या पसंद है इस बात का खास ध्यान करीबी से रखा जाता है। इसका अर्थ यह है की हम धीरज से इंतज़ार करते हैं। इसका मतलब यह भी हो सकता है कि शायद वह आदर-सत्कार न मिले जो हमें रसोई या शयनकक्ष में पसंद है। हमें बड़ी कोमलता से अपनी ज़रूरत को जिससे हम प्यार करते हैं तक पहुंचा देना है, परन्तु हमें बड़े धीरज के साथ अपनी पत्नियों को सही तरीके से उत्तर देने के लिए उत्साहित और प्रशिक्षित करना चाहिए। परिवर्तन आ सकते हैं, गहरे संघर्ष अक्सर मुद्दों के पीछे होते हैं, और हमको धीरज रखना है।

यहाँ होने कि हमारी प्राथमिक वजह प्रेम है। अगर मैं अपने सबसे अच्छे दोस्त को प्रसन्न कर सकूँ तो, मैं वास्तव में खुश हूँ। वासना बहुत गन्दा धब्बेदार रस्ते को बनता है क्योंकि वह स्वयं पर केंद्रित है। जब स्वार्थीपन प्रबल होना चाहता है तब वहां स्वयं कि इच्छा या चाहत के अलावा कोई संवेदनशीलता नहीं होती है! जब हमारा मन इस बात पर कार्य कर रहा है कि हम अपनी चाहतों को किस प्रकार बेहतर संतुष्ट करें, हम और भी उपलब्ध करने के लिए रास्ते को तैयार कर रहे हैं! हम और भी ज़्यादा देने के बारे में नहीं सोच रहे हैं।

प्रेम धीरज है। प्रेम का मतलब यह है कि कभी कभी हमको वापस से प्यार नहीं किया जा रहा है। प्रेम करने का मतलब है कि कभी कभी हमें लम्बे समय का इंतज़ार करना पद सकता है। पुराने नियम का कानून आज्ञा देता है कि पत्नी के मासिक धर्म या बच्चे के पैदा होने के एक अवधि के दौरान किसी भी प्रकार का

वैवाहिक सम्बन्ध नहीं होना चाहिए।¹⁰ इस समय के दौरान क्या आप अपने मन और शरीर को भटकने देंगे? या आप अपने आत्म नियंत्रण का उपयोग करके अपनी पत्नी के प्रति वफादार रहने का समर्पण देंगे?

“पर अशुद्ध और बुढ़ियो कि सी कहानियो से अलग रहे; और भक्ति कि साधना कर। क्योंकि देह कि साधना से काम लाभ होता है, पर भक्ति सब बातो के लिए लाभदायक है, क्योंकि इस समय के और आने वाले जीवन कि भी प्रतिज्ञा इसी के लिए है।” (1 तिमोथी 4:7-8)

प्रेम आत्मा-नियंत्रण रखता है क्योंकि उसके द्वारा हम परमेश्वर के प्रेम को प्रकट कर सकते हैं। मसीह में हम एक गहरे और आवश्यक शक्ति को हमारे जीवन के लिए खोजते हैं ताकि दुसरो की अनुकम्पित रूप से देखभाल कर सके, खास तौर से अपनी पत्नियों के लिए। यह अगापे प्रेम का स्वाभाव उस नए जीवन से पैदा हुआ है जिसे हमने मसीह में उद्धार के द्वारा पाया है।

सारांश

जब हम अगापे प्रेम से प्रेरित हुए हैं, तब हम हमारी पत्नियों को परमेश्वर की दया का वितरण करने के लिए समर्पित कर रहे हैं। हम परमेश्वर पर भरोसा करते हैं ताकि वह हमारी ज़रूरत और चाहतो का ध्यान रखें।¹¹

हमारा साथी शायद थक गया होगा, गर्भ से है, मतलबी है, बीमार है, या साधारण रूप से भटक गया या गई है। हम फिर भी उसकी चाहतो को पूरा करने का प्रयास करते हैं। हम प्रार्थना करते हैं, मदद करते हैं, उत्साहित करते हैं, फूलों को खरीदते हैं, आदि। हमारा लक्ष्य योन सम्बन्ध बनाना नहीं परन्तु हमारी पत्नी की खास ज़रूरतों को पूरा करने की ओर केंद्रित होना चाहिए।

¹⁰ देखें लैव्यवस्था 12: 1-6; 18:19; 20:18। हम यह नहीं कहते कि यह नियम उद्धार के लिये जरूरी है। हालांकि, हम आश्चर्य करते हैं कि परमेश्वर ने इन नियमों को महिलाओं के जीवन में अच्छे स्वास्थ्य पद्धतियों के निर्माण के लिये संकेत किया है। शायद वे महिलाओं का गर्भपात से महत्वपूर्ण ध्यान रखते हैं, खमीर संक्रमण और मदद एक के बाद एक जल्दी होने वाले बच्चों के खतरों से बचाता है।

¹¹ कभी कभी हमारी ज़रूरतों के साथ परमेश्वर पर भरोसा रखना अपने आप में यह व्यक्त करता है कि परमेश्वर के सामने रोना। याद रखें कि परमेश्वर विश्वासयोग्य है। वो कभी आपको ऐसी परिस्थितियों में नहीं डालेगा जहाँ पर उसका अनुग्रह आपके लिये काफी न हो। देखें 1 कुरि 10:13।

व्यक्तिगत आवेदन

- प्रेम तीन प्रकार के होते हैं। क्या आप अपने साथी को उसकी प्रक्रिया (फिलिआ) व्यक्तिगत इनाम (एरोस) या फिर पुकारने (अगापे) के आधार पर प्रतिक्रिया देते हैं? मूल्यांकन करें की किस प्रकार के प्रेम के साथ आप जीते हैं कम से कम तीन अलग-अलग प्रकार के संदर्भों के बारे में जब आप अपने आप को अपने साथी के साथ जोड़ते हैं (उदाहरण:- घर आना, जल्दी उठना, शाम, शयनकक्ष, आदि)।
- तनाव और परीक्षण के समय आपका प्रेम अपने आप प्रकट होता है। आप अपने साथी को किस प्रकार प्रतिक्रिया देंगे जब चीज़े सही नहीं हैं? क्या आपके शब्द दयालु और प्रेमी हैं? क्या आप डरे हुए हैं? एक बार फिर से सोचिये, की किस प्रकार का प्रेम उन तर्कों के बीच कार्य कर रहा है? किस प्रकार आपकी प्रतिक्रिया संचार पर प्रभाव डालती है? एक उदाहरण दें।
- उपरोक्त प्रश्नों के आधार पर, उन क्षेत्रों का निरीक्षण करें जहाँ पर आप अगापे प्रेम का उपयोग नहीं कर रहे हैं। उनको प्रभु के पास प्राथना में लेके आएँ और अगर संभव हो तो, अपने जीवन साथी के साथ शांतिमय रूप से आप जिन बातों में बढ़ना चाहते हैं संचार करें।

द) बेशर्त प्रेम पर आधारित प्रश्न

बहुत सारे प्रश्न सामने आते हैं जब बेशर्त प्रेम के बारे में बात होती है की किस प्रकार यह प्रेम व्यावहारिक रूप से किसी भी विवाह में कार्य करता है। अगर इन प्रश्नों का सामना नहीं किया गया, तो यह अक्सर ठोकर खाने की वजह बन जाते हैं।

हम अलग प्रकार के प्रेम द्वारा जीने की सफाई पेश करते हैं जो की परमेश्वर का प्रेम बिलकुल भी नहीं है। अगर हम वह पुरुष बनने जा रहे हैं जो परमेश्वर के प्रेम के साथ अपने विवाह में जीता है, तो हमें किसी भी प्रकार के संदेह को आने की अनुमति नहीं देनी चाहिए जो हमें हमारी प्रतिबद्धता से विचलित करने के लिए दुष्ट द्वारा इस्तेमाल किया जाना है।

1) पति के बारे में क्या? वह किस प्रकार अपने आप की पूर्ती करेगा?

पूर्ण प्रश्न यह है, "तो क्या अगर पति अपनी पत्नी से भक्तिपूर्वक प्रेम करता है, और वह साधारण रूप से उसकी ज़रूरतों को पूरा नहीं करती है?" यह एक डर को जन्म देती है। अगर वो प्रेम करता है और उसको वही प्रेम वापस न मिले, तब क्या? वह सिर्फ देता ही देता चला जाता है और उसके बदले कुछ भी हासिल नहीं कर पता। संभवतः उसके इन बुरे क्षणों में वह शायद अपनी सोच में दूर तक जा सकता है, "परमेश्वर कभी भी इस प्रकार की दुखित बुरी स्थिति पैदा नहीं करते, और किसी वजह से अगर ऐसा करते भी है तो, मैं उसका हिस्सा नहीं बनूँगा।"

जब कोई व्यक्ति ऐसा प्रश्न पूछता है तो बेहद उसके विश्वास में कमी है। अगर सही रीती से संभाला नहीं गया तो वह अंततः और स्वार्थीपूर्वक अपनी विवाह प्रतिज्ञा को वापस ले लेगा। उसके पास ज़रूरी विश्वास नहीं है परमेश्वर की बनायीं सृष्टि पर विश्वास करने के लिए। परमेश्वर ने मनुष्य के देखभाल के लिए वायदा किया है जब तक वह उनकी आज्ञा को मानता रहे। याद रहे किस प्रकार यीशु को अपने पिता पर भरोसा था कि उनका प्रेम क्रूस पर बेअसर नहीं होगा। जब तक हम प्रेम कि मांग करते हैं, तब तक हम उसको हासिल नहीं कर सकते! निचे दिए गए नक्शे में बताया गया है कि किस प्रकार विश्वास में कमी स्वार्थीपन में बदल जाती है।

विश्वास में कमी	प्रतिबद्धता वापस लेना	स्वार्थीपन
वह विश्वास नहीं करता कि परमेश्वर के तरीके अंततः सबसे अच्छे हैं इसके बावजूद कि वो अपने आप को किन परिस्थितियों में पाता है।	अपनी शंका कि वजह से वह अपनी प्रतिबद्धता पर बना रहा।	क्योंकि उसको परमेश्वर के प्रेम और उनकी मदद पर यकीन नहीं था, उसने उनके "प्रेम" को अपना प्रेम पाने के लिए इस्तेमाल किया। फिर यह प्यार नहीं कहलाया जाएगा!

2) क्या मैं वास्तव में प्रेम कर सकता हूँ इसके बावजूद कि यदि मैं प्रेम नहीं किया गया?

आधुनिक मनोविज्ञान ने उनके अंदर भय डाला है जिन्होंने उसका सामना किया। यह दृश्य इस बात को दर्शाता है कि यदि हमारी बुनियादी ज़रूरतों को पूरा नहीं किया गया तो हम भी दूसरों कि चिंता नहीं कर सकते। इस तरह का मानसिक आरक्षण व्यक्ति को प्यार की ज़रूरत कि प्रतिबद्धता से पीछे रखता है। सोच का यह पथ किसी की वासना में लिप्त होने का एक आसान बहाना बन जाता है। "यदि वह मुझे संतुष्ट नहीं कर सकती, तो मुझे अपनी निजी ज़रूरतों को पूरा करने के लिए दूसरा रास्ता अपनाना होगा"। हांलाकि यह अवलोकन समझ आ भी जाए, तोभी यह परमेश्वर के नियम के विपरीत है। इसका कारण स्पष्ट है।

पुरुषों को रचा गया की वे दे सकें। पत्नियों को रचा गया की वे प्यार में अपने आप को सौंप दें। देने के द्वारा परमेश्वर पतियों की ज़रूरतों का खयाल रखेगा। यह प्यार और विश्वास की ताकत है। एक पति का प्यार पत्नी की प्रतिक्रिया पे निर्भर नहीं करता। यदि एक पति प्यार करने के विश्वास में कदम नहीं बढ़ाएगा तो वह वासना के भय में खींचा जाएगा। बाईबल में पत्नियों को प्यार करने के लिए पतियों को दी गयी आज्ञा से इस भय को दूर करना होगा। यदि हम परमेश्वर का भय किसी भी चीज़ से ज़्यादा रखते हैं तो बावजूद इस संदेह के कि कोई विशेष परिस्थिति कैसी होगी, हम उसकी आज्ञा मानते हैं।

मुझे याद है कई बार मैंने चुपके से और चुपचाप परमेश्वर से कहा कि मैं अपनी पत्नी के साथ धीरज रख सकूँ। या तो वो मूड में नहीं थी या फिर कोई निजी संघर्ष से गुजर रही थी। मैं अपनी ज़रूरतों को परमेश्वर के पास लाया। कई बार एक ही दिन में चमत्कारिक रूप से परमेश्वर ने अपने ही तरीके से उसे हिम्मत दी। मुझे बस परमेश्वर पर भरोसा रखने कि ज़रूरत थी। इस प्रकार पूर्ती प्रथम नहीं होती। बावजूद इसके कि मुझे कुछ न सूझे कि यह कैसे मुमकिन है, प्यार प्रथम होता है। यह समर्पित प्रेम है।

3) क्या पत्नी को प्यार करने कि ज़रूरत नहीं?!

पति का अपनी पत्नी को प्यार करने कि ज़िम्मेदारी के बारे में विस्तृत जानकारी लेने के बाद, पति चिंता करना शुरू कर सकता है। कई मामलों में, पति इस बात से सहमत होता है कि विवाह में सुधार लाने के लिए पत्नी का बदलना ज़रूरी है। तो पति पूछता है, "पत्नी का प्यार के दायित्व के बारे में क्या?"

सबसे प्रथम हमें इस बात को समझना होगा कि भले ही हमारी पत्नियां हमें बदले में प्यार न दें, हमारी उन्हें प्यार करने कि प्रतिबद्धता नहीं बदलती। बेशक हम सब चाहते हैं कि हमारी पत्नियां हमें स्नेहपूर्वक प्यार करें। यह हमारी ज़िन्दगी को और भी ज्यादा खुशनुमा बनाता है। आखिरकार क्या हम एक अच्छी शादी का निर्माण नहीं कर रहे ? विभिन्न समयों में, हालांकि हमें यही प्यार वापस न मिले (यह स्नेहपूर्वक प्यार कि धारणा का इस्तेमाल करना है)। हमें समझ बूझकर अगापे प्यार में अपने आपको संलग्न करने कि ज़रूरत है। अगापे प्यार के बिना हम एक अच्छी शादी कि ओर नहीं पहुंच सकते। हरेक विश्वासी परमेश्वर के अद्भुत अनुग्रह और सामर्थ से व्यवहारिक रूप से इस प्यार को पसीज सकता है। ध्यान दें कि किस रीति से प्रेरित पौलुस ने हरेक विश्वासी को निर्देश दिया कि वह एक दूसरे से प्यार करने के सौभाग्य में संलग्न रहे।

"इसलिए परमेश्वर के चुने हुआं कि नाई जो पवित्र और प्रिय हैं, बड़ी करुणा, और भलाई, और दीनता, और नम्रता, और सहनशीलता धारण करो। और यदि किसी को किसी पर दोष देने को कोई कारण हो, तो एक दूसरे कि सेह लो, और एक दूसरे के अपराध क्षमा करो; जैसे प्रभु ने तुम्हारे अपराध क्षमा किये, वैसे ही तुम भी करो। और इन सब के ऊपर प्रेम को जो सिद्धता का कटिबन्ध है बाँध लो" (1कुलुसियों 3:12-14)

दूसरा, यहाँ हम सबके लिए जीवन का एक सत्य है: आदमी और औरत, अविवाहित और विवाहित। हमें इसे भूलना नहीं चाहिए। परमेश्वर ने विवाह को बनाया कि हम सब अपने आप को परमेश्वर के उस बिना शर्त के प्रेम से परिचित हो सकें।¹² यह सोचकर कि उसे अपने पति से प्यार करने कि ज़रूरत नहीं है, पत्नी को दूर नहीं जाना चाहिए। यीशु कि शिक्षा से हम ये सीखते हैं कि हम सबको एक दुसरे

¹² क्रमानुसार उस प्रेम की ओर बढ़ने के लिये हमें अक्सर समय के साथ परिवर्तन की आवश्यकता होती है। परमेश्वर पत्नी को हमें दण्ड देने के लिये इस्तेमाल करता है।

से भक्तिपूर्वक प्रेम करना चाहिए। सच्चाई यह है कि हम सब प्रेम करने के लिए बुलाए गए हैं।

तीव्र और करीबी शादी कि वजह से पुरुषों को एक चुनौती होती है कि वे उच्च और अधिक समर्पित होके प्यार करें। इसी अगापे प्यार कि मदद से पुरुष अपने वैवाहिक जीवन को परमेश्वर के अद्भुत प्यार से भर सकता है। अगर हम पानी में नीला रंग डालें, तो हमें यह आशा होती है कि हम पानी का रंग नीला ही देखें। यही परमेश्वर के सत्य प्रेम कि तरह है। जब हम अगापे प्यार को हमारे वैवाहिक जीवन में जोड़ते हैं तो हम सही समय में परमेश्वर के तेजस्वी प्यार का स्पर्श देखेंगे।

4) क्यों पुरुष मसीह द्वारा परमेश्वर के प्रेम का उदाहरण का अनुसरण करने में धीमे है?

पुरुषों के रूप में पृथ्वी के लिए यह एक उपयोगी प्रश्न है। पुरुष तो धीरे-धीरे सीखते हैं। समस्या यह है की हम में से किसी ने भी अपने पितृ द्वारा कोई भी उदाहरण प्रस्तुत नहीं किया है पुरुष तो धीरे-धीरे सीखते हैं। दूसरी समस्या यह है कि हम अपने पिता परमेश्वर के साथ गहरे रिश्ते को बनाने के लिए तवज़्जो देने में धीमे हो जाते है। इस रिश्ते के माध्यम से हम परमेश्वर के महान प्रेम के साथ उनको जानने और उनकी आज्ञाओं को मैंने के द्वारा खुद को परिचित करा सकते हैं।

कितनी बार परमेश्वर को उनके प्रेम के प्रति हमें आश्वस्त करने के लिए विशेष रूप से मदद, मार्गदर्श न, शक्ति, और सुरक्षा प्रदान करनी पड़ेगी? क्या हम भुलक्कड़, ज़िद्दी और अविश्वासी नहीं है? उनका प्रेम सिद्धांतों पर आधारित है ना कि हमारी योग्यता पर।

उनकी देयता ने पृथ्वी पर प्रेम में एक गति प्रदान की है। परमेश्वर का ईश्वरीय प्रेम मसीह द्वारा अगापे प्रेम का उदात्त उदाहरण है जो की हमारे ठन्डे दिलों को महान रूप से प्रभावित कर सकता है। हर एक पति इस बलिदानी प्रेम को अपनी पत्नी के प्रति दोहराने के लिए बुलाया गया है। इफिसियो 5:33 कहता है, "पर तुम में से हर एक अपनी पत्नी से अपने सामान प्रेम रखे"...

प्यार करने का आदेश पतियों को दिया गया है ताकि अगर वह प्रेम को महसूस ना करे, फिर भी वह उसको महसूस करे।

5) किस प्रकार प्रेम वासना से सम्बंधित है?

चूँकि, प्रेम मसीहो के लिए शासक अभिकर्ता है, यह प्रेम है जिसको सामान्य रूप से पुरुषो की विचारधाराओं को महिलाओं के प्रति अकार देने की आवश्यकता है। अगापे प्रेम सिर्फ धैर्य बने रहने में नहीं दर्शाया गया है की एक वृद्ध व्यक्ति को चार पहिया वाहन तक पहुँचाया जाए वरन इसी प्रकार की सोच एक महिला के बारे में भी होनी चाहिए। महिलाएं सिर्फ एकल विचार धारा में नहीं सोची जानी चाहिए कि वह किस प्रकार पुरुषो की योन इच्छाओं को पूरा कर सके। नहीं, बिलकुल नहीं। यह हमारा देह है जूनून के साथ।

देह आत्मा के विपरीत चलता है (गलतियों 5 का अंत देखे)। प्रेम का अर्थ इस सन्दर्भ में यह है कि हम जिस महिला को देख रहे हैं उसके बारे में यौन भावना कि विचारधारा से जानबूझकर परे रहे। परमेश्वर ने वह स्त्री किसी और पुरुष के लिए रखी है। उस स्त्री को परमेश्वर ने हमारे लिये नहीं रखा है।¹³ प्रेम इस बात का सम्मान करता है। हम दूर खड़े होकर सामान्य रूप से उसके भविष्य के पति के लिए प्रार्थना करें। यहाँ तक कि एकल पुरुष को भी वासना के बजाये प्रेम के सिद्धांत पर चलने की आवश्यकता है। वासना चाहत पर निर्मित है और वास्तविक प्रेम के विपरीत है। यौन पवित्रता के प्रति मज़बूत प्रतिबद्धता एक युवक के जीवन में परमेश्वर के प्रति प्रेम विकसित कर सकता है। यदि आप अपने जीवन से परमेश्वर के प्रेम को दर्शाते हैं, तो आपको एक यौन शुद्ध जीवन जीने की आवश्यकता है।

जब एकल युवा पुरुष प्रेम के अनुसार अपना जीवन जीने के लिए चुनता है तब हितलाभ विकसित होता है। तब वह स्पष्ट रूप से अपने साथी की पहचान कर पाते हैं जिनसे उन्हें विवाह करना है! वह बाहरी दिखावे से धोखा नहीं खाते। वह ईश्वरीय गुणों को तलाशते हैं। इस बात का ध्यान रखा जाए की यदि हम पहले से ही अपने आप को प्रशिक्षित नहीं करते तो हमें विवाह के बाद और भी अधिक कठिन प्रशिक्षण की आवश्यकता पद सकती है।

¹³ यहाँ एक साधारण सा परिक्षण है। अपने आप से पूछे, “क्या हम शर्मिन्दा होंगे यदि कोई हमारे सच्चे विचार को जानता हो दूसरों के प्रति?” अगर बुरे विचार आये, तब उन्हें एक तरफ रख कर उसके बजाय बेहतर बातों को करने क चयन करें।

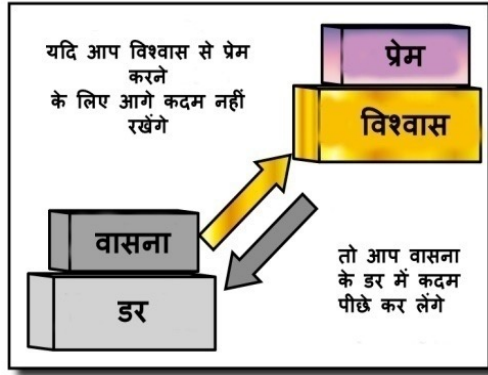
6) किस प्रकार प्रेम की यह आज्ञा एक विवाहित पुरुष के यौन वासना से सम्बंधित है?

अंत में, चुनावों प्रेम और वासना के बीच होता है या और भी स्पष्ट रूप से परमेश्वर और स्वयं के बीच। विवाह ने हमको वासना से लड़ने के लिए किस प्रकार के प्रेम की आवश्यकता है सीखने में मदद करी है। यदि हम प्रेम करते हैं तो हम वासना के शिकार नहीं होंगे। हम अपने अभिलाषाओं की तरह नहीं हैं। हमें उसकी उग्रता से खदेड़ दिया जाएगा। यद्यपि, अगर हम प्रेम और प्रेम के स्रोत (परमेश्वर) का चुनाव नहीं करते हैं तो हम अभिलाषा में पद जायेंगे।

एक महान विवाह किसी भी प्रकार की आकर्षित चित्रों और फिल्मों को बर्दाश्त नहीं करती। क्यों? वे वासना कारखाने के लिए ईंधन हैं। वासनिक विचारों की सहनशीलता से यह प्रकट होता है कि पति अपनी पत्नी से प्रेम नहीं कर रहा। सच्चा प्रेम एक पुरुष के जीवन में पूर्ण संतोष को खोजता है। हमारी पत्नी उग्रदराज हो सकती है। संतुष्टि पाने के लिए हम कहीं और जाने के लिए परीक्षित हो सकते हैं। यही समय होता है जब हमें अपनी पत्नी के प्रति उस अगापे प्रेम कि प्रतिबद्धता को हमारे अंदर एक बार फिर से जगाना होगा (कामुख प्रेम असफल होगा)।

हो सकता है कि हमको अपना व्यवहार पहले कि तुलना में बेहतर लगे, हमें अपने आप को मुख नहीं बनाना चाहिए। थोड़ी सी अश्लील साहित्य और थोड़े से वासनिक विचार बहुत अच्छे नहीं हैं! हम सुधार की तरफ नहीं बढ़ते परन्तु उन्मूलन के ओर बढ़ते हैं।

इस प्रकार के अपूर्ण सुधार हमें खतरनाक पानी के बहाव में खीच सकते हैं।



जब हम प्यार करें, तो यह ज्ञात हो की अभिलाषा के लिए कोई जगह नहीं है। परन्तु समानता से, यदि हम वासना करे, तो कोई प्रेम नहीं है।

7) मुझे क्या करने की आवश्यकता है जब मेरी पत्नी नहीं सोचती कि मैं उससे प्रेम करता हूँ?

कई विवाह अच्छे नहीं हैं। अविश्वास विकसित हो गया है। परमेश्वर की आज्ञा पति को अपनी पत्नी के प्रति प्रेम, रिश्तों के सुधार के लिए पूर्ण रूप से एक बेहतर सही कदम हो सकता है। स्वारथीपूर्ण समय के बाद, एक पत्नी आपके इरादों के प्रति थोड़ी सी उलझन में हो सकती है। वह उसी पल शायद जवाब ना दे पाए। आपके वास्तविक प्रेम में यह अविश्वास आगे चलके बर्बादी बन सकता है जिस प्रकार उसके पिता उसकी माता के साथ व्यवहार करते थे। उसकी सोच को नई आकृति प्रदान करने में समय लगेगा।

रक्षात्मक ना हो और ख़ास रीती से खेदित भी ना हो (इसी भावना की वजह से उसको प्रतीत होगा की आप उसको प्रेम नहीं करते)!! बस चुचाप उसको प्यार करते रहे। बेशर्त प्रेम करे। हमेशा के लिए प्रेम करे। प्रेम अब से आपके विचार और मस्तिष्क पर शासन करने जा रहा है। परन्तु एक मसीही होने के नाते आप सुनिश्चित कर सकते हैं की परमेश्वर आपकी मदद करने के लिए तत्पर हैं। बलिदान की आवश्यकता हो सकती है। अपनी पत्नी के लिए प्रेम में मरने और स्वेच्छा से देने के लिए तत्पर रहे। यह बेशर्त प्रेम एक महान विवाह कि हृदय कि धड़कन है।

8) क्या मेरा प्रेम पकड़ से बहार है?

यहाँ एक प्रकार का डर है जो एक पुरुष कि प्रतिबद्धता को चुरा सकता है। कुछ पति यह जानने कि इच्छा व्यक्त करते हैं कि "क्या इस प्रकार का प्रेम खत्म हो जाएगा यदि मुझे वापस किसी भी प्रकार का प्रोत्साहन मेरी पत्नी के द्वारा ना मिला तो?" यह व्यक्ति इस प्रकार के प्रेम को चाहता है परन्तु वह निश्चित नहीं है कि उसकी देखभाल के लिए उसके पास सब कुछ है। यह प्रश्न अच्छा है क्योंकि यह हमें याद दिलाता है कि पत्नी हमारे प्रेम का स्रोत नहीं है। शायद वह हमारे प्रेम के अनुभव को और भी रोमांचक और हृदयचस्प बना दे, परन्तु एक बार अगर वह हमारे प्रेम कि शक्ति या स्रोत बन गई तो इस बात को जान लें कि विवाह बहुत काम समय के लिए ही रहेगा।

लोग हमें हमेशा निराश करेंगे। हमें उनकी प्रतिक्रिया के अनुसार अपने निर्णय को नहीं लेना चाहिए। हमें सही निर्णय को लेना चाहिए कि किस प्रकार हम

परमेश्वर के वचन के अनुसार उस सच्चाई पर कार्य कर सकें। सम्भवतः वास्तविक प्रश्न यह है कि यदि हम परमेश्वर कि ओर से ज्ञान, शक्ति और प्रेम को सुनिश्चित कर सकें ताकि जिन लोगों को हम प्रेम करते हैं उनकी जरूरतों को पूरी कर सकें।

सच्चा प्रेम और विश्वास एक साथ आगे बढ़ते हैं। जब तक विवाह के लिए परमेश्वर के द्वारा बनाई सृष्टि पर भरोसा नहीं किया जाता, तब तक प्रेम भी नहीं किया जा सकता। उसको भरोसा करना होगा कि परमेश्वर किसी प्रकार से हमारे प्रेम का इस्तेमाल अपने महान उद्देश्य को पूरा करने के लिए करेंगे भले ही संकट के दौरान वह अस्पष्ट हो। डर पुरुष को अपनी पत्नी के प्रति प्रतिबद्धता को स्वयं पर ध्यान केंद्रित करते हुए भूलने पर मजबूर कर देता है। अब हम इस अगापे प्रेम को मजबूत करने पर अपने ध्यान को केंद्रित करेंगे।

इ) प्रेम के स्रोत: मनुष्य के रूप में परमेश्वर की सृष्टि

इस स्थायी प्रेम को बढ़ाने के दो स्रोत हैं: 1) परमेश्वर की सृष्टि और 2) परमेश्वर की बुलाहट

मनुष्य के रूप में परमेश्वर की सृष्टि

प्रेम का स्रोत उस परमेश्वर के ज्ञान से आता है कि किस प्रकार उन्होंने हमें मनुष्य के रूप में बनाया। आज हमारे पास बहुत सारे संदेह होने कि वजह इसलिए है क्योंकि हम आश्वस्त है कि हम प्रेम के निर्मित किये गए हैं। वास्तव में कई मनुष्यों के लिए तो यह कोई नई अवधारणा है। सांसारिक बातों द्वारा आश्वस्त होना बहुत आसान है जिस प्रकार हम विज्ञापनों में देखते हैं, जहाँ पैसे, वासना, या शराब हमारी पूर्ती कर रहे हैं। अकेलापन इन्ही सब सांसारिक वस्तुओं से आता है। जब कोई इनका अनुसरण करता है तभी इनका मनोरंजन किया जाता है परन्तु बाद में हमें समझ आता है कि यह वस्तुएँ हमारी पूर्ती नहीं कर सकती।

परमेश्वर को संतुष्टि तब होती है जब हम उनकी इच्छा को पूरी करते हैं। वह हमें इनाम, प्रोत्साहन, गरिमा और नए सिरे से ताकत की मजबूत भावना देते हैं। यह पूर्णता ही है। जब हम परमेश्वर के उद्देश्य को जो हमारे जीवनो के लिए है पूरा करते हैं तब संतुष्टि की भावना हमेंशा रहती है। जब एक चिड़चिड़ी, उदासी और संभवतः सम्भोग से विरक्त पत्नी को प्रेम करने की क्षमता पर बात आती है तो हमें अपनी

बुलाहट और सृष्टि को याद करने की आवश्यकता होती है। हमें यही करने की आवश्यकता है। परमेश्वर ने हमें इसी के लिए बनाया है। यह कार्य कैसे करेगा?

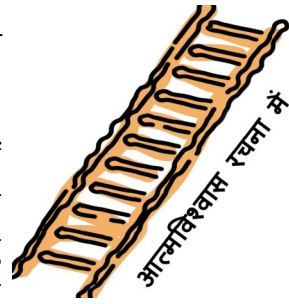
प्रेम वासना के विपरीत है। वासना में अस्थायी रूप से संतुष्टता होती है। फिर वह पूर्णता की चाहत बार-बार करती है। पुरुष बढ़ाई करते हैं, परन्तु क्या आपने पहले कभी किसी को सुना अपनी बढ़ाई करते हुए की बाद में उन्हें कितना बुरा लगा होगा?! कोई मौका नहीं। यह इसलिए क्योंकि दृश्यों में दुष्टता आ गई है।

प्रेम विपरीत है। कोई अच्छी प्रतिक्रिया ना मिलने के बावजूद प्रेम की पूर्ती हो रही है। क्यों? प्रेम दुनिया और हमारे जीवनों में बनाया गया आत्मिक जीवन सिद्धांत है। एक व्यक्ति को मात्र स्वयं को दूसरे को देने से पूर्णता की भावना की प्राप्ति होती है। प्रेम के लिए कार्यशक्ति देना है। दुसरो के खातिर स्वयं कि इच्छाओं को त्याग देने से और प्रेम के लिए और अधिक ईधन प्राप्त होता है।

जब मैं अपनी नाली को साफ़ करता हूँ, तो मुझे तीस फ़ीट से ऊपर तक कि सीढ़ी चढ़नी पड़ती है। हर बार जब मैं नीचे की ओर उतरता हूँ तब-तब सोचता हूँ कि यह मेरा आखरी बार चढ़ना है। किस प्रकार मैं बिना डर के जो मुझे लकवाग्रहस्थ कर सकता है चढ़ता हूँ?

- ◆ मैंने किसी और व्यक्ति को ऊँची सीढ़ी चढ़ते हुए देखा।
- ◆ उस सीढ़ी पर लिखे नियमों को पढ़ने के बाद मैं आश्वस्त हो गया कि यह सीढ़ी मेरा वज़न संभल सकती है।
- ◆ मुझे यह भी याद आया कि मैं पहले से उस सीढ़ी पर चढ़ा हुआ हूँ, और सही तरीके से सीढ़ी ने मुझे संभाला हुआ है।

यदि मुझे सीढ़ी पर भरोसा नहीं है तो, मैं उसको संग्रह घर में ही छोड़ देता। मैं किसी भी कीमत पर उस कार्य को पूर्णतः नकारता। परन्तु सीढ़ी कि बनावट पर भरोसे कि वजह से मैं वह काम करने के लिए मजबूर हो गया जिसको मैं कभी ना कर पता। महान विवाह मनुष्यों द्वारा बनाई गई है जो अज्ञात को परमेश्वर द्वारा निर्मित महान विवाह पर भरोसे कि वजह से चुनौती दे। हमारे पास संपूर्ण प्रेम नहीं है जिसकी ज़रूरत हमारे



विवाह का निर्माण!

जीवन को एक बार में है। परन्तु प्रेम को उँड़ेलने से ही और अधिक प्रेम उमड़ता है। दूर कर दिए गए? धीरज रखे रहे। नकार दिए गए? फिर से प्रेम कीजिये। फिर से दूर कर दिए गए? प्रेम जारी रखें। आलोचना किये गए? प्रेम दृढ़ है।

यह कब खत्म होगा? जब परिस्थिति बहुत कठिन होती है, हम उसके अंत को देखते हैं। यह सामान्य है। कोई भी इस प्रकार कि कठिनाइयों को पसंद नहीं करता। हम अचानक से बदलाव कि आशा करते हैं जो इसको सरल बना दे। वह कभी आती है, परन्तु वे उस प्रेम के लिए समाधान नहीं जो दृढ़ नहीं है।

“प्रेम सब बातें सेह लेता है, सब बातों की प्रीति करता है, सब बातों की आशा रखता है, सब बातों में धीरज धरता है”। (1 कुरंथियों 13:7-8)

जैसे हम हमारी पत्नियों के लिए प्रेम में दृढ़ होते जाते हैं, हम दो में से एक बातों को संभव होते हुए देखेंगे।¹⁴ हमारे वैवाहिक वाचा की वजह से, हम हर प्रकार से अपनी पत्नियों से प्रतिबद्ध हैं।

संभावना # 1 निर्णायक

इफिसियों 5 संकेत देता है कि पति का अनुकूल प्रेम पत्नी के अनुरूप उसके अविश्वासीपन को पिघला सकता है।

“हे पतियो, अपनी अपनी पत्नी से प्रेम रखो जैसे मसीह ने भी कलीसिया से प्रेम करके अपने आप को उसके लिए दे दिया कि उसको वचन के द्वारा जल के स्नान से शुद्ध करके पवित्र बनाए, और उसे एक ऐसी तेजस्वी कलीसिया बनाकर अपने पास खड़ी करे, जिसमें न कलंक, न झुर्री, न कोई और ऐसी वस्तु हो वरन पवित्र और निर्दोष हो”। (इफिसियों 5:25-27)

परमेश्वर हमारे अनुरूपित प्रेम का उपयोग हमारी पत्नी कि तृतीयक को दूर करने के लिए भी कर सकते हैं। पति का प्रेम भी इस तरह स्थायी होना चाहिए कि वह अविश्वास के बांध को गिरा सके। परमेश्वर कि दया से, वह धीमे धीमे वह सब समझने लगी है जो वह पहले नहीं समझ पाती थी वास्तविक प्रेम। एक दिन उस पर यह सुबह ज़रूर होगी, “वाह! मेरे पति को सच में मुझसे प्यार है। तो वास्तविकता में यह प्रेम है”।

¹⁴ मैं यह कहने को तैयार नहीं कि परमेश्वर का प्रेम हमेशा ही एक सफलता को लायेगा जैसी आशा हम करते हैं। यीशु को मरना था इससे पहले कि वो अपने प्रेम का स्थिर फल देख पाता। हालाँकि उसका प्रेम व्यर्थ नहीं होगा और ना कि हमारा।

पत्नी आलोचनाओ या बेरुखी में लाई जाती है, उदाहरण के लिए, बहुत कठिनाई से विश्वास कर पति है कि कोई उन्हें सच में प्यार करता है। वह अपने पति मंशा पर संदेह करती है। सिर्फ संकट के दौरान, क्या पत्नी अपने पति के स्थायी प्रेमी व्यवहार के द्वारा वास्तविक प्रेम कि एक झलक हासिल कर सकती है? उसके अविश्वास का कवच नरम होना शुरू हो जाता है।

वह धीरे धीरे इस बात को समझना शुरू करती है कि किस प्रकार कोई उसको वास्तव में समर्पण के साथ प्रेम कर सकता है बजाये इसके कि उससे क्या लाभ उठाया जाए। उस समय वह तेज़ी से ग्रहणशील बनना शुरू हो जाती है।

सच्चाई कि एक नई भावना उसके अंदर जागृत हो जाती है। उसके धब्बे और झुर्रियाँ धीरे धीरे विलुप्त होते जाते है। वह पति के इशारों और प्रेम के शब्दों के प्रति अपनी प्रक्रिया देने लगती है। इस बारें में हम और अधिक अगले अध्याय में सीखेंगे।

संभावना # 2 धीरज

दूसरी संभावना स्वीकार करने के लिए और भी ज़्यादा मुश्किल है। परमेश्वर पतियों को एक अवसर सौंप रहे हैं कि वे अपनी पत्नियों को बिना कुछ ज़्यादा परिवर्तन देखे प्यार करें। यह ज़्यादातर उस सिपाही कि तरह होना है जो बाहर युद्ध के लिए जाता है। यदि वो मुख्य रूप से दूसरों कि जान कि परवाह किए बगैर केवल अपनी जान कि परवाह करे तो वह एक नाकामयाब सिपाही है। दरअसल वह दूसरों के लिए एक खतरा है। वह ये नहीं देख सकता कि युद्ध का सर्वश्रेष्ठ उद्देश्य उसकी खुद कि जान से ज़्यादा कीमती है। हालांकि, यदि वह किसी अधिक से अधिक अच्छे के लिए अपनी जान कुर्बान करने को तैय्यार है तो वह एक बहादुर सिपाही बन जाता है। भय उसे नियंत्रित नहीं करता।



कुछ लोगों को यह लगता है कि परमेश्वर ने हमसे अगापे प्यार मांग के रूप में बहुत कुछ मांग लिया। क्यों? हम एक कायर पीढ़ी हैं। स्वार्थी खुशी के अँधेरे में बाहरी और साहस धुंधला गए हैं। हमारे पास कोई महान लक्ष्य नहीं जो हमें हमारे तत्काल कामुक सुख से परे बुलाए। अगापे प्यार हमारे ज़हन से परे है।

हालांकि, परमेश्वर ने अपने महान उदाहरण से यह दर्शा दिया है कि वह अपने पसंदीदा विषयों से कहेगा कि वे उसके प्यार को बड़ी कीमत पर दोहराएं। परमेश्वर के अपने पुत्र, प्रभु यीशु मसीह से कहा गया कि वह ज़िद्दी लोगों को प्यार करें। इस प्यार ने किसी तत्काल इनाम को नहीं देखा। उसके चेलों ने उसे दुःख कि घडी में त्याग दिया। यहां तक कि उसने पतरस को उसका इंकार करते देख लिया था। हालांकि, उसके बलिदान पूर्वक प्यार से परमेश्वर ने एक अधिक से अधिक भलाई को आने दिया। यही सामान रूप से हमारे लिए भी सत्य होगा। भले ही हम परिणामों को न देख सकें, परमेश्वर फिर भी अगापे प्यार का प्रयोग करता है।

हम जीवन के इस तरफ से पूरी तस्वीर को नहीं देख सकते हैं, और हमें यह देखने पर जोर नहीं करना चाहिए। होशे की तरह, हम में से बहुतों को तनावपूर्ण परिस्थितियों में भी प्यार करना पड़ सकता है। उसकी पत्नी कई बार वैश्यावृत्ति में लिप्त होक भाग जाती थी। अय्यूब कि तरह, बाकियों को परीक्षा कि घड़ियों में पड़कर भी अपनी पत्नियों से प्यार करने कि ज़रूरत होगी। अय्यूब ने अपने बच्चों को खो दिए और एक भयानक बीमारी से ग्रसित हो गया। उसकी पत्नी ने इस परीक्षा के दौरान उसे सहारा नहीं दिया।

मसीह ने प्रेम को जिआ, इसलिए नहीं कि वह आसान, सुविधा जनक या आसानी से पुरुस्कृत के लायक था बल्कि इसलिए क्योकि वही सही था। वह यही करने के लिए बुलाया गया था। क्या परमेश्वर के लोग इस लायक हैं? कदापि नहीं। वैसे ही, पतियों को बुलाया गया और रचा गया कि वे बिना किसी शर्त के अपनी पत्नियों को प्यार करें और उनके लिए खुद को बलिदान करें। प्रत्येक पति खुद का बलिदान करने के लिए बुलाया गया है, जैसे मसीह हमारा आदर्श है। हरेक पति को अपनी पत्नी को जीवन भर प्यार करना चाहिए। यह बलिदान पूर्वक और बिना शर्त का अगापे प्यार है। मसीह के जैसा प्रेम से बढ़कर और कोई महान और श्रेष्ठ बुलावा नहीं।

सारांश

यदि हम दौड़ में हिस्सा ले रहे हैं, तो हम जीतने के लिए दौड़ें। अंतिम रेखा को पार करने का क्या मतलब होता है, इसके लिए हमें एक चित्र कि ज़रूरत है। परमेश्वर हमारे पास आके कहेगा, “शाबाश! अच्छे और विश्वासयोग्य बेटे!” हम

अपने जीवन के उन बीते हुए पलों कि ओर देखेंगे जब हमने स्वयं-भोग कि उन मूर्तियों को फेंका और उन्हें स्वयं के बलिदान में जला दिया। हमने स्वयं से वचन लिया कि हर कीमत पे हम उसके हिसाब से जियेंगे।

अपनी पत्नी से कोई भी वास्तविक और पवित्र प्रेम शादी से पहले शुरू होना चाहिए। अपनी पत्नी के लिए अपने आप को सौंप देने की प्रत्याशा में, आपको अपने विचारों में, शब्दों में और कर्म में पवित्रता बनाए रखना चाहिए। युवा समय को आत्म-नियंत्रण में महारत हासिल करने के लिए इस्तेमाल करना होगा। जितना ज्यादा यह शादी से पूर्व पवित्रता का जोश होगा, उतना आसान होगा 'अविश्वास मंदा' को सम्बोधित करना।

प्यार करने के लिए चुनना हमारी पसंद है। परमेश्वर से नज़दीकी के बिना हम वैसा प्यार बिलकुल नहीं कर सकते जिसके लिए हम बुलाये गए हैं। उसने हमें इसी तरह कार्य करने के लिए तैय्यार किया है। प्यार करने का चुनाव परमेश्वर की महान और भरपूर दया में उसे पुकारना है कि वह हमारे हृदयों को अपने आत्मत्यागी जुनून से कब्जे में ले ले। इस हताश दुनिया में अपने महान आनंद को लेके परमेश्वर के प्यार का अनुसरण करने से बढ़कर कोई प्रश्न है? बिलकुल नहीं।

उसके लोग होने के नाते, अपनी पत्नियों के लिए और इस संसार को उसका प्यार फैलाने के लिए हमें एक निर्णय की गणना करनी होगी। मैं अपनी पत्नी को लगातार अगापे प्यार करना चुनता हूँ। क्या आप भी करेंगे?

मनुष्य को संसार ने मूर्ख बनाया है कि सबसे मुश्किल कार्य किसी पहाड़ पर चढ़ना है, किसी खेल कि जीतती हुई टीम के लिए चिल्लाना, या फिर खूबसूरत लड़कियों के पीछे भागना है। हालांकि, प्रमुख तौर पर परमेश्वर ने यह कह दिया है कि सबसे कठिन कार्य अपनी पत्नी को बिना शर्त का प्रेम करना है।

एक पति कि प्रतिज्ञा

“मेरी पत्नी, परमेश्वर ने मुझे बनाया कि मैं तुम्हे बिना स्वार्थ के और सच्चाई से प्रेम करूँ। उसने मुझे सृजा कि मेरा हर हिस्सा तुम्हे समर्पित हो। मैं चाहता हूँ कि तुम्हारा वो विवाह का सपना सच हो जिसमें एक पुरुष तुम्हे सच्चा प्यार करे। मैं इतना तुम्हारे लिए विश्वासयोग्य पुरुष हूँ।

इस पृथ्वी पे मेरे जीवन के अंत में, परमेश्वर स्वयं यह बात जानेगा कि शादी से पहले एवं शादी के पश्चात तुम्हे पूरी रीति से प्यार करने की चाहत में मैं पवित्र रहा। विश्वास में मैं उन मूलभूत सिद्धांतों का परिक्षण करना चाहता हूँ जिन्हें परमेश्वर ने इस ब्रह्माण्ड के निर्माण के

विवाह का निर्माण!

समय प्रत्यारोपित किया था। मेरा मिशन सिर्फ तुम्हें प्रेम करना है, मेरी प्रिय, जैसा मसीह कलीसिया से प्रेम करता है।

परमेश्वर ने मुझे बुलाया कि मैं तुम्हारे जीवन में उसके प्यार कि मशाल के रूप में रोशन रहूँ। चाहे अमीरी में या गरीबी में, जवानी या बुढ़ापे में, बीमारी में या अच्छे स्वास्थ्य में, मैं तुम्हें प्यार करने के लिए दृढ़ निश्चयी हूँ। चाहे तुम, मेरी प्रिय, मेरे प्यार को स्वीकार न करो। मैं लगातार तुम्हें प्यार करूँगा और तुम्हें चाहूँगा। मैं चाहता हूँ कि तुम्हारे लिए मेरा प्यार मसीह के प्यार को दूसरों के लिए दर्शाये। सच्चा प्रेम बड़ी उमीदों को जन्म देता है।

क्या जीने के लिए कोई महान चीज़ की ज़रूरत है?

क्या और भी महान युद्ध लड़ने के लिए बाकी हैं? नहीं।

मैं दौड़ने के लिए रचा गया हूँ,

और मैं परमेश्वर की सामर्थ और अनुग्रह से दौड़ता हूँ। मैं परमेश्वर और तुम्हारे लिए बिना शर्त के प्यार कि दौड़ को दौड़ूँगा। मेर असब कुछ तुम्हारे लिए हो, मेरी प्रिय पत्नी, मेरा प्रेम।

एक पति की प्रार्थना

"प्रिय स्वर्गीय पिता, मैं अपनी खुद कि ज़रूरतों को आगे बढ़ाने के विरोध में युद्ध कि घोषणा करता हूँ। मैंने आपके सदाकाल के प्यार के हथियार को चुना है। मैं प्रेम करने के लिए सृजा गया हूँ। आंतरिक स्वार्थी अभिलाषाओं से जो मेरे परमेश्वर और पत्नी से मेरी वफादारी को नष्ट करे, दूर रहूँ। हर एक उस विचार से दूर जो मुझे निंदा और लालची पंजों में जकड़े। उनका समय गया।

मैं एक पवित्र प्रेम को करने के लिए चुनता हूँ। मैं अपनी पत्नी को एक पवित्र प्रेम करने कि ओर ध्यान करता हूँ। मैं मौत और भ्रम के अंधियारे दरवाज़ों में अपने प्रेम को डालना चाहता हूँ। मैं अपनी पत्नी से लगातार और समर्पित वचन से उन सब भय और शंकाओं को दूर करना चाहता हूँ जो मेरी पत्नी को घेरे हुए हैं।

परमेश्वर, मुझे अपनी आत्मा से भर। ख्रीस्त के द्वारा मेरी आत्मा को शुद्ध कर क्योंकि आपकी बुलाहट उच्च और बुलंद है। वर दें कि मैं अपनी खास चुनी हुई पत्नी के लिए पूर्ण समर्पित रहूँ। मेरी केवल एक ही पत्नी है। मुझे केवल एक ही पत्नी

चाहिए। आपके अनंत अनुग्रह और उदाहरण से मैं अपना लगातार ध्यान सिर्फ और सिर्फ उसी को दूंगा जब तक हम दोनों जिंदा रहे।

और अब, मैं आपसे विनती करता हूँ कि आप उसे सुरक्षित रखें जो महान और सुन्दर है। जो महिमामन्वित है उसे ऊंचा उठाएं कि आशा, आनंद और प्यार हमारे अत्यंत दुखी हृदय को पुनः स्पर्श करें। वर दें कि मैं केवल आपकी महिमा के लिए उस दौड़ में शामिल रहूँ। अपनी पत्नी की ओर देने के कार्यों को अपने कीमती उदाहरण से मेरा नेतृत्व कर। मैं पवित्र, ईमानदार, और जिम्मेदार रहूँ। परमेश्वर का महिमामन्वित प्रेम इस पृथ्वी पर मेरी पत्नी की ओर जाहिर मेरे प्रेम के माध्यम से प्रगट हो। परमेश्वर के एकलौते ख्रीस्त के लहू और अनुग्रह से, मैं प्रार्थना करता हूँ आमीन।"

व्यक्तिगत आवेदन

- इस पाठ के लिए हमारी आशा है कि प्रत्येक आदमी विवाहित या अविवाहित, परमेश्वर की बिना शर्त अगापे प्यार में बने रहने के लिए खुद को प्रतिबद्ध करे। ऊपर की प्रतिज्ञा को ज़ोर से पढ़ें। क्या आप स्वयं की बना सकते हैं? क्यों या क्यों नहीं? प्रार्थना के द्वारा प्रार्थना करें। हमारी आशा है कि नियमित रूप से प्रार्थना या प्रतिज्ञा ददोहराएं की ये आपके परीक्षण, परिस्थिति और चुनौती के लिए ठीक रहे।
- पत्नियों, अपने पतियों के लिए प्रार्थना करने में अपने आप को प्रतिबद्ध करें की वो परमेश्वर के महान पुरुष बनें। उनके लिए लगातार प्रार्थना करें। ऐसा प्रेम करने वाले पति की कल्पना करें। क्या आपको पसंद आया? तो अपने आप को उनके लिए प्रार्थना करने के लिए प्रतिबद्ध करें। यदि ज़रूरत हो तो एक प्रार्थना को लिख लें, और जब अप अपने पति में सुधार को देखें तो धीरे से और प्यार से उन्हें उत्साहित करें।
- प्यार केवल अपने आप को मुश्किल के दिनों में नहीं दिखाता वरन साल के प्रत्येक दिन में दिखाता है। एक विचार ने युगलों को एक दुसरे से प्यार जाहिर करने में मदद किया है। हरेक साथी वो दो तरीके लिखे जो उन्हें स्नेही बनाते हैं।

विवाह का निर्माण!

साथ ही साथ वो दो तरीके लिखें जो आपके साथी को स्नेही बनाते हों। लेखों की तुलना करें और चर्चा करें।

अध्याय #2 अध्ययन के लिए सवाल

1. एक महान विवाह के लिए पहला जैवनिक सिद्धांत क्या है?
2. तीन शब्दों को सूचित करें जो इस सिद्धांत का वर्णन करते हैं?
3. प्रेम के सिद्धांतों के अनुसार जीने के लिए क्या आपने कोई कदम उठाये? किस प्रकार से?
4. वासना के पथ का अनुसरण करते हुए क्या आपने धोखे का अनुभव किया है? वर्णन करें।
5. क्या आप अनुभव करते हैं कि आप परमेश्वर के प्रेम के योग्य हैं? क्यों और क्यों नहीं?
6. ऐसी कोई घटना का वर्णन करें जिससे आपके साथ परमेश्वर के प्रेम का अनुभव हुआ हो?
7. यूनानी भाषा में प्रेम के लिए तीन शब्द क्या हैं? किस प्रकार हर एक शब्द विवाह को आकर देता है?
8. प्रेम को क्यों क्षमा करना चाहिए? क्या आपने पूर्ण रीति से अपने साथी को क्षमा कर दिया है?
9. उन परिस्थितियों का क्या जहाँ पर आपके पति संतुष्ट नहीं हैं? उन्हें क्या करना चाहिए?
10. प्रेम और अभिलाषा के बीच किस प्रकार का सम्बन्ध है?
11. हम उन पतियों का क्या करें जो अपने प्रेम को स्थिर रखने में असमर्थ हो?

विवाह का निर्माण!

12. परमेश्वर किस प्रकार से पति के विश्वासयोग्य प्रेम के द्वारा पत्नी का पवित्रकरण करने में मदद करते हैं?
13. यदि आपकी पत्नी आपके प्रेम के प्रति प्रक्रिया नहीं देती तो आप क्या करेंगे? और कब तक?
14. क्या आपने पति होने के रूप में अपनी पत्नी के प्रति बेशर्त प्रेम के लिए कोई वाचा को स्थापित किया है या उसका नवीकरण किया है? यदि नहीं, तो क्यों नहीं? यदि किया है तो यहाँ पर अपना नाम तरीक के साथ हस्ताक्षर करें।



#3 विनम्र आधीनता: जीवन का सिद्धांत 2

परमेश्वर ने महान विवाहों के लिए एक मार्ग प्रदान किया है। उसकी रचना पूर्णतः विश्वासयोग्य है। विवाह उस जहाज़ के समान है जो तूफानी रात में बंदरगाह में प्रवेश करने की कोशिश कर रहा हो। सब कुछ अटकलबाजी है। गलतियां घातक हैं। हमारे चारों ओर हम विवाह को नाकाम होते हुए देखते हैं। यहां तक की काफी अच्छा विवाह भी उस अज्ञात त्रुटि से डरता है कि कहीं वो स्पष्ट तरीके से शादी तबाह न कर दे। हमें न केवल डर के जिनने को नकारना है बल्कि परमेश्वर द्वारा रचित विवाह में विश्वास पूर्वक रहना है। परमेश्वर कि रचना पूरी तरह से विश्वासयोग्य है।

“जहां पर गुलाब का रुख करते हैं, मेरे नौजवान,

वहाँ पर कांटेदार पौधा नहीं उग सकता”¹⁵

जब हम परमेश्वर कि रचना पर भरोसा करते हैं तो वास्तव में हम उस पर ही विश्वास करते हैं। यह विश्वास न केवल हमारे जीवन के लिए बल्कि उन सभी पीड़ित युगल के लिए है जो सख्त मदद ढूँढ रहे हैं। परमेश्वर चाहता है कि हम आशा में जियें। जब प्रकाशस्तंभ चमकता है, तब अचानक एक जहाज के कप्तान को प्रकाश के दक्षिण में रहने के लिए पता होता है कि बंदरगाह की सुरक्षा में पाल कर

¹⁵ फ्रान्सेस एस बरनेट के द्वारा “दी सीक्रेट गार्डन” में। जिस प्रकार हम आशा से जीते हैं, डर हमारे जीवन को नियंत्रित नहीं कर सकता। ऊंटकटारे अवांछनीय पौधे रहे हैं

विवाह का निर्माण!

सके। विवाह के लिए परमेश्वर कि रचना पर भरोसा रखना उस ज्योति के द्वारा सही मार्गदर्शन पाना हैं।



परमेश्वर द्वारा रचित विवाह पूर्णतः भरोसेमंद है। पहले हमें ये सीखना है कि कैसे परमेश्वर कि रचना कार्य करती है, फिर इसे हम अपने जीवन में क्रिया न्वित करें। इस भाग में हम जीवन के दुसरे सिद्धांत 'विनम्र आधीनता' की

ओर दृष्टि करेंगे। विशेष तौर पे जो विवाह जैसी परिस्थिति में लागू हो, उसके लिए हम इस वाक्यांश का प्रयोग करते हैं 'जीवन का सिद्धांत' जो धर्मी जीवन जीने के लिए भी ज़रूरी हो।

बेशर्त प्रेम का पहला जैवनिक सिद्धांत एक प्रश्न को जन्म देता है: "पत्नी को प्रेम करनी की आज्ञा क्यों नहीं है"? पत्नियों को भी अपने पति को प्रेम करना चाहिए। यह समझदारी है। हर कोई दुसरो को प्रेम करने के प्रति जवाबदेह है। परन्तु पतियों के लिए, प्रेम की आज्ञा प्रकाशस्तंभ से संकेत के रूप में खड़ा है।

पतियों को अपने विवाह में सहायता के लिए अधिक रूप से प्रकाशस्तंभ या आज्ञा की ज़रूरत नहीं होती है। तकनीकज्ञ के समान, परमेश्वर भी जानते हैं कि कौन से हिस्से को जोड़ना है और कौन से हिस्से को बदला जाना है। उनका परामर्श सीधे रूप से साफ़ होता है। पत्नियों को प्रेम कि इस आज्ञा कि ज़रूरत नहीं (इसके बावजूद कि पत्नियां भी स्वार्थी हो सकती हैं) हालाँकि, वे साधारण रीती से उन सब में जिसमें वे सोचती, कहती और करती है, प्रेम के लिए बुलाई गई है। महिलाएं अपने साथी से परे अलग तरीके से बनाई गई और जोड़ी गई है। प्रकाशस्तंभ से उनकी किरण कहती है,

‘हे पत्नियों, अपने अपने पति के ऐसे आधीन रहो जैसे कि प्रभु के)’ इफिसियों (5:22)

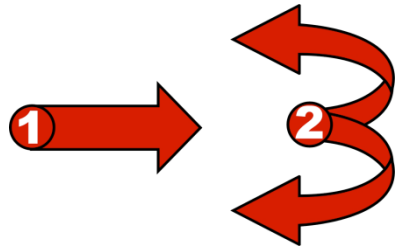
यह आदेश पत्नियों में उनके कई भ्रामक क्षणों के दौरान मदद करता है। जब अंधेरा उसके प्राण के चारों ओर मंडराता है और वह सभी प्रकार की आवाज़ों जिसे वो करना चाहती है गूँजती है, परमेश्वर की साफ़ रौशनी ज़रूरी दिशा को दिखलाती है। परमेश्वर सरल और सीधे रूप से इस समय के दौरान पत्नी को सहायता प्रदान करते हैं। हमें और भी जानने की आवश्यकता है कि किस प्रकार छोटा सी दिशा उसके अंधेरे के क्षणों में उसको सहायता प्रदान करते हैं। जब पत्नी अपने आप को अपने पति के आधीन करती है, उन्हें अपनी बुलाहट का पता होता है और उसमें वे भरपूरी से पूर्ती को पाती हैं।

अ) दूसरे जैवनिक सिद्धांत को समझना: विनम्र प्रस्तुतीकरण

विवाहित दुर्गम समस्याओं कि वजह से विवाह अत्यंत जटिल हो सकती है। परमेश्वर नहीं चाहते कि हम पूर्णतया पराजित हो जाएँ। समाधान पहुँच के भीतर है। वास्तविकता में, परमेश्वर ने हमें तस्वीर एक अध्याय के रूप में दी है जिससे कि विस्मयकारी समय के दौरान जो हमको जानने कि आवश्यकता है वो हम सरल रूप से सीख सकें।

विवाहित रचना परमेश्वर के छुटकारे की योजना पर आधारित है जो हमारे अंदर परावर्तित है। शास्त्रों ने मसीह और चर्च के बीच सामानांतर, पाती और पत्नी के बीच एक सुलझी हुए पहली के रूप में बताया है।¹⁶ दूसरे शब्दों में, मसीह के आगमन ने और परमेश्वर के प्रेम को उनके लोगों के प्रति प्रदर्शित करने से बहुत से विवाहित सत्त्यों का उजागर किया है।

विवाह की सांसारिक छवि हमें इन आत्मिक सत्त्यों को बेहतर रूप से समझने में मदद करेगी। यद्यपि कभी-कभी, विशेष रूप से उनके लिए जो टूटे हुए या परेशान घरों में पले बड़े हुए हैं, यह वैवाहिक सत्ये ही हैं



¹⁶ नये नियम में शब्द 'रहस्य' एक सुलझा हुआ रहस्य है, कुछ ऐसा है जो पहले समझ से बाहर था। अब आगे के प्रकाशन से, रहस्य का प्रगटीकरण ऐसे मामलों में।

जिनके ज़रिये हम अपने विवाह को बेहतर बना सकते हैं।

सुसमाचारिक रहस्य तब प्रकट हुआ जब परमेश्वर ने अपने एकलौते पुत्र मसीह को हमारे पापों के लिए मरने भेजा। परमेश्वर हमसे और कलीसिया से प्रेम करते हैं, भले ही हम उन्हें प्रेम नहीं करते। क्रूस हमारे पापों की क्षमा के लिए आवश्यक था जिससे की हम एक बार फिर से परमेश्वर से सुलह कर सकें। यह परमेश्वर का महान प्रेम है। यह बेशर्त प्रेम पहला जैवनिक सिद्धांत है जिससे पत्नी के लिए पति के प्रेम को अकार मिलता है। शास्त्र इस प्रेम के बारे में साफ़ रीती से इफिसियों पहले अध्याय में बताता है।

"हमको उसमें उसके लहू के द्वारा छुटकारा, अर्थात् अपराधों की क्षमा, उसके उस अनुग्रह के धन के अनुसार मिला है, जिसे उसने सारे ज्ञान और समझ सहित हम पर बहुतायत से किया है"।(इफिसियों 1:7-8)

उन्होंने हम से प्रेम किया, हमें चुना, बलिदानी रीती से हमें लेकर आए जिससे की हम उनके कहलाए जाए और अनंत काल तक उनकी विशाल महिमा में साझा कर सकें। यह परमेश्वर का वास्तविक प्रेम है जो हमारे प्राणों में बहता और उसको विकीर्ण करता है भले ही हमसे कोई प्रेम करे या ना करे। उनका प्रेम हमारी गहरी लालसाओं को संतुष्ट करता है। हम हमारे साथी के प्रति पूरी तरह से प्रतिक्रियित होने में सक्षम हैं क्योंकि परमेश्वर का प्रेम हमारी पूर्ति करता है चाहे हमारा साथी हमारे प्रति अविश्वासयोग्य क्यों ना हो। परन्तु रहस्य यहाँ पर समाप्त नहीं होता।

जबकि पति को चर्च के लिए परमेश्वर के प्रेम का अनुसरण करना है, पत्नी को मसीह यीशु में चर्च की प्रतिक्रिया का अनुकरण करना है। जैसे की कलीसिया विश्वासयोग्यता से प्रभु के निर्देशों का पालन करती है, उसी प्रकार पत्नी को अपने पति के निर्देशों का पालन करना है। "परन्तु जिस प्रकार कलीसिया मसीह के आधीन है, ठीक उसी प्रकार पत्नियों को हर एक बात में अपने पति के आधीन रहना है।" (इफिसियों 5:24)

कलीसिया को डर है की परमेश्वर शायद ही उन्हें प्रेम करे। वह एक अवांछनीय निर्वासित है। इसके बावजूद, हमारे प्रभावशाली परमेश्वर ने अपने लोगों को कीमत देके खरीदा है ताकि वे भी उनके छुटकारे की योजना और उनके अनन्तकालीन समृद्धि में शामिल हो सके। जिस प्रकार चर्च अपने निहित अनुपयुक्तता और भव्य

स्थिति पर केंद्रित है, वह अपने जीवन के एक नए परिप्रेक्ष्य हासिल करने के लिए सक्षम है। वह खुश है और अपने परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारी और विश्वासयोग्य होने के लिए उत्सुक है। ठीक इसी प्रकार से एक पत्नी को अपने पति द्वारा खुद को अपना जीवन साथी के चुनाव किए जाने पर आनंदित होना चाहिए और अपने जीवन और प्रतिबद्धता को जीना चाहिए। उसकी सम्मानित स्थिति में, वह खुशी-खुशी उसके साथ रहने के लिए कुछ भी कर सकती है। वह अपने हर शब्द और इच्छा को प्रस्तुत करने के लिए उत्सुक है। अपने पति की सेवा की इस विशेष अवस्था में उसको भरपूरी मिलती है। इस रहस्य का एक और पहलु है।

परमेश्वर के प्रेम में उनका एक उद्देश्य है। अपने लोगों के लिए उनके पास उद्देश्य है। अक्सर पत्नी, घर के कामकाज से मोहभंग हो जाती है, रटे हुए बच्चे को सम्भालना, कुत्सित नॉक पोछना, उसके सीमित समय की मांग, ऊर्जा, आदि। उसको फिर से परमेश्वर कि दुल्हन प्राप्त करने के विषय में सोचने कि ज़रूरत है। हम यह निमित्त पदों में देखते है।

“कि वह अपनी उस कृपा से जो मसीह यीशु में हम पर है, आनेवाले समयों में अपने अनुग्रह का असीम धन दिखाए। क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है; और यह तुम्हारी ओर से नहीं, वरन परमेश्वर का दान है, और न कर्मों के कारण, ऐसा न हो कि कोई घमंड करे। क्योंकि हम उसके बनाए हुए हैं, और मसीह यीशु में भले कामों के लिए सृजे गए जिन्हे परमेश्वर ने पहले से हमारे करने के लिए तैयार किया।” (इफिसियों 2:7-10)

परमेश्वर कि योजना उनके लोगों के लिए श्रेष्ठ धन प्रदान करना है। ठीक उसी समय, यद्यपि, उन्होंने हमें निर्देश दिए हैं कि इस धन कि प्राप्ति के लिए हमें अचे कार्यो को करना है। यह असंभव नहीं है। परमेश्वर ने पहले से ही इनकी योजना हमारे लिए बना ली है। हमें सिर्फ पवित्र आत्मा की समर्थ और अनुग्रह के द्वारा पालन करने की आवश्यकता है। परमेश्वर की धरना के बारें में आपका क्या कहना

- ❖ प्यार किया हुआ
- ❖ चुना हुआ
- ❖ लाया गया
- ❖ संबद्ध
- ❖ हिस्सा

है? क्या वो भले से कहीं अधिक नहीं है? वह निश्चित रूप से है। उनके लोग होने के रूप में, इसलिए, हम बड़ी उत्सुकता से इन भले कामों को करते हैं। मसीह यीशु के इस भले कार्य को पूरा करने की यह हमारी उपलब्धि है। दूसरों की सेवा करते हुए हम उनकी सेवा करते हैं।

“उसके पुत्र उठ उठकर उसको धन्य कहते हैं; उसका पति भी उठकर उसकी ऐसी प्रशंसा करता है: “बहुत सी स्त्रियों ने अच्छे अच्छे काम तो किए हैं परन्तु तू उन सभी में श्रेष्ठ है।” (नीतिवचन 31:28-29)

हम देख सकते हैं की परमेश्वर की योजना स्त्रियों के छुटकारे की है, न कि विद्रोह कि जैसी कि कुछ लोग परमेश्वर कि आज्ञा के प्रति प्रतिक्रिया करते हैं। पत्नी का समर्पण का अर्थ परमेश्वर के प्रेम के राज्य को बढ़ाना है। कई लोगो ने परमेश्वर कि धरना जो पति के प्रति पत्नी का समर्पण है, पर सवाल उठाए हैं। यह सुझाव मसीह कि आज्ञा के प्रति सभी प्रकार के घृणा को जन्म देता है। साफ़ रीती से यह परमेश्वर कि धरना नहीं है। उन्होंने सोने कि पथ प्रशस्त की और उस पर परमेश्वर के साथ चलने के लिए कहा। पथ के अंत में महल है।

हमें इस बात को बेहतर रीती से समझने की आवश्यकता है की क्यों परमेश्वर ने यह आज्ञा पत्नियों को दी। यह स्त्रियों की प्रक्रिया के बारे में हर प्रकार की गलतफहमियों को सुलझाने में मदद करता है और भविष्य के लिए उसके साथ प्रतिबद्ध होने के लिए सक्षम बनता है।

ब) दो विकल्प

पत्नी बहुत जल्द ही सीख जाएगी कि हालाँकि मार्ग स्पष्ट रूप से तैयार कर दिया गया है परन्तु उस मार्ग पर चलने से उसमें आंतरिक रूप से ज़बरदस्त कष्ट है। उसको साफ़ तौर पर एक विकल्प कि आवश्यकता है: या तो वह भावनाओं में बह जाए या फिर शास्त्र का पालन करे। वास्तविक रूप से, संतोषप्रद कार्य करने के लिए, उसको स्पष्ट रूप से कई सत्यो को स्वीकार करने कि आवश्यकता होगी।

◆ हर एक बात में वह अपने पति के आधीन रहेगी (इफिसियों 7:24)

◆ कार्यों की कैसे और किस प्रकार करने के लिए अपने पति के मार्गदर्शन के आधीन रहेगी।

◆ प्राथमिक रीती से परमेश्वर के स्वयं के प्रेम के द्वारा एक बच्चे के समान वह आंतरिक संतुष्टि को प्राप्त करेगी।

◆ वह प्रभु पर सर्वश्रेष्ठ बचने वाले और पूर्ती करने वाले के रूप में भरोसा करेगी।

विद्रोह के माध्यम से पूर्ती

पत्नी हर एक समय प्राधिकरण को इंकार करने के लिए परखी जाती है कि परमेश्वर ने उसके ऊपर किसी कि नियुक्ति की है। यह अदन की वाटिका में हुआ जब हव्वा ने एक चालक स्वर को सुना जो उसको 'आज़ादी' या 'स्वतंत्रता' कि ओर ले जा रही थी।



यह है परमेश्वर की रचना।

“अतः जब स्त्री ने देखा कि उस वृक्ष का फल खाने के लिए अच्छा, और देखने में मनभाऊ, और बुद्धि देने के लिए चाहनेयोग्य भी है; तब उसने उसमें से तोड़कर खाया, और अपने पति को भी दिया, और उसने भी खाया। ” (उत्पत्ति 3:6)

इसके उपरांत कि प्रलोभन के ऐसे सकारात्मक असर है, शैतान आज भी हमले के वही साधन का उपयोग करता है! शैतान बड़ी आसानी से परमेश्वर कि इच्छा की भलाई को प्रश्नों के घेरे में खड़ा कर देता है। उस सांप ने यह सुझाव दिया की हव्वा कुछ और बेहतर खो रही है, जो परमेश्वर उसको देने से रोक रहे हैं। क्योंकि वो उससे बेहतर है।

- (1) शैतान परमेश्वर की भलाई की बातों पर प्रश्न करता है।
- (2) उसने यह सुझाव दिया की वह कुछ और बेहतर खो रही है।
- (3) उसने उसका ध्यान परमेश्वर की आज्ञा से भटका दिया कुछ ऐसा जिसकी संतुष्टि के लिए वादा किया गया था।
- (4) परमेश्वर की आज्ञा को मानने से रोकने के द्वारा शैतान उसकी निष्ठा को उससे छीन लेता है।

विवाह का निर्माण!

तब शैतान उसके मन को दूसरी मनलुभाने वाली वास्तु में लगाने के द्वारा परमेश्वर से दूर कर देता है। अंततः शैतान उसको मोहक करके खुद की आज्ञा का पालन करवाकर उसको छीन लेता है। यह आखरी बिंदु बहुत महत्वपूर्ण है।

प्रभु द्वारा स्पष्ट रीती से निर्धारित किये जाने पर कुछ अलग करने के द्वारा वह वास्तविक रूप से अपने पति के अधिकार से स्वतंत्र हो रही है और दूसरे के अधिकार में अपने आप को सौंप चुकी है। शास्त्र इस बात को बताते हैं कि हव्वा बेहक गई थी। और बहके हुए इस दिमागी ढाँचे के अनुसार उसने सोचा कि उसकी राय परमेश्वर की आज्ञा मानने से बढ़कर है। अब मुझे यह पूछना है, "क्या यह सच नहीं है की पत्नियां अपने विचारों और अपनी भावनाओं द्वारा अधिकतर प्रलोभित होती है, कि जो वह महसूस करती है वो सही है बजाए अपने पति कि आज्ञा मानने के?"



परमेश्वर के सत्यों से लगातार रीती से जागरूक हुए बिना स्त्री अपनी राय के अनुसार निर्णय लेना शुरू कर देती है। क्योंकि यह बहुत ज़्यादा आम है, संभवतः सूक्ष्म तर्कों का सामना करना अच्छा होगा जिन्हे संसार स्त्री के मन को धोने के लिए उपयोग करता है।

(स) सूक्ष्म तर्क

तर्क # 1: पति और पत्नी को अपनी स्वतंत्रता रखना चाहिए

पति और पत्नी आज के ज़माने में विवाह को विवाह से बढ़कर अधिक रीती से महज़ एक व्यापार अनुबंध समझते हैं। जहाँ वे संसाधनों के हिस्सों को बांटते हैं। यह पति और पत्नी समझते हैं कि वे बेहतर हैं, दो स्वतंत्र जीवन शैली होना, कभी कभी डर की वजह से कि चीज़े शायद बहुत सही न हो पाए। दाहिने तरफ उदाहरण को देख सकते हैं।

पति **पत्नी**

यह बाइबिल से सम्बंधित छवि नहीं है। पति और पत्नी शादी के बाद अपना अस्तित्व खो देते हैं।



यह एक बेहतर तरीका है शादी में एकता के प्रभाव को दिखाने का। वे एक दूसरे के पूरक हैं।

इस प्रकार के विवाह कभी कभी अखंड प्रतीत होते हैं क्योंकि साथी एक दूसरे के साथ रहते हैं (कभी कभी यहाँ तक की ऐसा नहीं है!)। यही कारण है कि शायद वह एकता कि तरह दिखता है, परन्तु यह बाईबल की शिक्षा नहीं है। इस मामले में, सैद्धांतिक रूप से दो पुरुष और दो स्त्रियां हो सकती हैं। उन दोनों के पास खुद के कार्य होते हैं और खुद का जीवन। विवाह इन शब्दों में अधिक रीती से मात्र एक सामाजिक अनुबंध है और जो इस बात को सिखाता है की वे किस प्रकार अपने असाधारण कामकाज को संचालित कर सकते हैं। इस दृष्टिकोण की वजह से, वह अपने आप को सूक्ष्म रीती से तलाक की सम्भावना के लिए तैयार करने लगते हैं। उनके मनो के अनुसार, तलाक किराए के अनुबंध के समान मानव अनुबंध है जिसको रद्द किया जा सकता है। "इस तरह कोई भी कार्य नहीं किया जा सकता।"

बाई तरफ का चित्रण पति और पत्नी के एकीकरण या अन्याश्रय को दर्शाता है। दोनों की पहचान अलग अलग है परन्तु फिर भी वे परमेश्वर के सामने वाचा के माध्यम से जुड़े हुए हैं। वे एक दूसरे के पूरक हैं। उन्हें एक दूसरे की ज़रूरत है; साथ में वे एक हैं। यही कारण है की यीशु कहते हैं,

"और वे दोनों एक तन होंगे; इसलिए वे अब दो नहीं पर एक तन हैं। इसलिए जिसे परमेश्वर ने जोड़ा है उसे मनुष्य अलग न करे।" (मरकुस 10:8-9)

पत्नी की कल्पना एक स्वतंत्र इकाई के रूप में नहीं की गई है। पति और पत्नी एक साथ एकीकृत हैं जो दो गियर के समान हैं। जिस प्रकार पति 'बदल जाता है' ठीक उसी प्रकार पत्नी भी 'बदल जाती है'। एक और सुचित्रित विवाह के बाईबल परिप्रेक्ष्य को हासिल करने में मदद करता है।

दाहिने तरफ के चित्रण में विवाह के अंदर पुरुष और स्त्री के एकीकरण को दर्शाया गया है। जैसे प्रमुख (पति) शुरू करता है, स्त्री (पत्नी) प्रतिक्रिया करती है। दोनों को



यह भी एक बेहतर शादीशुदा जोड़े की एकता को दिखाता है।

पूरा बनाने की आवश्यकता है। "वे अब दो नहीं परन्तु एक ही देह है," कोई भी छवि संपूर्ण रूप से इस एकता का प्रतिनिधित्व नहीं कर सकती, परन्तु हर एक अपने तरीके से परमेश्वर की सृष्टि को बेहतर समझने में और सरहाना करने में मदद कर सकते हैं।

पति को अक्सर बेवकूफ और स्वार्थी चित्रित किया गया है। पत्नी को निष्कर्ष देना होगा कि अगर उसके पास कोई भी समझ है तो उसे अपने पति को कोई भी ऐसा निर्णय नहीं लेने देना होगा जिससे कि वह प्रभावित हो। परन्तु यह सलाह ईश्वरीय नहीं है। यह विचार किसी भी प्रकार से वैवाहिक सृष्टि, परमेश्वर के सामने पत्नी की जिम्मेदारियों या जो परमेश्वर चाहते हैं पर भार नहीं डालता। वास्तविक रूप में, उसकी प्रतिक्रिया परमेश्वर के अधिभावी आदेश द्वारा ही निर्धारित की जानी चाहिए ना की उसके पति की नेतृत्व करने की क्षमता पर।

तर्क # 2: स्वयं और परिवार के लिए सुरक्षा

पत्नी को पति के समक्ष समर्पण होने की आवश्यकता को बहुत के द्वारा नकारने का कारण उसकी और उसके बच्चे की सुरक्षा है। इस तर्क की धारणा यह है की परमेश्वर ज़रूरतमंद पत्नी और बच्चों की रक्षा नहीं करते। पत्नी सबसे ज्यादा विश्वास करती है कि वह बेहतर रीती से अपने आप कि सुरक्षा कर सकती है। ऐसा इसलिए है क्योंकि उसके मन में गलत धारणाएं प्रवेश हो गई है। "परमेश्वर हमारी चिंता नहीं करते।" "परमेश्वर हमारी मदद नहीं कर सकते।"

शास्त्रों का परमेश्वर धर्मी है। वह हर प्रकार के उत्पीड़न से अवगत हैं और अपने सही समय पर इनका न्याय करेंगे। हम यह शास्त्र में देखते हैं जहाँ एक सच्चा मसीही अपने हृदय को स्त्री और बच्चों की आवश्यकताओं की देखभाल करने के

द्वारा प्रकाशित करता है क्योंकि वह कई बार उत्पीड़ित किए जाते हैं या कठिन परिस्थितियों में पाए जाते हैं।¹⁷



This is waywardness.

परमेश्वर, तथापि, हृदय भी देखते हैं। वह देखते हैं कि एक और मुद्दा पत्नी की इच्छा के पीछे है जहाँ वह विनम्रता के आभाव का बहाना लेकर सारी बातों को अपने हातों में ले लेती है। परमेश्वर अंधे नहीं हैं जो दुरुपयोग ना देख पाए। वह हम में से किसी की तुलना में कहीं ज्यादा परिचित हैं। यद्यपि, हम स्त्री द्वारा परमेश्वर की आज्ञा को नकारने के पीछे असली कारण का सामना करने से इंकार कर देते हैं तो हमारे समाधान नकारात्मक पाठ्यकर्म की ओर चले जाएंगे।

तर्क # 3: समर्पण पुरुषों को दुर्भाग्यपूर्ण स्त्रियों को रौंदने की अनुमति देता है

स्त्रियों के साथ अतीत और वर्तमान में इंसानों की तुलना में दुर्व्यवहार किया गया है। यह निश्चित रूप से वह दृष्टिकोण नहीं है जो हमें मिला है कि किस प्रकार परमेश्वर ने स्त्री की रचना करी। परन्तु जब लोग शास्त्रों पर भरोसा करने से इंकार कर देते हैं, तब विकृत विचारों के सभी परिणाम मिलते हैं। परमेश्वर की नज़रों में स्त्रियाँ बहुमूल्य हैं। वे मानव जाती के लिए परमेश्वर के समग्र उद्देश्य का एक बड़ा हिस्सा हैं।

उत्पत्ति 3:15 के वायदे के अनुसार हमें यह पता चलता है की परमेश्वर ने स्त्रियों को इस संसार में छुटकारा लाने के लिए उपयोग किया। अपनी माता के विश्वास के बिना मूसा कहाँ होता? मरियम के विश्वास के बिना यीशु कहाँ होते? रूत की पूरी पुस्तक एक स्त्री की विश्वासयोग्यता के आधार पर रची गई है जिसने मसीह को इस दुनिया में आने के लिए एक मार्ग तैयार किया।

जैसे कि पहले उल्लेख किया गया, समर्पण साधारण रीती से पत्नी के लिए उचित बात है। यह उसके लिए परमेश्वर की बुलाहट है। यह उसके उपहार या

¹⁷ याकूब 1:27 कहता है, "हमारे परमेश्वर और पिता के निकट शुद्ध और निर्मल भक्ति यह है, कि अनाथों और विधवाओं के क्लेश में उन की सुधि लें..."

विवाह का निर्माण!

क्षमताओं को किसी भी रीती से इंकार करने के लिए नहीं है। यह उसके लिए उपहार और अवसर में से एक है। वह पति को पूरा करने के लिए नियुक्त की गई है क्योंकि वह विशेष रूप से रची गई है। परमेश्वर ने उसके उपहारों की रचना अपने पति के नेतृत्व को पूरक द्वारा कार्य करने के लिए की है।

संसार ने "आधीन में" या फिर "वष में" शब्दों को चिन्हित किया है परन्तु आधीनता हर एक के जीवन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। समाज उसके बिना कार्य नहीं कर सकता। निचे दिया गया चित्र अलग-अलग प्रकार के यूनानी शब्द "आधीन में" को दर्शाता है¹⁸ जिसका बाईबल में उपयोग किया गया है।

मसीह में सारी बातें	और जब सब कुछ उसके आधीन हो जाएगा, तो पुत्र आप भी उसके आधीन हो जाएगा, जिसने सब कुछ उसके आधीन कर दिया....(1 कुरंथियो 15:28)
स्वामी के प्रति दासपन	दासों को समझा कि अपने-अपने स्वामी के आधीन रहे, और सब बातों में उन्हें प्रसन्न रखें, और उलटकर जवाब ना दें; (तीतुस 2:9)
प्राचीनों के प्रति छोटापन	इसी प्रकार हे नवयुवकों, तुम भी प्राचीनों के आधीन रहो.... (1 पतरस 5:5)
मसीह के प्रति कलीसिया	पर जैसे कलीसिया मसीह के आधीन है...(इफिसियों 5:24)
अधिकारियों के प्रति लोग	लोगों को सुधि हृदय कि हकीमों और अधिकारी यों के आधीन रहे....(तीतुस 3:1)
पत्नी अपने पति के प्रति	और संयमी, पतिव्रता, घर का कारबार करने वाली, भली और अपने -अपने पति के आधीन रहने वाली हो, ताकि परमेश्वर के वचन की निंदा न होने पाए।(तीतुस 2:5)

¹⁸ इस ग्रीक शब्द का यह स्पष्ट अर्थ है कि निरंकुश संदर्भ में दिए गए निर्देशों का पालन करने के लिए।

एक सामान्य, उदाहरण के लिये, सिपाही के द्वारा पूर्ण रूप से आदेशों को मानना।

अंत में, हर कोई परमेश्वर के आधीन हो जाएगा। यदि हम अपने आप को दीन बनाने का चुनाव अभी से करते हैं तो हम एक महान प्रतिफल की ओर बढ़ते हैं। यदि हम जिद्दी हैं और अपने अधिकारियों के आधीन होने से इंकार करते हैं तो वास्तव में हम अपने आप को न्याय के कटघरे में खड़ा करते हैं। यद्यपि, पति के बेहतर होने की कोई निश्चितता नहीं है, वो पत्नी जो अपने आप को उसके आधीन रख सके इस बात पर भरोसा रखे कि परमेश्वर सारी परिस्थितियों को देख रहे हैं।

आज्ञाकारिता सबसे अच्छी संभव स्थिति पैदा करती है- कथित तौर पर सबसे खराब रूप में नहीं! पूर्ण संतुष्टि आत्मसमर्पण से आती है, पति से दूर रहकर नेतृत्व के लिए लड़ाई करके नहीं।

तर्क #4: आधीनता पीड़ा के बराबर

कुछ लोग पति के प्रति पत्नी की आधीनता की आवश्यकता का दृढ़ता से विरोध करते हैं क्योंकि वे मानते हैं की आधीनता पीड़ा के बराबर है। बुरा अनुभव रखने वाले वे लोग ये भी नहीं सोच सकते कि विवाह आधीनता के साथ अच्छी भी हो सकती है। हमें इस बात का खेद है कि बहुत सी स्त्रियों को अपने पति द्वारा प्रताड़ना को सहना पड़ा है।

जब वासना प्रेम पर हावी हो जाती है तब स्वार्थीपन लोगों के जीवन में प्रवेश करता है। दुर्व्यवहार उत्पन्न होता है। यह पाप का परिणाम है, और जब तक प्रभु वापस न आ जाएं, दुर्भाग्यपूर्ण वह उपस्थित रहता है।

पत्नियों को ध्यान रखने कि आवश्यकता है कि किसी भी मामले को अपने हातों में लेना खतरा है। सभी प्रकार के जर्जर निर्णय पारिवारिक न्यायलय के द्वारा इस बात का स्पष्टीकरण करते हैं। महिलाएं विजय नहीं है यदि वे अपने पति को खो देती हैं। जब एक पत्नी अपने पति के प्रति अनाज्ञाकारी रहने कि सोचती है तब वह पीड़ा का सामना करती है,¹⁹ उसके बच्चे और समझ दोनों को कष्ट उठाना पड़ता है। एक स्त्री के हृदय का सख्त होना मूल रूप से परिवर्तन और सुधार की उम्मीदों के दरवाजे बंद कर देता है।

¹⁹ दुखद परिणाम में घटती जनसंख्या शामिल, अकेले बुजुर्ग लोग, छोड़े हुये बच्चे, व्यभिचार, तलाक और सामान्य तौर पर विवाह में अविश्वास। यह एक बॉम्ब से अधिक खतरनाक है, ऐसे मामलों में लोग अकेले रहकर जीवन बिताते हैं।

विवाह का निर्माण!

“हे पत्नियों, तुम भी अपने पति के आधीन रहो। इसलिए कि यदि इन में से कोई ऐसे हो जो वचन को न मानते हों, तौभी तुम्हारे भय सहित पवित्र चालचलन को देख कर बिना वचन के पनी अपनी पत्नी के चालचलन के द्वारा खींच जाएँ। “(1पतरस 3:1-2)

परमेश्वर पर भरोसा रखने के और एक आज्ञाकारी पत्नी बनने के द्वारा, पत्नी परमेश्वर के प्रति महान प्रेम और दया की ओर प्रतिक्रिया देती है। अधिक अनुग्रह और परमेश्वर की ओर से उनके प्रेम को लाने के लिए परमेश्वर में यह उम्मीद एक शक्तिशाली शास्त्र बन जाता है। ठीक इसी प्रकार का सिद्धांत और भी साधारण तरीके से उनके लिए इस्तेमाल किया गया है जिनके साथ दूसरों की धार्मिकता के कारण दुर्व्यवहार हुआ है। उनके लिए ज़रूरी है की वे सही काम को परमेश्वर पर भरोसा रखने के द्वारा करते जाएँ। (1 पतरस उसके तीसरे अध्याय को पूरा पढ़ें)

बहुत सारे लोग पीड़ा के बारे में अबिल्लिए पदों को पकड़े हुए है। यह कठिन समय परमेश्वर के लोगों के लिए खुले रीती से परमेश्वर की सेवा करने और उनके आसपास के लोगों के लिए गवाही लाने का अवसर होता है। यीशु ने साफ़ रीती से कहा,

“धन्य हैं वे, जो धर्म के कारण सताए जाते हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है। धन्य हों तुम, जब मनुष्य मेरे कारण तुम्हारी निंदा करें, और सताएं और झूट बोल बोलकर तुम्हारे विरोध में सब प्रकार की बुरी बातें कहें। आनंदित और मग्न होना क्योंकि तुम्हारे लिए स्वर्ग में बड़ा फल है इसलिए कि उन्होंने उन भविष्यद्वक्ताओं को जो तुम से पहले थे इसी रीती से सताया था। “ (मती 5:10-12)

अपमान, उत्पीड़न, और झूठे आरोप सरल मामले नहीं है। हम इस बात पर जोर नहीं दे सकते की हमारी जिन्दगी कष्टों से मुक्त है। यह सबसे कठिन परिस्थितियाँ परमेश्वर के प्रेम को प्रदर्शित करने के लिए और पृथ्वी पर नैतिकता और स्वर्ग में पुरुस्कार के लिए महान अवसर प्रदान करते हैं। पुरुष और स्त्री दोनों को परमेश्वर में अपने आनंद को इन पीड़ाओं में ढूंढना चाहिए। परमेश्वर देखते हैं और उनकी आज्ञाकारिता के लिए बड़े पैमाने पर उनके कठिन समय में उनको पुरस्कृत करते हैं। चाहे हमें कुछ भी हो जाए क्या वो इससे बदतर हो सकता है, जब

सामर्थी परमेश्वर ने अपने एकलौते बेटे यीशु मसीह के साथ होने के लिए अनुमति दी? नहीं। हमें हमारे अंदर पापों के लिए कमियां खत्म करनी होंगी।²⁰

(द) परिपक्व प्रक्रिया के प्रति आत्मसमर्पण के महत्व

पत्नी की आधीनता के बारे में अधिकांश तर्क नकारात्मक हैं। यद्यपि, हमें यह अवश्य जानना चाहिए की परमेश्वर ने महान कार्यों को आज्ञाकारी पत्नी के ज़रिये पूरा किया है। मरियम एक बेहतरीन उदाहरण है इसके लिए जब उसने परमेश्वर के शब्दों का अनुसरण किया। हमें हृदय परिवर्तन पर ध्यान देना चाहिए।

वे लोग जिन्होंने अनाज्ञाकारिता को चुना है भय में बढ़ते हैं। यद्यपि, एक व्यक्ति जब लगातार आज्ञाकारिता के कदम बढ़ाता है, वह व्यक्ति भरोसे को विकसित करना शुरू कर देता है। इन दो प्रक्रियाओं पर नज़र डालते हैं।

भय का प्रभाव

सभी को परिपक्व होने की ज़रूरत है। भय और शक, यद्यपि, विकसित प्रक्रिया को नष्ट कर देता है। भय उस भरोसे को दूर कर देता है जिससे विश्वास के कदमों को लेने की आवश्यकता है।

अगर मैं भयभीत हूँ तो मेरे साथ कुछ न कुछ बुरा हो सकता है जब मैं दुकान जाऊंगा, तो कदाचित मैं वहां नहीं जाऊंगा। मेरे पास विश्वास नहीं है की मेरे साथ कुछ अच्छा भी हो सकता है।

यदि पत्नी के पास यह विश्वास नहीं है की पति के आधीन होते हुए उसके द्वारा कुछ अच्छा होगा, तो वह उसके आधीन कभी नहीं होगी। कलीसिया के प्राचीन अगुआ जॉन भय और प्रेम को कुछ इस तरह जोड़ते हैं।

“प्रेम में भय नहीं होता,

वरन सिद्ध प्रेम भय को दूर कर देता है;

क्योंकि भय का सम्बन्ध डंड से होता है,

²⁰ इस पीडा का मुख्य कारण खुशी की मूर्ति के लिए आदमी का समर्पण है। लोग परमेश्वर की आराधना तभी करते हैं, जब वह आसान हो। खुशी उनकी मूर्ति है।

और जो भय करता है वह प्रेम में सिद्ध नहीं हुआ। “

(1 यहुन्ना 4:18)

प्रेम तब तक मौजूद नहीं हो सकता जब तक भय मौजूद है। प्रेम विश्वास और भरोसे की मांग करता है। जब तक इस संसार के भारी तर्क पत्नी के मनोदशा को प्रभावित करते रहेंगे, वह साधारण रीती से कठिन समयों में अपने आप को अपने पति के आधीन नहीं रख पाएगी। उसके अंदर कुछ न कुछ बुरा होने का भय बना रहेगा। वह इस बात की गहराई नहीं नाप पाएगी की परमेश्वर किस प्रकार से अपने प्रेम और दया को उसके प्रति इस समय में प्रकट करेंगे। और इस प्रकार से बिगड़ता चक्र उधेड़ने के लिए जारी रहेगा और अपने विनाश को प्रकट करता रहेगा।

यह वही है जो कादेशबर्ने (साइडबार देखें) में हुआ है। परमेश्वर के पास हर एक अच्छी धरना है, परन्तु सिर्फ यहूदी लोग ही कुड़कुड़ाये थे।

उनके मन में एक प्रकार का तर्क कुछ ऐसा भी था, "क्योंकि परमेश्वर हमसे नफरत करते हैं..." यह रवैया घातक है।

एक बार जब हम परमेश्वर के उद्देश्य पर सवाल उठा देते हैं, मनो जैसे हमारा विश्वास को लकवा मार गया हो। हव्वा के साथ हमारे कदम भी मैदान से पीछे हट गए हैं। ऐसे मामलों में कोई विकल्प नहीं है लेकिन संदेह और निराशा को पीछे छोड़ना चाहिए। परमेश्वर के वचन की

अस्वीकृति और अनाज्ञाकारिता का अनुसरण। आखिरकार, यह भयानक परिणाम रूप ले लेता है। भय साधारण रीती से रिश्तों को विकसित होने की अनुमति नहीं देता। भय भरोसे को नज़रअंदाज़ करता है जो विकास के लिए ज़रूरी है।

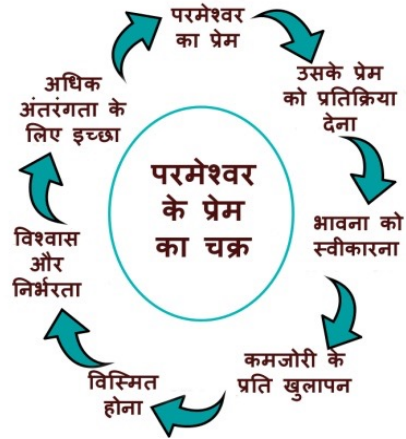


विश्वास का परिणाम

दूसरी ओर जब साधारण रीती से आज्ञाकारी होते हैं, हमारा भरोसा विकसित होने में सक्षम हो जाता है। याद रखें, विवाह परमेश्वर की सम्पूर्ण सृष्टि है। इसमें कोई भी त्रुटि नहीं है। परमेश्वर खुद ही भरोसेमंद है। तो जब हम अपना भरोसा परमेश्वर पर रखते हैं, तो हम सड़क के उस मार्ग की ओर बढ़ते हैं जहाँ हमारा विश्वास मज़बूत होता जाता है।

हमें इस बात का ज्ञात होना चाहिए की यह मार्ग पूर्वानुमान नहीं है की यह हमें किस रास्ते ले जाए या फिर हमें कितना और दूर एक ही दिशा या दूसरी दिशा में चलना है, परन्तु यदि हम दृढ़ बने रहे तो हम एक दम सही जगह पहुँचेंगे। यह उन पत्नियों के लिए महत्वपूर्ण है जो परमेश्वर पर सदा भरोसा रखती हैं ताकि वह अपनी हृदय की चिंताओं को ख़ास रीती से बच्चों के लिए पर परमेश्वर के नज़दीक रख सके।

परमेश्वर का प्रेम हमें परमेश्वर को खुश करने के लिए एक विशेष इच्छा देता है। यह हमें आज्ञाकारिता के कदम उठाने के लिए प्रेरित करता है, यद्यपि यह हमारी सोच से विपरीत चलता है। यह आत्मसमर्पण, वास्तव, में विश्वास की ओर कदम बढ़ाना है। पत्नियां विशिष्ट रूप से नहीं जानती कि किस प्रकार से कार्य पूर्ण होंगे। वे सिर्फ़ इतना जानती हैं कि परमेश्वर विश्वासयोग्य है जिन्होंने अपने आज्ञाकारी बच्चों से वायदे किए हैं।



पति का अपनी पत्नी के प्रति अगापे प्रेम पत्नी को पूर्ण समर्पण कि ओर ले जाएगा। वह उसे खुश रखना चाहती है। वह पाती है कि उसे कोई और वादविवाद

विवाह का निर्माण!

करने कि ज़रूरत नहीं है क्योंकि वह उस पर एक बेहतर न्याय करने के लिए विश्वास कर सकती है।²¹

प्रेम भय को पिघला देता है और शंका को दूर करता है। यद्यपि वह अपने पति से असली प्रेम को पाने में असमर्थ होती है, तौभी वह परमेश्वर के प्रेम में अपने प्रेम को ढूँढ सकती है। यह विश्वास उसको अपने पति के प्रति प्रेम में आधीन रहने के लिए साहसी निर्णयों को लेने के लिए मददगार होता है। यदि अच्छे रिश्ते के लिए कोई आशा है तो वह भरोसे और प्रेम के द्वारा पुनः स्थापित किए जाने चाहिए। पत्नी का आत्मसमर्पण विकसित रिश्ते के लिए एक महत्वपूर्ण पहलु है।

हमारे अंदर प्रेम करने कि क्षमता प्रेम और स्वीकार करे जाने से आती है। यहाँ पर एक महान और गहरी निश्चितता लाई गई है जब हम सदा और बेशर्त प्रेम किए जाएँ।

यह बेशर्त स्वीकृति हमारे जीवन में खुलेपन और विनम्रता कि ओर ले जाती है। भय और शंकाओं को एक तरफ रखा जा सकता है। जैसा कि हम इसको अंजाम देते हैं, हमारे प्रति परमेश्वर के प्रेम को अनुभव करके हम आश्चर्यचकित हो सकते हैं। परमेश्वर कि कृपा को पाने के लिए हमें उन्हें खुश करने कि आवश्यकता नहीं है। भरोसा बनाया गया है। हम परमेश्वर को गहराई में अनुभवी रूप से जानना चाहते हैं। परमेश्वर कि खोज करना हमें परमेश्वर और उनके प्रेम के प्रति गहराई में ले जाता है।

बढ़ते विश्वास द्वारा पूर्ति

एक महान शादी में, एक पति या पत्नी उनकी ज़रूरतों को पूरा करने के लिए परमेश्वर को देखते है। हर समस्या के समाधान के लिए परमेश्वर पर भरोसा करने के लिए एक अवसर है। भरोसा पत्नी को एक के बाद एक डर को एक तरफ रखने के लिए सक्षम बनाता है। बजाय इसके कठोर और कठोर होने से, उसका चेहरा तेजी से शांत और नरम हो जाता है।



²¹ इसका मतलब यह नहीं कि पति उस आंतरिक भाव को नकारे जो उसकी पत्नी से आता है। एक आदमी मूर्ख है जब वह अपनी पत्नी द्वारा कुछ सीखने की चीजों को नकारता है। वह उसकी मददगार है। उसे उसकी ज़रूरत है। यह महत्वपूर्ण है कि एक सही शेष तक पहुँचे जहाँ पर एक पति नेत्रत्व करता है, परन्तु उसके निवेश का मूल्यांकन करता है।

जिस प्रकार सूर्य की हल्की गर्मी से फूल अपनी प्रतिभाशाली महिमा में खिलते हैं, एक पति का ना बदलनेवाला अगापे प्यार पत्नी के उस संचित डर को तोड़ता है, जो उसके सम्पूर्ण विश्वास को बांधकर रखती है। उसका बढ़ता हुआ विश्वास उसकी वैवाहिक रिश्ते में एक खास जगह बनाने में मदद करता है। पत्नियों के लिये यह उचित है कि वे खुद को अपने पतियों के द्वारा एक अच्छी जिन्दगी की ओर ले जाये। आज्ञाकारिता प्यार और विश्वास का संचालन करती है।

“और यहोवा ने हमें यह सब विधियाँ पालन करने की आज्ञा दी, इसलिये कि हम अपने परमेश्वर र यहोवा का भय मानें, और इस रीति सदैव हमारा भला हो, और वह हमको जीवित रखे, जैसा कि आज के दिन है। और यदि हम अपने परमेश्वर र यहोवा की दृष्टि में उसकी आज्ञा के अनुसार इन सारे नियमों के मानने में चौकसी करें, तो यह हमारे लिये धर्म ठहरेगा” (व्य वस्था विवरण 6:24-25)।

पति कहा जाता है, सूरज की तरह, उसकी पत्नी पर प्यार की एक मजबूत किरण का उत्पादन करने के लिए। इस प्यार के माध्यम से उसके प्रेम में उसका आत्मविश्वास और गहरा हो जाता है और उसका जीवन पूरा हो जाता है। इसके अलावा, जब उसका पति निष्ठापूर्वक उसे प्यार करता है, वह एक बहुत संतुष्ट औरत जो परमेश्वर के प्रेम और महिमा में किसी को भी प्यार करने के लिए तैयार हो जाती है। क्या आपने कभी इस तरह कि एक महिला से मुलाकात की है? आप एक ऐसी औरत बनना चाहते हैं? क्यों नहीं आप प्रार्थना करे और परमेश्वर से मागें कि आपको वह एक परमेश्वर के प्रेम का उज्ज्वल फूल बना दे।

इ) मसीह में आधीनता कैसे होती है?

कुछ पत्नियाँ अपने वैवाहिक जीवन की आधीनता को अच्छेक चित्र में देखना चाहती हैं। यहाँ कही ऐसे स्पष्टीकरण है और आदेश है जो मदद कर सकते हैं ये करने के लिए।

एक शक्तिकशाली प्यार पर वो सच्चा है तो औरत के अंदर वो फलता और फुलता है, निश्चल और आज्ञाकारीता के साथ। उसकी कठोरता कोमलता में बदल जाती है। यही एक करण है जो औरत को खूबसूरत बनाती है। गौर करे जो प्रेरित ने नीचे कहा है।

“अर्थात् जो केशों की वेणियाँ सजाने, सोने के आभूषण पहनने और अच्छे-अच्छे कपड़ों से किया जाता है, 4 बल्कि तुम्हारा श्रृंगार तो तुम्हारे मन का भीतरी व्यक्तित्व होना चाहिए

विवाह का निर्माण!

जो कोमल और शान्त आत्मा के अविनाशी सौन्दर्य से युक्त हो। परमेश्वर की दृष्टि में जो मूल्यवान हो। “ (1पतरस 3:3-4)

अ) एक पत्नी की कोमल प्रतिक्रिया	ब) पत्नी की धीमी प्रतिक्रिया
जब तक प्रतियोगता या विवाद है, पुरुष स्वाभाविक रूप से तर्क को जीतने के लिए संघर्ष करता रहेगा। एक कोमल हृदय पुरुष को उसके झगडालूपन को छोड़ने, अपनी पत्नी की संगती का आनंद लेने और उसके व्यक्तित्व और विचारों को मूल्य देने पर मजबूर कर देता है।	जब तक पत्नी कटु आलोचना करती है या खुले तौर पर सही करने का प्रयास करती है, पति आम बातचीत को अनदेखा करता रहेगा। उसका शांत आत्मा पति को जो उससे कम बात करता है, उसे उसकी हृदय की बात कहने व साझा करने को उत्साहित करता है। यहाँ पर वह उसे बढाती है।

कई सवाल उठते हैं कि कैसे एक पत्नी व्यावहारिक रूप से आधीन होने के बारे में सोचना शुरू करती है। कुछ के लिए यह एक झटका है। एक पत्नी अपने पति के बारे में सोच सकती है उसका पति बिल्कुल बुराई में हो सकता है। क्या अभी भी वह आधीन होना चाहिए? हाँ, (जब तक कि वह उससे कहे हैं कि वह उसके साथ या उसके लिए बुराई करे)

एक ओर पत्नी सोच सकती है यदि यह संभव है कि एक ऐसे बुरे पति के लिए खुद को आधीन करना। परमेश्वर ने हमें एक तस्वीर दी है जिसमें हम देखें जो बात संभव है और करना सही है। पुराने करार में अबीगैल नाम के एक वफादार पत्नी थी। वह ईमानदारी से एक बुरे पति को सहती थी। परमेश्वर ने अंत में उसकी जान ले ली। दाऊद ने उसकी सूझ बूझ की प्रशंसा कि।

एक औरत कि पूर्ति उसके पति के बिना शर्त प्रेम पर निर्भर नहीं होता, उसी तरह से एक पति का प्यार भी पत्नी के विनम्र प्रतिक्रिया पर निर्भर नहीं होना चाहिए। यह पत्नी को उस परिस्थितियों से ऊपर उठकर भक्तिपूर्वक उसके पति की सेवा के लिए सक्षम बनाता है, चाहे वह “छोटा” क्योंकि न हो।

इसी बात का एक अन्य महत्वपूर्ण उदाहरण सारा है। वह निश्चित रूप से उसको प्रेरणा नहीं मिला थी वह कैसे उसके पति की इच्छाओं की पूर्ति करने के जैसे वो उसके साथ व्यवहार करता था! उसने अन्य पुरुषों के लिए मोहरा बना दिया जिससे वह अपने आप को बचा सके! उसके पवित्र निर्णय कि जैसा उसने उससे कहा उसे एक खूबसूरत औरत बना दिया।²² उसने अपने आप को परमेश्वर को सौंप दिया था, और यहोवा ने हस्तक्षेप किया और उन दोनों कि रक्षा की जब अब्राहम ने दो बार ऐसा किया।

“(अब उस पुरुष का नाम नाबाल था और उसकी पत्नी का नाम अबीगैल था. और स्त्री दिखने में बहुत बुद्धिमान और खूबसूरत थी, परन्तु पुरुष अपने कार्यों में कठोर और दुष्ट था और वह एक कालीबी था)” (1 शमूएल 25:3)

“क्योंकि बीते युग की उन पवित्र महिलाओं का, अपने आपको सजाने-सँवारने का यही ढंग था, जिनकी आशाएँ परमेश्वर पर टिकी हैं। वे अपने अपने पति के आधीन जैसे ही रहा करती थीं। जैसे इब्राहीम के आधीन रहने वाली सारा जो उसे अपना स्वामी मानती थी। तुम भी बिना कोई भय माने यदि नेक काम करती हो तो उसी की बेटी हो।” (1पतरस 3:5,6)

आदर्श रूप में, एक आदमी को ईमानदारी से अपनी पत्नी से प्यार होता है और पत्नी अपना हृदय उसके पति के सामने खोल कर रखती है, आधीनता के साथ। वे एक के रूप में कार्य करना चाहिए, पूरी तरह से एक दूसरे को पूरा करते हैं। हमारी दुनिया में, हालांकि, आदर्श नहीं है। हमारे जीवन साथी परमेश्वर की इच्छा के साथ पूर्ण सामंजस्य में नहीं रहते। लेकिन फिर भी इन स्थितियों में, या यहां तक कि एक बुरी स्थिति में, जब एक पति वफादार नहीं होता, एक पत्नी है जो परमेश्वर पर निर्भर है, अभी भी ईमानदारी से खुद को उसके आधीन कर सकती है।

²² शायद यह इसलिये है क्योंकि संस्कृति भिन्नताओं की वजह से है कि मैं एक बड़ा सौदा किया समस्या से सारा के निर्णय को ठीक रीति से अपनाकर। अगर यह 1 पतरस 3 अध्याय के लिये नहीं होता और जिस रीति से प्रभु ने हस्तक्षेप किया, यह अव्यवस्थित लग सकता है कि वह अपने आपको ऐसे आदमी को दे। पर शायद, और इस तरह से मैंने इसे सुलझाया, उसने उन पुरुषों से कहा होगा कि अगर वे कोई सच्ची पेशकश उस पर करते।

विवाह का निर्माण!

महिलाओं को अभिमानी नहीं लेकिन विनम्र होना चाहिये। वो गलती से यह नहीं सोचना चाहिए कि पुरुष कुछ भी कर सकते हैं, जो वे चाहते हैं जबकी वह 'घर में बंद है।' हम सभी सर्वशक्तिमान ईश्वर के दास हैं। हमें परमेश्वर को सुनने और उसे मानने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। आदमी की औदा उसकी पत्नी की तुलना में अलग है, लेकिन प्रभु की आज्ञा का पालन करने का अवसर एक ही है। परमेश्वर ने जो हमें आवंटित किया है तुलना में, विनम्रता एक उच्च औदा नहीं ले सकती। औदा और बुलाहट बारीकी से जुड़े हैं, जिसे परमेश्वर ने हमारे लिये बनाया है।

दो प्रभुओं के लिए एक शादी में कोई जगह नहीं है। यदि एक जोड़े सौहार्दपूर्वक एक साथ काम करते हैं, तो एक नेता के रूप में और दूसरा अनुयायी के रूप में खड़ा होगा। कलिसिया की आशिषे बढ़ती जाती है।

वह प्रेम पूर्वक प्रतिक्रिया देती है यीशु मसीह को जो उसका दूल्हा है। परमेश्वर सिर्फ हमारी आज्ञाकारिता के प्रतिक्रिया को चाहता है ताकि उसका शक्तिशाली प्रेम और अधिक गहराई से मसीह के जैसे सशक्त जीवन जीने के लिए प्रेरित करता है।

संचार



समन्वय

जब एक जोड़े अपनी महान शादी के निर्माण के बारे में गंभीर हो जाता है, तब परमेश्वर पति और पत्नी को एक साथ मिलकर काम करने के लिए सक्षम करता है। वे लगातार अंतर सम्बन्ध के रिश्ते में बढ़ते जाते हैं। इस बढ़ोतरी की ज्यादातर कारण एक दूसरे के साथ गहरी बातचीत से आता है। पति और पत्नी में बात नहीं करने और न साझा करने से, उनकी बढ़ोतरी अवसर बहुत कम होता है।²³

²³ यह आत्मिक भावनाओं में भी होता है जब हम परमेश्वर से मिलने को नकारते हैं रोज की मध्यस्था में जहाँ पर हम परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं। इसके द्वारा हम यह जान पाते हैं कि यह पति और पत्नी के लिये कितना महत्वपूर्ण है कि एक स्वस्थ वार्तालाप में प्रवेश करना एक दूसरे के साथ। एक अच्छा चलता हुआ रिश्ता अच्छे संवाद पर निर्भर करता है।

आप एक जोड़े के रूप में हृदय के मुद्दों को साझा करते हैं? क्या आप नियमित रूप से एक दूसरे के लिए एक साथ प्रार्थना करते हैं? मेरी पत्नी और मैं चीजों पर चर्चा करते हैं और तीस सालों से हम एक साथ हर रात प्रार्थना करते हैं। हाँ, हमें यह लगता है। देर रात टीवी, फिल्मों या ब्राउज़िंग के लिए समय नहीं है। लेकिन यह इन समय में हम एक दूसरे की मदद कर सकते। मैंने इसे इस तरह से रखा। आप बजाय तर्क करने के और परेशान रहने के अपने समय को बुद्धिमानी से योजना बनाइए?

सारांश

परमेश्वर सुरक्षित प्रेम में, पत्नियाँ अपने विश्वास में बढ़ सकती हैं, जो उसमें है ताकी उनकी उन कठिन परिस्थितियों मदद करें जो आधीनता के लिये आवश्यकता होती है। ये विश्वास बेहतर विवाह का विकल्प है जिसमें एक पत्नी अपने पति को अधिक विस्तार से अपने जीवन का एक विशेष हिस्सा मानती है।

ड) आधीनता के बारे में प्रश्न

ऐसे कई महत्वपूर्ण सवाल हैं जो कि पुछे जाते हैं। उनमें से कुछ पर नजर डालते हैं।

क्या होगा अगर एक पत्नी को अपने पति से प्यार नहीं मिले?

जब एक पत्नी अपने पति से यह उत्तम प्यार नहीं पाती है, तो भी वह उसकी जिम्मेदार है कि उसे सम्मान करे और उसके आधीन रहे।²⁴ यह परमेश्वर की बुलाहट है और उसके लिए चित्रण है। वह कैसे ऐसा करने में सक्षम है?

वह जिस तरह विनम्र भावना से उसके पति के आधीन रहती है जैसे परमेश्वर उसकी गहरी जरूरतों को पूरा करता। जब परमेश्वर एक औरत के जीवन के गहरे हिस्से को संतुष्ट करता है, तो उसके गहरे और सबसे बुनियादी जरूरतों के लिए परवाह होती हैं। फिर उसको परमेश्वर पर भरोसा के लिए साहस होता है एक मुश्किल शादी में। वह ईश्वरीय प्रेम और विनम्रता के साथ अपने हृदय को भरने के लिए उस पर विश्वास कर सकती हैं।

²⁴ महिलाओं और उनके माता-पिता को शादी से पहले एक पति के अनुरूप प्यार पर विचार करना चाहिए! इसके बाद इसे बदलने में देरी हो जाती है।

क्या एक पत्नी अधिक अधिनता में रह सकती है?

एक पत्नी कभी भी अधिक अधिनता में नहीं रहेगी अगर वो विनम्रता का मतलब ठीक तरह जानती है। सबसे पहले, इसका मतलब यह नहीं है कि वह एक संगहृदय प्राणी है, जो उसके मालिक को एक अखबार पहुंचाती है। आदम की सोचे कि उसका मूल जवाब क्या था हव्वा मूल के लिये।

नीतिवचन 31 में औरत के बारे में सोचो। एक औरत एक आदमी में विशेष जरूरतों को पूरा करने के लिए बनाई गई एक जीवित और गतिशील प्राणी है, जिससे परमेश्वर के उद्देश्य पूरे होते हैं। एक औरत को इसे अपने जीवन के बुलाहट के रूप में लेना चाहिये और न कि सिर्फ उसके जीवन के कुछ छोटे हिस्से के रूप में। वह केवल "प्रभु में" समर्पित होना चाहिये, जो उसे बताएगा कि क्या नहीं करना चाहिये जो परमेश्वर को नहीं भाता।

क्या एक पति को अपनी पत्नी से प्यार नहीं करना चाहिए?

निश्चित रूप से एक पति अपनी पत्नी को प्यार करना चाहिए। उसने कहा कि ऐसा करने की वाचा है। लेकिन जब भी पत्नी इस प्यार की मांग करती है, वह एक कठोर हृदय को दिखती है, जो आदमी को खदेड़ता है। वह उसकी जरूरतों को पूरा करने के लिए उससे हेरफेर करने की लिए कोशिश करती है। क्या यह विपरीत नहीं है उसके जो होना चाहिए के? क्या उसे उसकी जरूरतों को पूरा नहीं करना चाहिये जो वो चाहता है? वह सिर्फ इसका उपयोग करती है "कि यदि तुम मुझसे प्यार करते तो शायद आप....." उसे नियन्त्रित करने के लिये बहस करती है। यह एक भक्तिहीन व्यवहार है जो मतलब से भरा हुआ है।

उसे परमेश्वर के साथ मिलने की जरूरत है, ताकि वो उसकी जरूरतों को पूरा करे। तब वह अपने आप को आरक्षित करके अपने पति के लिये विशेष बन जाती है। वह तो उसके पति को खुद को आधीन करने के लिए भंडार है। पति पत्नियों की मांग को नापसंद करते हैं। उनके पास समय या ऊर्जा नहीं होता कि वे अपनी पत्नि के अंतहीन आदेशों की सूची को पूरा करे। केवल परमेश्वर उन जरूरतों को पूरा कर सकते हैं। एक पति परमेश्वर के लिए कोई विकल्प नहीं है। इस तरह की मांग करने वाली महिलाओं को परमेश्वर के प्यार का स्पर्श होना जरूरी है।

मुझे कैसी प्रतिक्रिया देना चाहिए जब मुझे लगता है कि मेरे पति 'गलत' निर्णय में दृढ़ है?

हमें यह ध्यान रखना होगा कि पत्नि के रूप में आपकी जवबदारी है कि अपने आप को आप अपने पति की नज़रों में विशेष बनायें। यह एक आदमी की जिम्मेदारी बनती है कि वो परमेश्वर के आगे सही निर्णय ले जो उसकी नजर में अच्छा समझा जाये। “ हे पत्नियों, अपने पतियों के प्रति उस प्रकार समर्पित रहो जैसे प्रभु के अनुयायियों को शोभा देता है”। (कुलु-3:18)

आगे यह आपको समझने में मदद करेगा कि जब पति गलत है, वह आम तौर पर पहले से ही यह जानता है। वह सिर्फ बहाने की तलाश में है। जब एक पत्नी अपने पति के साथ मुठभेड करती है, तो सामान्य रूप से पति बचने कि कोशिश करता है। हालाँकि यदि वह परमेश्वर की पद्धति का अनुसरण करती है, तो वह उसके लिये सबसे अच्छी स्थिति हो जाती है। इन मामलों में, मैंने व्यक्तिगत रूप से यह कई बार अनुभव किया है, पत्नी का शांत हृदय परमेश्वर की आत्मा को उसके हृदय में काम करने के लिए अनुमति देता है। वह अक्सर आएगा और आपसे इन मुद्दों के बारे में पूछेगा।

हालांकि कई बार, पति सही और पत्नी गलत होती है। पत्नी को अपने पति के निर्णय के माध्यम से परमेश्वर पर भरोसा करने की जरूरत है। उसे उसके फैसले पर जाना चाहिए। परमेश्वर का आदेश उसे सबसे अच्छी बात जो संभव है करने के लिए मदद करता है चाहे उसे ऐसा महसूस नहीं होता है। महिला एँ अक्सर अपनी भावनाओं द्वारा भ्रमित हो जाती है। वे नमूने द्वारा स्थितिजन्य जीव हैं। हालांकि उसे यह सीखना जरूरी है कि कैसे वह ज्यादा योगदान अपने परीवार को दे।

कुछ पत्नियों को दुरुपयोग के बारे में आश्चर्य हो सकता है। "कैसे सारा की तरह इन महिलाओं ने किया?

हम शायद भ्रम में होकर ऐसा कह सकते हैं, "शायद अब्राहम मेरे पति के मुकाबले में बुरा नहीं था!" दुर्भाग्य से, हम भूल जाते हैं कि अब्राहम कैसे बुरा था बातें। अब्राहम ने अपने खुद के जीवन के लिए डर में जवाब दिया, जब वह एक विदेशी देश की यात्रा कर रहा था। उसने क्या किया? उसने अपनी पत्नि को यह कहने को आदेश दिया था, कि उनसे यह कहे कि वह केवल उसकी बहन है।

अब्राहम वास्तव में इन विदेशियों को अनुमति देता है कि वे अपने हरम में ले जये (एक बार से अधिक!)। सारा को बार उलझन का सामना करना पड़ा जब उसके पति अब्राहम ने अपने जीवन में इन नैतिक समझौते किये जिससे सारा के जीवन पर बहुत असर पड़ा। मैं शायद कह सकता कि यह दुर्लभ था लेकिन ऐसा नहीं है।

तो कैसे एक पत्नी इस गलत तरीके से इलाज को सहन कर सकती है?

हम पहले, पूछकर के द्वारा परमेश्वर की इच्छा को स्पष्ट करना चाहिए "आप किसी ऐसे पत्नियों को जनते है जिन्होंने अपने पति के हाथों से बाहर अच्छा घर का नियंत्रण किया है, जिनके पास अच्छे परिवार और विवाह है"। नहीं, हर बार एक पत्नी कुछ मांग करती है या अपने पति से मना कर देती है, वह कठोर है, और एक दीवार उन दोनों के बीच का खड़ी हो जाती है। इस को हल करने के लिए कोई रास्ता नहीं है जब तक इसका अंगीकार नहीं होता, जिससे वह दीवार के नीचे हो जाये। यदि ऐसा नहीं है, तो उनकी शादी के हर पहलू को बुराई से दागदार किया जाएगा, जिसमें उनके यौन जीवन भी शामिल है।

इसमें कोई शक नहीं है कि जो लोग कठिन परिस्थितियों के तहत पीड़ित होते है उन्हें सहन करने के लिये अतिरिक्त अनुग्रह की जरूरत है। कुछ परिस्थितियों में पूरे घर की वित्तीय स्थिरता पति के मूर्ख निर्णय के माध्यम से खो दिया जा सकता है। परमेश्वर ऐसी बातें होने के लिए अनुमति देता है। वह जनता है कि एक तरह से टूट जायेगा या अन्य कुछ अगर वे सच्ची मदद पाना चाहे तो। जाहिर है, परमेश्वर के पास एक बड़ा उद्देश्य है। वह विवाह को संरक्षित व बहाल करना चाहता है। हमें इस तरह के मामलों को स्वीकार करने की जरूरत है। एक घर होना अच्छा है, लेकिन यह जीवन में सबसे महत्वपूर्ण बात नहीं है। एक पत्नी को परमेश्वर की दोहाई देना चाहिए जब वह देखति है कि उसका पति उसे चट्टानों पर नौकायन कर रहा है।

कैसे एक पत्नी परमेश्वर से मदद के लिए रोए?

मदद के लिए परमेश्वर से रोना पवित्र ग्रंथों के पन्नों भर में एक सबसे बड़ा विषयों में से एक है। कितनी बार शास्त्र में मदद की बात करता है, जो लोगों मदद के लिए परमेश्वर से के सामने रोते है? पन्ने दर पन्नों में यह इसका अभिलेख है। परमेश्वर संकट के माध्यम से लोगों की मदद करने में माहिर हैं। परमेश्वर ने मिस्र में

उत्पीड़न की रचना कि जिससे एक अधिक अच्छा हुआ, वह है, निर्गमन। इस्राएलि छुड़ाये गये। परमेश्वर ने उन्हें जबरदस्त कठिनाइयों के तहत ले गया, ताकि वे उसकी सबसे बड़े बचाव के हाथ को देख सके। आज हम ऐसे कई दुखी विवाहों के करण देखते हैं। लेकिन परमेश्वर उन्हें बहाल करने में माहिर हैं। वह हमारे विवाह को पुनर्स्थापित करता है हमें कई परीक्षणों के माध्यम से।

जिस प्रकार वे लोग जो परमेश्वर के प्रेम को प्राप्त किये हैं असुरक्षित हैं, उसी प्रकार एक पत्नी असुरक्षित है एक अत्याचारी पति के सामने। परमेश्वर के लोगों का सताव झेलना और एक पत्नी का पति द्वारा अत्याचार किया जाना दोनों में समानता है। शायद सावधान अवलोकन से पत्नियों को मदद मिल सकती है कि कैसे परमेश्वर हताश परिस्थितियों में उनके लोगों के साथ काम करता था, उसी प्रकार यह पत्नियों को समझने में होगा कि, वह कैसे वह उन्हें सबसे कठिन परिस्थितियों में मदद करेगा जैसा वे उस पर भरोसा करते हैं।

परमेश्वर का प्यार या शक्ति कम नहीं हो जाती, जब एक पत्नी भावनात्मक रूप से या अन्यथा एक मूर्ख पति से चोट खती है।²⁵ अभी यहाँ कई ऐसी चोट पहुँचाने वाली पत्नियाँ हैं। तब भी परमेश्वर का प्यार या शक्ति कम नहीं हो जाती, जब परमेश्वर अनुमति देता है अपने लोग, उसकी दुल्हन, को पीड़ित होने की अनुमति देता है। अभी मैं ऐसे एक देश के दो ईसाई गांवों को जानता हूँ जिन पर हमला किया गया और एक बड़े मुस्लिम समूह द्वारा कब्जे में ले लिया गया था। वे कई सबकुछ खो चुके थे लोगों की जान सहित। वे एक बहुत ही निराशाजनक स्थिति में थे।

हम मानते हैं परमेश्वर ऐसी बातें घटित करने के लिए अनुमति नहीं देता, लेकिन वह ऐसा एक समय के लिए करता है। न्याय हालांकि हो जाएगा। उत्पीड़न के इन दिनों परमेश्वर की विशेष गतिविधियों होने के लिए अनुमति दी जाती है। हम यह कहने कि कोशिश नहीं कर रहे हैं कि परमेश्वर खुद ही बुराई करता है। परमेश्वर उस क्रूर पति की तरह नहीं है। हालांकि, उन्होंने ऐसा करने की अनुमति दी है और इस कठिनाइयों के माध्यम से काम करता है। परमेश्वर बहुत ध्यानपूर्वक देखत है अपने सभी लोगों को जो पीड़ित हैं और उचित कार्रवाई और बदला लेगा। परमेश्वर

²⁵ हमें यह याद रखना चाहिये कि कुछ पति उनके पत्नियों द्वारा दुर्व्यवहार किये जाते हैं।

बुराई से बढकर महान है इसे अपनी अनन्त योजना की महिमा में शामिल करगा। समय पर परमेश्वर उनकी लोगों की पीडा बर्दाश्त करता है।

“हे पवित्र एवम् सच्चे प्रभु! हमारी हत्याएँ करने के लिए धरती के लोगों का न्याय करने को और उन्हें दण्ड देने के लिए तू कब तक प्रतीक्षा करता रहेगा?” 11 उनमें से हर एक को सफेद चोगा प्रदान किया गया तथा उनसे कहा गया कि वे थोड़ी देर उस समय तक, प्रतीक्षा और करें जब तक कि उनके उन साथी सेवकों और बंधुओं की संख्या पूरी नहीं हो जाती जिनकी वैसे ही हत्या की जाने वाली है, जैसे तुम्हारी की गयी थी। “ (प्रकाशितवाक्य

६:९-११)

बाईबल से पीड़ित होने का वास्तविक उदाहरण यीशु और पूर्व चर्च शामिल हैं। 26 हमारे दुख का अपरिपक्व अवधारणा हमारा प्यार सुख और खुशी के लिए से बढ रहा है। आज्ञाकारिता कभी कभी एक उच्च कीमत रखता है। पत्नी को परमेश्वर के लिए आज्ञाकारिता में दुख और शर्म की बात सहन करने को तैयार रहने की जरूरत है।

क्यों आधुनिक दिन में महिलाओं को आधीनता से समस्या में वृद्धि हो रही है?

चर्च और पत्नियाँ एक आम बीमारी से पीड़ित हैं। जब वह धनी रहती है तब वह भूल जाती है कि कैसे वह निर्भर है। वह उसकी स्थिति में क्रोध करना शुरू कर देती है और कैसे चीजें हो इसमें अधिक कहना चाहती है।

यह एक हृदय है जो कि एक स्वतंत्र भावना और अलगाव की ओर ले जाता है। अच्छा प्रार्थना सभाओं की कमी परमेश्वर की ओर तलाश समान है जैसे एक पत्नी जो बिना उसके पति के परामर्श के निर्णय लेती है। यह समस्याएँ बढ़ती है जब एक पत्नी अपने प्रगति के विषय में सोचती है। उसकी लालच क्या हैं? क्यों यह संभालने के लिए मुश्किल हो जाता है?

26 यहाँ पर दो वाक्यांश दिये गये हैं: “उसी दिन यरूशलेम की कलीसिया पर बड़ा उपद्रव होने लगा और प्रेरितों को छोड़ सब के सब यहूदिया और सामरिया देशों में तितर बितर हो गए” (प्रेरितों 8:1)।

“यहाँ तक कि हम आप परमेश्वर की कलीसिया में तुम्हारे विषय में घमण्ड करते हैं, कि जितने उपद्रव और क्लेश तुम सहते हो, उन सब में तुम्हारा धीरज और विश्वास प्रगट होता है” (2

थिस्सलोनिकियों 1:4) ।

मुसीबत सिर्फ काम नहीं है जो एक पत्नी को उसके पति की सेवा से दूर करता है (उदाहरण के लिए स्वयं के लिये भोजन बनाना) लेकिन यह भी पारस्परिक समस्याओं का परिणाम है। वहाँ चर्चा के लिए समय नहीं है। पत्नी परमेश्वर की पहली बुलाहट को एक पत्नी होने के लिए भूल जाती है। और बजाय खुद को उसके अनुसरण करने के वह अपनी स्वतंत्र जीवन शैली को 'अधिक फायदेमंद' सोचती है। हालाँकि वह उसमें उसकी पूर्ति नहीं होगी। कई बार वह एक रिश्ते को देखती है जिससे उसकी इच्छा पूर्ति हो, आमतौर पर यह उसकी शादी के बाहर अनैतिकता के लिए अग्रणी है। धन एक विकृत धारणा की ओर ले जाता है एक के पद में, जो रिश्ते में बहुत तनाव का कारण बनता है।

क्या यह सही है मतभेदों पर चर्चा एक पादरी या सरकार श्रमिकों के साथ किया जाये?

पति पत्नी का अधिकार है। लेकिन ऐसे अन्य अधिकारि होंगे जो कि कई बार पति द्वारा अनुचित कार्रवाई कर इसे सही करने की कोशिश करेंगे। खुद परमेश्वर इसे करता है। ऐसे बहुत ही कठिन परिस्थितियाँ हो सकती हैं जिस पर पूरी तरह से यहाँ पर चर्चा नहीं की जा सकती। मुझे कुछ सुझाव देने दें। एक सरकारी अधिकारी के ध्यान में अपने पति के पाप मत लाओ, लेकिन परमेश्वर को अपने तरीके से इसे करने दें। यदि वास्तव में यह आने की जरूरत है।

एक पत्नी, केवल अगर जरूरत है, तो अपने सामान्य जरूरत का उल्लेख ध्यानपूर्वक अपने बड़ों या पादरियों के सथ करना चाहिये, ताकि वे उनके लिए प्रार्थना कर सके। उसे विशिष्ट खुलासा करने से बचना चाहिए। यदि परमेश्वर चलाना चाहे तो, उसे सावधान अवलोकन से बड़ों के माध्यम से काम उसके दे। पति के पाप उसके बच्चों के खिलाफ या किसी अन्य संदर्भ में हो सकता है। एक पत्नी को उसके अभियोक्ता के रूप में खड़ा होने से मना करना चाहिए। वह वहाँ उसे निर्माण करने के लिए होना चाहिए जब वह टूट गया हो।

परमेश्वर को मामले को संभालने की अनुमति दें। उसके सामने रोयें। प्रार्थना करो कि परमेश्वर हस्तक्षेप करे और उस पर दया अनुदान करे। “क्योंकि उसने हमारे अधर्म को उसके सामने रख दिया, हमारे छिपे हुए पाप उसके उपस्थिति के रोशनी में”।

विवाह का निर्माण!

हमें पता है कि वहाँ एक ऐसा बड़ा सौदा है भिन्न सलाह का जो एक को करना चाहिये ऐसे स्थितियों में। हमारी सामान्य टिप्पणी एक पत्नी के मुख्य बुलाहट और उसके अधिकारियों की मान्यता के आलोक में किया जाता है। हम किसी भी तरह से नहीं समझना चाहिये कि पति निर्दोष है या न्याय से मुक्त होना चाहिए। हालाँकि पत्नी की बुलाहट है हि वह उसे नीचे खींचने की बजाय उसका समर्थन करना चाहिये। उसे एक विरोधात्मक स्थिति से बचने के लिए सावधान रहना चाहिये तो अगर वह परमेश्वर की कृपा से टूट गया है, तो उनकी शादी पुनः स्थापित किया जा सकता है।

सारांश

आप अपने पति की सेवा में उत्साह से भर रहे हैं? क्या आपने हृदय को प्रतिपादन करने का निर्णय लिया है कि अब आगे से आप अपने आप की सेवा के बजाये जीवित परमेश्वर की सेवा करेंगे?

जब एक पत्नी इन निर्णयों को लेती है, तब वो एक रहस्यमय आश्चर्य से भरा हो जाती है। उसका पति यह नहीं कहता लेकिन उसे ध्यान देता है। इसका मतलब यह नहीं है कि वह उसकी टिप्पणियों को अपनी पत्नी को बता देगा, लेकिन वह ध्यान देगा। उसका निःस्वार्थ प्रेम बहुत हृदयकश होगा, करीब ध्यान देने के लिये। वह बिल्कुल उसके द्वारा ही धन्य है।

"भली पत्नी कौन पा सकता है? क्योंकि उसका मूल्य मुंगो से भी बहुत अधिक है"

(नीतिवचन ३१:१०)

जब पत्नी प्रभु के लिए पहली प्रतिक्रिया देती है और तब से उस रिश्ते की बहुतायत से उसके पति की सेवा करती है, जैसा वह प्रभु मसीह को प्रतिक्रिया देती है, तब वह उसके पति को प्रतिक्रिया देती है। तैयार है और उसके पति की बात की है और वहां अनुरोधों को पूरा करने में सक्षम है। वह प्रभु मसीह का जवाब है, वैसे ही वह अपने पति के लिए जवाब है।

जोखिम और दुरुपयोग का समय नहीं है परमेश्वर के प्यार को छोड़ देने का। परमेश्वर का प्रेम और सामर्थ्य कभी समाप्त नहीं होता, यहाँ तक कि सतावट के दौर में भी नहीं। परमेश्वर उनकी महान शक्ति प्रदर्शित करने के लिए संकट के माध्यम से काम करता है। वह अपने लोगों को बहुत दर्द समय भी सहन करने की क्षमता देता है, और प्यार देता है जब नफरत और परीक्षा में पड़ते हैं। यह उनकी महानता है जो कठिन परिस्थितियों में भी उसके प्यार को प्रतिक्रिया देते हैं। हम भरपूर होते हैं जब हम उस पर भरोसा रखते हैं।

परमेश्वर का प्रेम अद्भुत है कि यह हमारी हर परिस्थिति के लिए पर्याप्त है। हम उलझन में हो सकते हैं और कभी-कभी चोट में, लेकिन परमेश्वर ध्यान से हम पर नजर रख रहा है। जब हम इन परिस्थितियों में अपने आपको उसके प्यार के आधीन कर सकते हैं। एक महान गवाही आगे चलती है। यह उसके बलिदानपूर्वक प्यार की प्रतिक्रिया है।

यह गैर जिम्मे दाराना बयान एक आदमी के अंदर बहाने रूप में कभी नहीं दिखना चाहिये उसकी पत्नी पर या दुनिया के एक कमजोर लोगों पर उत्पीड़न से। लेकिन सिर्फ एक पति के प्यार के रूप में, एक ठंडा और मूर्ख पत्नी को उसे सहन करना चाहिये। तो एक पत्नी अपने मूर्ख पति को सहना पड़ेगा। एक पत्नी नहीं कह सकती कि वह निश्चित समय में संवेदनशील होगी और बाकी समय कठोर हो जयेगी, जैसा उसके पति के व्यवहार में निर्भर करता है। नहीं। परमेश्वर का आदेश है कि उसके पति के आधीन रहे इस अंधेरी दुनिया में वह अपना प्रकाश स्तंभ की रोशनी फैलाती रहे उसके पवित्र प्रकाश ग्रह से, भले ही इसका मतलब परिस्थितियों का सामना करना हो जैसे कि आर्थिक हानि।²⁷

पूर्ति खालीपन को नकाबू करता है

जब हम परमेश्वर के प्रेम के उत्तरदायी हैं, जीवन के प्रति हमारा रुख पूरी तरह से बदल जाता है। जब परमेश्वर का प्रेम हमारे मन में है, हम दूसरों के बारे में सोच

²⁷ कई पत्नियाँ ने साझा किया कि उन्होंने घर पर अपना नियंत्रण लिया जब उन्होंने यह देखा कि उनके पति आर्थिक रूप में गलत निर्णय ले रहे हैं। हमें पुछना चाहिये कि क्यों उनहोंने इस बिन्दु से शुरुआत किया? यह शायद इसलिये कि वे परमेश्वर से अधिक पैसे को महत्व देते हैं

सोचते हैं। जब एक पत्नी परमेश्वर के प्यार के साथ सेवन करती है, तो वह उसके पति को ना हि कहेगी और ना हि जोर देगी कि वो उसके विचारों का पालन करे।

इसके बजाय, वो अपने हृदय में ही गहरा संतुष्ट होगी, ओर परमेश्वर पर भरोसा करेगी, वो अपने पति के आधीन रहेगी। जैसे-जैसे वो परमेश्वर पर भरोसा करेगी उसका हृदय परमेश्वर के प्रेम से बडने लगेगा, ओर जो उसके चारो ओर हो उन पर बहने लगेगा। परमेश्वर के प्यार की परिपूर्णता खालीपन पीछे छोड देगी।

यह तस्वीर जो मेरे दिमाग में आया है जो एक सागर है उसके आते हुए लहरों के साथ जो कि एक सूखे घाटी को भर रही है। जैसे-जैसे पानी बढ़ता है वैसे-वैसे वह खाली स्थान को भरता है।

वहाँ घाटी और रेत है, पर अब जब पानी बढ़ता है तब वह चारो ओर घूमती है, हर एक छोटा गुहा भर जाता है। फिर जीवन, केकडे, और मछलियाँ उस स्थान में भरने लगती है जहाँ कुछ समय पूर्व बन्जर और सूखा पडा था। परमेश्वर का प्रेम हमारे खाली जीवन को भरने के लिए चाहता है। परमेश्वर के प्यार की लहरें आत्मलक्ष्य की खालीपन को बाहर धकेलकर और अधिक महिमय खुश और गौरवशाली लहरों को भरना चाहता है।



जैसे-जैसे विश्वास बढ़ता है,
परमेश्वर का प्रेम उन खाली
स्थानों को भरने लगता है, जो
पहले सूखे व बंजर पडे थे।

एक पत्नी का कार्य योजना

अभी, परमेश्वर कहता है कि हर पत्नी अपने स्वार्थ को दूर करे। उसे पहले परमेश्वर के प्रेम का उत्तरदायी होने कि ज़रूरत है उसमें सहमत होकर। उसको यह स्वीकारने ज़रूरत है कि कैसे वह उसके सुन्दर योजना और मकसद उसके प्रेम की ओर अब मुड गयी है।

उससे कहो कि वो आपको माफ करे उन सारे अनाधिनता ओर बुरे व्यवहार के लिये। अंगीकार करें कि कैसे आपने अपने मुश्किल परिस्थितियों में उस पर भरोसा नहीं किया। यीउ मसीह के द्वारा आपको आपके न पापों की क्षमा मिल जयेगी,

पुनःस्थापना व एक नयी जिन्दगी की शुरुआत होगी जिसका अन्त नहीं होगा। स्वीकरें कि उसे आपके जीवन के लिये एक बेहतर योजना मलुम है जिस पर आपको भरोसा है कि वो आपको चलाये इस योजना को पूरा करने के लिये, हलाँकि इसमें एक मूर्ख पति आधीनता ही क्यों न हो।

विनम्रता में चलना,

मेरे नारीत्व को स्वीकार करना,

कोमल, शांत और दयालुता।

मुझे दूसरों के भले के बारे में सोचने दें,

मुझे ईमानदारी से अपने पति और परिवार की सेवा करने का सौभाज प्राप्त करें।

मेरा हृदय पूरी रीती से खुशी के साथ मेरे परमेश्वर को लुभावना हो।

एक पत्नी की प्रार्थना

प्रिय परमेश्वर, मुझे बदलने के लिए यह समय है। मैंने अपनी जिम्मेदारियों से परहेज किया है। मैंने अपनी खुद की इच्छाओं को पूरा किया और खुद के रास्ते पर चली। जो कुछ मैंने पाया था वह सब खाली है। मैंने आपको और आपके उद्देश्यों को ध्यान नहीं दिया। मैंने बहुत मजबूर किया जो मैं चाहती थी। यहाँ आपने मेरे लिये एक महान नमूना रखा है और मैंने अपने आपको उसके लिये कठोर कर लिया।

मैं अब इस समस्या का हिस्सा नहीं होना चाहती हूँ, इसके बजाय अपना प्रेम मेरे द्वारा बहे, एक हल का हिस्सा बन जाऊँ। प्रभु मुझे यीशु मसीह के द्वारा मेरे स्वार्थपन को क्षमा कर दीजिये, और आपमें फिरसे निर्माण कर दीजिये। मुझे मेरे अनाधीनता के हृदय के लिये माफ कर दीजिये जिससे बुरा व्यवहार और तरीका मेरे पति के विरोध हुआ। मैंने उन्हे बहुत नीचा दिखाया।

मुझे कोई अधिक से अधिक जुनून न हो, आपको और आपके योजना को मैं पूर्ण रीती से और जोश से उत्तरदाई होऊँ। मेरी सहायता करो। मेरा विश्वास बहुत छोटा है। कई बार मैंने आपके तरीकों को नहीं समझा, लेकिन मैं उनकी इच्छा करती हूँ। अब आपके प्रेम की लहर मुझमें बहे और मुझे ताजा कर दें ताकि आपका प्रेम जो मझमें है वो मेरे चारों ओर के लोगों पर छिडके।

विवाह का निर्माण!

हे प्रभु, मैं प्रार्थना करता हूँ कि आप मुझे मेरे पति को अपने वफादार प्रतिनिधि होने में मदद करेंगे। मैंने उसके लिए जीवन को कठिन बना दिया था। मैं मधुर, प्रीय नहीं हुई, और उसकी हर अच्छेन इच्छा को मैंने छीन लिया। मैंने अपनी सोच को स्वार्थी बना दिया: मैंने अपने खुद के समय की मांग की है। अब मैंने खुद को मरा हुआ प्रमाणित कर दिया है, प्रभु। मुझे अब ईमानदारी से उसके सेवा द्वारा आपकी सेवा करने दें। चाहे मैं परेशानी झेलूँ तो भी मुझे सारा के जैसी ईमानदार बनने के लिये मदद कर। किसी दिन, मैं यह कह सकूँ कि मैं "एक सौम्य और शांत भावना रखने वाली आत्मा पाऊँ जो परमेश्वर की नज़र में श्रेष्ठ हो"। मुझे आज के वर्तमान समय की एक पवित्र औरत बना दे, जिसकी आशा परमेश्वर पर हो, वे खुद को अपने पति की आधीनता में रखें। कि आप मेरे पति की सेवा द्वारा अपने प्रेम को मुझमें देखें। यीशु मसीह के नाम से यह प्रार्थना माँगती हूँ आमीन।

अध्याय # 3 अध्ययन के लिए सवाल

1. जीवन का दूसरा सिद्धांत क्या है?
2. इफिसियों 5:22 को लिखिये।
3. परमेश्वर का इअहिक नमूना क्या है जो परिर्तित हुआ?
4. कैसे कलीसिया का नमूना एक पत्नि उसके पति को प्रतिक्रिया देती है? (इफि 5:24 में देखे)
5. कलीसिया के लिये परमेश्वर की क्या योजना है? यह कैसे पुरा हुआ है?
6. वे दो की चार सच्चाईयाँ क्या है जिसे एक पत्नि को विश्वास करना चाहिये और सही से अपने आप को अपने पति के आधीन करे?
7. कौन पत्नि को समझाने कि कोशिश करता है कि उसे उसके पति के आधीन नहीं रहना चाहिये? यह कैसे होगा?
8. विवाह अनुबन्ध और विवाह प्रण में क्या अन्तर है?
9. क्या किसी और के लिये विषय बनने का मतलब वे अमहत्वपूर्ण है या अमूल्य है? क्यों?
10. परमेश्वर कैसे मानव के संकट को कैसे देखता है? एक पत्नि को उसके मूर्ख पति द्वारा सताने की सामर्थ को किस तरह से देखना चाहिये?
11. कैसे भय रिशतों को अपाहिज बनाता है समझाईये?
12. दिखाईये कि कैसे प्रेम आज्ञाकारिता व भरोसे को बढ़ाता है?

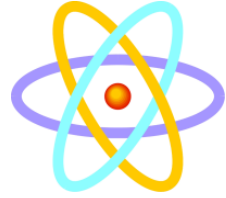
विवाह का निर्माण!

13. समझाईये कि कैसे 1 पतरस 3:3-4 एक पत्नि की आधीनता का चित्र बनाअता है?
14. क्या एक पत्नि को एक बुरे पति की आज्ञा माननी चाहिये? क्यों या क्यों नहीं? क्या इसकी कोई अपेक्षा है?
15. एक पत्नि को अपने पति को कैसी प्रतिक्रिया देनी चाहिये जब वो देखती है कि उसका पति उसे उस तरह नहीं चाहता जैसे वो चाहती है?
16. कैसे धन एक औरत के प्रत्यक्ष ज्ञान को बिगाड़ता है उसके पति के आधीन होने के लिये?
17. आप कैसे परमेश्वर के प्रेम को महसूस कर सकते हैं?
18. क्या आप उसके प्रेम के उत्तरदायी है?
19. क्या आपने अटल प्रतिज्ञा ली कि आप अपने आपको अपने पति के आधीन करेंगे? आपको क्या बात पीछे हटा सकती है?



#4 एकता हमेंशा के लिए: जीवन सिद्धांत ३

जोड़े एक संपूर्ण विवाह की तलाश में हैं। यद्यपि, इस धरती पर रहकर हम सम्पूर्णता को प्राप्त नहीं कर पाते हैं, तो इसके और नज़दीक आने के लिए हम इस तीसरे सिद्धांत "एकता हमेंशा के लिए" के साथ जी सकते हैं।



परमेश्वर के दिखाए मार्ग आश्चर्यजनक से सरल है परन्तु अभी तक जटिल साबित हुए हैं। उदाहरण के लिए, परमाणुओं के समूह से वस्तुएं बनती हैं। पानी के अणु दो हाइड्रोजन परमाणु और एक ऑक्सीजन परमाणु से बने हैं। जब तक हम इस परमाणु को जो खुद में एक ब्राह्मण के रूप में समझ आता है, नज़दीकी से नहीं देखते यह बहुत सरल लगता है। एक खास शक्तिशाली बल अलग अलग परमाणु को एक साथ रखता है।

विवाह में भी वही सामान बल है। परमेश्वर ने घोषणा की है कि 'दो हृदय एक देह हैं।' यह बहुत सरल बन जाता है और बहुत से अर्थ को बतलाता है। परन्तु, जितना ज़्यादा हम इसके बारे में सोचेंगे, हम पाते हैं कि विवाह को एकत्रित रखने के लिए कुछ रहस्यमयी बल इसके पीछे काम कर रहे हैं।

परमाणु के सामान, परमेश्वर के द्वारा सृष्टि भी संपूर्ण है। कुछ अद्भुत उपलब्धियों के द्वारा एक पुरुष और स्त्री अलग अलग इच्छाओं और देह के माध्यम

विवाह का निर्माण!

से एक साथ पूरे जीवन भर काम और रह सकते हैं। इससे भी अधिक उल्लेखनीय है कि किस तरह वे अपने जीवन के माध्यम से नए अद्वितीय मनुष्यों (हम उन्हें बच्चे कहते हैं) का दो मूल रचनाओं द्वारा विकास करते हैं। प्रत्येक बच्चा एकता कि एक सुन्दर अभिव्यक्ति है।



पहले दो जैवनिक सिद्धांतों का हमारे जीवन में एक महत्वपूर्ण स्थान है : बेशर्त प्रेम और विनम्र आत्मसमर्पण। ये दो सिद्धांत हैं जिन्हें न सिर्फ पति और पत्नी को पालन करने को कहा गया है परन्तु हर समय हर एक को। इन सत्यों के साथ जीना महान विवाह के लिए आवश्यक है। आज हम तीसरे सिद्धांत के बारे में बात करना चाहते हैं।

तीसरा जैवनिक सिद्धांत उत्पत्ति 2:24 से आता है और पूर्ण रीति से इफिसियों 5 में निर्मित किया गया है, ठीक अन्य दो सिद्धांतों की तरह। यह विवाह का रहस्य है। "....और वे दोनों एक तन होंगे। यह भेद तो बड़ा है; पर मैं मसीह और कलीसिया के विषय में कहता हूँ।" (इफिसियों 5:31-32)

और तथ्य यह है की विवाहित जोड़े परमेश्वर की सामर्थ्य घोषणा के द्वारा अब 'एक तन' है। हम इस एकता को स्वीकार और इसकी पुष्टि करने के लिए बुलाये गए हैं। जैसे की हम इस एकता का विभिन्न व्यवहारिक तरीकों से निश्चय करते हैं, हमारे विवाह और भी अधिक मज़बूत होते जाएंगे। और सामान्य रूप से हम इस एकता के साथ ना जीने का निश्चय करते हैं, तो हमारे विवाह बिखर जाते हैं। जितना ज़्यादा हमारा जीवन परमेश्वर के निर्माण अनुसार अलग होगा, उतनी बड़ी समस्या होंगी।

मुझे याद है एक बार टहलने जाते समय एक बड़ी ईमारत को गिरते हुए देखा जब उसका निर्माण कार्य प्रगति पर था। हो सकता है बहुत सारे लोगों की मृत्यु हो गई हो। निर्माणकर्ताओं ने रूपरेखा का पालन नहीं किया था। पैसे बनाने में, उन्होंने

पतली सामग्री का इस्तेमाल किया बजाये उसके जिसको इस्तेमाल करने उनको कहा गया था। उनकी विचार धरा के अनुसार सब कुछ ठीक था। उन्होंने असली मोटी सामग्री को इस्तेमाल करने की आवश्यकता नहीं समझी जिसको इस्तेमाल करने के लिए उन्हें रूपरेखा तैयार करने वालो द्वारा कहा गया था। यह विशाल सार्वजानिक निर्माण अब एक विशाल गड़बड़ थी। ठीक इसी प्रकार से विवाह में होता है जब हम असली रूपरेखा से दिशाहीन हो जाते हैं, भले ही हम तत्काल समस्याओं को उबलते हुए नहीं देख पा रहे हैं।

इस तीसरे जैवनिक सिद्धांत "एकता हमेंशा के लिए" को हम करीबी से देखें। जब हम एकता में बने रहते हैं, तब एक विशेष निश्चयता हमारे हृदय के ऊपर आ जाती है जो हमें आराम, सपना, और खुशी की स्वतंत्रता देती है। यह परमेश्वर की रूपरेखा में है जहाँ हम उनकी सुरक्षा साथ ही साथ उसका सद्भाव, प्रेम और हमारे विवाह के लिए खुशी को प्राप्त करते हैं।

अ) जीवन सिद्धांत # 3: एकता हमेंशा के लिए

विवाह हमेंशा अंत पर आश्रित होनी चाहिए। हम सब विवाह की प्रतिज्ञाओं को जानते हैं, "जितने लंबे समय तक हम जीवित रहेंगे।" आज बहुत सारे विभिन्न प्रकार के अभिप्राय व्यक्त किए जा रहे हैं, हमें यह देखना है की पवित्र शास्त्र बाईबल इन विषयों के बारे में क्या कहती है। यह सिद्धांत उत्पत्ति में प्रकाशित हुआ और नए नियम में कई बार दोहराया गया।

"इस कारण पुरुष अपने माता पिता को छोड़कर अपनी पत्नी से मिला रहेगा और वे एक तन बने रहेंगे।" (उत्पत्ति २:२४)

"कि इस कारण मनुष्य अपने माता पिता से अलग होकर अपनी पत्नी के साथ रहेगा और वे दोनों एक तन होंगे?" (मत्ती १९:५)

हमें ध्यान देना चाहिए कि यीशु के संस्कार बस थोड़े से ही भिन्न है। शास्त्र पहले जोड़ो को साथ में शामिल होने के बारे में बात करते हैं। पुरुष अपने माता पिता के अधिकारों को छोड़कर परमेश्वर के आधीन अपना ही अधिकारी हो जाता है। पारिवारिक अधिकार और संरचना के इस बदलाव के लिए एक दीर्घकालिक परिवर्तन का संकेत है। ठीक इसी प्रकार पुरुष भी अपनी नई पत्नी के लिए समर्पित

रहता है। शब्द "फोड़ना" बहुत मज़बूत है और पकड़ कि भावना रखता है, ठीक पेड़ के तने लताओं की तरह, या फिर आप गलती से अपनी उँगलियों को गोंद से चिपका लेते हैं की तरह। पकड़ ध्यान केंद्रित की मांग करता है, जो अन्य विचार या व्यवहार को रोकता है।

विवाह के लिए स्थायित्व के तत्व को पिछले वाक्यांश में और भी अधिक स्पष्ट रूप से प्रतिबिंबित किया गया है जहाँ दो लोग एक नए परिवार इकाई में जुड़ जाते हैं। यह पद सिर्फ अनैतिक प्रेमसंबंध के बारे में ही नहीं बताता। सच है, यौन कृत्य, अद्भुत रीती से एकता को प्रकट करता है। यौन कृत्य के चरमोत्कर्ष पुरुष और स्त्री को हृदय, शारीरिक, और मानसिक रूप से एकजुट करना चाहिए। एकता, हालाँकि, अंतरंगता के इस संक्षिप्त और तीव्र समय से परे चला जाता है। पद यह बताता है की वे अब एक देह है। एक परिवर्तन उनके स्वाभाव में होता है।



यह 'एकता' गहराई से एक हृदय की प्रतिज्ञा को दूसरे से छू लेता है "जितना लम्बा समय हम जीवित रहेंगे" जैसी प्रतिबद्धता के रूप में। एकता उन दोनों के जीवनो में मिश्रण से बनाई जाती है।

विभिन्न लिंग, जिम्मेदारियाँ और भौतिक सुविधा सभी एकता की एक उत्कृष्ट कृति के निर्माण में सहायता करते हैं। शायद ही एक शानदार सत्य पाया जा सकता है जो कुछ ही साधारण शब्दों द्वारा वर्णन किया गया है, "वे एक देह होंगे।"

अब वे एक नई देह, या इकाई है; वे अब दो नहीं है। यहाँ हृदय, आत्मा और शरीर के अंतरंग की हिस्सेदारी है। यह गौरवशाली संघ का पता बच्चे के जन्म के दौरान पता चलता है। एक बच्चा सामान्य रूप से माता और पिता से ही बाटता है। कोशिकाओं के अध्ययन से अब पता चला है की बच्चे की हर एक कोशिका में माता और पिता की एकता को सम्मिलित किया गया है। यह बिलकुल उल्लेखनीय है। यदि आप अपने विवाह को दृढ़तापूर्वक स्वीकार करना चाहते हैं, तो आपके पास बहुत सारे बच्चे होंगे!

एक बार फिर हम इस 'एक देह' के विचार पर रौशनी डालते हैं, हम कुछ और आश्चर्यजनक मूल्यांकित करते हैं। जब कुछ एक हो जाता है, तो वह नई पहचान के

साथ साधारण कार्यात्मक टुकड़ों में साधारण रीती से टूट नहीं जाता। परमाणु, जो अविभज्य है, वास्तव में विभिन्न भागों से मिलकर बना है। न्युक्लिअस और इलेक्ट्रॉन्स अद्भुत और रहस्यमयी शक्तियों द्वारा रहस्यमयी रूप से जुड़े हुए हैं। उनको अलग अलग तोड़ने के लिए, जबरदस्त ऊर्जा चाहिए और मूल तत्व प्रचंड रूप से प्रभावित होते हैं। ज़रा सोचिए परमाणु बम के साथ क्या होता है। परमेश्वर ने अपने न्याय के द्वारा इस बात की घोषणा की है की विवाहित जोड़े विवाह के बाद एक हैं। पुरुष और स्त्री एक दूसरे से वायदे में बंध के जीवन भर के लिए एक हो जाते हैं। सिर्फ मृत्यु ही इनकी एकता को तोड़ सकती है।

विभाजन की अनुमति नहीं

यीशु ने आगे इसकी पुष्टि की मत्ती 19:6 में कि "सो वे अब दो नहीं, परन्तु एक तन हैं: इसलिए जिसे परमेश्वर ने जोड़ा है उसे मनुष्य अलग ना करे।"

परमेश्वर विवाह समारोह में भाग लेते हैं चाहे वो चर्च में आयोजित हो या नहीं।²⁸ परमेश्वर ने जोड़ो को एक साथ जोड़ा है। उन दोनों ने अपनी एकल पहचान खो दी है। अब वे एक हो गए है। विवाह के बाद, हम दोनों कि असली पहचान को नहीं ढूँढ सकते। हाँ, वे उपस्थित हैं और न्युक्लिअस और एल्वट्रॉन्स की तरह पहचाने जा सकते हैं, परन्तु उन दोनों को समझने के लिए यह जानने की आवश्यकता है कि वे लोग किस प्रकार से अनुबंधित हैं।²⁹ यही कारण है कि तलाक कोई मायने नहीं रखता और पुनः विवाह भी उससे भी कम (जब तक पहले साथी कि मृत्यु न हो

²⁸ परमेश्वर हर एक विवाह में शामिल होता है बिना निमंत्रण के।

²⁹ विश्व पुस्तक विश्वकोश (ओनलाईन) सूची, "अगर एक हाईड्रोजन एटोम का व्यास 4 मील (6.4 किलोमीटर) है, उसकी नाभिक एक टेनिस बोल से बड़ी नहीं हो सकती। उसके अलावा एक एटोम की अतिरिक्त नाभिक रिक्त स्थान होगी। इलेक्ट्रॉनों का चक्कर इस अंतरिक्ष के माध्यम से, अरबों यात्राओं को दस लाखों नाभिक के चारों ओर पूरी करता है।"

विवाह का निर्माण!

जाए)। यीशु ने साफ़ रीती से कहा की तलाक के बाद पुनः विवाह व्यभिचार के बराबर है।³⁰

“उस ने उन से कहा, जो कोई अपनी पत्नी को त्यागकर दूसरे से ब्याह करे तो वह उस पहली के विरोध में व्यभिचार करता है।” (मरकुस 10:11)

“जब तक किसी स्त्री का पति जीवित रहता है, तब तक वह उससे बंधी हुई है, परन्तु जब उसका पति मर जाए, तो जिस से चाहे विवाह कर सकती है, परन्तु केवल प्रभु में।” (1 कुरंथियों 7:39)

एक जीवनसाथी साधारण रीती से निर्देशित नहीं कर सकता की पुरुष या स्त्री ने कोई प्रतिज्ञा नहीं की है।³¹ प्रतिज्ञा सिर्फ प्रतिज्ञा होती है। चूँकि, प्रतिज्ञा जीवन के लिए है, तब उसको अपने जीवन के लिए आज्ञाकारी होना चाहिए। परमेश्वर ने उन दोनों को अपनी रहस्यमयी शक्तियों द्वारा एक साथ जोड़ा है। हालाँकि, सांसारिक अदालत विवाह से तलाक और निरस्तीकरण की अनुमति देती है, फिर



³⁰ कुछ लोग यह बहस करते हैं कि तलाक जाएज है जब उसमें व्यभिचार शामिल होता है। वे इसे मती के पद्यांशों से मिलाते हैं (मती 5:31-32) जो मिलता है, 'अशुद्धता के लिए छोड़कर'। व्याख्या समान रूप से विद्वानों के बीच विभाजित है। हम और अधिक सुसंगत एवं व्याख्यान पसंद करते हैं, कि दावा है कि, मति के पद्यांश व्यवस्थाविवरण के कानून को करने के लिए (व्यवस्थाविवरण 24:1) पारित करते हैं यूसुफ को मरियम को तलाक देने के लिये आज्ञा देते हैं। अगर यौन शुद्धता एक विवाह में निर्माण नहीं किया जाता, तो एक आदमी अपनी पत्नी को तलाक दे सकता है। इस कानून को केवल यहूदी लोग ही जान सकते हैं और इसलिये यह केवल मती रचित सूसमाचार में शामिल किया गया है। इस व्याख्यान को आगे चेलों के द्वारा निर्माण किया गया है यीशु को प्रतिक्रिया दिया, “वाह! यदि पुरुष का स्त्री के साथ ऐसा सम्बन्ध है, तो ब्याह करना अच्छा नहीं” (मती 19:10- मेरा पद्यांश)।

³¹ हमें आश्चर्य होना चाहिये कि जिसने यह वाचा बान्धी “जितना हम एक दूसरे से प्रेम करते हैं” एक सही में विवाह है सबके बाद या फिर यह एक बहाना है व्यभिचार के लिये?

भी विवाह जब तक दोनों साथी की मृत्यु नहीं हो जाती परमेश्वर के सामने अस्तित्व में रहती है।³²

पॉल कलीसिया और उसके मसीह से सम्बन्ध के बारे में सामान्य बात कहता है।

"क्या तुम नहीं जानते की तुम्हारी देह मसीह के अंग है? तो क्या मैं मसीह के अंग लेकर उन्हें वैश्य के अंग बनाऊ? कदापि नहीं।" (1 कुरंथियो 6:15)

"परन्तु मैं तुमसे यह कहता हूँ, की जो कोई किसी स्त्री पर कुदृष्टि डाले वह अपने मन में उससे व्यभिचार कर चूका।" (मती 5:28)

ब) विवाह विकल्प?

आज वहाँ के वैकल्पिक प्रकार की मांग समूहों की संख्या किसी भी सरकार और अदालतों के अंत में तय करेगा कि वे परमेश्वर की व्यवस्था है, जो इतनी स्पष्ट रूप से उत्पत्ति में दिया जाता है, या अपने स्वयं भ्रष्ट तर्क का पालन करेंगे कर रहे हैं 'शादी।'

जैसा कि हम एक और अध्याय में बताया है, परमेश्वर उनकी बात बहुत उत्पत्ति 2:24 में स्पष्ट कर दिया। उन्होंने कहा कि पुरुष और पति और पत्नी के लिए महिला-शब्दों का उपयोग करता। पुरुष अपने माता-पिता और फोड़ना महिला के लिए छोड़ देता है। लोग समलैंगिक क्या कॉल के लिए कोई जगह नहीं है 'विवाह'।

³³

यह एक भौतिक या प्राकृतिक दायरे में स्पष्ट है, लेकिन बुराई पुरुष अपनी इच्छाओं को पूरा करने पर आमादा हैं, वे अब भी प्रकृति से स्पष्ट सबक स्वीकार करने के लिए, परमेश्वर के शब्द से अकेले चलो चाहते हैं। दो पुरुषों एक नहीं बनाते हैं। न तो दो महिलाओं से करते हैं। परमेश्वर राज्य नहीं था कि वे एक हो जाते हैं,

³² रोमन कैथोलिक और दूसरे कलीसिया पूर्ण रूप से इसे विस्मित कर चुके हैं 'लोप' के द्वारा एवं इस कथन से कि विवाह का कोई अस्तित्व नहीं है। यह पूर्ण रूप से एक दिखावा है और जिसे तुरन्त दूर किया जाना चाहिये।

³³ स्त्री के लिये साधारण शब्द है जो कि पुरुष के साथ जोड़ा गया है।

विवाह का निर्माण!

क्योंकि वे अब भी कर रहे दो। यहां तक कि हमारे छोटे बच्चों को पता है कि एक पुरुष के साथ साथ एक पुरुष दो पुरुषों के बराबर होती है।

महिला विशेष रूप से पुरुष पूरक बनाया गया था। अगर परमेश्वर एडम कंपनी रखने के लिए एक और पुरुष चाहता था। उन्होंने कहा कि एक और आदमी बना दिया जाएगा। इसके बजाय वह एक पूरी तरह से नए लिंग कि पूरी तरह से शादी में आदमी पूरित बनाने के लिए अपने रास्ते से बाहर चला गया। इस संघ से वे बच्चों का फल सहन।

हम यह नहीं कह रहे हैं कि आदमी या औरत एकल के रूप में जीवन को पूरा नहीं रह सकते हैं। वे कर सकते हैं। 1 कुरिन्थियों 7 स्पष्ट रूप से इस संभावना को निर्धारित एक आदमी या औरत परमेश्वर को निकटता से उनकी परिपूर्णता लाभ और (बल्कि बच्चों की तुलना में) अच्छे कार्यों का फल लाता है। प्रेरित कहते हैं, "लेकिन मैं आप चिंता से मुक्त होना चाहते हैं। (1 कुरु- 7:32)।

एक और जीवन शैली में तेजी से लोकप्रिय सब पर शादी करने के लिए, लेकिन अभी भी वैवाहिक विशेषाधिकार प्राप्त नहीं है। कई युवा और पुराने लोग एक जैसे नहीं रह शादी प्रवेश करना चाहते हैं। वे अतीत में कुछ बिंदु पर जख्म दिया है। वे अब एकता के सपने हैं।

आशा की उनके बुलबुले की है। इस पीढ़ी के प्रति प्रतिबद्धता का डर है क्योंकि वे देखा है भयानक तरीका विवाह अक्सर खत्म होता है। वे अब मानते हैं कि शादी के लिए अच्छा हो सकता है।

एक समाज आसानी से वापस नहीं बदल सकते हैं। घोर अनैतिकता और व्यभिचार एक पतित पीढ़ी के संकेत मिल रहे हैं। समाधान पहली ईसाई जोड़ों को अपनी एकता बाहर रहने के लिए और उसके बाद अपनी प्रतिज्ञा बाहर रहने के लिए दूसरों को चुनौती के लिए है। परमेश्वर से पहले हमारे लिए पुनरुद्धार लाया गया है

विवाह

बुनियाद

परमेश्वर द्वारा निर्मित

और एक पल में संस्कृति बदल गया है, लेकिन परमेश्वर के लोगों पश्चाताप और उसके चेहरे की तलाश करने की जरूरत है प्रदान करता है।

शादी के बाहर एक साथ रहने वाले शादी नहीं है; यह व्यभिचार है। दो शादी के वादे के तहत नहीं रह रहे हैं। वे एक तन 'लेकिन दो जो अपने खुद के एसईएल फाई श प्रयोजनों के लिए एक दूसरे को आहत कर रहे हैं नहीं कर रहे हैं।

शादी के रूप में लंबे समय पति और पत्नी दोनों धरती पर रहने के रूप में पिछले करने के लिए बनाया गया है। विवाह निरंतरता और विकास एक पृथ्वी पर एन डी फाई सकता है की सबसे खूबसूरत तस्वीर के साथ हमें प्रदान करता है। विवाह समाप्त होता है के रूप में एक पति मर जाता है, लेकिन इसके अस्थायित्व में यह परमेश्वर और उनके लोगों के बीच अधिक से अधिक शाश्वत रिश्ते की एक सुंदर सादृश्य रूपों। . प्रका- 21:2)

इस एकता की सच्चाई हमारी शादी के लिए महान असर है। की डिग्री है कि हम विश्वास के द्वारा इस एकता को स्वीकार करने के लिए, हम अपने निहित सत्य से जीना होगा। यह बदले में एक महान शादी को बढ़ावा मिलेगा। इस एकता में विश्वास के बिना, हमारे विवाह के रूप में हम शादी समझाने का दुनिया की सुविधाजनक तरीके से एक को अपनाने को भुगतना होगा। कोई बीच का रास्ता है। एकता के सिद्धांतों से जीवित बचने के लिए उन्हें नकारना है। अच्छा है कि विवाह हमेंशा एकता बाहर रहने से कि प्रतिज्ञान मजबूत।

स) एक मजबूत शादी बुनियाद

मूलाधार क्या हम पर संरचनाओं का निर्माण कर रहे हैं। एक शादी के कुछ मूलभूत सत्य है। की नींव ठोस नहीं है, तो, कोई फर्क नहीं पड़ता कि कैसे अच्छी तरह से कुछ है कि नींव के शीर्ष पर बनाया गया है, यह भुगतना होगा। इस भूकंप के साथ समस्या है। भूकंप नींव हिला। वे अपनी ताकत के लिए उन नींव का परीक्षण करें। तेजी या देश में बड़े पैमाने में कमजोरी दोष कहा जाता है। यह इन विशाल दोष है कि सबसे बड़ी क्षति की समस्या आती है। उन गलतियों पर बनाया गया कुछ भी उखड़ जाती हैं। एकता की भावना इन तेजी काटना, जबकि तलाक की भावना उन्हें बढ़ाता है।

विवाह का निर्माण!

आज कई जोड़ों की शादी के बारे में सोच है कि तलाक के एक संभावना है मिलता है। कुछ इसके बारे में काफी खुले हैं। "इसे बाहर काम नहीं करता है, तो हम एक तलाक मिल जाएगा।" तलाक एक आसान समाधान की तरह लग रहा है। एक को खुले तौर पर यह जोड़े स्वीकार नहीं कर सकता है, लेकिन अगर तलाक की संभावना मन में रहता है, यह एक कमजोरी है कि दुष्ट बाद में परेशानी और आगे के लिए उनकी शादी का उपयोग करेगा हो जाता है। विवाह जीवन की चुनौतियों के सभी प्रकार के साथ हिल जाएगा।

एक कारण यह परमेश्वर तलाक से नफरत करता है क्योंकि यह एकता की सुंदर तस्वीर काउंटर और कई विनाशकारी परिणाम लाती है। यहाँ तक कि धर्मनिरपेक्ष अनुसंधान स्पष्ट रूप से दर्द, अकेलापन और तलाक के मनहूस रूपरेखा। विवाह निष्ठा हमें बजाय क्या हमें कुछ विश्वास करना चाहते हैं एक प्राचीन परंपरा है, पास में कैद किया जा रहा है परमेश्वर की अच्छाई आनंद लेने के लिए मुक्त।

धनी समाज में एक और खतरनाक प्रवृत्ति पति और पत्नी एक अच्छी शादी के साथ सामग्री आशीर्वाद संबद्ध करने के लिए है। उत्साह खत्म, एक नया फर्नीचर, एक नया घर या यहां तक कि एक नया बच्चा थोड़ी देर के लिए वैवाहिक समस्याओं को छिपाने सकता है, लेकिन वे भी ऊपर उठना होगा। जोड़ी के जीवन के लिए शादी करने की प्रतिज्ञा कर दिया गया हो सकता है, लेकिन जब परेशान समय आते हैं, वे वास्तविक संभावनाओं के रूप में अलगाव और तलाक के बारे में सोचना शुरू करते हैं।

जब एक शादीशुदा जोड़े के बीच मुसीबतों हो जाना, लालच में कदम पत्नियों की प्रतिबद्धता एक दूसरे से दूर लुभाने के लिए। पति माहौल में यह दूसरी औरत के साथ कैसा होगा। पत्नी उसकी वित्तीय स्थिति के माध्यम से सोचने के लिए अगर वह खुद का समर्थन कर सकते हैं देखने के लिए कोशिश करता है। ये बहुत ही विचारों को शादी की नींव हिला।

कैसे एक व्यक्ति को इन विचारों के लिए जवाब है उनकी शादी में एकता के लिए अपनी प्रतिबद्धता का पता चलता है। हर शादी चुनौतियां हैं। इन चुनौतियों का सामना करने के लिए हमारी प्रतिक्रिया क्या हम वास्तव में विश्वास करते हैं पर

निर्भर करते हैं। अंत में, एक जोड़ी दिखा सकते हैं कि वे वास्तव में विश्वास नहीं करते कि वे जीवन के लिए एक हैं। यह परेशान समय में अन्य विकल्पों के अपने चिंतन से देखा जाता है।

सावधान रहे। मैं समझा जाए एक और 'बेहतर जीवन' के मात्र सोचा पता चलता है कि हम क्या विश्वास नहीं करना चाहती। शैतान अक्सर हमारे मन में विचार डालता है। हम जानते हैं कि हम क्या तय करके विश्वास करते हैं। हमारी पसंद बाईबल से अलग इन विचारों को अस्वीकार और है कि एकता वाणी चाहिए। चलो इन लालच आपको लगता है और नहीं तो फैसला करने के लिए प्रलोभित नहीं है। इस के उदाहरण के बाद इस अध्याय में प्रदान किया जाएगा।

कुछ जोड़ों गहरा झटका लगा जब तलाक के इन विचारों को पहले लाया जाता है। उनके सपने टूट रहे हैं; वे तबाह हो रहे हैं। उन्हें लगता है कि यह सब खत्म हो गया है। यह सच नहीं है।

हालांकि यह एक शादी के चारों ओर मोड़ करने के लिए असंभव लग सकता है, यह कर सकते हैं। दंपती ने अपनी एकता की सच्चाई पर ध्यान केंद्रित करके चीजों को सुलझा सकते हैं। वे अपने विवाह की कसमें से रहने वाले उनके हृदय पर सेट करना होगा। इस तरह से यह हर शादीशुदा जोड़े के लिए है। हम एकता के तथ्य से रहने का फैसला करते हैं, तो शादी एक साथ पकड़ कर सकते हैं। अन्य मामले माध्यमिक हो जाते हैं। हम परिवर्तन एकता की अवधारणा को सुदृढ़ करने के लिए बनाते हैं।

अगर, हालांकि, या तो पति प्रलोभन के अलावा परमेश्वर की बाध्यकारी सच्चाई से रहते हैं और एक पथ अपने पति से अलग चयन करने के लिए स्वीकार करने के लिए तैयार है, तो कुछ महान अशांति का अनुभव होगा। हम बाद में एक अध्याय में चर्चा करेंगे जो विशेष कदम उठाए जा सकता है जब एक पति को छोड़ने के बारे में बात करने के लिए शुरू होता है, या वास्तव में छोड़ करता है।

खेत

इस 'एकता' जीवन सिद्धांत अभी भी बल्कि अस्पष्ट लग सकता है। यह समझना कठिन है! के अपने अर्थ पर एक बेहतर संभाल पाने की कोशिश करते हैं।

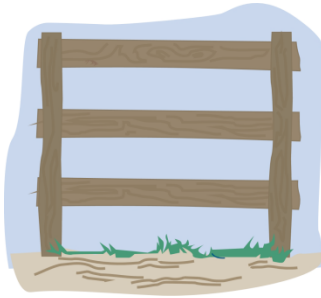
विवाह का निर्माण!

जब एक व्यक्ति को अपने हजार एकड़ खेत एक बाड़ से घेर लिया चारों ओर चलता है, वह शायद ही कभी बाड़ में चलेंगे। वह चलने के लिए और चलने के लिए और उसकी संपत्ति की निर्णायक बढ़त के साथ मिलने कभी नहीं कर सकते हैं। अच्छा विवाह के समान हैं। पति शहर में काम हो सकता है, अपने पिता की यात्रा के लिए उड़ान भरने के लिए, या एक बस वैवाहिक एकता के दायरे में घर वापस सब ले। पति और पत्नी एक भले ही वे अलग हो रहे हैं।



हालांकि, एक आकर्षक युवा महिला पति द्वारा आकर्षक चलता है, तो उस

बाड़ अचानक दिखाई देगा। उन्होंने कहा कि वह अपनी जवानी की पत्नी में ही प्रसन्न करने के लिए की जरूरत है जानता है। वह अपने मन और आंखों उससे दूर हो जाता है। वह क्या कर रहा है? उन्होंने कहा कि उनकी शादी की एकता की पुष्टि



की है। उन्होंने कहा कि बाड़ की मदद स्वीकार करता है। बाड़ उसे इस एकता की याद दिलाता है। इसके बाद उन्होंने प्रतिज्ञा की इच्छा को ही अपनी पत्नी की पुष्टि की। उन्होंने कहा कि बाड़ के भीतर रहता है।

पत्नी एक रोमांस उपन्यास पढ़ने जा सकता है। वह कहानी में महिला के साथ खुद की पहचान के रूप में शुरू होता है और कहानी में चित्रित इस तरह के एक रोमांटिक आदमी चाहते करने के लिए शुरू होता है। उसका पति पूरी तरह से सुस्त है! बाड़ उठता है। वह किसी और का लालच आदमी को (भले ही इस मामले में वह काल्पनिक हो सकता है) शुरू कर रहा है। पति - वह समर्थन करते हैं और उसकी (हमेंशा रखने की उम्मीद कर रहा है अब तक) के प्यार करने के लिए उसकी प्रतिज्ञा याद करते हैं। वह मनोरंजन करने के लिए कि किसी और के पति, जो वह अब की तुलना में उसके लिए बेहतर हो सकता है मना कर

दिया। वह तुरन्त पुस्तकालय के लिए पुस्तक लौटने से उसकी प्रतिबद्धता के माध्यम से इस प्रकार है। इसके अलावा वह अपने पति के लिए धन्यवाद और उसके हृदय में परमेश्वर उसकी प्रतिज्ञा उसे अकेले पुष्टि। आप पैटर्न देखा? वह पहचान के Fi तों क्या धमकाता है कि एकता, इसे खारिज कर दिया, और व्यावहारिक रूप से पुष्टि है कि एकता।

हम केवल एकता की इस शक्तिशाली जीवन सिद्धांत पर छू शुरू कर दिया है। अन्य जीवन सिद्धांतों के साथ के रूप में, वे सब हमारे ईसाई जीवन से बाहर रहने के साथ क्या करना है। किसी भी आगे बढ़ने से पहले, हम अपनी आध्यात्मिक संदर्भ में इस जीवन सिद्धांत की व्याख्या करना चाहते हैं। शायद यह बेहतर समझने के लिए कि कैसे इस एकता के सिद्धांत हमारे अपने विवाह के लिए लागू होता है हमें सक्षम हो जाएगा।

द) आध्यात्मिक सादृश्य

इस एकता के सिद्धांत को पुराने नियम सहित कई मार्ग में लिखित के बारे में लिखा है। इसका कारण यह है मोक्ष परमेश्वर और आदमी के बीच वाचा की अवधारणा पर बनाया गया है। हम नए करार शिक्षण पर ध्यान देना होगा। नए करार के लिए हमें बुनियादी सच्चाई यह है कि ईसाई मसीह के माध्यम से परमेश्वर के साथ एक वाचा का हिस्सा हैं सिखाता है। वे मसीह में हैं और मसीह के साथ एक है क्योंकि वे मसीह के लिए शामिल हो गए हैं।

यह सबसे स्पष्ट रूप से वाक्यांश "मसीह में" बाईबल के माध्यम से दोहराया द्वारा देखा जाता है। यह 88 बार इस्तेमाल किया जाता है! वाक्यांश 'मसीह में' या 'उस में सिर्फ इफिसियों की पहली अध्याय में ग्यारह बार प्रयोग किया जाता है। हमें सिर्फ तीन उदाहरण पर नजर डालते हैं।³⁴

हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता का धन्यवाद हो, कि उस ने हमें मसीह में स्वर्गीय स्थानों में सब प्रकार की आशीष दी है। (इफिसियों 1:3)

जैसा उस ने हमें जगत की उत्पत्ति से पहिले उस में चुन लिया, कि हम उसके निकट प्रेम में पवित्रा और निर्दोष हों। (इफिसियों 1:4)

³⁴ इफिसियों 1:1,3,4,7,9,10,12,13,20

विवाह का निर्माण!

हम को उस में उसके लोहू के द्वारा छुटकारा, अर्थात् अपराधों की क्षमा, उसके उस अनुग्रह के धन के अनुसार मिला है। (इफिसियों 1:7)

हम विशेष है क्योंकि हम मसीह में हैं। यह मसीह में अपनी स्थिति को परमेश्वर के प्रेम और वादे करने के लिए हमें शामिल हो गए है। हम मसीह में से एक हैं। यह बपतिस्मा की शिक्षा है और स्पष्ट रूप से रोमन में सिखाया जाता है।

क्या तुम नहीं जानते, कि हम जितनों ने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया तो उस की मृत्यु का बपतिस्मा लिया? सो उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुआओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें। क्योंकि यदि हम उस की मृत्यु की समानता में उसके साथ जुट गए हैं, तो निश्चय उसके जी उठने की समानता में भी जुट जाएंगे। क्योंकि हम जानते हैं कि हमारा पुराना मनुष्यत्व उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया, ताकि पाप का शरीर व्यर्थ हो जाए, ताकि हम आगे को पाप के दासत्व में न रहें। क्योंकि जो मर गया, वह पाप से छूटकर धर्मी ठहरा। सो यदि हम मसीह के साथ मर गए, तो हमारा विश्वास यह है, कि उसके साथ जीएंगे भी। (रोमियों 6:3-8)

बपतिस्मा एक शारीरिक समारोह है कि मसीह के साथ हमारी एकता को प्रदर्शित करता है। यह दुल्हन केंद्र गलियारे चलने तरह शादी की जानी है। वह एक नए परिवार बनाने में दूल्हा में शामिल होने के लिए उसके परिवार को छोड़ देता है। वह अपनी पुरानी पहचान (अंतिम नाम) खो देता है और अपने अंतिम नाम अपनाकर एक नई पहचान का हिस्सा बन जाता है।³⁵ साथ में वे एक नया जीवन शुरू करते हैं।

संघर्ष पैदा होगा कि मसीह के लिए हमारी निष्ठा का परीक्षण करेंगे। हालांकि, हम हमारे प्रभु की आज्ञा का पालन और हमारे हमारे पुरानी पहचान के साथ जुड़े फैसलों उपेक्षा करना चाहिए।

यह एक शादी में व्यावहारिक रूप से बाहर काम करता है जब पति पत्नी में से एक बात का अनुरोध करता है, लेकिन वह शायद बच्चे को अनुशासन के बारे में, इसके विपरीत करने के लिए कुछ करने के लिए उसकी माँ द्वारा दबाव डाला जाता

³⁵ हम महसूस करते हैं कि यह केवल कुछ देशों में ही लागू किया जाता है। उसे वैसा ही रहने दे जैसा है, यह पूरी रीति से प्रभाव डालता है कि जब एक औरत एक पुरुष से शादी करती है। वो उसकी हो जाती है।

है। वह अपने पति के साथ उसकी एकता बाहर रहते हैं और जैसे ही वह अनुरोधों करना चाहिए। सूचना कैसे यह सोचा था कि मसीह और चर्च के संदर्भ में रोम के लोगों 06:11 में विकसित किया गया था।

“ऐसे ही तुम भी अपने आप को पाप के लिये तो मरा, परन्तु परमेश्वर के लिये मसीह यीशु में जीवित समझो”। (रोमियों 6:11)

हम देख सकते हैं इस सच्चाई या एकता का सिद्धांत जीवन मार्ग के सभी प्रकार में काम किया। नीचे फिलिप्पियों करने के लिए पॉल की सलाह है।

केवल इतना करो कि तुम्हारा चाल-चलन मसीह के सुसमाचार के योग्य हो कि चाहे मैं आकर तुम्हें देखूँ, चाहे न भी आऊँ, तुम्हारे विषय में यह सुनूँ, कि तुम एक ही आत्मा में स्थिर हो, और एक चित्त होकर सुसमाचार के विश्वास के लिये परिश्रम करते रहते हो। और किसी बात में विरोधियों से भय नहीं खाते? यह उन के लिये विनाश का स्पष्ट चिन्ह है, परन्तु तुम्हारे लिये उद्धार का, और यह परमेश्वर की ओर से है। (फिलिपियों 1:27-28)

कैसे वे दुश्मन कि मसीह में अपने विश्वास के लिए धमकाता के खिलाफ फर्म खड़े हैं? यह मसीह के लिए अपनी प्रतिबद्धता के माध्यम से है। "एक ही आत्मा में फर्म खड़े हो जाओ, एक मन के साथ।" जब भी हम अपने वाचा प्रतिबद्धता में फर्म खड़े हो जाओ, दुश्मन वह क्या है के लिए सामने आ रहा है - एक व्यभिचारी हमें दूर लुभाने के लिए कोशिश कर रहा।

एक अनूठा कोण

इससे पहले कि हम आगे बढ़ना है, हम एक और मार्ग है कि दूसरों से अलग है पर देखना चाहता हूँ। रोमियों 7: 2-4 अद्भुत एक साथ जोड़ता है इन तीन शिक्षाओं मैरिज वाचा, ईसाई वाचा और एकता। पॉल शादी वाचा की तरह एक वाचा की प्रकृति को समझने के लिए पुराने नियम के कानून की अवधारणा का उपयोग करता है।

विवाह का निर्माण!

क्योंकि विवाहिता स्त्री व्यवस्था के अनुसार अपने पति के जीते जी उस से बन्धी है, परन्तु यदि पति मर जाए, तो वह पति की व्यवस्था से छूट गई। सो यदि पति के जीते जी वह किसी दूसरे पुरुष की हो जाए, तो व्यभिचारिणी कहलाएगी, परन्तु यदि पति मर जाए, तो वह उस व्यवस्था से छूट गई, यहां तक कि यदि किसी दूसरे पुरुष की हो जाए, तौभी व्यभिचारिणी न ठहरेगी। सो हे मेरे भाइयो, तुम भी मसीह की देह के द्वारा व्यवस्था के लिये मरे हुए बन गए, कि उस दूसरे के हो जाओ, जो मरे हुआं में से जी उठा: ताकि हम परमेश्वर के लिये फल लाएं। (रोमियों 7: 2-4)

एक ही तरीका है एक शादी भंग कर रहा है मौत के माध्यम से है। पृथ्वी पर विवाह केवल जब तक दोनों भागीदारों जीने के रूप में पिछले। तलाक आदमी के प्रति अपनी वचनबद्धता से एक जोड़े को मुक्त करने का विचार है, लेकिन यह उन्हें प्रतिबद्धता है कि परमेश्वर से पहले किया गया था से मुक्त नहीं है। परमेश्वर ने उन्हें एकजुट है, चाहे वे इसे स्वीकार करते हैं या नहीं। एक ही हमारे उद्धार के बारे में सच है। हम मसीह में विश्वास के माध्यम से हमारे पुराने पहचान और स्वयं को मृत्यु हो गई और मसीह नए उद्देश्य में एकजुट हो रहे हैं। और सिर्फ शादी में वहाँ के रूप में (बच्चों के सबसे प्रमुख जा रहा है) संघ से फल है, इसलिए फल मसीह में हमारे संघ से है (यूहन्ना 15 देखें: 5)।

एक शादी की ताकत है, या एक ईसाई की, वैसे ही वे कितना स्पष्ट रूप से अपनी एकता के साथ की पहचान पर निर्भर करता है। आध्यात्मिक क्षेत्र में, शैतान हमारे विश्वास झटकों से हमारी नींव रॉक करने के लिए हमें चाहता है। उन्होंने सवाल किया जाए या नहीं हम वास्तव में बच रहे हैं हमें पैदा कर देता है। शैतान हमारी शादी में भी इस करता है, हमें लगता है कि हम शादी कर आकर्षक रहने से अन्य विकल्प से। चलो हमारे आधुनिक समाज में विवाह की नींव पर दूर कैसे शैतान छीलना पर नजर डालते हैं।

इ) आधुनिक शादी और उसके लालच

हम कहते हैं कि चर्च ईमानदारी से शादी पर परमेश्वर की शिक्षाओं का प्रचार किया जाता है प्यार होता है। दुर्भाग्य से, यह ऐसा नहीं है। वहाँ परमेश्वर के शब्द के प्रति वफादार रहने के कुछ चर्च हैं। कुल मिलाकर, हालांकि, चर्च केवल तलाक की अनुमति के नहीं है, लेकिन तलाकशुदा के रूप में खुद के बारे में सोच को प्रोत्साहित

करने के एकल। 'वे समूहों प्रायोजक उन्हें फाई एन डी एक और साथी मदद करने के लिए। क्योंकि यह एकता के इस सिद्धांत के खिलाफ जाता है परमेश्वर तलाक और पुनर्विवाह की इस भावना से नफरत करता है।

क्योंकि इस्राएल का परमेश्वर यहोवा यह कहता है, कि मैं स्त्री-त्याग से घृणा करता हूँ, और उस से भी जो अपने वस्त्रा को उपद्रव से ढांपता है। इसलिये तुम अपनी आत्मा के विषय में चैकस रहो और विश्वासघात मत करो, सेनाओं के यहोवा का यही वचन है। (मलाकी 2:16)

क्योंकि यह एक मांस के बुनियादी सिद्धांत जीवन टूट जाता है परमेश्वर तलाक नफरत करता है। एक तलाकशुदा उनकी शादी साथी के साथ विश्वासघात किया गया है। पूर्व में, केवल आदमी तलाक आरंभ होता है, लेकिन अब और अधिक धन के साथ, औरत भी तलाक आरंभ करने के लिए स्वतंत्र महसूस होता है। परमेश्वर का हृदय इस पर टूट गया है। क्या भौतिक दायरे में हो रहा है यह भी आध्यात्मिक क्षेत्र में हो रहा है। लोग मसीह छोड़ रहे हैं। वे प्रभु के लिए उनकी आज्ञाकारी टाई खारिज कर रहे हैं। शादी और मोक्ष के बीच टाई कई की तुलना में ज्यादा करीब हमें का संदेह है।³⁶

यह भी जिस तरह से व्यभिचार सुली विवाह के साथ ही एक आध्यात्मिक जीवन से स्पष्ट है। व्यभिचार की भावना हमारे चारों तरफ है। मैं व्यक्तिगत रूप से इस पाप से बाध्य होगा अगर यह परमेश्वर की कृपा के लिए नहीं था। हमें कैसे एकता पोर्नोग्राफी ने धमकी दी है पर नजर डालते हैं।

1) अश्लील साहित्य, कामुक देखने और पढ़ने

कुछ लोगों को अश्लील साहित्य के लड़कों और पुरुषों के लिए एक की जरूरत है और सामान्य मोड़ पर विचार करें। मैं भी ईसाई माता पिता,

जो लगता है कि वे उन्हें अश्लील साहित्य के लिए प्रकाश में लाने के माध्यम से शादी के बारे में अपने बेटों को सिखा रहे हैं के बारे में सुना है।

³⁶ बल दिये गये शब्दों को गौर से देखें। वैवाहिक समस्या आत्मिक समस्याओं को उजागर करती है, "पर यह सोचे, कि आखरी दिनों में कठिन समय आएंगे। आदमी अपने आप से प्रेम करेगा, पैसों के प्रेमी, डींग मारने वाला होगा, घमण्डी, गाली देने वाला, माता-पिता का अवज्ञाकारी, एहसान फरामोश, अपवित्र, अप्रेमी, दुर्भावनापूर्ण गपशप, आत्म नियंत्रण के बिना, क्रूर, अच्छा के शत्रुओं, नमक हराम, लापरवाह, अभिमानी, स्वामीमान, परमेश्वर के प्रेमी होने के बजाय अपनी खुशी के प्रेमी" (2 तिमोती 3:1-4)।

विवाह का निर्माण!

अश्लील साहित्य शादी के साथ कुछ नहीं करना है! ये माता-पिता उन्हें शादी करने के लिए, लेकिन व्यभिचार को शुरू नहीं कर रहे हैं।

वे एकता के बारे में सिखाने के लिए चाहते हैं, तो माता-पिता को अश्लील साहित्य से अपने बच्चों को रखने के लिए और उन्हें खुद ही उनके भविष्य की एक महिला में खुश कर का एक सपना देना चाहिए। हम क्या हमारे चारों तरफ क्या हो रहा है से दुखी हैं। यीशु ने स्पष्ट शब्दों है कि अश्लील साहित्य के हृदय व्यभिचार में कहा गया है। मती 5:28 को नीचे पढ़ें।

“परन्तु मैं तुम से यह कहता हूँ, कि जो कोई किसी स्त्री पर कुदृष्टि डाले वह अपने मन में उस से व्यभिचार कर चुका”।

दूसरे शब्दों में, पति या पत्नी के साथ एक और वासना पर उसके या उसकी आँखों की स्थापना की है कि उनकी एकता के तथ्य से इनकार किया है। वे अपने ही स्वयं कृपालु इच्छाओं की अनुमति दी है उनके पति के लिए अपनी वफादारी पर राज करने के लिए। वे एक हैं, लेकिन अब नहीं है कि सत्य को गले लगाओ। वे बजाय दूसरे के साथ झूठी एकता को बढ़ावा देने रहे हैं।

महिलाओं को एक ही प्रलोभन करने के लिए अतिसंवेदनशील होते हैं। महिलाओं की बढ़ती संख्या को अश्लील साहित्य का उपयोग करें। वे विकल्प के रिश्तों के लिए देख रहे हैं। बर्दाश्त अश्लील साहित्य, कामुक फिल्मों, या उपन्यास करके, वे कपट की भावना विकसित कर रहे हैं। वे अपने पति के लिए उनकी व्रत पर अपनी पीठ बदल रहे हैं। यह इसलिए होता है क्योंकि वे अब सच्चाई यह है कि परमेश्वर की तरह सबसे अच्छा है मैं अपने चुनाव फाई सबूत जगह है। अश्लील साहित्य के जाल में फंस गए उन लोगों के लिए इलाज परमेश्वर और उनकी पत्नियों के लिए उनके हृदय की अशुद्धता कबूल करने के लिए है।³⁷

³⁷ मैं यह सुनकर बहुत परेशान हुई के एक मसीही परामर्शदाता की सिफारिश थी कि एक पति को अपने अश्लील साहित्य के पाप के विषय में नहीं बताना चाहिये, उस पर “अतिरिक्त” आदेश करने के लिये। हालांकि हम सराहना करते हैं कि वह पत्नी के प्रति संवेदनशील बनने की कोशिश कर रहा था, यह अभक्ति सुझाव है। उसे किस प्रकार का विवाह चाहता है? अगर वे एक महान विवाह को चाहते हैं, तो उन्हें एकता का निर्माण करने कि जरूरत है, जो किसी भी प्रकार का धोखा व अंधकार को बर्दाश्त नहीं करेगा। जब तक एक पुरुष हानिकारक चीजों को अपनी पत्नि से छोपाएगा, वहाँ पर चंगाई नहीं हो सकता। वो पापों को ढँपता है और समृद्ध नहीं होगा। उसे जरूरत है इसे मानने की और पश्चाताप करके माफी माँगने की पत्नि से।

तब वे प्रतिज्ञा को नवीनीकृत अपने पति के प्रति वफादार होने के द्वारा ही परमेश्वर की सेवा करने के लिए करना चाहिए। का एक सकारात्मक रास्ते में उस पर नजर डालते हैं।

एकता मुझे यह बताता है कि परमेश्वर ने मुझे एक सामर्थी अच्छी चीज़ है एक पत्नि में। वचन कहता है, "जिस ने स्त्री ब्याह ली, उस ने उत्तम पदार्थ पाया, और यहोवा का अनुग्रह उस पर हुआ है"।

(नीतिवचन 18:22)

हम अपने पति के साथ सामग्री होना चाहिए। हम उद्देश्य केवल अपने पति में प्रसन्न करने के लिए के रूप में, हम उसे या उसके साथ हमारी एकता की पुष्टि। अधिक हम अपने पति या पत्नी में प्रसन्न, बड़ा 'खेत' हो जाता है। हम अधिक से अधिक स्वतंत्रता भावना। पॉल टिमोथी में कहते हैं, "कानून केवल अधर्म के लिए है।" ³⁸हम अपने हृदय की प्रतिज्ञा, तो कानून है, यानी बाड़, के बारे में सोचा नहीं है समझौता नहीं है। कई आसपास के लालच और कम से कम आकर्षक हो गया है। क्यों? हम परमेश्वर के वादे को पूरा करने में खुशी मिलती है।

हम समझते हैं कि कुछ उम्मीद छोड़ दी है। वे खुद को आदी कहते हैं। यौन इच्छाओं के पीछे छिपा रासायनिक ऊंचे स्तर के पुल बहुत मजबूत हो सकता है। काउंसेलर उन्हें बताया कि वे अतीत से 'घायल' कर रहे हैं। हालांकि, हमें समझना चाहिए कि जब एक पति या पत्नी एक और की इच्छा के लिए खुद को या खुद की अनुमति देता है, वह या वह प्रतिबद्ध विश्वासघात है। वे अपनी प्रतिज्ञा तोड़ रहे हैं। पश्चाताप सिर्फ वेब पर अश्लील देख रोकने की कोशिश मतलब नहीं है।

समस्या की जड़ उजागर किया जाना चाहिए। वे 'द्वित्येता'के बजाय एकता से रह रहे हैं। वे रहते हैं, जैसे कि वे दूसरे से फ़ैसलों के अलावा कर सकते हैं।

इस तरह के कार्यों के एक शक नहीं है कि परमेश्वर की तरह सबसे अच्छा है परमेश्वर की सच्चाई के खिलाफ एक विद्रोह का पता चलता है और उस रास्ते में हैं। जब भी एक परमेश्वर की सच्चाई तिरस्कार, वह इसके बारे में उनकी अस्वीकृति द्वारा जला दिया जाएगा।

³⁸ "यह जानकर कि व्यवस्था धर्मो जन के लिये नहीं, पर अधर्मियों, निरंकुशों, भक्तिहीनों, पापीयों, अपवित्रों और अशुद्धों, मांभाप के घात करने वालों-, हत्यारों" (1 तिमथियुस 1:9)।

वास्तव में, जब हम एकता के सिद्धांत जीवन का एक स्पष्ट परिप्रेक्ष्य मिलता है, हम हैं कि बुरा व्यवहार है कि विवाह से इनकार करते एकता से भर रहे हैं देखेंगे। वे खुद को निर्णय करना है कि शादी की एकता के खिलाफ जाना बनाने के लिए अनुमति देते हैं। अश्लील साहित्य के लिए केवल एक उदाहरण है। चलो एक और क्षेत्र के बारे में सोचते हैं: तर्क।

2) झगड़ा और बहस करना

यीशु ने एक बार कहा था कि यह किसी को है कि खुद के साथ लड़ना होगा के बारे में सोच करने के लिए पागल है, लेकिन यह वास्तव में क्या होता है जब जीवन साथी के लोगों का तर्क है।³⁹ जब भी कोई पति या पत्नी दूसरे का विरोध करता है, वह या वह एक दुर्भावनापूर्ण सेल कि जंगली चला गया है और खुद को नष्ट करने पर तुला हुआ है की तरह है। वे एकता जीवन सिद्धांत का मुकाबला कर रहे हैं। वे बजाय एक साथ काम करने के लिए एक दूसरे का विरोध करने की जरूरत है।

बल्कि यह आदर्श लग सकता है, लेकिन यह है, जहां यीशु की आज्ञा से एक दूसरे के बहुत व्यावहारिक हो जाता है प्यार करने के लिए। हम एक दूसरे से प्रेम करने का प्रयास नहीं कर रहे हैं? मैंने सुना है कि बहुत सारे ईसाई राज्य है कि तर्क, सामान्य अच्छा है और यहां तक कि जरूरत है। ये तथाकथित सलाहकारों किसी को भी किसी भी अच्छा नहीं कर रहे हैं। हालांकि वे आम हैं तर्क और सामान्य नहीं हैं।

एक बार जब हम उन्हें सामान्य रूप में स्वीकार करते हैं, तो यह मानक तय करता है। इसके बजाय, हम परमेश्वर के मानक पर पकड़ और हमारे तार्किक आत्माओं से पश्चाताप करने की जरूरत है।

जीवन साथी की राय के मतभेद है। हम असहमति है, लेकिन जब हम आलोचना या शब्दों है कि जानबूझकर चोट या छोटा का उपयोग शुरू, हम निश्चित रूप से एकता के जीवन सिद्धांत को भूल गए हैं। यह सच सभी ईसाइयों के लिए है। प्रेरित दृष्टिकोण हम एक दूसरे की ओर ले जाना चाहिए सार।

“इसलिये परमेश्वर के चुने हुएों की नाई जो पवित्रा और प्रिय हैं, बड़ी करुणा, और भलाई, और दीनता, और नम्रता, और सहनशीलता धारण करो। और यदि किसी को किसी

³⁹ और यदि शैतान ही शैतान को निकाले, तो वह अपना ही विरोधी हो गया है; फिर उसका राज्य क्योंकर बना रहेगा?” (मत्ती 12:26)।

पर दोष देने को कोई कारण हो, तो एक दूसरे की सह लो, और एक दूसरे के अपराध क्षमा करो: जैसे प्रभु ने तुम्हारे अपराध क्षमा किए, वैसे ही तुम भी करो। और इन सब के ऊपर प्रेम को जो सिद्धता का कटिबन्ध है बान्ध लो”। (कुलुसियो 3:12-14)

वहां व्यक्त पर जोर दे, या एक की अपनी इच्छाओं और विचारों को लागू करने से ज्यादा महत्वपूर्ण बातें कर रहे हैं। एक जोड़े को परमेश्वर की इच्छा और तरीके से, जिस तरह से सम्मान जब हम कुछ बस के रूप में हम क्या कर के रूप में महत्वपूर्ण है। जोड़े को परमेश्वर के उद्देश्य को पूरा करने के लिए विनम्रता और धैर्य व्यायाम करने के लिए तैयार किया जाना चाहिए। हम स्वीकार करते हैं कि हमारे पापी स्वयं के कारण, हम इस मानक चाहे वह हमारी शादी में एक चर्च या व्यापार बैठक में हो से गिर जाते हैं।

जब मानक अधिक है, के रूप में परमेश्वर ने यह तय कर दिया है, हम पश्चाताप करने में सक्षम हैं, बहाल हो और वापस करने के लिए जहां परमेश्वर ने हमें चाहता है कि मिल जा। ऐसी अपेक्षाओं के बिना, कड़वाहट हमारे हृदय में बंद रहता है और धीरे-धीरे सभी एकता की भावना को नष्ट कर।

ड) एकता की अभिपुष्टि

आइए एकता के कुछ सकारात्मक तरीके देखें। शायद आप पहले से ही उनमें से कई कर रहे हैं।

1. अपने आप में प्रतिबद्ध हो जाएं कि आप कभी भी तलाक या अलग होने की बात का उल्लेख नहीं करेंगे।
2. एक साथ समय व्यतीत करें। हफ्ते में एक बार बाहर जाएं।
3. एक दूसरे की गलतियों को पूरी तरह माफ करें। कड़वाहट को बढ़ावा ना दे। “प्रेम बहुत से पापों को छुपा देता है”।
4. एक दूसरे से प्रेम और स्नेह की भावना बिस्तर से बाहर भी व्यक्त करें।
5. एक दूसरे से जीवन के मुद्दे, अपने सपनों, बच्चों और अन्य जरूरतों के विषय में बात करें।

विवाह का निर्माण!

6. इसके विषय में सोचे और बात करें कि आप दोनों एक दूसरे के कैसे पूरक हैं।
7. पवित्र शास्त्र के अनुसार अपने यौन संबंधों को सुरक्षित रखें (1 कुरिन्थियों 7: 5)।
8. एक दूसरे से बहस करने से इंकार करें। एक दूसरे के मतभेदों को स्वीकार करते हुए प्रार्थना करें।
9. नियमित रूप से एक साथ प्रार्थना करें। (केवल भोजन की प्रार्थना नहीं !)
10. एक साथ परमेश्वर के वचन को पढ़ें।
11. अपने परिवार के लिए दर्शन रखें (परमेश्वर ने आपके परिवार के लिए सेवा की क्या योजना रखी है जाने)।



अभिपुष्टि के कदम

हम अभिपुष्टि चरणों को कैसे चढ़ सकते हैं ? आइए इस बात को मैं अपने जीवन की यात्रा के माध्यम से आपको समझाता हूँ। सारे चरणों का मुख्य सिद्धांत इसी बात की ओर केंद्रित है कि मैं अपनी पत्नी लिंडा को प्रेम और खुश रखने के लिए अपने जीवन को समर्पित कर दूँ। ऐसा करने से उसका प्रेम और आनंद विकसित होता है। बुरी लालसाएं दूर रहती हैं। यह कुछ बुनियादी तरीके हैं जिसके माध्यम से मैं एकता को बनाए रखता हूँ।

- केवल अपनी पत्नी से प्रेम करने का निर्णय लें।

- हर प्रकार की बुरी लालसा से दूर रहते हुए अपनी पत्नी के प्रेम में बने रहें।
- अपनी इच्छाओं और लालसा को पूरी करने के लिए परमेश्वर के समय पर भरोसा रखें। यह मुझे हताश होने से बचाता है।
- जीवन में कड़वा बनने से इंकार करें। हो सकता है वह अपनी भावनाओं में धोखा खा रही हो .इस समय उसे मेरे प्रेम की आवश्यकता है। मैं उसके इस उदासी में परिवर्तन आने का इंतजार करूंगा।
- मैं अपनी गलतियों की माफी जल्दी से मांग लेता हूँ। मैं चाहता हूँ कि हम एक साथ कार्य करें।
- याद रखेगी परमेश्वर की योजना हम दोनों की एक साथ कार्य करने की है ,मुझे उसकी आवश्यकता है!⁴⁰
- याद रखें जब तक मैं उसके साथ अपनी शांति नहीं बनाता, परमेश्वर मेरी प्रार्थना को नहीं सुनेगा।
- सबसे बड़ा आनंद एक दूसरे के साथ प्रेम बनाए रखने में आता है। सबसे बुरा समय वह होता है जब हम एक दूसरे के विपरीत कार्य करते हैं।
- भविष्य की चर्चाओं में मेरी आशा है कि हम विशिष्ट मुद्दों के विषय में अधिक बातचीत करेंगे ।अगर हम अपने बीच एकता को बनाए रखना चाहते हैं ,तो हमें इन जवाब में निपुण हो जाना चाहिए।
 - ❖ जब एक लड़ाई की स्थिति उत्पन्न होती है तो आप उसे कैसे संभालते हैं?
 - ❖ उस परिस्थिति में क्या होगा जब एक ही जन एकता के विषय में ध्यान देता है?
 - ❖ मैं उसके चुभने वाले शब्दों को कैसे संभाल सकती हूँ?

⁴⁰ “वैसे ही हे पतियों, तुम भी बुद्धिमानी से पत्नियों के साथ जीवन निर्वाह करो और स्त्री को निर्बल पात्र जान कर उसका आदर करो, यह समझ कर कि हम दोनों जीवन के वरदान के वारिस हैं, जिस से तुम्हारी प्रार्थनाएं रुक न जाएं” (1पतरस 3:7)।

विवाह का निर्माण!

- ❖ हमारे विवाह की स्थापना कड़वाहट पर हुई है? मैं इसे कैसे बदल सकती हूँ?
- ❖ मुझे यह हमेशा चिंता रहती है कि क्या सचमुच मेरा पति मुझसे प्रेम करता है, मैं क्या करूँ?
- ❖ अगर किसी महत्वपूर्ण मुद्दे पर, मेरे और मेरे पति के विचारों में मतभेद है तो मैं क्या करूँ?

सारांश:

एकता का जीवन सिद्धांत संबंधों में मधुर तालमेल लाता है। एक जोड़ा अचानक से जीवन के किसी मोड़ पर अलग नहीं हो जाता। विवाह जीवन काल के लिए है। प्रेम और प्रतिबद्धता की सुरक्षा में प्रेम आनंद और शांति बढ़ती है।

मैं अपने जीवन साथी के साथ प्रतिस्पर्धा नहीं करता। एक जोड़े में कोई भी प्रतियोगिता नहीं होनी चाहिए किंतु केवल एक की वह एक दूसरे से अधिक प्रेम करें। हम एक साथ कार्य करते हैं कि परमेश्वर का कार्य कर सकें। उसके बजाए की हम अपनी जरूरतों को पूरी करने के उपाय निकालें, मैं यह तरीका निकालता हूँ कि स्वयं का बलिदान करके, एकता कि अपनी प्रतिबद्धता को प्रदर्शित करूँ। पवन सचमुच प्रसन्न और संतुष्ट है। एकता की हमारी नींद और गहरी होती जा रही है और हर एक दरारे नष्ट होते हुए देखती है।

“और वे उसके बाद खुशी खुशी रहने लगे “यह एक वफादार और जीवन भर के विवाह का प्रतीक है। एक मसीही की तरह जिसने यीशु मसीह के आत्मिक सिद्धांतों को सीख लिया है, विवाह आनंद और प्रेम का भंडार है। हमें केवल अपने एकता की प्रतिबद्ध को बनाए रखने की ओर देखते रहना है। हम प्रतिज्ञा को करते हैं और उसे पूरा करने में झूठ जाते हैं। जीवन काल के लिए।

परिशिष्ट

1) हमारी प्रतिबद्धता

मैं यह वचन लेती हूँ कि मैं केवल अपने पति से प्रेम करूंगी। यह मेरा चुनाव है। मैं शादीशुदा हूँ। चाहे जीवन में कितनी भी परेशानियाँ आए, मैं अपने परमेश्वर पर

अपनी पत्नी के लिए भरोसा रखूंगा। मैं अपने आस-पास की बुरी लालसा को ठुकराता हूँ। मैं स्थाई रूप से अभिलाषा को “नहीं” कहता हूँ। मैं परमेश्वर की ओर से निरंतर रूप से अपनी पत्नी से प्रेम करने के लिए बुलाया गया हूँ। मैं केवल अपनी पत्नी में प्रसन्न रहूंगा। परमेश्वर उसी के द्वारा अपने समय में मेरी जरूरतों को पूरा करेगा।

हो सकता है हमारे जीवन में मुश्किल समय, गलतफेमियां, या तो कभी आए। मैं अपनी पत्नी के प्रेम में दृढ़ता से खड़ा रहूंगा। मैं परमेश्वर पर भरोसा रखता हूँ कि वह मेरी प्रतिज्ञा को पूरा करने में मेरी सहायता करेंगे। अपनी पत्नी के साथ मैं अपने हृदय और दर्शन को बंटूंगा। उसी के सामने रहूंगा। मैं यह प्रतिज्ञा लेता हूँ कि मैं उन बातों पर कार्य करूंगा जिसमें मेरी पत्नी मुझ पर विश्वास नहीं करती। उसी समय, मैं अपने परमेश्वर के लिए प्रतिज्ञा करता हूँ किसके लिए जिऊंगा और अपनी पत्नी से निरंतर प्रेम करूंगा।

2) हमारी प्रार्थना

प्यारे स्वर्गीय पिता, शायद मुझे यह अभी तक अंदाजा ही नहीं की मैंने अपने विवाह में कितनी गड़बड़ी मचा चुकी है। लेकिन अब मैं समझता हूँ कि “एकता” क्या है। हालांकि आपने हमें “एक” कर दिया है लेकिन फिर भी मैं” दो “के रूप में जी रहा था। मैंने अपनी पत्नी से बहस और लड़ाइयां की हैं। परमेश्वर मुझे क्षमा करें और अपने लहू के द्वारा धो दें।

आज के दिन से मैं अपने आप को पूरी तरह से अपनी पत्नी के लिए समर्पित करता हूँ। मैं एक पूर्ण समर्पण चाहता हूँ और वह किसी भी रीति से टूटा हुआ ना हो। अब से मैं अपने विवाह की दिक्कतों और परेशानियों का हल निकालने के लिए तेरी स्वर्गीय बुद्धि और समझ का सहारा लूंगा। मुझे सहायता करें कि मैं अपने स्वार्थी स्वभाव को छोड़कर एकता की ओर बढ़ूँ।

चाहे वह बिस्तर में हो, एक साथ दुकान जाने में, या कार में, तेरी शांति प्रेम और आनंद के द्वारा हमारी शादी में तेरी महिमा हो। मुझे सहायता करें कि मैं एकता में बढ़ता जाऊँ।

“मुझे नगीने की नाई अपने हृदय पर लगा रख, और ताबीज की नाई अपनी बांह पर रख; क्योंकि प्रेम मृत्यु के तुल्य सामर्थी है, और ईर्ष्या कब्र के समान निर्दयी है। उसकी ज्वाला अग्नि की दमक है वरन परमेश्वर ही की ज्वाला है। पानी की बाढ़ से भी प्रेम नहीं बुझ सकता, और न महानदों से डूब सकता है। यदि कोई अपने घर की

विवाह का निर्माण!

सारी सम्पत्ति प्रेम की सन्ती दे दे तौभी वह अत्यन्त तुच्छ ठहरेगी॥ " (श्रेष्ठगीत 8:
6-7)

अध्याय # 4 अध्ययन के लिए सवाल

1. जीवन का सिद्धांत क्या है?
2. एक परमाणु एकता के सिद्धांत को कैसे दिखाता है?
3. कौन से वचन पर यह सिद्धांत आधारित है? इसे बताएं?
4. एक अच्छा और बुरा विवाह कैसे बनता है?
5. तलाक या अलग हो जाना क्यों सही नहीं?
6. क्यों एक तलाकशुदा व्यक्ति के साथ दोबारा शादी करना व्यभिचार माना जाता है?
7. “खेत” के सिद्धांत को बताएं
8. दो तरीके बताएं जिस से छुटकारे का संदेश की अवधारणा नए नियम में पाया जाता है?
9. बताएं किस तरीके से अश्लील साहित्य और अन्य गंदी बातें एक जोड़े को तोड़ देती है?
10. बताएं किस तरीके से झगड़ा और बहस एक जोड़े की एकता को तोड़ता है?
11. तीन तरीके बताएं जिससे आप अपने पति के साथ एकता बनाए रख सकते हैं?

विवाह का निर्माण!

1. क्या आपने अपनी एकता की इच्छा अपने साथी को बताई है?
2. क्या आपने आत्म संयम के द्वारा केवल अपनी पत्नी से प्रेम करने का निर्णय लिया है?
3. अपने जीवन के बारे में सोचें और बताएं कि किस तरीके से पिछले दिनों में अपनी एकता का प्रमाण अपने साथी को दिया है?

संभाग #2: क्षमा

अध्याय # 5-7

टूटे हुए विवाहों का पुनः स्थापना



5 समझ और संघर्ष पर काबू पाने

वैवाहिक जीवन में संघर्ष संकल्प: भाग 1

परमेश्वर की शांति घर में जाना संभव है? अपनी शादी के लिए? हम तो मानते हैं! शांति भी पवित्र आत्मा का एक फल है (गलतियों 5:22)। इस अध्याय में हम बताएंगे कि कैसे एक जोड़ा एक तार्किक घर को प्रेम और सद्भाव के घर में बदल सकता है।

परमेश्वर की बनावट वास्तव में काम करती है। हम बस पीछे जाएं और देखें कि परमेश्वरने हमें क्या दिया है और उसे थाम लें। एकता परमेश्वर ने शादी के रिश्ते में एक जोड़े को एकता उपजा करदी है।

कई प्रश्न मन में उठते हैं कि किस प्रकार व्यवहारिक रूप से इस सामंजस्य के बिंदु तक पहुंचा जाए। हम दो तरीकों से इन मुद्दों को संबोधित करेंगे। सबसे पहले हम समझे कि कैसे झगड़े बढ़ते हैं। क्यों जो एक दूसरे को प्यार करते हैं झगड़ा एवं तर्क करते हैं? संघर्ष के श्रोत को समझने के बाद हम सकारात्मक कदम उठा सकते हैं जैसे परमेश्वर के सामंजस्य को घर और हृदय में लाएं।

अ) समझौता वैवाहिक जीवन में संघर्ष (याकूब 4: 1-3)

आप में से अधिकांश मुझे बता सकते हैं दो या तीन चीजों के बारे में जिनमें आपने तर्क किया है। वह अभी भी आपके दिमाग में हैं क्योंकि उन्होंने आपको चोट पहुंचाई है। कई मामलों में वे अभी भी अनसुलझे हैं। एक व्यक्ति इस संघर्ष से जीत सकता है। परंतु क्योंकि वह व्यक्ति आप के बगल में रहता है, वह बहुत से जीतने के अवसरों को कठिन बना देता है। वास्तव में कोई नहीं जीतता है।

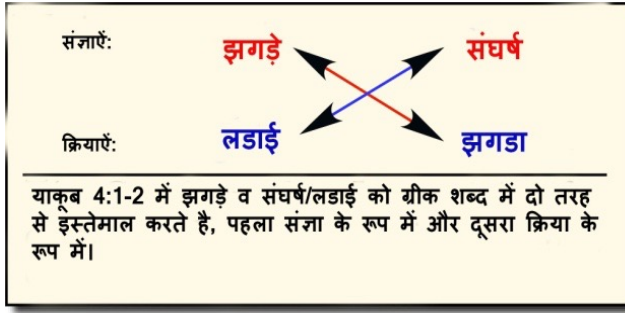
कोई लड़ाई जीत सकता है परंतु युद्ध नहीं। यहां मुसीबतें वास्तविक मुद्दे से अधिक गहरी हो जाती हैं जिस पर एक दंपति बहस कर सकती है। सोभाग्य से परमेश्वर ने झगड़ों के बारे में बहुत ही स्पष्ट शब्द दिए हैं। तर्क का शब्द शास्त्र में अक्सर उपयोग में नहीं लाया जाता है।

शास्त्र ज्यादातर तार्किक शब्द का इस्तेमाल करता है। तार्किक कारणों के आगे और पीछे प्रस्तुत 'तार्किक तर्क' हमारे संघर्ष हैं, ताकि हम गहरा विश्वास रहता है कि हम सही हैं। समस्या तब बहुत ज्यादा बढ़ जाती है जब एक मौखिक या शायद शारीरिक रूप से पति या पत्नी को चोट पहुंचाता है लड़ाई की जीतने के लिए। क्या वे वास्तव में जीतते हैं।

याकूब 4: 1-3 पुराने समय सर्जरी की तरह, हमारे सामने झगड़े और संघर्ष के हृदय को खोलता है। इन शब्दों को ध्यान से देखो।

"झगड़े और आप के बीच संघर्ष का स्रोत क्या है? अपने ही सदस्यों में युद्ध छेड़ने के लिए सुख का स्रोत नहीं है? आप में वासना है या नहीं है जिससे आप हत्या करते हैं। और आप जलते हैं और आप प्राप्त नहीं कर सकते हैं। तब आप झगड़ा और लड़ाई करते हैं। आपके पास नहीं है क्योंकि आप नहीं पूछते हैं। आप पूछते हैं पर नहीं पाते हैं क्योंकि आप गलत इरादे से पूछते हैं जिससे आप उसे अपने सुखों पर खर्च कर सके (याकूब 4: 1-3)

संघर्ष के कुछ साधारण निष्कर्षों पर पहुंचने से पहले आइए हम पहले देखें तू ग्रीक शब्दों को जो झगड़े और संघर्ष के लिए प्रयोग किए गए हैं। वह दो बार इस्तेमाल किए गए हैं, पहले संज्ञा के रूप में फिर क्रिया के रूप में (हालांकि विपरीत क्रम में) झगड़ा संघर्ष के व्यापक रूप में प्रयोग किया जाता है: युद्ध भी। संघर्ष लड़ाई के लिए शब्द है। एक सचमुच यह अनुवाद कर सकता है 'तुम्हारे बीच युद्ध और लड़ाई का स्रोत?'



लड़ाई तब लंबे समय से अनसुलझे युद्ध और तनाव उससे साथ जुड़े मुद्दे को दर्शाता है। संघर्ष दूसरी तरफ दो लोगों के बीच में लड़ाई और युद्ध को दर्शाता है बहुत सी दंपति संघर्ष के बारे में ज्यादा जागरूक रहते हैं बजाए लंबे समय के युद्ध के। वे वैवाहिक कलह के लिए असली कारण के लिए की तुलना में अंतिम लड़ाई से घाव के लिए और अधिक ध्यान देते हैं।

अनियंत्रित क्रोध शादी में एक वास्तविक समस्या है और इन झगड़ों को बढ़ाता है। क्रोध एक उपकरण है जो इसे बढ़ाने में बहुत जल्दी मदद करता है। दुर्भाग्य से, इस मामले में यह एक पति/पत्नी का विनाश है। क्रोध, संघर्ष की भावना के समान है, जो विवाह को नष्ट कर देता है क्योंकि यह एकता की भावना के विपरीत कार्य करता है। (क्रोध से निपटने के बारे में अधिक संसाधनों के लिए यहाँ देखें)।

आप एक संघर्ष का समाधान करते हैं, तो आप झगड़ा (यानी युद्ध) का समाधान करते हैं? नहीं हमें गहरे, बहुत गहरे जाने की जरूरत है जैसा जेम्स करता है। बल्कि यह सोचने की जरूरत है कि कोई भी इन्हें (परमेश्वर भी) पसंद नहीं करता है, किंतु हम फिर भी इनमें में भाग लेते हैं। तब हम परमेश्वर के उन शब्दों में से निष्कर्ष निकालें जो परमेश्वर के निर्देशन में लिखी हैं जिसे हम अपने संघर्षों को समझाने में सही रूप से समझ सकें।

शादी के झगड़े पर छह टिप्पणियाँ

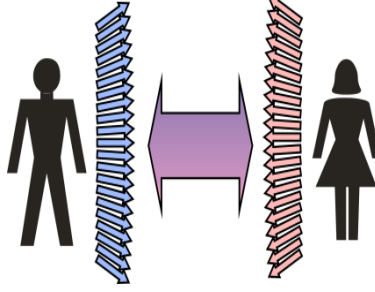
प्रत्येक निम्नलिखित निष्कर्ष के लिए बाईबल सबूत प्रदान करके शुरू करता है।

1) झगड़े में सहयोग की आवश्यकता है (दो की आवश्यकता है)।

दो ग्रीक शब्दों का जेम्स ने इस्तेमाल किया है और दो अर्थ निकलते हैं: युद्ध और लड़ाई:

विवाह का निर्माण!

शब्द "सदस्यों" पर भी ध्यान दें जिन्हें इस्तेमाल किया गया है यह एक शरीर के अंगों को दर्शाता है जो कि अंदर लड़ रहे हैं। हम अपनी गलती के लिए अपने साथी को दोष देते हैं, किंतु हमें इतना भी विनम्र होना चाहिए कि वैवाहिक जीवन में पति-पत्नी दोनों तर्क स्वीकार करें। बड़ा सुधार तब होता है जब हम साथी को शत्रु समझने से इंकार कर देते हैं।



2) झगड़े खुद को खुश करने के लिए प्रेरित कर रहे हैं।

याकूब 4 में खुशी के लिए शब्द: 1 'उल्लास,' जो दूसरों से पहले अपने आप को, मुझे खुश करने के लिए मूल शब्द है।

एक जोड़े को ध्यान से जांच करे कि उनके का जीवन लक्ष्य क्या है, बिना ध्यान से सोचे दुनिया के विचार उनके अपने नजरिए और निर्णय लेने की प्रक्रिया को प्रभावित करते हैं। यीशु ने अपने आप से ऊपर दूसरों को पसंद करने के लिए कहा।

3) किसी की इच्छाओं को पूरा करने के लिए वास्तविक खोज, संघर्ष का कारण बनता है।

याकूब 4: 2 का कहना है कि वे "नहीं प्राप्त कर सकते हैं; ताकि और लड़ाई और झगड़ा करें। वह अपनी इच्छाओं के द्वारा इतना चलाये जाते हैं कि वह दूसरों के जीवन में मुसीबतें पैदा करना चाहते हैं जिससे वह वह प्राप्त कर सके जो वह चाहते हैं। यह प्यार के विपरीत है। यह परमेश्वर की इच्छा नहीं परंतु वे स्वयं संचालित हैं।

कभी-कभी जीवन साथी के मन में विचार होता है कि उनका साथी उन्हें स्वीकार नहीं करेगा। वह डर या संभावित आपत्तियों के बावजूद इसे बाहर ले जाने के लिए हो सकता है। दूसरे समय में यह समझोते में फेर-बदल होगा। देलियाह के मीठे शब्द याद हैं?

4) झगड़ा करने वालों में आत्म संयम और आत्म नियंत्रण की कमी होती है।

स्वाभाविक है उन में आत्म नियंत्रण नहीं है और कम से कम वे इसे नहीं करना चाहते हैं। "यदि आप हत्या करते हैंयदि आप झगड़ा और लड़ाई करते हैं "वह दूसरों के लिए गलत करते हैं। "यह वह तरीका है " वास्तव में हम सब में पाप प्रकृति है। "यह बात है कि कुछ पति-पत्नी पश्चाताप करेंगे और ईश्वर की ओर देखेंगे उसकी आत्मा के लिए वह उनकी और उनकी शादी के लिए मदद करें। वह अपने कार्यों का औचित्य साबित करेंगे। हम सब हमारे कर्मों के लिए जिम्मेदार हैं।

5) झगड़े परमेश्वर की राह नहीं देखते

याकूब 4: 2 कहता है,"तुम मत पूछो "उनके पास तलाश करने के लिए यह मन नहीं है कि परमेश्वर क्या चाहते हैं और ना यह सोचने के लिए कि वह हमें कैसे दे सकता है ,उनकी प्रार्थनाएं जोड़-तोड़ वाली हैं ,बिल्कुल जादू टोने की तरह। वे अपने इच्छाओं को प्राप्त करने के लिए परमेश्वर के चारों ओर जाने के लिए तैयार हैं।

कुछ पति और पत्नियां परमेश्वर की मदद मांगने के लिए तैयार नहीं है। वह जानते हैं कि जो वे चाहते हैं वह उन्हें कैसे मिलेगा -और भी ऐसा कई सालों से कर रहे हैं। वे नीच कार्य, बर्बरता ,मीठे और यहां तक कि अपने तरीके से,पति पत्नी को धमकाने के लिए तैयार है।

6) झगड़ों में शांति और एकता की मानसिकता की कमी है

वह इस धारणा को स्वीकार करते हैं कि सभी के कल्याण से,अपने आप को संतुष्ट करना ज्यादा महत्वपूर्ण है। यह मामला चर्च में ले जाया जाता है परंतु शादी में सभी यही बातें होती हैं। एकता के सिद्धांत को प्राथमिकता नहीं दी जाती।

यदि पति पत्नी एकता की प्रतिबद्धता के बिना रहते हैं ,तब वे पूरी तरह से एक दूसरे के विरुद्ध रहते हैं। शांति बेसुरेपन में स्थापित हो जाएगी जब तक वह अपनी प्रतिबद्धता को नहीं बदलेंगे और कभी एकता के अनुसार नहीं रहेंगे।

धन पर एक परिप्रेक्ष्य

जब दोनों जोड़े काम कर रहे हैं उनके कुछ झगड़े समाप्त हो जाएंगे। कुछ काम करते हैं सिर्फ बहस से बचने के लिए। संघर्ष में यह कभी एक दूसरे से अलग होने के

लिए एक कारण हो सकते हैं ,लेकिन जेम्स बताते हैं वहां पैसे का मुद्दा अधिक महत्वपूर्ण है।

जब पर्स के तार तंग हों , एक पति या पत्नी को देने के लिए और अधिक करने की जरूरत है। जोड़े फैसले लेते हैं और बड़े मुद्दे के लिए बलिदान देते हैं तब विवाह मजबूत बनता है। जब प्रत्येक स्वयं कार्य करते हैं, तब वे जो चाहते हैं उसे खरीदने के लिए जाते हैं। उनकी खुद की आवश्यकताएं संतुष्ट होती है। वहां कोई टीम भावना नहीं होती है दूसरे साथी के पास कहने के लिए ज्यादा कुछ नहीं है। जेम्स कहता है कि संघर्ष तब चालू होते हैं जब वह जो चाहते हैं उसे पाते नहीं हैं।

प्रत्येक व्यक्ति के पास एक स्वार्थी प्रवृत्ति होती है जो एक अच्छे विवाह के विरुद्ध कार्य करती है। यदि हम स्वतंत्र स्वयम की मांग करने वाली भावना को दें, तब हम और अधिक तार्किक,अभिमानी और स्वार्थी बन जाएंगे।

सिर्फ इसलिए कि जोड़े का धन उन्हें बातों पर बहस से बचाता है,इसका मतलब यह नहीं है कि यह एक अच्छा विवाह है। उन्हें सिर्फ एहसास नहीं है कि वे किस तरह तलाक की भावना में जी रहे हैं। उन्होंने खुद के लिए अलग जीवन बना दिया है। जिस तरह से वे विवाह में रहते हैं(यह कहना चाहिए कि वे नहीं रहते हैं), उन्हें शादी से बाहर निकलने के लिए प्रेरित कर सकता है।

कुछ घर के बाहर काम का औचित्य साबित करने के लिए नीतिवचन 31 का उपयोग करें। बारीकी से इस की की जांच करने , हम पाएंगे कि पत्नी अपने पति और घर की जरूरतों को पूरा करने पर ध्यान केंद्रित करे। वह अपने कर्तव्यों को पूरा करने के लिए लगन से कार्य करें। कोई आसानी से देख सकता है कि उसका हृदय कहां था। उसके पास सेवा की भावना थी। वह दोनों को विवाह से अलग करने की भावना नहीं थी।

हमारी सिफारिश है कि धनी जोड़े को एक साथ काम करने के लिए ध्यान केंद्रित करना चाहिए,शायद उनकी जरूरत में उनकी मदद करने के लिए। यह उनके यही एक ही उद्देश्य और हृदय पर काम करने के लिए मदद होगी। यह एक अच्छी शादी की नींव होगी। (यह उनके लिए भी एक अच्छी सलाह होगी जो यह सोचते हैं कि फिलहाल उनकी शादी अच्छी नहीं है)

सारांश

जेम्स के इस उद्‌हरण में हम अपना पूरा समय चर्चा में व्यतीत कर देते हैं और यह नहीं सीखते कि विवाहित संघर्षों को किस प्रकार सुलझाया जाए। किंतु इससे पहले कि हम आगे बढ़ें, इस चर्चा का यह निष्कर्ष निकालें कि संघर्ष का असली स्रोत हमारे हृदय में है। हम अपनी वरीयताओं को अनुमति देने में प्राथमिकता दें, इस मामले में पति-पत्नी और शादी को। यह एक चर्च में या एक शादी में सच है। हमारी जरूरतों को पूरा करने में हमारा आक्रामक होने का कारण है हमारा स्वार्थी स्वभाव। हम स्वार्थी हो जाते हैं जिसका कारण है असभ्य और निर्दयी होना। अपने हृदय की बात को छोड़कर हमारा लक्ष्य हो जाता है स्वयं को खुश करना।

कुछ लोग जो चाहते हैं उसे हासिल करने के लिए, डर, क्रोध, दया, चिंता या खामोशी को इस्तेमाल करने में महारत हासिल है। वह हमेंशा ऐसी स्थिति में जाने को तैयार रहते हैं जिससे वह जो 'चाहे' वह पाये।⁴¹

परमेश्वर चपटी मुझसे चाहते हैं कि हम विश्वास और आज्ञाकारिता में जियें। परमेश्वर में विश्वास करने के लिए जरूरी है विश्वास में जाना और परमेश्वर चाहता है कि आप वह करें जिससे वह प्रसन्न हो।

और यदि अब आप स्पष्ट रूप से गैर मसीही हैं, आपको यीशु को जानने की जरूरत है। यीशु ना केवल हमारे पापों को ले लेता है, परंतु प्यार भरा नया स्वभाव देता है। हर किसी का पुराना स्वभाव स्वार्थीपन के ईंधन पर चलता है। कई लोग मसीही होने का दावा करते हैं क्योंकि उन्होंने बचपन से ही हाथ उठाया है।

यह इसलिए कि आप प्रति रविवार को चर्च में जाते हैं, परंतु यह आपके हृदय को नहीं बदलता। आपको अपनी स्वार्थीपन से वापस आने की जरूरत है, यीशु के लहू से साफ होने और उस ऊपर विश्वास करने से, यीशु की आत्मा के प्यार में नया जीवन शुरू करने में आप नया जीवन प्राप्त करते हैं। यदि आप परमेश्वर के प्यार के रास्ते में नहीं जीना चाहते हैं, तब आप को बचाये जाने की जरूरत है। आपकी अभिलाषाएं आपके ऊपर राज कर रही है और आपको अनंत जीवन में ले जाएंगी।

41 कई मामलों में हम इन बातों को हमारे घरों में ही सीखते हैं, जहाँ हम बड़े होते हैं।

यदि एक वास्तविक ईसाई हैं ,और अभी भी इन मुद्दों से संघर्ष कर रहे हैं ,हमें विश्वास होना चाहिए कि परमेश्वर सक्षम है और मदद करने के लिए चाहता है कि हम मुसीबतों से इतनी जल्दी बाहर आएं जितना हमने सोचा भी नहीं था। हमारे पास शक्ति है कि हम आत्मा के फल से ईश्वरीय जीवन जिए। निःसंदेह हम पसंद से या धोखे से पुराने स्वभाव में गिर सकते हैं। एक कार जिसमें दो गियर हैं उसके बारे में सोचें।

जब हम कार को एक गियर में डालते हैं ,तब वह हमेशा आगे जाती है ,पर जब हम उसे रिवर्स गियर में डालते हैं ,तब वह हमें हमेशा पीछे की ओर ले जाती है। अपने विवाह में आप किस दिशा में जाना चाहते हैं? आप आत्मा में जीने का चयन करेंगे या अपने पुराने स्वभाव में? परमेश्वर की आत्मा में जीने से आप उसकी और दूसरों की सेवा करेंगे। अपने शरीर में रहकर आप अपनी पुरानी इच्छाओं की सेवा करेंगे।⁴²

पुराने संघर्षों से राहत पाने के कदम

यदि आपकी शादी में झगड़े और लड़ाई है ,तब आप ईश्वर की महान शादी की योजना को रहे हैं। यद्यपि आपके पास असहमतियाँ हैंतो आपको यह सोचना बंद करना होगा की तर्क संघर्षों को सुलझाने का मार्ग है।

यहां आप को दलदल से बाहर निकालने के लिए कुछ कदम मदद करेंगे।

- ◆ अपनी खुशियों और इच्छाओं को पहचाने। वह क्या चीज है जो आपको संघर्षों में ले जा रही है। ईश्वर की इच्छाओं के बजाय खुद की इच्छाओंकी मांग से पश्चाताप करें।
- ◆ अपनी कमियों के ऊपर ध्यान केंद्रित करें ना की अपने साथी की कमियों पर।
- ◆ झगड़े के निशानों को मिटायें। यदि आपने दूसरों को चोट पहुंचाई है, तो माफी मांगें ,अपनी गलतियों को मानें और क्षमा मांगें। ईश्वर के और अपने साथी के सामने अपने गुनाहों को कबूल करें। अपने पिछले पापों को छिपाकर मत रखो। वे आपके और आपके साथी के बीच में बाधा के रूप में आते रहेंगे जब तक की वह सुलझ नहीं जाते हैं।

42 यह यहेशू का अंक है यहेशू 24:19-25 में।

- ◆ परिणामों की चिंता के बिना ईश्वर के एकता के सिद्धांतों को माने। एक ईसाई की तरह आपको परमेश्वर की सेवा करना है। यह दूसरी बात है कि आप क्या सोचते हैं और क्या चाहते हैं।

इन मुद्दों के लिए परमेश्वर पर भरोसा रखें। इनके ऊपर कार्य करने के तरीके पर विश्वास रखें। विश्वास रखें कि ईश्वर का मार्ग आप के मार्ग से हमेशा बेहतर होता है। वह करें जो परमेश्वर चाहते हैं। बिना कार्यवाही के बात खाली है। (इस पर अधिक आयेंगे) हमने संघर्षों के बारे में बहुत कुछ सीखा है। हम कुछ असली मुद्दों की पहचान शुरू करेंगे जो जोड़ों के बीच विवादों में हैं। संघर्षों को पहले समझाने का विरोध करना है इसके पहले कि हम उन्हें हल करने के लिए समझे कि पहले स्थान में युद्ध क्यों होता है। कुछ व्यक्ति इसे जीतने के लिए खुश होते हैं परंतु यह नहीं पूछते कि वहां लड़ाई क्यों है। हमारा लक्ष्य युद्ध को खत्म करना और सदभाव हासिल करना है। जब पति और पत्नी इस सद्भाव को खोजते हैं, तब वे ईश्वर से मुद्दों को हल करने के लिए मांग सकते हैं। हमें यह स्पष्ट रूप से तय करना है कि हमें अपनी इच्छा को प्राथमिकता नहीं देना है। हमारी इच्छाएं हमारे विवाह को नष्ट करती हैं।

जोड़ा एक होता है ना की दो। पति और पत्नी के जैसे क्या हम एक ही टीम में नहीं है ?

क्या हमारा लक्ष्य एक नहीं है? क्या हम दोनों नहीं जीत रहे हैं जबकि दूसरा भी अच्छे से करता है? हमें यकीन है! ईश्वर के सद्भाव के वादे को लागू करने के लिए हम यहां देखते हैं कि क्या सकारात्मक कदम उठाएं।

ब) वैवाहिक जीवन में सद्भाव बनाना (फिलिप्पियों 2:1-5)

महान परमेश्वर अपने शब्दों के माध्यम से हमें संघर्षों के संकल्पों के बारे में सिखाता है। (बाइबल में पाया जाता है) दुर्भाग्यवश हम इन समाधान के बारे में नहीं जानते हैं। फिलिप्पियों 2: 1-11 व्यक्तिगत समस्याओं जैसे मुद्दों से निपटने तुलना में धार्मिक बयानों के लिए जाना जाता है, किंतु मेरा मानना है कि यह मूल उद्देश्य था। मसीह ने नमूना दिया था कि वह क्या चाहता है हमारे जीवनो से। हम पहले पांच पदों तक अपनी चर्चा सीमित रखेंगे।

“सो यदि मसीह में कुछ शान्ति और प्रेम से ढाढ़स और आत्मा की सहभागिता, और कुछ करुणा और दया है। तो मेरा यह आनन्द पूरा करो कि एक मन रहो और एक ही प्रेम, एक ही

विवाह का निर्माण!

चित्त, और एक ही मनसा रखो। विरोध या झूठी बड़ाई के लिये कुछ न करो पर दीनता से एक दूसरे को अपने से अच्छा समझो। हर एक अपनी ही हित की नहीं, वरन दूसरों की हित की भी चिन्ता करे। जैसा मसीह यीशु का स्वभाव था वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो।” (फिलिप्पियों 2: 1-5)

जो हमें जेम्स 4 में देखा था यह पद उसके बिल्कुल विपरीत हैं। यहां हमारी एकता को बनाए रखने के लिए सकारात्मक कदम हैं। इस संदर्भ में चर्च के सदस्यों को कैसी प्रतिक्रिया व्यक्त करनी चाहिए परमेश्वर की दया और उदाहरण के प्रकाश में। पहली नज़र में यह सैद्धांतिक लग सकता है, लेकिन वास्तव में यह बहुत ही व्यावहारिक है। नीचे के प्रत्येक अवलोकन के साथ, हम इसे विवाह पर लागू करेंगे जैसा की हमने पहले किया था। यह वह चीजें हैं जो तुम करना चाहते हो। हो सकता है कि पहले आपने इन्हें किया हो बगैर यह समझे कि यह विवाह के लिए कितने महत्वपूर्ण हैं।

1) एकता को गले लगाओ

“तो मेरा यह आनन्द पूरा करो कि एक मन रहो और एक ही प्रेम, एक ही चित्त, और एक ही मनसा रखो।”(फिलिप्पियों 2: 2)।

हम फिलिप्पियों 2:2 में एकता के सिद्धांत पर अत्यंत जोर दे कर देखें ‘एक ही मन’ ‘वही प्यार’, ‘आत्मा में एक’, ‘एक ही उद्देश्य’ सब एक ही पर आधारित हैं। एकता की इस अवधारणा को इतनी गहराई से हमारे दिलों में निहित हो जाना चाहिए कि यह हमारे विचारों को कैसे प्रभावित करती है। दूसरों के लिए सोचना (हृदय और दृष्टिकोण) और निर्णय लेना।



विवाह के सिद्धांत: हमारे पति पत्नी के लिए हमारी प्रतिबद्धता हमारी शादी की वाचा और परमेश्वर की घोषणा से आती है कि “दो के होंगे”। हमारा साथी कोई दूसरा व्यक्ति नहीं है कि हम साथ रहते हैं परंतु हमारा ही हिस्सा है उसके साथ क्या होता है जो एक खुद के जीवन को प्रभावित करता है। हमारे निर्णयों में हमें साथी के भलाई के बारे में भी सोचना चाहिए। जैसे हम साथी के साथ अंतरंग मित्रता में बढ़ते जाते हैं, हमें ऐसी मानसिकता प्राप्त होगी, पर जीवन पर अन्य और आम

दृष्टिकोण इस अंतरंगता को गहरे करेंगे। एक अच्छी शादी टीम के रूप में कार्य करती है और जीत के रूप में वे एक साथ काम करते हैं।⁴³

*** इस माध्यम का अनुसरण करें ***

पिछले हफ्ते के महत्वपूर्ण कार्यों और निर्णयों के माध्यम से सोचो।

◆ क्या आपने प्रार्थना की थी या आप बात करते हैं इन मुद्दों पर अपने साथी के साथ।

◆ क्या आपने अपने साथी के साथ मैं बाईबल के विशेष पदों का साझा किया है ईश्वर आपको बात करने के लिए उपयोग कर रहा है

2) स्वार्थ के लिए किसी भी आवेग को अस्वीकार करें

“दंभ या स्वार्थ से कुछ मत करो” (फिलिपियों 2:3)

पॉल ने पाप को छुपाने से इंकार कर दिया। उन्होंने बताया स्वार्थ और दंभ किसके लिए हैं। प्रत्येक एक छिपा प्रेरक है। स्वार्थ ऐसे कार्य और शब्द पैदा करता है जो दूसरों की कीमत पर अच्छे परिणाम लाता है, इस मामले में आपके साथी के लिए। दूसरी ओर दंभ स्वयं के लिए उच्च सम्मान और दूसरों के लिए तिरस्कार है। दंभ स्वार्थ से अपराध को छुपाता है, जैसे, एक अपवित्र झूठ अपना कार्यवाही को न्यायोचित ठहराता है जैसे कि “मैं उसे ईश्वर के लिए बेहतर तरीके से कर सकता हूँ”। “मैं उससे पुराना इसाई रहा हूँ”। “मैंने उससे बहुत ज्यादा पढ़ा है”। “उसके पास बहुत ही समस्याएं हैं। वह क्या जानता है”

विवाह के सिद्धांत: हमें स्वार्थपन से जुड़ी सभी चीजों से नफरत करने की जरूरत है। हमारा गर्व, स्वार्थपन को देखने के लिए आसान बनाता है। जब हम अपने साथी को निराशा, उत्तेजना, बहस या स्वार्थ के साथ किसी चीज पर

43 हमारे घर में हमारा संघर्ष हमारे भाई से होता है हिस्से के लिये, परन्तु कुछ समय अनुग्रह का पल जो मेरे मन में आता है। परमेश्वर ने इस एकता के विस्तार को मुझ्या कराया है, “मेरा अच्छा तुम्हारा अच्छा है”। मेरा चार साल का बेटा व दो साल की बेटी मेरे पढाई के कमरे में आये। वो अपनी छोटी बहन से अपने छोटे कार के संग्रहों के बारे में बता रहा था, “कौन सबसे पहले उठाना चाहता है? तुम या मैं”। वह बोली, “मैं”। वह खुशी से सहमत होकर बोला, “ठीक है! तुम पहले उठाओ”। वे एक साथ खुशी से खेलने लगे।

प्रतिक्रिया करके देखते हैं “तुमने क्या किया “? हमारे पास अक्सर अपने साथी की विरोधी प्रतिक्रियाओं को काबू में करने के लिए बहुत से बहाने होते हैं बजाए एक विनम्र जवाब “शायद तुम सही हो। मुझे सोचने और प्रार्थना करने दे”। या “चलो इसके बारे में आज रात हम और बात करेंगे”? यह पक्का करें कि आप इसका पालन करेंगे।

*** इस माध्यम का अनुसरण करें ***

पिछले हफ्ते के महत्वपूर्ण कार्यों और निर्णयों के माध्यम से सोचो।

◆ तुमने जो किया था उस पर तुम्हारे साथी ने जोरदार प्रतिक्रिया की या कुछ कहा? वह क्या था? आप कैसे जवाब दिया?

◆ ऊपर जो चर्चा की गई उसके प्रकाश में, आप कैसे जवाब दे सकते थे?



3) अपने आप को दूसरे की सेवा में विनम्रता से समर्पित करो:

“विरोध या झूठी बढाई के लिये कुछ न करो, पर दीनता से एक दूसरे को अपने से अच्छा समझो” (फिलिपियों 2:3)

प्रेरित पौलुस ने ऐसा किया था। ना केवल हमें विनम्र कार्यों के लिए तैयार रहना चाहिए परंतु हमें उन्हें विनम्र आत्मा के साथ करना भी चाहिए। हमारे हृदय के रवैए को दूसरों के लिए बदलने की जरूरत है। हमें ईमानदारी से विश्वास करना चाहिए कि दूसरा व्यक्ति हमसे ज्यादा महत्वपूर्ण है। यदि हम आसानी से उन के मूल्यों को बदनाम करते हैं तब यह आसान है कि उनका गर्वपूर्वक इलाज करें। परंतु जब हम उन्हें परमेश्वर के विशेष जीवों के रूप में देखते हैं जो उसने उन्हें अपने स्वरूप में बनाए हैं तब हमें उन्हें अत्यंत सम्मान के साथ देखना होगा।

हमें इस प्रश्न को किनारे नहीं करना होगा कि हमारा साथी ज्यादा महत्वपूर्ण है हमें इस पर काम करना होगा। बदले हुए कार्य और प्रतिक्रियायें केवल नए

दृष्टिकोण के साथ आते हैं। यीशु के रूप में उदाहरण के साथ। हमें व्यक्तियों को और भी अधिक विशेष तरीके से देखना होगा जिसके कि वे लायक हैं। क्योंकि परमेश्वर ने हमारे ऊपर अनुग्रह का व्यवहार किया है ,उसके हम आभारी हैं एवं उसकी दया से वही व्यवहार दूसरों के साथ करने के लिये सक्षम है।

विवाह के सिद्धांत: विनम्रता हमें हमारे रक्षात्मक कवच को अलग करने की अनुमति देती है। अचानक हमारा लक्ष्य हाथी की जरूरतों को पूरा करने से अधिक महत्वपूर्ण हो गया है बजाए अपने अहंकार और अपने सुखों को पूरा करने के। आपका लक्ष्य आपके साथी की सेवा करने का बन गया है जिससे कि वह आपकी उपस्थिति से आशिर्वादित हो। जब आप विनम्र होते हैं ,तब आप अपने को वैसा देखने के लिए तैयार रहते हैं जैसा परमेश्वर आपको देखना चाहते हैं ,यह भी समान रूप से महत्वपूर्ण है कि आप उसके लिए तैयार रहें जिसके लिए परमेश्वर ने आपको बुलाया है कि आप एक पति या पत्नी के रूप में कार्य करें। आप परमेश्वर की और दूसरों की जिसमें आपका साथी भी शामिल है सेवा करने के लिए खुश हैं।

*** इन के माध्यम से आएं ***

पिछले हफ्ते के महत्वपूर्ण कार्यों और निर्णयों के माध्यम से सोचो।

- ◆ आप कभी हृदय के किसी कोने में विनम्र थे। आपको ऐसा क्यों सोचना पड़ा?
- ◆ आपके एवं आपके साथी की बीच की किसी भी एक समस्या को अलग कर दें। इसके बारे में स्वयं को विनम्र करें।
- ◆ किसी भी उचित समय में अपने साथी के साथ साझा करें कि इसके बारे में आप विनम्र आत्मा थे। प्रतिक्रिया को देखें।

4) इसके बारे में सतर्क रहें कि आप अपनी व्यक्तिगत ज़रूरतों को नहीं देखें:

“केवल अपने निजी हितों के लिये मत देखो”। (फिलिपियों 4:4)

यह शब्द बाईबल में नहीं है क्योंकि क्योंकि मूल रूप से इसके लिए कोई शब्द नहीं है। अनुवादकों ने इसे अनुवाद किया है। नया अंतर्राष्ट्रीय संस्करण भी

विवाह का निर्माण!

यह कहता है ,किंतु वह तुम्हें नहीं बताते हैं।⁴⁴ पद स्पष्ट रूप से हमें आदेश देता है” अपनी स्वयं के हितों को मत देखो”। शब्द “देखो” एक ग्रीक शब्द है जिसे हमारे अंग्रेजी के शब्द “गुंजाइश” से लिया गया है। अपनी आंखों को केवल अपनी ही जरूरतों पर मत रखो।⁴⁵ इस सबक को हमें अपने जीवन में किस तरह सख्ती से लागू करने की जरूरत है।

इस एक आज्ञा को ना मानना हमारे स्वार्थ के कई बहानों का कारण बनता है। हम केवल एक या दूसरे को कर सकते हैं। परमेश्वर विशेष रूप से चाहते हैं की हम दूसरों की जरूरतों पर ध्यान केंद्रित करें। कितनी बार आपने परमेश्वर के प्यार और देने को रोक रखा है क्योंकि आप स्वयं की जरूरतों के बारे में बहुत ज्यादा सोचते हैं ? हमारी उपेक्षा केवल शर्म और दर्द को छोड़ देती है।

विवाह के सिद्धांत: पति और पत्नी के पास परमेश्वर के दिए हुए आदेश हैं, जिन्हें वह समय समय पर महसूस कर सकते हैं “यदि मैं ऐसा करता हूं तब वह ऐसा करेगा”

परमेश्वर ऐसे जोखिम वाले विचार को आपके दिमाग में नहीं लाते हैं, शैतान ऐसा करता है। शैतान आप को परीक्षा में डालता है। वह आपके स्वार्थ पन से खेलता है ,और आप को डराता है कि आपको प्रभावित कर सके की आप परमेश्वर के आदेशों को ना मानें। मसीह का उदाहरण बताता है कि आज्ञाकारी होना कितना जरूरी है स्वयं की भलाई से। यीशु के मामले में उन्होंने अपना जीवन बलिदान किया किंतु परमेश्वर ने मसीही के बलिदान के माध्यम से सबसे अच्छा काम किया।

⁴⁴ NIV ने अपने व्यक्त शब्दों को उजागर नहीं किया है। ध्यान दें फिलिप्पियों 2:4a “हर एक अपनी ही हित की नहीं”। ‘अपनी ही हित की नहीं’ यह दिया गया है। यह पद्यांश साधारण तौर पर यह कह रहा है कि हम केवल अपने ही हित के बारे में न सोचें।

⁴⁵ हम समझ सकते हैं कि यहाँ पर “भी” शब्द जो दिया गया है दूसरे पंक्ति में जो केव खुद की जरूरतों के बारे में बता रहा है। मैंने देखा कि यहाँ पर यह आदेश नहीं दिया गया है कि पहले वाली पंक्तियों में कोई बदलाव कर सकते हैं, पर हमें इस चरम तक पहुँचाता है। दूसरे शब्दों में, मैं नहाने पर नहीं चुप रहती या काम करते वक्त। मैं केवल यह आशा करती हूँ कि परमेश्वर मेरी जरूरतों को पूरी करेगा जैसा मैं परमेश्वर के विषय में सोचती हूँ। हमें अवश्य स्वस्थ उपायों को लाना चाहिये, आदि। आदेश दूसरों से अधिक स्वयं के किसी भी प्राथमिकता के खिलाफ खड़ा है।

परमेश्वर कहते हैं “अपने स्वयं के हितों को मत देखो”। हमें परिणामों के लिए परमेश्वर पर विश्वास करना चाहिए।

*** इन के माध्यम से आएं ***

पिछले हफ्ते के महत्वपूर्ण कार्यों और निर्णयों के माध्यम से सोचो।

◆ क्या आपने इस सप्ताह साथी के लिए कुछ करने पर स्वयं को प्रेरित पाया ? क्या आपने यह किया था ? क्या और क्यों नहीं ?

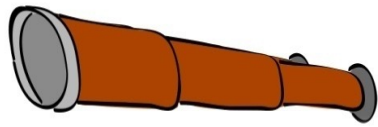
◆ “यदि मैं ऐसा करता तो वह शायद” कर सकते हैं अपने निर्णय में कुछ कारण देखें। समझाएं।

5) अपनी और दूसरों की जरूरतों के लिए संकल्प लें:

“किन्तु दूसरों के हितों के लिये”। (फिलिपियों 4:4)

हमें गंभीरता से अपनी जीवनशैली और विकल्पों को फिर से जमाना चाहिए ताकि हम दूसरों की जरूरतों पर भी अच्छे से ध्यान दे सके। मैं पिछले रविवार बीमार था। एक भाई को पता चला। उसने सोमवार को मुझे फोन किया कि मैं कैसा था। शायद उसका यह पेशेवर फोन था क्योंकि वह मेरा डॉक्टर था। यद्यपि मैंने उसे ऐसा नहीं लिया। मैंने उसकी चिंता और देखभाल को महसूस किया। उसने मुझे फोन किया। शायद ही कभी मैंने एक डॉक्टर को अपने मरीजों को आज फोन करते सुना हो। और दूसरों की जरूरतों को अपने पैसे का एक हिस्सा माना। परमेश्वर का प्यार उसकी फोन कॉल में दिखाई दिया। इस सुबह जब मैंने एक अंगूर को काटा ,मैंने अपनी पत्नी के बारे में भी सोचा और उसके लिए भी छोटे टुकड़ों को काटा।

दूसरे



स्कोप शब्द ग्रीक शब्द के “स्कोपीयो” नाम से उत्पन्न हुआ है जिसका अर्थ है देखने के लिये।

विवाह के सिद्धांत : प्रत्येक

एक पति पत्नी को एक दूसरे की सेवा के लिए तैयार रहना चाहिए जब परमेश्वर इसके लिए संकेत देते हैं। मैं जानता हूं कि मेरी पत्नी घर के आसपास की जरूरतों

विवाह का निर्माण!

के लिए जिम्मेदार है परमेश्वर ने उसे नियुक्त किया है घर और बच्चों की देखभाल के लिए।⁴⁶

परंतु मैं उसके लिए कुछ आसान करना चाहता हूँ। हमारे गंदे कपड़े को धोने के लिए नीचे लाता हूँ। मैं सोने के कमरे के फर्श को वेक्यूम क्लीनर से साफ करता हूँ (यद्यपि नियमित रूप से नहीं)। मैं उसे हफ्ते में एक दिन की गाड़ी में उन स्थानों पर ले जाता हूँ यहां वह आसानी से नहीं जा सकती है।

मैं यह नहीं गिनता कि मैं उसके साथ प्रार्थना करने और बातें करने में कितना समय बिताता हूँ। मैं उस की जरूरतों के बारे में सोचने की कोशिश करता हूँ। आखिर में, मैं उससे यह पूछता हूँ कि करने के लिए “कुछ है” जो कि उसकी सूची में है।

* इन के माध्यम से आएं *

पिछले हफ्ते के महत्वपूर्ण कार्यों और निर्णयों के माध्यम से सोचो।

◆ वह क्या व्यवहारिक कदम हैं जो आपने अपनी साथी की जिंदगी को विशेष बनाने के लिए किये हैं?

◆ क्या आपने कभी साथी को कहा है कि आप उसे विशेष मानते हैं या वह आपके लिए आप से ज्यादा महत्वपूर्ण है?

6) मसीह के जीवन के प्रति दृष्टिकोण में महिमा

“अपने प्रति वह रवैया रखें जो मसीह में था”।(फिलिपियों 2:5)

कार्य रवैये को बदल देते हैं। व्यवहार मान्यताएं बदलते हैं। हम नसीब के रवैए के अधिकारी होने के लिए यह बुलाए गए हैं और और किसी और चीज़ के लिए नहीं।

हम मसीह के बुलाहट के लिए उत्साहित हैं क्योंकि हमें मसीह में शामिल होना है। हमारा उद्देश्य सामान है। हम ईश्वर के लिए महिमा लाना चाहते हैं और हमारे

⁴⁶ 1 तिमथियुस 5:14 विधवा की व्याख्या करता है, वह फिर से विवाह कर सकती है, पर यह समझ सकते हैं कि यह सब पत्नियों पर लागू होता है। “इसलिये मैं यह चाहता हूँ, कि जवान विधवाएं ब्याह करें; और बच्चे जन्में और घरबार संभालें, और किसी विरोधी को बदनाम करने का अवसर न दें” (1 तिमथियुस 54:14)।

पड़ोसियों की मदद करते हैं। देखें कि प्रत्येक दिन में हमारे जीवन में कितने अवसर आते हैं, जबकि कई अवसरों पर वह बहुत चुनौतीपूर्ण रहते हैं।⁴⁷ विश्वास के साथ हम उस की उपस्थिति में रहते हैं और उसकी मदद से वह करते हैं जो हम चाहते हैं।

विवाह के सिद्धांत: प्रत्येक पति या पत्नी को अपने रवैये में सुधार लाने के लिए अपना ध्यान केंद्रित करना है। हमें दूसरों की जिम्मेदारियों को नहीं लेना है जब वह उसे आसान बनाने के लिए सुस्त हो जाते हैं दूसरों की जिम्मेदारी को ले लेने के लिए। यह जीवन में खुशी लाता है।

हमें सेवा करना है बिना कुछ पाने की लालच में। हमारा इनाम सेवा में खुशी है और यीशु को हमारे विवाह का एक हिस्सा बनाने में।⁴⁸ कभी-कभी पति गर्व में जिद्दी हो जाता है और एक पत्नी अपनी उदास भावनाओं में फंस जाती है। दूसरे साथी को इस से नाराज नहीं होना चाहिए बल्कि उसे एक विशेष स्थिति में देखना चाहिए जहां एक दूसरे को वे, यीशु का प्यार दिखा सकते हैं। यह हो सकता है कि यह एक लंबा समय ले, वापस मुड़ने के लिए पर आप अपना सर्वश्रेष्ठ करें ईश्वर के परिणामों को देखने के लिए।

* इन के माध्यम से आए *

पिछले हफ्ते के महत्वपूर्ण कार्यों और निर्णयों के माध्यम से सोचो।

- ◆ क्या ऐसी स्थिति आई है जब आपका साथ ही मुश्किल में हो?
- ◆ मसीह के प्रेम में साथी को प्यार करने की योजना बनाए, विशेष कर मुश्किल परिस्थिति में। अपने को लंबे समय के लिए तैयार करें। हमारी आशा परमेश्वर का प्यार है जो अंत में किसी भी प्रतिरोध को पिघला देता है। हमारा संतोष परमेश्वर के बढ़ते हुए प्यार में है हमारा प्यार हमारे साथी पर

47 इफिसियों 2:10 पूर्ण रूप से परमेश्वर के साथ हमारे बातचीत के विषय पर जोर दिया गया है प्रतिदिन हमारे समय में, अवसर को लिखें जो हमें अच्छे काम करने को देता है कि उसकी महीमा करें व औरों के लिये करें। "क्योंकि हम उसके बनाए हुए हैं; और मसीह यीशु में उन भले कामों के लिये सृजे गए जिन्हें परमेश्वर ने पहिले से हमारे करने के लिये तैयार किया" (इफिसियों 2:10)।

48 हमारी अंतिम खुशी परमेश्वर को भाना चाहिये, नहीं तो हम दुखी हो जायेंगे। पौल कहता है, "प्रभु में सदा आन्दित रहो।"

बरसता है। यीशु कहते हैं मेरी का बिना स्वार्थ उसके पैरों को धोना पीढ़ी दर पीढ़ी दोहराया जाएगा (मार्क 14: 9)।

सारांश

हम मसीह के शक्तिशाली उदाहरण से देख सकते हैं कि हम विवाह में इन सिद्धांतों के साथ कैसे जी सकते हैं। ईश्वर के द्वारा बनाए गए इन सिद्धांतों के अनुसार हम घोषणा कर सकते हैं कि हम एक है दो नहीं। हमें व्यवहारिक कदमों के अनुसार जीना है, जिनमें से कुछ ऊपर दिए गए हैं।

संभावित उत्तर

आइए हम आशा करें सिद्धांतों की कुछ अलग प्रक्रियाओं की, जिसे हमने परमेश्वर के वचन से इकट्ठा किया है।

- **प्रतिरोध** आप इन शिक्षाओं से प्रतिरोध की कुछ मजबूत भावनाओं की अनुभूति कर सकते हैं। यह कुछ सुरक्षात्मक कदम हो सकते हैं जिनके माध्यम से आप अपनी कमियों को छुपा सकते हैं, जब वह उजागर हो रही है। परमेश्वर की आत्मा से ना डरें। उसके मार्ग अच्छे हैं। यद्यपि आप मसीह के माध्यम से सभी पापों की क्षमा मांग सकते हैं यदि आप खुद को कठोर करते हैं, तब आप के विवाह में सुधार की कोई गुंजाइश नहीं है। कई शादियां शर्मनाक ढंग से टूट गई क्योंकि दोनों ने एक दूसरे को कठोर कर लिया था।

- **शर्म** आप शायद शर्म का अनुभव करेंगे यह कठोर होता है जैसी कि जब कैंसर हमारे शरीर को नुकसान पहुंचाता है (हमारी साथी को)। जरा सोचे यदि हम ने उन दिनों, महीनों और सालों को ईश्वर के प्यार के लिए इस्तेमाल किया होता। ईश्वर हमें क्षमा करता है और शक्ति देता है यदि हम विनम्र हो कर उसकी तरफ झुकते।

- **झटका** शायद आप को झटका लगता कि आप इतने लंबे समय से चर्च में रहे हैं और तब भी परमेश्वर के जीवन के सिद्धांतों से नहीं जुड़े। अचानक आप उन्हें अपने विवाह पर लागू होते हैं देखते हैं। आपको आश्चर्य होता है कि “कैसे मैंने परमेश्वर के प्यार के संदेश को नहीं देखा”? आप पहले और आखरी नहीं हैं जिनके साथ यह

हो रहा है। परमेश्वर का धन्यवाद हो जिसकी क्षमा पूर्ण है और जो किसी भी विनम्र आत्मा के साथ कार्य करने के लिए तैयार है।

• **विवाद प्रिय** आपके अंदर शायद एक विवाद उमण्ड रहा है जो आपसे कुछ चुनने के लिए कहता है। हम सवालों से नहीं डरते हैं। परमेश्वर का सत्य हमेशा अच्छे जीवन की ओर ले जाता है। कुछ सवाल किसी के अपराधों को छुपाने के प्रयास नहीं है। उस पर ध्यान केंद्रित करें जिस परमेश्वर ने आप को सिखाया है। सिद्धांतों को स्पष्ट करें और उनके साथ साथ चलें। अपने अपराधों को खुला रखें और उनको स्वीकार करें।

• **अति आदर्श** पति आदर्श तुरंत के वह बहाने हैं जो हमारे अपराधों को छुपाते हैं या उन्हें मानने से इनकार करते हैं। यदि एक व्यक्ति ईमानदारी से यह है विश्वास करे कि यह उसकी पहुँच के बाहर है परंतु यह उसकी ख्वाहिश है तब यह उचित होगा कि वह विचार को बदलें “मैं उसके जैसा होना चाहता हूँ पर हो नहीं पाता हूँ”। मुझे आश्चर्य होगा यदि आपके पास कुछ ऐसे सुझाव होंगे कि कैसे मैं उसे प्राप्त कर सकता हूँ।

• **हां** यह वह रास्ते हैं जिसे हम चाहते हैं आपके पति परमेश्वर की शिक्षाओं को ले। ओह हां, यह वह सब है जिसे है जिसे हम अपने विवाह में बहुत समय से देख रहे हैं!

हमारे लिए प्रार्थना करें जिससे हम इन सबको कार्य में ला सकें। यदि नहीं ,तो क्यों नहीं?

सारांश

हम सभी सिद्धांतों को इकट्ठा करते हैं जो हमने इस खंड में सीखा है। झगड़े और संघर्षों की सभी जड़ें हमारे स्वार्थी हृदय में हैं। दुखद बात यह है कि हमने उन्हें चोट पहुंचाई है जिन्हें हमें प्यार करना चाहिए ,कई बार कई सालों से। अच्छी बात है यह है कि हमारे पास है बचाने वाला यीशु है ,जो हमारे पापों से बड़ा है। ईश्वर की शक्ति हमें मुफ्त करती है, ईश्वर के रवैए के जैसे विनम्र सेवा के लिए। जब तक स्वयं सेवा की भावना हमें चलाती है ,तब तक शांति के लिए कोई मौका नहीं है।

विवाह का निर्माण!

एक व्यक्ति की स्वार्थीपन की भावना पूरी तरह से मसीह की देने की भावना के विरुद्ध है।

यदि एक व्यक्ति शालीन है, तब विवाह में तुरंत सुधार होगा, परंतु यह तब भी मुश्किल होगा। क्या यह उचित नहीं होगा कि दोनों पति पत्नी ईश्वर की रवैये और कार्य की तरह संकल्प ले? परमेश्वर हमें सिखाने के लिए तैयार है। वह सभी के साथ है।

वह आज हमारे साथ है। वह सुन रहा है कि हमारे हृदय क्या कह रहे हैं। यह एक रोना “है ईश्वर हमें आप जैसे होने के लिए मदद करें”। परमेश्वर आपकी प्रार्थनाओं के उत्तर देगा। उस पर विश्वास करें और एक कॉपी तैयार करें कि कैसे वह आपके विवाह को पुनः बनाता है।

यहां एक प्रार्थना का नमूना है:

प्रिय परमेश्वर मैंने कभी नहीं किया एहसास किया कि हमारा विवाह कब तक पटरी से अलग रहेगा। मैंने सोचा था कि हम औसत से ऊपर थे। अब मैंने देखा है कि हम वहां से बहुत दूर हैं जहां आप हमें ले जाना चाहते थे, कृपया मेरे पापों को क्षमा करें। मैं कई बार इसे समझने के लिए विफल रहा। कभी-कभी मैंने अपने स्वार्थी पन को जाना पर उसमें सुधार करने के लिए जिद्दी रहा। ओ, मेरे हृदय को नम्र बनाएं। एक गर्वपूर्ण अच्छी शादी के लिए मेरे हृदय को तोड़ें।

युद्ध समाप्त हो गया है। इस समय से मैं संघर्ष विराम की घोषणा करता हूं। अब मैं शांति के लिए तैयार हूं। मैंने आपके प्यार और उपस्थिति को चुना है। मैं चाहता हूं कि हमारा घर, येशु का घर हो जहाँ उसका हमें शांति स्वागत हो। मैं जानता हूं कि मुझे बहुत दूर तक जाना है, परंतु आप मेरी सहायता कर सकते हैं। मेरे घर की सभी बहस के लिए केवल मैं ही जिम्मेदार नहीं हूं। परंतु मैं जानता हूं कि मैं उसका एक बड़ा हिस्सा हूं। कृपया मुझे क्षमा करें। हम इससे डरे नहीं परंतु इसे यीशु के जैसे गले लगायें।

मैं एक अच्छा साथी बनूँ। ईश्वर कृपया हमें एक अच्छी शादी दें। जो कुछ हुआ है उसके बाद हम एक महान शादी के लायक नहीं हैं, परंतु आप दयालु हैं, आप

5 समझ और संघर्ष पर काबू पाने

शक्तिशाली हैं। क्या आप अपनी महिमा हमारी शादी में देंगे ? यीशु के नाम से मैं प्रार्थना करता हूँ, आमीन।

अध्याय #5 के लिये अध्ययन के सवाल

1. क्या एक शांति का घर हो सकता है? कैसे ?
2. वह दो क्या बातें हैं जिसमें आप दोनों पति पत्नी ने तर्क किया था?
3. याकूब 4:1-3 की चर्चा में वह दो क्या शब्द हैं? वे अलग कैसे हैं?
4. जब हम संघर्षों से गुजरते हैं, तब हमें सतह से नीचे जाने की क्या जरूरत है?
5. मैं क्या कर सकता हूँ जिससे मेरी शादी में महान सुधार हो?
6. संघर्षों में असली चोट कहां पहुंचती है? ऐसा कैसे होता है?
7. आप उस साथी से क्या कहेंगे जो कहता है “मैं कुछ मदद नहीं कर सकता हूँ “?
8. क्यों स्वार्थी साथी ईश्वर से मदद मांगते हैं?
9. किस प्रकार धन शादी को चोट पहुंचा सकता है?
10. किस प्रकार व्यवहारिक रूप से एकता का सिद्धांत की शादी में मदद कर सकता है?
11. यह किस प्रकार से संभव है “स्वार्थपन और घमंड कुछ भी नहीं कर सकता है”? आपकी शादी से एक व्यवहारिक उदाहरण दें।
12. “खुद को विनम्र करना “ का क्या मतलब है? यह शादी में किस प्रकार मदद करता है?

13. क्यों वाक्यांश, "अगर मैं ऐसा करूँ तो वह (या वह) हो सकता है ...।" मुझे प्रलोभन को सचेत करता है?
14. एक साथी के पास दो विकल्प है कि उसे किसकी सेवा करनी है। वे क्या हैं? प्रत्येक के अंतिम परिणाम क्या है?
15. सोचो कि यीशु ने सुसमाचार के दौरान लोगों को कैसे निपटाया। मसीह का रवैया कैसा था?
16. एक या दो तरीके लिखिये जिसमें आत्मा आपको अगुवाई करती है इन बाईबल के सिद्धान्तों को करने के लिये। वह दिनांक लिखिये जब आप उस विषय को आगे बढ़ायेगें?

विवाह का निर्माण!



#6 संकट को सुलझाना और संघर्षों से बचना

वैवाहिक जीवन में संघर्ष के संकल्प: भाग 2

क्यों जोड़े लड़ते और बहस करते हैं? क्यों वे सिर्फ स्थायी शांति का आनंद नहीं ले सकते? क्या?, वे अच्छी जिदगी बिताने के लिए शादी नहीं करते जब वे अकेले थे?

अ) समस्या को सुलझाने की प्रक्रिया

कल रात मेरी पत्नी और मैं एक निश्चित विषय के बारे में बात कर रहे थे। हम सहमत नहीं हुए। मैं कुछ एक आवेदन पत्र भरने के लिए जा रहा था जिसने मुझे उसमें कोई समस्या नहीं देखी। लेकिन वह संकोच में थी। मैं उसे ठेठ में कहा, "क्यों?" उसने जवाब भी ठेठ में दिया, "मैं नहीं जानती क्यों। पता नहीं है" मैं उसमें सहमत था जो उसमें उल्लेख किया गया है क्योंकि वह नहीं जानती थी कि क्या समस्या थी, वहां कोई वास्तविक समस्या नहीं थी मैं जिससे हम सुलझा नहीं सकते थे जो मैंने सोचा था वह सही था।

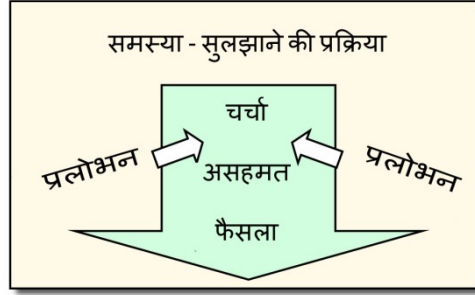
मैं जानता था कि मैं सही था तो मैं आवेदन के साथ आगे बढ़ गया। लेकिन हमने पिछले कुछ वर्षों में बहुत कुछ सीखा है।

विवाह का निर्माण!

इन मतभेदों को सुलझाने के लिए तीन बुनियादी कदम हैं। असहमती, चर्चा और फैसला:

जब हम पाते हैं कि हम कुछ चीजों के बारे में सहमत नहीं हैं, हम धीमें हो जाते हैं। हम फैसलों को एक तरफ करके और प्रार्थना करना शुरू कर देते हैं। मैं अलग अलग समय पर उससे सावधानी से प्रश्ना करता हूँ वह ऐसा क्यों सोचती है। कभी कभी वह अन्य समय में की तुलना में स्पष्ट रहती है। यह ठीक है। मैं उसके सुझाव को महत्वा देता हूँ। मैं उसकी अंतर्दृष्टि को देखता हूँ।

मैं वास्तव में इतना विश्वास करता हूँ कि परमेश्वर मुझसे समय आने पर उसके द्वारा बात करेगा है कि मैं कहने के लिए अनिच्छुक हो जाता हूँ, जबकि वह संकोच मसूस करती है। हम दोनों परमेश्वर की इच्छा को



देखें, तब परमेश्वर को हम दोनों से बात करनी चाहिए। मैं सिर्फ अपने अधिकार को एक पति होने के नाते निर्णय करने के लिए उपयोग नहीं करता। परमेश्वर ने मेरे सहायक के रूप में उसकी नियुक्ति की है। यह पति कि जिम्मेदारी है कि वह सुनिश्चित करें कि सही निर्णय परमेश्वर को भाता है। समय आने पर, वह परमेश्वर और उनके रास्तों के साथ घुल मिली है जैसा कि मैं हूँ। यह परमेश्वर, उनके तरीके और एक दूसरे के बारे में अधिक जानने का अवसर बन जाता है। मैं मेरी शान पर भरोसा करता था बजाए खुश होने कि परमेश्वर मेरी पत्नी के माध्यम से क्या कहना चाहता है, यहां तम मैं खुद नहीं जानता कि जो अच्छा है

अंतर यह था कि हम इस मामले में था एक अच्छे तर्क के लिए सभी अवयवों थे। मैं कुछ एक कदम उठाया था तो वह उस बारे में सहज महसूस नहीं कर रही थीर (मैंने सोचा कि मैं इस मामले के बारे में स्पष्ट रूप से सूचित किया करता था)। मैं अपने रास्तों पर मजबूती से ठहर गया है, होता है और वह उन बातों का विरोध कर सकती थी। बजाय इसके हम परमेश्वर की इच्छा पर ध्यान केंद्रित कर और उस बारे में प्रार्थना करे और एक साथ इस मुद्दे पर चर्चा करे। इस लेखन के रूप में इस

मुद्दे को कुछ बातें सपष्ट किया है लेकिन अभी तक हल नहीं निकला है। यह ठीक है। इन मतभेदों को हल करने के लिए परमेश्वर की तलाश सही समाधान खोजने के रूप में महत्वपूर्ण है।

मैं हाल ही में ध्यानपूर्वक हमारे रिश्ते को समझ रहा था हम व्यक्तिगत मतभेदों के साथ मुठभेड़ करते हैं। हमारे पास चार मतभेद थे अधिक बीमा, स्कूली शिक्षा और दो से अधिक हमारे बच्चों के अनुशासन पर। क्यास सुनने में सामान्य लगता है? प्रत्येक महत्वपूर्ण मामलों में हमारी असहमति थी। हो सकता है कि एक व्यक्ति को उस समय पर उत्तेजित था। और अभी तक हमने बहस नहीं किया था।

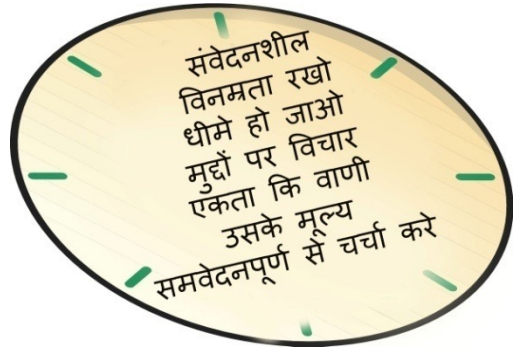
हमारा आखिरी अध्याय में, हमने प्रमुख वैवाहिक झगड़े को सुलझाने के लिए सामान्य दृष्टिकोण दिखाया। अगर हम पहले अपने व्यक्तिगत संघर्ष या 'लड़ाई' को संभालने के लिए कोशिश करे तब हमरा सुझाव अगंभीर होगा और काम नहीं करेगा। जोड़ें को शादी करने के लिए एक नया दृष्टिकोण की जरूरत है। वे चाहते हैं कि वे एक ही टीम में हो और यह करने का संकल्प देखने की जरूरत है:

→ (1) **जानबूझ कर एक दूसरे का विरोध करने के लिए मना कर दिया, और**

→ (2) **एक महान शादी को एक साथ मिलकर चित्रती करे।**

एक ठेठ शादी शुदा जोड़े बुराई को बहुत ज्यादा जगह देता उनकी शादी को नुकसान पहुंचाए। हमको यह अनुमति नहीं देना चाहिए। अगर हम पाते हैं कि हम डूबने हमारे जीवन साथी के साथ लड़ रहे हैं, हम हृदय कि स्वेच्छा से ध्यान रखना

चाहिए इस लड़ाई को और लड़ाई की भावना से पश्चाताप करना चाहिए। संघर्ष एक अशुद्ध हृदय का पता चलता है। जीवन साथी के प्रति आश्वस्त किया जाना चाहिए कि जब वे मार खाये, वश या उनके पति उनकाका लाभ उठाने कि कोशिश



विवाह का निर्माण!

करे तो उन दोनों सारी चीज़ें खो देते हैं। एक शादीशुदा जोड़े के रूप में हम एक टीम हैं, और हमारा उद्देश्य है कि हम उस टीम को सफल बनाना है!

जब एक बार हम अपने पति या पत्नी की प्रतिबद्धता हो जाते हैं, तब हम उस संघर्ष को गहराई से देख सकते हैं जिसे एक जोड़ा सामना करता है। शायद इस का एक अच्छा उदाहरण है जब एक शांत बने रहते हैं। दोनों तरफ लड़ाई बंद कर सकते हैं। पुराने बातचित के दिनों में, कभी कभी लड़ाई कई दिनों तक चलती रहती थी जबकी लड़ाई समाप्त हो जाती थी! क्याह युद्ध हमारी शादी में समाप्त कहलाता है? क्या अभी हमें संघर्ष करने की जरूरत शांति बनाए रखने के लिए? नहीं, क्याम अभी भी वो हमारे पास है? हाँ, हम करते हैं, लेकिन अब उसकी जरूरी नहीं होगी। एक बेहतर तरीका है इन विचारों से निपटने का।

हम इन अलग-अलग राय को हल करने के लिए एक बहुत ही स्पष्ट तरीके की जरूरत है या दुश्मन उन्हें इस्तेमाल करेगा यह सोचने पर कि उनका युद्ध एक दूसरे के साथ में हैं। विरोधी पक्ष को स्थापित करने में यह बदले में परिणाम (जो एकता के सिद्धांत के विपरीत है)। विचार में मतभेद गलत नहीं होते, लेकिन अगर हम सावधान नहीं हैं, वे युद्ध में तबहृदय हो जाएगा। अवसरों के कुछ मुद्दों में अधिक जानकारी हासिल करने के रूप में राय को देखो।

कोई कह सकता है कि उनके प्रमुख समस्याओं असहमति के साथ, लेकिन सिर्फ भावनात्मक प्रतिक्रियाओं के साथ नहीं हैं। उदाहरण के लिए थका हरा पति घर आता है तो पत्नी समस्याओं का एक धसान के दरवाजे के आने के पहले ही बोलने लगती है। हम कुछ टिप्पणियों बनाते हैं।⁴⁹

सामान्य रूप से भावनात्मक समस्याओं को क्या। कहा जाता है? क्या, अधिक बार नहीं, आध्यात्मिक समस्याओं में निहित हैं। हमारी भावनाओं को बारीकी से हमारे आध्यात्मिक प्रकृति के साथ एक दूसरे से लिपटी हुई हैं।

⁴⁹ हम स्वीकार करते हैं कि शारीरिक बदलाव होते हैं जो व्यक्ति के योग्यता को प्रभावित करता है एक सामान्य प्रतिक्रिया के लिये। तब भी परमेश्वर कहता है कि उसका अनुग्रह काफी है। हमें कुछ अधिक अनुग्रह की इच्छा करना चाहिये कुछ ऐसे समय में। इस दौरान साथी को और अधिक प्रेम करना चाहिये।

हम ठीक से एक अपराध को संभाल नहीं सकते हैं, तो हम आसानी से क्रोधित हो सकते हैं। यदि हम उसे नहीं निपटा सकते, तो हम उस क्रोध को घर ले आते हैं और अपने साथी के साथ बेरुखी हो जाते हैं।

हम स्वीहकारते हैं कि शारीरिक परिवर्तन एक व्यक्ति के रूप में सामान्य प्रतिक्रिया करने की क्षमता को प्रभावित कर सकता है। फिर भी परमेश्वर कहते हैं उनकी कृपा पर्याप्त है। हम ऐसे समय में अतिरिक्त अनुग्रह के लिए चाहत रखते हैं। इस बीच कोई भी साथी को अतिरिक्त प्यार होना चाहिए।

हर तर्क में दो पक्षों की आवश्यकता होती है। यहां तक कि अगर एक पति या पत्नी को परेशान हो, इसका मतलब यह नहीं है कि वहाँ एक लड़ाई होने की जरूरत है। दूसरे साथी को ध्यान से प्रार्थना और विनम्रता के साथ उस स्थिति को सुलझाए।

यदि हम आत्मिसक समस्या को सही से हल नहीं करे तो, हमारी शादी में एक जहर घोल देगा। जब पति और पत्नी बबहुत ही करीबी से एक साथ रहते हैं तो उनका व्यक्तिगत पाप प्रभावित नहीं करता। पाप अपने आप शादी में उजागर हो जाता है।

परमेश्वर का सुसमाचार हमें उन पापों से मुक्त करता है। हमें चिंता, भय, डर, क्रोध, घृणा, शंका को अनुमति नहीं देना चाहिए, हमें नियंत्रित करता है। जैसा आत्मा हमें अधिकार देता है वैसे मसीह हमें माफ कर सकते हैं।

सेवकाई पर ध्यान केंद्रित करे

हमें हमारे जीवन को उन्मुख करने की जरूरत है जिससे दूसरे आसपास की सेवकाई कर सके और हमारे जीवन साथी को उनके बुरे दिन में शामिल करे। परमेश्वर की आत्मा हमें उपयोग करना चाहती है उनकी रक्षा करे और उसका प्रेम पति या पत्नी के जीवनो में अभिव्यक्त करना चाहती है। हालांकि पति या पत्नी में बेसब्र हो सकते हैं, तो हमें धैर्य से उसे या उसके लिए देखभाल करने की जरूरत है।

एक अच्छी तरह से, पति और पत्नी दोनों एक-दूसरे का सामना करने से पहले अपने नजरिए और जीवन की जाँच करनी चाहिए। अपने आप से पूछो, मैं उस स्थिति में हूँ कि परमेश्वर कि सेवकाई मेरे जीवन से उनका प्यार और दया के

माध्यम से मेरे जीवन साथी के लिए हो। यदि नहीं, उसे पूछे कि वो आपको तैयार करे है और जब तक वह करता है तब तक इंतज़ार करे!

अंत में, हमें इस बात को याद रखना चाहिए कि असहमति जरूरी नहीं कि एक मौखिक असहमति हो। एक ऐसी स्थिति की ओर रुख करने का अंतर या किसी दूसरी अस्थिर स्थिति के बारे में अपेक्षा करना एक ही है। एक पति अपने गंदे मौजे को आसपास बिछाने में छोड़ देता है, तो यह पर्याप्त हो सकता है एक दूसरे के खिलाफ होने के लिए। पति को कोई बड़ी बात नहीं दिखती है। पर पत्नी चाहती है वह मोज़ा वहाँ नहीं होना चाहिए। शायद वह सोच सकती है कि उसने वह जानबूझकर रख दिया है उसे परेशान करने के लिए! ऐसे मामलों के पीछे गहरी समस्याएं होती हैं।

लोगों के पास हमेशा विचारों और दृष्टिकोण के मतभेद होते हैं। यह भी जोड़ो के साथ भी सच है। जो हम इन भिन्न दृष्टिकोण के साथ करते हैं वहीं हमारे जीवन और विवाह की विशेषताएँ होती हैं। महान विवाह वो है जो एक जोड़ी को सीखता है कि कैसे इन मतभेदों को उपयोग करके अपने में विकसित करे। हालांकि, बुरे विवाहों में, इन भिन्न दृष्टिकोण को सम्भाल नहीं पाते हैं और आगे चलकर उनके रिश्तों में मुसीबत ले आती है।

झगड़ों से दूर रहना मनुष्य का आदर है, किन्तु मूर्ख लोग तो सदा झगड़े के लिये तत्पर रहते हैं। (नीतीवचन 20:3)

हमें यह सोचना है कि कि संघर्ष भिन्न विचारों के मद-भेद से अधिक सरल है। संघर्ष एक ऐसा रास्ता है जिसमें एक जोड़े गलत दृष्टिकोण को अग्रिम करता हैं। समय आने पर जीवन साथी काफी मतलबी और क्रूर हो जाते हैं। दूसरी ओर, हम देख सकते हैं कि इन संकटों में भी परमेश्वर के और अपने साथी के और करीब जाने का अवसर मिलता है।

यहोशू की पुस्तक आंशिक रूप से हमारी मदद के लिए लिखा गया है कि कैसे हम कैसे इन संकटों के दौरान अपने आप को संभाल सकते हैं। अगर हम सावधानी पूर्वक ध्यान दे जो परमेश्वर ने इस्त्राएलियों को निर्देश दिया है, तो हम बेहतर समझ सकते हैं बड़ते समय में कैसे इन तर्क को बदल सकते हैं, आपसी प्यार

और विश्वास से। क्याक यह सुनने में ऐसा नहीं लगता कि जैसे हम एक खूबसूरत शाम बिता रहे हैं? एक मतभेद को सही प्रतिक्रिया एक महान विवाह बनाती है।

ब) संकट को हल करना (यहोशू)

इसमें छह तरीके हैं जिनमें यहोशू ने परमेश्वर के साथ मिल कर परेशानी के चलते को संघर्ष को दूर करना है।

(1) संकट हमको दृढ़ता से एक होने के लिए सक्षम करता है

एक मायनों में, जब इसराइल वायदे कि भूमि में चला गया, वे कह सकते थे कि पहले से ही युद्ध समाप्त हो गया था। यह अज़िब लग सकता है, लेकिन यह सच था। परमेश्वर ने कहा कि उन्हें जमीन दे दिया था। इसके अलावा उन्हो ने कहा था कि कोई उनके खिलाफ कोई खड़ा नहीं हो सकता जब परमेश्वर तुम्हारे साथ है तो युद्ध खत्म हो गया।

मैंने मूसा को यह वचन दिया था कि यह देश मैं तुम्हें दूँगा..... मैं मूसा के साथ था और मैं उसी तरह तुम्हारे साथ रहूँगा। तुम्हारे पूरे जीवन में, तुम्हें कोई भी व्यक्ति रोकने में समर्थ नहीं होगा। मैं तुम्हें छोड़ूँगा नहीं। मैं कभी तुमसे दूर नहीं होऊँगा।। (यहोशु 1:3,5).

क्या आपको यरीहो याद है? उनको उसके चारों तरफ घुमना था। परमेश्वर ने उन्हें बताया कि किस प्रकार खोने के बिना जीत सकते हो। यह बाते सच है न केवल हमारे मसीही जीवन के लिए, बल्कि हमारे विवाह के लिए भी सही हैं। एक जोड़े के लिए सबसे बड़ा रुकावट यह है कि लड़ाई न करने का दृढ़ संकल्प है। उनको यह सोचना चाहिए कि उन्हो ने पहले ही लड़ाई जीत ली है की जरूरत है। वे एक ही टीम में हैं। परमेश्वर ने उन्हें एक होने के लिए जीवन के घोषणा की एक होने क लिए।

मानव इच्छाओं के चलते, हम अभी तक गलतफहमी में हैं राय अलग, स्वार्थी समय, आलसी क्षणों, आदि, लेकिन हमें सीखना चाहिए कि कैसे ठीक से अपने साथी को जवाब दे और अपने नजरिए को संभाले। ऐसी गलतफहमी हो जाएगी। हमारे पास संकट होगा, लेकिन युद्ध खत्म हो गया है, और जब से युद्ध खत्म हो गया है, हम एक पूरी तरह से अलग हृदय और दृष्टिकोण के साथ इन मतभेदों रुख कर सकते हैं।

में दोनों स्थिति यों में जोड़ों के साथ निपटारा किया है। जब पति और पत्नी को अपने अधिकारों के लिए चुनाव लड़ रहे हैं, वहाँ उनके संघर्ष व्यवस्थित करने के लिए कोई रास्ता नहीं है। मुझे लगता है कि वहाँ कानूनों और नियमों एक ही स्थान में डाल सकते हैं, लेकिन एक बार एक व्यक्ति नाराज है, वह या वह दूसरे व्यक्ति के इरादों को गलत करने के लिए जारी रहेगा। ऐसा कोई आसान इलाज नहीं है अगर एक बार अविश्वास जड़ पकड़ लेता है।

जब परमेश्वर आपकी ओर है, तो युद्ध खत्म!

जब, हालांकि, जोड़े को एक साथ एक रूप में काम कर रहे हैं, तो इन मतभेदों को हल करने के लिए हल करने में मज़ा आता है। हम वास्तव में परमेश्वर के सामने समस्या पर काम करते हैं। हमें देखना है कि कैसे परमेश्वर हस्तक्षेप करने और स्थिति को स्पष्ट रूप में मदद करता है कि हम उसकी बुलाहट के लिए जा रहे हैं। हमारा विवाह आगे बढ़ता है जब हम मिल कर चीजों को एक हल करते हैं।

- आप एक जोड़ी के रूप में किस बारे में बहस करते हैं?
- आप क्यों बहस करते हैं?
- कब तक आप एक ही चीज के बारे में तर्क कर सकते हैं?

(2) हमारे संभावित समस्याओं को कहना है

जब जोड़ों लड़ रहे हैं, संघर्ष को सुलझाने के लिए लगभग असंभव है। वहाँ बहुत ज्यादा गुस्से में, बहुत ज्यादा स्वार्थी होते हैं। लेकिन जब अंदरूनी कलह खतम हो जाती है, तो हमें परमेश्वर का काम देखने को मिलता है।

हम जानते हैं कि शादी के मुख्य संदर्भ में जो परमेश्वर हमारे जीवन में उनकी पवित्रीकरण प्रयोजनों के लिए बाहर काम करता है होना चाहिए। उन्होंने कहा कि हमें अधिक से अधिक यीशु की तरह बनाता है। संकट के संकेत हैं कि परमेश्वर हमारे जीवन के कुछ क्षेत्रों को विकसित करना चाहता है। यह सच है कि ऐसा संकट

का सामना यहोशू और इस्राएल कि सेनाओं को भी करना पड़ा है। हम कुछ निदर्शी मार्ग पर नजर डालते हैं।

“जब यरूशलेम के राजा अदोनीसेदेक ने सुना कि यहोशू ने ऐ को ले लिया, और उसको सत्यानाश कर डाला है, और जैसा उस ने यरीहो और उसके राजा से किया है, और यह भी सुना कि गिबोन के निवासियों ने इस्राएलियों से मेल किया, और उनके बीच रहने लगे हैं, तब वे निपट डर गए, क्योंकि गिबोन बड़ा नगर वरन राजनगर के तुल्य और ऐ से बड़ा था, और उसके सब निवासी शूरवीर थे। इसलिये यरूशलेम के राजा अदोनीसेदेक ने हेब्रोन के राजा होहाम, यर्मूत के राजा पिराम, लाकीश के राजा यापी, और एलोन के राजा दबीर के पास यह कहला भेजा, कि मेरे पास आकर मेरी सहायता करो, और चलो हम गिबोन को मारें; क्योंकि उस ने यहोशू और इस्राएलियों से मेल कर लिया है”। (यहोशू 10:1-4)

यह सुनकर हासोर के राजा याबीन ने मादोन के राजा योबाब, और शिप्रोन और अक्षाप के राजाओं को,..... और पूरब पच्छिम दोनों ओर के रहनेवाले कनानियों, और एमोरियों, हितियों, परिज्जियों, और पहाड़ी यबूसियों, और मिस्पा देश में हेमोन पहाड़ के नीचे रहनेवाले हिवियों को बुलवा भेजा। तब ये सब राजा सम्मति करके इकट्ठे हुए, और इस्राएलियों से लड़ने को मेरोम नाम ताल के पास आकर एक संग छावनी डाली। (यहोशू 11:1-5)

हर बार दुशशमन ने अपने बदसूरत सिर को ऊँचा किया, परमेशवर ने इस्राएल को शांति दी, “उनसे भयभित न हो” (यहोशू 10:8) या “क्योंकि उनसे मत डर” (यहोशू 11:6)। सवाल यह नहीं है कि क्या उनकी जीत होगी। परमेशवर ने उन से बात की ताकि वे उस पर विश्वास करे उनकी जीत के लिए कि उन्हें लड़ाई के नेतृत्व में सक्षम होंगे। परमेशवर हमसे आत्मविश्वास के साथ इन संकटों में प्रवेश करना चाहता है। सब कुछ परमेशवर के हाथ में है। उस पर भरोसा करो। इसके अलावा परमेशवर ने यहोशू को समझाया इन रहस्य कि क्यों वे इन संकटों के माध्यम से जाने की जरूरत है।

“उन से मत
डर” (यहोशू
10:8)
“क्योंकि उनसे

विवाह का निर्माण!

यहोवा चाहता था कि वे लोग सोचें कि वे शक्तिशीली थे। तब वे इस्राएल के विरुद्ध लड़ेंगे। इस प्रकार वे उन्हें बिना दया के नष्ट कर सकते थे। वह उन्हें उस तरह नष्ट कर सकता था, जिस तरह यहोवा ने मूसा को करने का आदेश दिया था। (यहोशू 11:20)।

परमेश्वर अपने समय पर से संकट बढ़ा चढ़ा दुश्मन के हृदय को सख्त करेगा। बदले में राजा अन्य राजाओं को लड़ाई में शामिल कर लेगा। परमेश्वर का उद्देश्य सरल है। परमेश्वर दुश्मन को जल्दी से जल्दी उनका सफाया करना चाहता है। (वैसे, हमारे जीवन साथी दुश्मन नहीं है!) यह भी हमारे जीवन के लिए ही है। यहाँ तक कि युगल को चलना पड़ता है जब कोई भी बड़ी असहमति क्योंकि न हो, वे वास्तव में कोई छोटे असहमति से अलग नहीं हैं। समाधान एक ही है।

बड़ा विश्वास अधिक से अधिक अंतरंगता के लिए आवश्यक है। परमेश्वर ने एक महान शादी का निर्माण किया है। हम संकट कि अपेक्षता कर सकते हैं में आगे चलकर उसमे घनिष्ठता कि उम्मीद कर सकते हैं।

ऐसे समय में परमेश्वर काम करता है। वह गहराई से जानता है कि हम कुछ क्षेत्रों में पूरी तरह से नहीं देखते हैं। वह चाहता है कि ऐसे क्षेत्रों में प्रभाव डाले। ये आम तौर पर बुरा व्यवहार और प्रेम क्रिया हमने अपने माता पिता से सीखा है। हमें समय पर कोई अन्य तरीका नहीं मिलता है एक निश्चित स्थिति को संभालने के लिए तब हम माता-पिता के दिखाए हुए रास्ते पर चलते हैं। (हम अक्सर हमारी प्रमुख खामियों से अनभिज्ञ नहीं हैं?) हालांकि, परमेश्वर, इस तरह कि प्रतिक्रियाओं से खुश नहीं होता है।

एक जोड़ा एक असहमति के अपने बीच में खुद को देखता है, यह वेसा ही है जैसे यहोशू ने अपने दुश्मनों को डराते हुए देखा था। यह खतरनाक हो सकता है अगर उसे ठीक से नहीं संभाला जाए। हालांकि, अगर हम जिस तरह परमेश्वर के दिखाए हुए तरिके से काम करें, तो हम जीत हासिल करेंगे, और परमेश्वर हमारे दिलों में एक विशेष प्रकार का बदलाव लाएगा।

हमें समसया से उसके धमकी से घबराना नहीं चाहिए। हमारी भावनाओं को जगाकर उसे अपने तरिके से सुलझा सकते हैं, लेकिन हमें इन भावनाओं को अस्वीकार करना होगा। हम जल्दी में नहीं हैं। मुद्दा यह नहीं है कि हम समस्याओं से कैसे दूर हो, पर जरूरी यह है परमेश्वर उसे हल करने में कैसे मदद करेगा। कुंजी यह है कि एक साथ मिलकर परमेश्वर के समाधान को ढुंढे। कभी कभी लगता है

कि स्थिति असंभव लगती है, याद रखे कि परमेश्वर ने सभी प्रकार के प्रयोग किया उस संकट को असामान्य तरीके से हल करने के लिए जो यहोशू को सामना करना पड़ा था: जय हो, लंबे दिनों, भ्रम और यहां तक वो ध्वजवाहाक। जीवन अलौकिक था। ऐसा ही हमारी शादी के लिए सही रूप से होगा जैसा हम उसे इन संकटों में तलाश करते हैं।

जब हम देखना शुरू करते हैं कि कैसे परमेश्वर हमारे संकट को हल करने के लिए हमारे साथ काम करता है, तब यह सोचना आसान हो जाता है कि पति और एक टीम के रूप में परमेश्वर के साथ मिलकर कैसे काम करे। इसके अलावा, हम देखते हैं कि परमेश्वर हमें कैसे बढ़ा रहा है। हम उत्साहित होना शुरू करते हैं कि कैसे परमेश्वर हमें में काम कर रहा है। हम एक ही विजेता टीम में हैं।

परमेश्वर के परम उद्देश्य शांति, पवित्रता और विश्राम है। परमेश्वर चाहता था कि हमरा आमना सामना हो और हम उस एकता के लक्ष्य तक पहुंचें, लेकिन। यही सच हमारी शादी के साथ होता है। परमेश्वर हमें भटकाना नहीं चाहता है, लेकिन वह हमारी परीक्षा लेता है। परीक्षा हमारे लिए एक अवसर है कि उस पर विश्वास करके हम जीए, भरोसा करे कि वह हमारी परिस्थितियों में कुछ खास करना चाहता है। संकट हमें मदत करता है कि हमने अभी तक सद्भाव को प्राप्त नहीं किया है जो परमेश्वर ने हमसे वादा किया है। हमने अभी तक वो सभ प्राप्त नहीं किया है जो परमेश्वर चाहता है कि हम पाए। हमारे पास इसका एक वादा किया है। जिसे हम पसंद करते हैं। लेकिन हम इस आदेश को प्राप्त करने के लिए लिए थोड़ा और अधिक काम करना है।

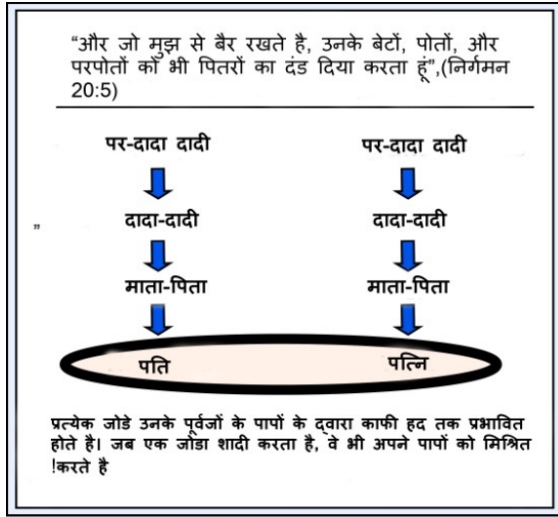
- **आपका पिछला संकट क्या था?**
- **क्या आप पाते हैं कि विचारों का मतभेद हमेंशा तर्क की ओर ले जाता है?**
- **आपके पास समय है कि जब भिन्न तरिके के संघर्ष का नेतृत्व नहीं करते है? समझाओ।**

(3) अनसुलझे संघर्ष के अतीत पर संकट का निर्माण करना

कुछ जोड़ों पाते हैं कि वे हमेंशा तर्क करते रहते हैं। संकट लगभग हमेंशा संघर्ष कि ओर ले जाता है। ऐसे मामलों में, पति या पत्नी अपने कदम को वापस ले और एक व्यक्तिगत संघर्ष को पूरा करने की सोचे हैं।

विवाह का निर्माण!

अक्सर संघर्ष बहुत लंबे इतिहास कि तरह होता है। जब एक जोड़े को नियमित रूप से संघर्ष में लगा रहता है, तो यह स्पष्ट है कि पाप मय तरिको को अपनाते हैं मतभेदों से निपटाने के लिए। परमेश्वर के पास एक बेहतर तरीका है। हालांकि मुद्दो को हल करने के लिए थोड़ा पेचीदा मामला है।



अधिक संभावना है, इसी तरह यह हठ संघर्ष के विचार-विमर्श को पीढ़ियों तक के लिए पारित करता है। उदाहरण के लिए, अगर आप अपने माता-पिता और दादा-दादी में एक हृदय मे व्यभिचारी पाते हैं, तो अधिक संभावना है कि संघर्ष आपको पूरी तरह से अपने साथी के प्रति समर्पित कर देगा। अगर आपके माता-पिता ने तर्क दिया है, तो आपने सीखा है कि यह बहस करना सामान्य है। आपने केवल बहस करने के लिए नहीं सीखा है, लेकिन आपने तर्क के पीछे रवैया को भी सीखा है: "मैं सही हूँ; आप गलत कर रहे हैं!" "लेकिन हम आसपास देखे। अपने माता-पिता की गलतियों को देखने के बजाय, अपने स्वयं के विवाह पर एक नज़र डाले।

व्यक्तिगत प्रतिबिंब

आपके पास क्या समस्या एक कठिन समय से निपटने के लिए? कुछ क्षेत्रों को अलग-थलग करने का प्रयास करें। इसके अंतरगत पैसे से निपटना, निराशा का सामना करना, या क्रोध का इसतेमाल करना 50 अपने साथी से जिद करना जो आप चाहते हैं। अब आप अपने माता-पिता को करीब से देखो और देखे कि ऐसी समस्याओं में तो नहीं हैं। याद रखें, केवल अपने निजी पापों की ध्यान नहीं दे, लेकिन सावधानी से ये जाचे लो कैसे वे अपने जीवन साथी और बच्चों से संबंधित थे। आपने क्या पाया है?

50 परमेश्वर क्रोध का इलाज कर सकते हैं। इसके लिये देखें।

परमेश्वर लंबे समय से दुश्मन को खत्म करने के लिए इस्राएलियों से चाहता था। वो चाहता था कि वो पवित्रा से रहे और वे उसके प्रेम के नियमों के अनुसार को संचालित करे। हालांकि, उन देशों में, वो देश में सुरक्षित थे। उनके पास उनकी मजबूत पकड़ थी। इस्राएलियों अपने भूमि को लेने आ रहे थे जिस पर इन एमोरियों का नियंत्रण था। वे मजबूत किले में रहते थे। कुछ यरूशलेम की तरह, जो एक मुश्किल पहाड़ (न्यायीयों 1:21) पर स्थित था। वे बाहर निकलने के कठिन परिक्षम कर रहे थे।

हालांकि, यहोशू, परमेश्वर के नजरिए से इन कठोर दुश्मनों पर देखने के लिए तैयार किया गया था। वह जानता था कि यह उसकी निजी परियोजना नहीं है जिससे कि कनान को विजय प्राप्त हो। परमेश्वर का अपना उद्देश्य था। यही कारण है कि वे जीतने के लिए जा रहे थे। परमेश्वर ने चार सौ साल पहले ही हमले की उसकी योजना को बना रखा था!

चार पीढ़ियों के बाद तुम्हारे लोग इसी प्रदेश में फिर आएंगे। यह बात भविष्य में होगी क्योंकि एमोरी दण्ड पाने योग्य बुरे अही नहीं हुए हैं।”)उत्पत्ति 15:16)

हो सकता है यहोशू ने दुश्मन से लड़ने के लिए अपने हृदय में ठान लिया हो, लेकिन उसको भी सीखना था कि कैसे वो परमेश्वर के साथ मिलकर काम करने के लिए इन योजनाओं को पूरा करे। इन योजनाओं को लेकर चलने का मतलब भी उतना ही महत्वपूर्ण है जितना कि हमारा लक्ष्य। संवय के प्रयास से वैवाहिक झगड़े अंत में हमेंशा हार कि ओर ले जाते हैं भले हमेंशा हमें शुरुआत में सफलता मिली है। हम जोर जबरदस्ती से या चतुराई से अपने साथी से जीत सकते। इच्छा शक्ति हमें एक महान विवाह नहीं दे सकता।

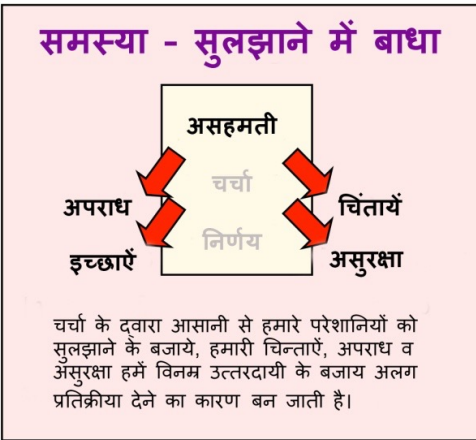
इसके बजाय हमें यह देखना है कि परमेश्वर ने पहले ही दुश्मन को खत्म करने का फैसला किया था। यहोशू यह जानता था कि वह इस्राएलियों को विजय दिला सकता है क्यों कि परमेश्वर ने उसे पूर्व निर्धारित किया था। हम जोड़ों के रूप में भी जानते हैं कि परमेश्वर ने हमें महान विवाह देने के लगा हुआ है।

विवाह का निर्माण!

हमें वो पाने के लिए उन बुरी प्रतिक्रियाओं को खत्म करने की जरूरत है। उसने हमारे लिए अवसर रखा है कि हम बढ़े और अवसर प्राप्त करे।

परमेश्वर ने एक बार में यहोशू के सभी दुश्मनों को सामने नहीं लाया था। उन्होंने यरिहो से शुरू किया था उनको प्रोत्साहित करने और उन्हें प्रशिक्षित करने के लिए। ऐसा बाद में हुआ कि जब परमेश्वर ने एक बार में तेजी से और अधिक दुश्मनों को लाकर जीत के लिए खड़ा कर दिया था। परमेश्वर कभी भी हमें बहुत ज्यादा नहीं देता है यदि हम उस पर भरोसा करते हैं। हम जोड़े के पास भी संभावित आत्म-अभिव्यक्ति है कि हमारी शादी को बहुत नुकसान पहुँचाएगा। हमें थोड़ा और इस बारे में सोचना होगा कि कैसे यह 'दुश्मन' हमारे एकता के लिए खतरा हैं।

इनमें से कुछ 'दुश्मन' ईर्ष्या, चिंता, भय, गौरव, घृणा और लोभ हैं। सचमुच में वे विवाह को नष्ट कर सकते हैं। हर बार उनके पास एक अवसर होता है, वो हमें उकसाते हैं कि हम गलत तरीके से एक निश्चित स्थिति को सुलझाए। वो हमें बुरे निर्णय लेने के लिए करने के लिए धमकाते हैं। इसी तरह में इजरायल के दुश्मन कभी कभी गठबंधन बेहतर बनाकर उनको धमकाकर उनको हराने का प्रयास किया करते थे। हम महसूस कर सकते हैं कि उनकी सेना मजबूत हैं, लेकिन परमेश्वर का उद्देश्य उससे महान और महिमामय है।



यही कारण है कि यह महत्वपूर्ण है कि हम प्रत्येक दिन सुबह तड़के उठकर व्यक्तिगत रूप से परमेश्वर से मुलाकात करे ताकि हम उसे और उसके उद्देश्यों के साथ बने रहे। विचारों के मदभेद से जो अंतर तनाव और प्रयत्न आते हैं उसे संघर्ष में बदलने न दे।

जब जोड़े पने स्वांभिविक जिदपर में अड़े रहते हैं तो उनका अंत एक बड़ी बहस में खत्म हो जाएगा। यह संघर्ष है। परमेश्वर ने एक शादी मे बहस करने के लिए दो मन नहीं दिया है, लेकिन अधिक

से अधिक ज्ञान और अंतर्दृष्टि जो अधिक स्थिरता में परिणाम प्रदान करने के लिए दिया है।

हमारी शादी तभी मजबूत होगी जब हम इन क्षेत्रों में प्रत्येक रूप से इन कार्यों को अपने साथी के साथ करेंगे। विवाह तभी आगे बढ़ता है जब हमारे साथी आत्मिक रूप से आगे बढ़ता है। विवाह एक ऐसा स्थान है जहां परमेश्वर जहां हमको ले जाकर रखना चाहता है।

एक बार छोटी बातें बर्दाश्त कर सकते हैं, जिसका कोई महत्व नहीं होता है, हम अपने विवाह में दर्द और संघर्ष लाते हैं। रोचक बात यह है कि परमेश्वर हमारे साथ धैर्य से काम कर रहा है। वो वहां पर है दुश्मन को खत्म करने के लिए। जैसे हम विजयी है वैसे ही हमारी शांति सुरक्षित है। परमेश्वर की महिमा हो कि किस प्रकार उसने हमारी मदद कि एक व्यततिगर रूप में जोड़ों को इन संकटों से उबरने के लिए। तब हम अपंग थे, पर अब हम मजबूत हैं!

व्यक्तिगत प्रतिबिंब

- क्या आप व्यक्तिगत संघर्ष के साथ लड़ रहे हैं? क्या आप अपने माता-पिता के रिश्ते में इन संघर्षों देखते हैं या जिस तरह से वे अलग अलग स्थितियों को संभालते हैं? समझाओ।
- शादी के एक संदर्भ के माध्यम से जो परमेश्वर हमारे व्यक्तिगत मुद्दों और पापों बाहर निकालने में काम करता है। परमेश्वर से मागें कि आपके ये गलत प्रतिक्रियाओं को शुद्ध करे। शुद्ध होने के लिए उसकी और देखे, सही प्रतिउत्तर के हिदायत के लिए।

(4) संकट परमेश्वर की तरह हल किया जाना चाहिए

संघर्ष के विराम लगाने की जरूरत है। सौभाग्य से, परमेश्वर ने हमें एक नहुना दिया है कि जिसके द्वारा दुश्मन जिसे हम मिलते हैं संकट के दौरान दूर किया जा सकता है। हम इन जीत के रहस्यों को ढूंढ सकते हैं जो यहोशू के युद्ध में दर्ज कि गई है। यह नुमना कुछ इस तरह है: एक संकट उनके लोगों को ले जाता है उसका नाम से बुलाए हुए जो बदले में परमेश्वर से बात करने के लिए अनुमति देता है। परमेश्वर की योजना और मदद के साथ, उन्होंने जीत को सुरक्षित रखा है।

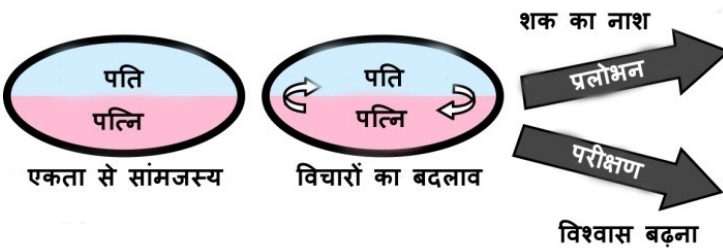
विवाह का निर्माण!

इस्राएलियों ने परमेश्वर की तलाश कि, और परमेश्वर ने विश्वासयोगता से समय-समय पर, उन्हें जीत कि ओर ले गया।



कोई पूछ सकता है आई में क्या हुआ जहां इसराइल दुश्मन से जीता था? अच्छा प्रश्न। यहोशू विफल रहा परमेश्वर से लड़ाई से पहले दिशा पुछने के लिए। बेशक यह दुख की बात है कि किसी को भी परमेश्वर की विशेष निषेध का उल्लंघन किया था। अगर यहोशू परमेश्वर से इस बारे में बात करता बजाए जीत पाने के, तब परमेश्वर उनको इस आपदा से बचा सकता था। विजय (जैसा कि यरिहो मे हुआ) गर्व करने के लिए नेतृत्व कर सकते हैं और वहाँ इस स्तर पर आत्मविश्वास की कुछ समस्या हो सकती है।

परमेश्वर की सलाह और दिशा हमेशा जीत की ओर ले जाती है। अब चलो एक सवाल पूछते हैं। क्यात आप एक महान शादी चाहते है या नहीं हैं? एक मजबूत शादी की स्थापना के लिए एक ही रास्ता लगातार परमेश्वर की तलाश है। "तब यहोवा ने यहोशू से कहा," सुन, मैं यरीहो को उसके राजा और शूरवीरोंसमेत तेरे वश में कर देता हूं। "(यहोशू 6: 2)। हमारी समस्याओं का उत्तर केवल परमेश्वर के पास है जिसका सामना हम करते है।



यरिहो के पास एक भारी सुरक्षा वाला शहर था जिसमें विशाल मजबूत दो दीवारें थी। हमारी सबसे बड़ी समस्या यह है कि जब हम पहली मतभेद भावना को समझते है, तो हम तुरंत परमेश्वर के लिए पास नहीं मुड़ते है। क्या मतलब है

परमेश्वर का पालन करने के लिए? निम्नलिखित चित्र स्पष्ट करता है कि परमेश्वर कि ओर देखने से क्या होगा और क्यों यह काम करेगा।

इस के लिए कई चरण हैं।⁵¹ उस महत्वपूर्ण बात को याद करना चाहिए, जिस जगह से हम लोगों ने एक साथ शुरुआत कि थी और वहाँ पर हमने खुशि के साथ हमने शादी में एक दूसरे से प्रतिज्ञा ली थी। हालात ठीक हैं। सब कुछ शांतिपूर्ण है। यह केवल जब हम अपनी राय से विभिन्न दृष्टिकोण तक पहुँचते हैं कुछ बातों के लिये, तो हम उस संकट की भावनाओं को अनुभव करते हैं। यहाँ पर प्रलोभन और परीक्षण दोनों आती हैं।

प्रलोभन	परीक्षण
<p>कोई यह न कहने पाए कि “मैं परमेश्वर के द्वारा परीक्षा में हूँ।” जब किसी की परीक्षा हो, तो वह यह न कहे, कि मेरी परीक्षा परमेश्वर की ओर से होती है; क्योंकि न तो बुरी बातों से परमेश्वर की परीक्षा हो सकती है, और न वह किसी की परीक्षा आप करता है।)याकूब 1:13-15)</p>	<p>हे मेरे भाइयों, जब तुम नाना प्रकार की परीक्षाओं में पड़ो, तो इसे पूरे आनन्द की बात समझो, यह जानकर, कि तुम्हारे विश्वास के परखे जाने से धीरज उत्पन्न होता है। धन्य है वह मनुष्य, जो परीक्षा में स्थिर रहता है; क्योंकि वह खरा निकलकर जीवन का वह मुकुट पाएगा, जिस की प्रति ज्ञा प्रभु ने अपने प्रेम करनेवालों को दी है।)यकूब1:2-3,12)</p>

प्रलोभन एक बुराई से है। उसका उद्देश्यह केवल विभाजन और अलग करना है। यह एकता की सच्चाई का जवाब देने के विपरीत है। वह ऐसा मतभेदों पर ज़ोर देने के लिये करता है। और हमें मारे अपने अभिलाषाओं से दूर करने के लिये बहुत सारे अवसर देता है। उसकी आशा यह है कि हम परिणामस्वरूप लंबे समय तक एक दूसरे को चोट पहुँचाये। वो हमारे साथी के बारे में बुरी बातें कहने की कोशिश करता है। और फिर वो हमारे द्वाकरा इन बातों को पूरा करता है। (जबकि वास्तव में हमारा मतलब वो नहीं होता है।)

व्यक्तिगत प्रतिबिंब

⁵¹ एक और माध्यम से उपचार के लिये देखें wwwFOUNDATIONSforfreedom.net/Topics/Family/Parenting009_Harmony.html

ऐसी कुछ बेकार चीजों को जो आपने क्या कहा है? "मैं उसे से फिर कभी नहीं बोलुगा।" "कि मैं तुम से नफरत करता हूँ।" आप की पहचान आपकी बुरे शब्दों से ही होती है, उन्हें कबूल करके और माफी माँग कर सुनिश्चित करें। जितना हो सके के रूप में विशिष्ट रूप में संभव होगा।

संघर्ष अच्छा नहीं होता क्योंकि यह हमेशा एक बुरे सड़क कि तरह नीचे कि ओर ले जाता है। कुछ सलाहकारों संघर्ष को सामान्य कहते हैं। पर ऐसा नहीं है। परमेश्वर कभी नहीं ग्रहण करता है निर्दयी शब्दों को और वह सामान्य रूप से नाटक करे। उसने हमसे कहा है, "प्यार में सच बोलते हैं।"

परीक्षा परमेश्वर की ओर से होती है। संकट अवसरों को हमारी एकता पर जोर देना है। हमने परमेश्वर के पीछे करने का फैसला किया है। जब हमें कुछ अंतरों का सामना करना पड़ता है, तब हम परमेश्वर को प्रार्थना में तलाश करते हैं और फिर समय निश्चित करके अपने साथी से इस मुद्दे पर चर्चा करते हैं। जब हम एक परेशान भावना को महसूस करते हैं, तब हमें उसे छोड़कर यह निर्णय लेना चाहिए कि अब उसके पीछे नहीं जाएंगे। इसे पहचानने से होता है (इससे पहले कि यह मुसीबत को जन्म दे), यह खारिज करने और कुछ व्यावहारिक काम करके अपनी एकता की पुष्टि द्वारा किया जाता है।

आप कह सकते हैं, "प्रियतम, मुझे पता है कि हम इस मुद्दे पर असहमत हैं, लेकिन हम बात करते हैं और बाद में इसके बारे में एक साथ प्रार्थना करते हैं, जब हम दोनों को और अधिक समय हो।" यह शब्द आपकी पुष्टि कर सकते हैं।

होशपूर्वक एक साथ काम करने के लिए चुनें ताकि यह देख सके कि परमेश्वर आपके परिवार के लिए क्या चाहता है। जब आप देखते हैं कि परमेश्वर चाहता है, तो आप में से प्रत्येक को अपने और उसके जीवन साथी के लिए जरूर सुधार कर सकते हैं और समायोजित करे कि क्याश परमेश्वर आपसे चाहता है। प्रलोभन (बुराई से आने वाला) और परीक्षण (परमेश्वर से) से असहमति के बिंदु के लिए दो विकल्प हो जाते हैं। उन पर ध्यामन दे और परमेश्वर का रास्ता चुने।

पुनः पतित चक्र

क्या होता है जब एक जोड़ा प्रलोभन को प्रतिक्रिया देता है? आसन्न चित्र में देखे, हम देखते हैं कि चुनाव प्रलोभन के पालन करने से कैसे भयानक परिणाम होते हैं। यह हमेशा रिश्तो को नुकसान पहुँचाते हैं और कभी कभी दर्दनाक घाव देते हैं। यदि

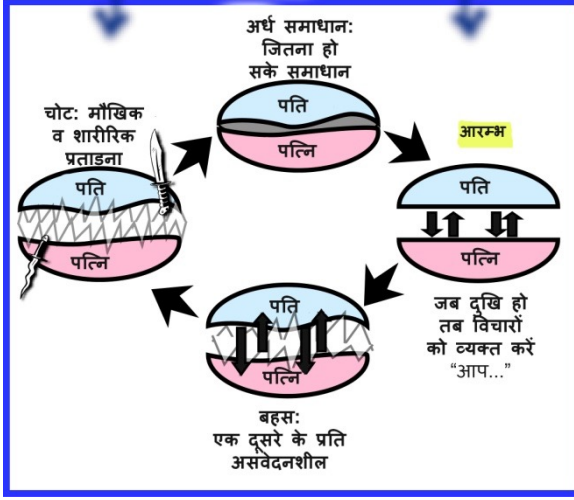
इसमें सुधार नहीं आता है, तो एक पतित चक्र जगह ले लेता है और शादी में नकारात्मक प्रतिक्रियाओं को इस चक्र से जोड़ता है।

दुश्मन पर काबू पाने के बजाय, वे दुश्मन की इच्छाओं में को पुरा करते हैं और दुःख की इस दैनिक खुराक के लिए अपनी जीवन को समायोजित करते हैं।

कई शादियां इस पतित के चक्र में जकड़े हुए हैं। पतित का यह मतलब है कि शादी बदतर और बदतर हो जाती है और हर बार जोड़े उस एक 'लड़ाई' चक्र में चला जाता है। हम यह नहीं कह रहे हैं कि यह बेहतर नहीं हो सकता है, लेकिन यह आत्मा का एक वास्तविक सुखद पछत्ताप को चाहता है जो चीजों को सही करता है। अगले अध्याय में माफी पर अधिक कहा जाएगा।

जब उचित क्षमा याचना नहीं होती है, तो एक कड़वाहट की मोटी परत जोड़े के बीच में हो जाती है (दाएँ चार्ट को देखें)। जब वे बहस नहीं कर रहे होते तभी वहाँ कोई मधुर संम्बाध नहीं होते। जब दुसरा तर्क शुरू होता है, तब जोड़े वहीं पहुँच जाते हैं, जहाँ पर उन्होंने पहले छोड़ दिया था। इस पतित चक्र को दोहराता है क्योंकि कड़वाहट आक्रमण करने के लिए दुसरा अवसर ढुड़ता है। वे शुरु से शुरुवात नहीं करते हैं लेकिन उन दोनों के बीच कुछ नहीं होता बल्कि कड़वाहट के साथ बात करते हैं, उनकी कड़वी बातचीत पर तेल लगाते हैं। हम अत्यधिक दूसरे तरीको को अपनाते हैं संकट की नीचली कुड़ली को प्रतिक्रिया देने के लिये हैं।

पुनः पतित चक्र



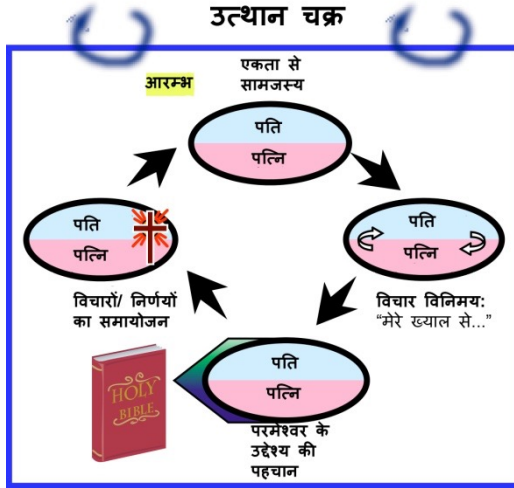
उत्थान चक्र

उत्थान चक्र मृत्यु के बदले रिशतों में जीवन को लाता है जिससे चक्र की प्रगति होती है। ये चक्र (शीर्ष पर) सद्भाव में शुरू होता है और पहले से कहीं ज्यादा एक मजबूत शादी की स्थापना समाप्त होती है। ये कार्य संभव है क्योंकि भिन्न दृष्टिकोण कभी भी आक्रमण करने के दिशा में नहीं होता। अगर वे करते हैं, तो क्षमा को प्राप्त करते हैं।

एक साथी का विरोध स्थिति का अंतर यह है की जैसा वह है उसे स्वीकार कर लिया जाए। सिर्फ इसलिए कि दो लोग अलग होते हैं, इसका मतलब यह नहीं है कि वे करने के लिए 'वह अपने तरह इसे अपनाए।' वे दोनों परमेश्वर के दृष्टिकोण की खोज रहे हैं और आवश्यक रूप में समायोजित कर सकते हैं। एक पति और पत्नी हमेशा इस बात से सहमत नहीं होंगे, चर्चा के बाद भी।

आगे आपको इस अध्याय के बारे में विस्तार रूप से बताएंगे कि कैसे एक पत्नी और पति असहमति पर प्रतिक्रिया दे और आगे सावधानी पुरवक परमेश्वर की बातों पर नज़र डाले (उदाहरण के लिए कितना वे कलिसिया या गरीबों को देना चाहिए)। परिपक्व जोड़े परमेश्वर के तरिके से कट्टर विरोधी मतभेद का समाधान करने के लिए तैयार हैं। यह निश्चित होना चाहिए हालांकि विचारों के मदभेद कभी

कभी जड़ पकड़ लेते हैं जब हम किसी मुद्दे पर परमेश्वर को नहीं ढुंढते हैं उदारण - (अगर हम लालच करके एक नई कार उधार में ले रहे हैं क्योंकि एक पैसा नहीं है) किसी भी मामले में, हर जोड़े के पास बहुत समस्या होती है कि वे अपने साथी के साथ मिलकर परेशानी को हल करने का अभ्यास करते हैं।



अगर एक जोड़ा परमेश्वर के तरीके से अपने मामलों को हल करने लगे, तो हर एक साथी को चाहिए परमेश्वर के और करिब हो (ताकि वे विनम्र हो सकते हैं), एक दूसरे से बात करे (एक गतिरोध इसे बहुत ही कठिन बना देता है)। और परमेश्वर के उद्देश्यों कि इच्छापूर्ति करता है। अंतः एक जोड़ा साथ में समय बिताता है (इन विवादास्पद काल से अलग!) निवेश करते हैं, तो तब वे कम लड़ते हैं और अधिक जितते हैं। यहां पर दो चक्र हैं: पहला पतित चक्र और दुसरा उत्थान चक्र। उन दोनों के बीच का अंतर रात और दिन की तरह है। पहला कड़वाहट पर बना है, जबकि बाद में क्षमा से निर्माण होता है।

(5) संकट हमें महान विवाह कि ओर ले जाता हैं।

पहली लड़ाई के बाद यहोशू के पास एक विकल्प था कि यरिहो के चारों ओर छावनी कर सके और इजरायल के युद्ध के लिए नेत्रत्वा जारी रख सके और प्रत्येक जनजाति को भूमि का वितरण करे। विरासत मे वो सारा देश उनका था। वे चाहते थे कि उस पर कब्जा जमाए और इसे बनाए रखे। यहोशू की आखिरी पुस्तक

विवाह का निर्माण!

के आधे भाग में यह दर्शाया गया है कि कैसे यहोशू ध्यान से प्रत्येक जनजाति के लिए बहुत से भूमि की वितरित है। वे प्रोत्सापहन चाहते थे कि परमेश्वर के दिए हुए कार्य को पुरा कर सके है।

“और इस्राएलियोंमें से सात गोत्रोंके लोग अपना अपना भाग बिना पाथे रह गए थे। तब यहोशू ने इस्राएलियों से कहा, जो देश तुम्हारे पूर्वजोंके परमेश्वर यहोवा ने तुम्हें दिया है, उसे अपने अधिकका रने में कर लेने में तुम कब तक ढिलाई करते रहोगे?” (यहोशू 18:2-3)

कुछ असफलताओं के बाद, यह 'सहनशीलता' प्रणाली में प्रवेश करने के लिए आसान है। हम एक 'ठीक है' शादी के रूप में स्वीकार करते हैं। हम एक महान शादी के लिए प्रेरणा की कमी है। आपको क्या लगता है कि परमेश्वर जोड़े को सहनशीलता की आत्मा के साथ ठेस पहुंचा कर दाग लगाना चाहता है? बेशक पर्याप्त नहीं, वो यह देखेगा कि वे और अधिक संकट का सामना कर सकते हैं जब तक वे अंततः यह एहसास न करे कि उनकी शादी बेहतर आकार ले चुकी है।

परमेश्वर ने हमें न केवल हमारे लिए बल्कि उसकी महिमा के लिए सामंजस्यपूर्ण और आनंदमय विवाह चाहता है। परमेश्वर की महिमा कि रचना, पति और पत्नी के सद्भाव के माध्यम से चमके। परमेश्वर का मकसद क्या था जब उन्होंने आदम और हव्वा को बनाया था? क्याव परमेश्वर ने यह नहीं चाहता था कि जो आदम के पहले से था उससे कुछ बेहतर करे? जरूर है! जब एक आदमी के पास एक पत्नी है, तो वह धन्य है। वह एक उत्कृष्ट पत्नी है, वह बहुत ही धन्य है।

जिस ने स्त्री ब्याह ली, उस ने उत्तम पदार्थ पाया, और यहोवा का अनुग्रह उस पर हुआ है। (नितीवचन 18:22)

एक पत्नी या पति को गैर जिम्मेदार हो, तो उनकी शादी में तेजी से खट्टापन हो जाती है। कई कहावतों में एक आदमी के, जो आलसी या गैर जिम्मेदार है त्रुटियों पर प्रकाश डाला गया है। " मुकद्दमें से हाथ उठाना, पुरुष की महिमा ठहरती है; परन्तु

और पत्नी के
झगड़े-रगड़े सदा
टपकने के समान
है।

(नितीवचन १९:१३)।

सब मूढ़ फगड़ने को तैयार होते हैं। " (नीतिवचन 20: 3)। दुसरे कहावतों के पूरे समूह ने ऐसे विवाह कि उदासी जिसमें एक विवाह में झगड़ालू पत्नी और शिकायत है उस पर केद्रित किया है। ऐसे जोड़ो ने परमेश्वर और उसके जोड़ो को नाकाम किया हैं। वे खुदगारज हैं। " और पत्नी के फगड़े-रगड़े सदा टपकने के समान है। " (नीतिवचन 19: 13b)।

हम कालेब की तरह एक आत्मा" की जरूरत है। उसने याद रखा परमेश्वर के वादे को और उस ताकत को प्राप्त करने के लिए परमेश्वर पर विश्वास किया।

इसलिये अब वह पहाड़ी मुझे दे जिसकी चर्चा यहोवा ने उस दिन की थी; तू ने तो उस दिन सुना होगा कि उस में अनाकवंशी रहते हैं, और बड़े बड़े गढ़वाले नगर भी हैं; परन्तु क्या जाने सम्भव है कि यहोवा मेरे संग रहे, और उसके कहने के अनुसार मैं उन्हें उनके देश से निकाल दूं। (यहोशू 14:12).

जब हम समझते हैं कि परमेश्वर वास्तव में हमें एक आशिषमय शादी को प्रदान करना चाहता है तब हम विश्वास में बढ़ते हैं और विश्वास करते हैं कि वो दे जो हमारे लिए असंभव था। जैसे कालेब की तरह पर हम उसके विपरित कि ओर जा रहे हैं, पर परमेश्वर पर उसका विश्वास सारे मद-भेद से उपर है। "परमेश्वर के लिए सब कुछ संभव है!"

(6) संकट स्थायी रूप से संघर्ष बन जाता है अगर उसे ठीक से हल नहीं किया जा।

हम यह देखकर बहुत दुखी है कि कई जोड़े परमेश्वर के वचन को गंभीरता से नहीं लेते हैं। वे हमेंशा संघर्ष के होने पर जोर देते हैं। हम निश्चित रूप से उनसे ईर्ष्या नहीं करते है! संभावना है कि परमेश्वर ने हमें इन संघर्षों को नष्ट करने को दिया है। एक के बाद एक हम इन संकटों को हल करते हैं, हमारे वैवाहिक जिवन मीठा और मीठा हो जाता है। दुश्मन व्यवस्थित रूप समाप्त हो जाते है। परमेश्वर का इरादा केवल अच्छा है। दुर्भाग्य से, हम परमेश्वर के रूप में पूरी तरह से नहीं है जैसे वो चाहता है कि हम हो।

" परन्तु जो कनानी गेजेर में बसे थे उनको एप्रैमियोंने वहां से नहीं निकाला; इसलिये वे कनानी उनके बीच आज के दिन तक बसे हैं, और बेगारी में दास के समान काम करते हैं। " (यहोशू 16:10, और यहोशू 17:12)

जो कुछ भी नहीं जाता वो हमारे विवाह में एक चिड़चिड़ी पीड़ा दायक स्थान बन जाता है। इसराइल को लंबे समय तक उत्पीड़न का सामना करना पड़ा जब तक उनको 'बर्दाश्त' करना पड़ा जैसा कि उनके देश में निरंतर दुश्मन की उपस्थिति थी। अगर उन्होनें दुश्मनो को दुर करने के बजाए वश में किया होता, तो वहां से चला गया होता और आगे उन्हें परेशान करने में असमर्थ होता।

हमें याद रखना चाहिए है कि इन समझौता एक महान शादी से केवल खुशियां ही नहीं ले सकते लेकिन यह संघर्षों हमारे बच्चों के लिए पारित हो जाता है। माता-पिता के कार्यों और व्यवहार से, अपने दुः ख के साथ संघर्ष से निपटने उनके बच्चों पर आ जाता है। पौलुस गलतियों 6 और 7 में कहते हैं "परमेश्वर ठट्टो में नहीं उड़ाया जाता है।"

परमेश्वर को कम से कम मूर्ख तो नहीं बनाया जा सकता है। हमारे पास हमारी अनाज्ञाकारिता के लिए कोई बहाना नहीं है। यहां तक कि अगर हम गलत रास्तेक पर चलना शुरू करे, अगर हम परमेश्वर को गंभीरता से ले, हम उसके एक प्रतिनिधि बन सकते है उसके पवित्र परिवर्तन के बदलाव के जो हमारे व्यक्तिगत जीवन और विवाह के साथ शुरू होता है। बेसुरापन और मुसीबतों के रूप में लंबे समय तक हम दुश्मन को जीत नहीं सकते है।

बेशक, अगर हम परमेश्वर के पीछे चलना के लिए चुनते हैं, तो हम इन संकटों को संभालने के लिए सक्षम हैं। यही पर घनीष्ट ता विकसित होती है। घनीष्टभ विवाह अपने बच्चों को अच्छी चीजें प्रदान करता है (उदाहरण के लिए कैसे एक दूसरे के साथ सहनशिल हो)

मतलब जिस प्रकार कनान देश में यहोशू और इस्राएली ने कई संकटों को संभाला यह एक अंतर्दृष्टि प्रदान करता है कि कैसे एक शादीशुदा जोड़े मुश्किल समय में संभालना चाहिए। हम परमेश्वर के तरिको को प्रतिक्रिया दे कर विजय हो सकते हैं, या हम भय या समझौते को जवाब देकर हार सकते हैं। वहाँ एक सही

**"धोखा न
खाओ, परमेश्वर
ठट्टों में नहीं
उड़ाया जाता,
क्योंकि मनुष्य जो
कुछ बोता है, वही
काटेगा"।**

और गलत रास्ता है। वहाँ पर एक पतित और उत्थान चक्र भी है। हमारे विकल्प हमारे विवाह पर गहरा प्रभाव डाल सकते हैं और यहां तक कि हमारे बच्चों पर भी। कोई शादी इतनी बुरी नहीं होती है, जसका शुरूवात हम नए सिरे से शुरू नहीं कर सकते हैं। और न कोई भी शादी इतनी सुरक्षित नहीं है कि यह कड़वाहट की पहुंच से दूर हो, अगर हम उसे उसमें बसने की अनुमति दे।

निष्कर्ष

संघर्ष से बचा जा सकता है। परमेश्वर हमारी एकता के माध्यम से हमें सद्भाव दिया है। अंत में, प्रत्येक जोड़े को खुद को फिर से सिखाना है ताकि वे बहस के बजाय चर्चा और प्रार्थना में लगे रहे। एक और उदाहरण के साथ समाप्ता करना चाहूंगा कि कैसे मैं और मेरी पत्नी के बीच 'भड़काव' को हमने टाल दिया।

मैं और मेरी पत्नी ने देखा कि अगले साल कि स्कूली शिक्षा के लिए क्या करना है के बारे में हम सहमत नहीं हैं। मैं हैरान था कि वह मेरे से भिन्न है (क्या उसे हमेशा सहमत नहीं होना चाहिए?)! फिर भी। मैं उसके विचारों को द्रव्य करता हूँ, मैंने पहले से भी कुछ पहलुओं पर उसके साथ अगले साल स्कूली शिक्षा पर बात की है। पर वो मेरे इरादों को स्पष्ट रूप से समझ नहीं पाई। हमारे मतभेद कायम थे।

हमने जोड़ और घटाव पर अलग अलग चर्चा की, ऐसे या वैसे तरिके से। मैंने उसे समय दिया कि सोचे कि कैसे इन फैसलों से उसके अनुसूची और दिनचर्या को प्रभावित करेगा। अंत में उसकी राह में एक अंतर था, लेकिन स्पष्ट रूप से इसका क्या कारण था वह पहचान नहीं कर सकी। मुझे पता चला कि मेरी पत्नी को उसके कारणों की पहचान करने के लिए अतिरिक्त समय की जरूरत है। इसके बजाय मेरी योजनाओं के कार्यान्वयन तोर से आगे बढ़ाने को, मैं रुका हुआ था। फिर से, एक संभव बहस तितर-बितर हो गई। इसके बजाय हम प्रार्थना कर रहे हैं और कई दिनों के पाठ्यक्रम पर चर्चा के माध्यम से काम कर रहे थे। तथापि, हमारे विचार विमर्श के दौरान, मैं दो प्रमुख मामलों में देख रहा था।

पहले, उसे मेरे नेतृत्व पर विश्वास नहीं था। मैंने उससे कहा नहीं कि मैं क्या, सोच रहा था कि मैं कैसे इन बदलते हुए पाठ्यक्रम को मुद्दों और समय पर प्रभाव डालने के बारे में। मैं उसे शांति से समझाने कोशिश की कैसे मैं इस मामले के बारे में

विवाह का निर्माण!

सोच रहा था। ऐसा ही मैंने यह किया है, और वह शांत हो गई। पतियों का एक विशिष्ट समस्या है कि वे विफल रहते हैं उनकी पत्नियों के साथ चर्चा करने में कि क्या वे स्पष्ट रूप से किस बारे में सोच रहे हैं। पत्नी को लगता है कि उसका पति उसे अनदेखा कर रहा है उस मामले में जबकि उसने वास्तव पहले से ही अपने विचारों को उस बारे में प्रकट कर दिया था।

दूसरा, उसके विचारों को महत्व देते हुए, हालांकि वह मुझ से अलग क्यों न हो, मैं कर सकता, परमेश्वर की कृपा से, जानने कि कोशिश करे कि क्यों जो उसने कहा था वह महत्वपूर्ण हैं। उस समय, यह जाने बगोर, उसके मूल्यों की पहचान रहा था। हमारे मूल्य आम तौर पर एक ही हैं, जैसे वे इन मामले में हैं,⁵² उसने कहा कि वह चिंतित है कि क्या हमारे बच्चों को ठीक से एक बाईबल परिप्रेक्ष्य हासिल करने के लिए प्रशिक्षित किया जा रहा था। मुझे यह सुनकर खुशी हुई, और उसके बाद, मैं और अधिक आसानी से समझ गया कि क्यों उसने एक निश्चित पाठ्यक्रम पुस्तक पर जोर दिया था।

मैंने सोचा कि यह किताब हमारे बच्चों कि जरूरत के लिए अपर्याप्त है, लेकिन अब हम उस महत्वपूर्ण प्रशिक्षण को निपटाने के पहलू को अन्य तरीकों से सोच सकते हैं। इस मुद्दे का हल हो चुका था।

जब पति और पत्नी नियमित रूप से प्रार्थना करते हैं और बात करते हैं एक साथ तो अधिकांश इन मुद्दों का समाधान किया जा सकता है। जब जोड़े पाते हैं बहुत वस्तु है बातें और एज साथ आनंद के साथ एक दुसरे कि संगति के लिए, तो वे बहस करने लगते हैं और अधिक उपद्रव करने लगते हैं। एक महान शादी में समय लगता है, लेकिन प्रत्येक क्षण अहम होता है। क्या आप बहस के बजाय चर्चा नहीं कर सकते, लड़ने के बजाय प्रार्थना करे? क्या मधुर वचन कठोर वचन से बेहतर नहीं? हम ऐसा लगता है।

व्यक्तिगत प्रतिबिंब

- पिछले तीन क्षेत्रों में जहां आपके पति और आप कि पत्नी कि राय अलग है।

⁵² जब हमारे महत्व भिन्न हों, यह आसान होता है कि पवित्र शास्त्र के द्वारा एक समान स्तर की खोज करना

#6 संकट को सुलझाना और संघर्षों से बचना

- आपने इसमें क्या अलग पाया?
- क्या इन समस्याओं का हल हुआ? इसके लिए कितना समय लगा?
- क्या वे ठीक से संभाल पाए थे? समझाओ।
- अंतिम परिणाम क्या रहा?
- कोई सबक जो सीखना चाहते हैं उसकी सुची बनाए।

अध्याय # 6 अध्ययन के लिए सवाल

1. दो बातें कौन सी हैं जो पति और पत्नी को एक महान शादी से पहले करना चाहिए?
2. संघर्ष जरूरी है? क्यों या क्यों नहीं?
3. क्या विचारों के मतभेद जरूरी हैं? क्या वे गलत हैं? उनको कैसे नियंत्रित किया जाना चाहिए?
4. हमें भावनात्मक गड़बड़ियों को कैसे संभालना चाहिए?
5. कैसे परमेश्वर संकट का उपयोग करता है 'शुद्धिकरण' के लिए या एक जोड़े को और अधिक पवित्र बनाने के लिए?
6. कैसे हमारे संघर्ष हमारे माता पिता और दादा दादी के संघर्ष से जुड़े हैं?
7. संघर्ष को हल करने का परमेश्वर का तरीका क्या है?
8. विस्तारपूर्वक समझाओ कि छह में से तीन संघर्षों का जो यहोशू ने नकारा परमेश्वर के साथ काम करके।
9. परीक्षण और प्रलोभन के बीच क्या अंतर है? कैसे वे एक संकट और संघर्ष से संबंधित हैं?
10. पतित चक्र को बनाओ और समझाओ।
11. उत्थान चक्र को बनाओ और समझाओ।
12. संघर्ष को हल करने में नाकाम रहने के परिणाम क्या हैं?



#7 विवाह की कड़वाहट को क्षमा से बदलना

कड़वाहट, मेरा मानना है कि विवाह को खत्म करने में इसका पहला नम्बर है। कई लोगों को आपत्ति है कि पैसा या असंगति इसका कारण है लेकिन इन लोगों को यह समझ में नहीं आता कि कैसे कड़वाहट इन और कई अन्य वैवाहिक जीवन की कठिनाइयों की जड़ है। कड़वाहट धीरे धीरे पति पत्नी को एक दूसरे से अलग कर देती है और एक दूसरे के प्रति उनकी वचनबद्धता को कम करती है।

परमेश्वर विवाह को बचाना चाहते हैं। वे सभी तरह के असंतोष को समाप्त करना चाहते हैं। हमारी समस्या का एक हिस्सा यह है कि हम उसे समझ नहीं पाते कि परमेश्वर ने हमें कैसे पहले ही से सुसमाचार की अद्भुत शक्ति के द्वारा हमें विवाह की कड़वाहट के प्रभाव से खुद को अलग करने के उपकरण के रूप में दिया है। परमेश्वर ने जिस तरह छोटे पत्थर का दाऊद के हाथ से प्रयोग किया उसी तरह विवाह की कड़वाहट के विशाल दानव से अपने बच्चों को बचने के लिए विशेष उपकरण की तरह उसका प्रयोग किया। हमारी सरल विश्वास और आज्ञाकारिता के माध्यम से परमेश्वर का अदभुत शक्तिशाली प्यार असंतोष की ऊँची दीवारों को भी गिरा सकता है।

यदि हम सावधान नहीं रहते हैं तो असंतोष हमारे असंतोष हमारे हृदय और हमारे विवाह को नष्ट कर सकता है। बजाय विजेता होने के हम खुद शिकार हो जायेंगे। जो कड़वाहट से भरे होते हैं वे धीरे धीरे अपने विवाह को नष्ट होते हुए देखेंगे। अभी

विवाह का निर्माण!

हाल ही में मैंने एक विवाह बारे में सुना जिसमें इतनी बड़ गई की पत्नी रात भर सो नहीं सकी। यह कड़वाहट से संक्रमित एक विवाह के कई लक्षणों में से केवल एक है। कई दूसरे और भी हैं। बार बार हम कड़वाहट से तबाह दम्पति को देखते हैं। यह दुख की बात है कि वे अपने जीवन में कड़वाहट के साथ सौदा करने से पहले उसके बारे में नहीं सोचते जब तक उनकी शादी टूटने के कगार पर नहीं आ जाती।

हर कोई यह जानता है कि यदि कड़वाहट के संक्रमण को वैवाहिक जीवन में अनुमति दी गई तो यह किसी के भी पूरे जीवन पर हावी हो सकती है। सभी प्रकार के शारीरिक लक्षण जिसमें तनाव से सम्बंधित बीमारियाँ और दर्द शामिल हैं, दिखाई देने लगते हैं, लेकिन यह सब यहीं पर समाप्त नहीं हो जाते। कड़वाहट रिशतों को नष्ट करने से शुरू होती है हलाकि यह इतनी बारीकी से शुरू होती है कि पता ही नहीं चलता। आँखे फेरना, अनुरोधों की अनदेखी, आसानी से चिढ़ जाना मजाक में नाम लेना, अपने साथी के प्रयासों की आलोचना, कमियों और भावनाओं का उपहास करना ये सब कड़वाहट के कारण रिशतों के टूटने के कुछ संभावित लक्षण हैं। बहुत से विवाह प्रेरितों कर सरल आदेशों का पालन नहीं करने के कारण नष्ट हो जाते हैं।

“सब प्रकार की कड़वाहट और प्रकोप और क्रोध, और कलह, और निन्दा सब बैरभाव समेत तुम से दूर की जा (इफिसियों 4:31)।

कड़वाहट को हमारे निजी जीवन में स्वीकार नहीं किया जाना चाहिए। यदि हम इसका इंकार करते हैं तो यह हमारे विवाह में प्लेग की तरह नहीं फैलेगा। कड़वाहट हमारे विवाह में ईश्वर प्रदत्त अच्छाई को नष्ट कर देता है। तो क्यों इतने सारे दम्पति उनके विवाह में कड़वाहट के कुछ अंश को स्वीकार कर लेते हैं? कुछ लोग अपने विवाह की परेशानी का सम्बन्ध कड़वाहट से है इसके बारे में कभी नहीं सोचते। दूसरे इसके बारे में मर जानते हैं लेकिन दूसरों को नष्ट करने के लिए प्रतिबद्ध रहते हैं चाहे इसके लिए उन्हें खुद भी दुःख क्यों न उठाना पड़े।

आगे हम चर्चा करेंगे कि कड़वाहट और क्रोध कितनी गहराई से विवाह को नुकसान पहुंचा सकते हैं तथा कड़वाहट को खत्म करने और विवाह के रिश्ते में मिठास लेने के लिए स्पष्ट कदम उठाने के लिए रूपरेखा तैयार करेंगे।

अ) कड़वाहट की जड़ को समझना

वैवाहिक कड़वाहट एक दम्पति में से किसी एक की नाराजगी या उसके खिलाफ हृदय में एक चिढ़ रखने से आती है। उदाहरण के लिए यदि पति अपनी पत्नी से कहता है कि "खाना बहुत अच्छा नहीं था "तो उसका इरादा इतना बुरा नहीं था जितना कि पत्नी उसे मान रही थी। लेकिन किसी भी मामले में पत्नी अपने पति की इस टिप्पणी से असंतुष्ट है।



वह सोचती है कि उसके पति के लिए यह कितना आसान है कि घर आते ही स्वादिष्ट भोजन की उम्मीद करे। अपनी इस कड़वाहट को खाना बनाते समय कुछ आवाज या इशारे से प्रकट कर सकती है यह उसका निजी फैसला है। उसकी आत्मा में लगा यह असंतोष सह है या गलत वह उसे प्रकट कर रही है।

कड़वाहट के बीज बोने के कई तरीके होते हैं। बजाय अपने पति से ईमानदारी से बात करने के कि उस टिप्पणी ने उसे कितनी चोट पहुंचाई वह उसे चुपचाप अपने हृदय में रख लेती है और पति के प्रति उसका व्यवहार ठंडा और उदासीन हो जाता है। इस तरह दम्पति के बीच दूरियां और गलतफ़हमी बढ़ती जाती है।

ऊपर के पद इफिसियो 4 :3 1 में हम देखते हैं कि कई भाई और रिश्तेदार हैं जैसे -क्रोध (यानि गुस्सा),कोलाहल(यानि शोर),बदनामी और द्वेष (यानि बुराई),कड़वाहट कई समस्याओं की जड़ है। एक कड़ुवा हृदय सभी बुराइयों से भरा होता है। क्रोध गुस्सा,,कोलाहल ,बदनामी,और द्वेष सभी असंतोष के द्वारा स्वयं ही व्यक्त होते हैं।

विवाह का निर्माण!

कड़वाहट स्वयं हृदय में नहीं रह सकती। यह सच है कि तूफान आने तक यह कड़वाहट एक लम्बी अवधि तक निष्क्रिय रह सकती है लेकिन यह आती है। इस बीच यह रिश्ते में जहर घोलती है।⁵³

हमें नफरत के इन सभी भावों को त्यागना चाहिए ,और उससे पूरी तरह छुटकारा पाना चाहिए। जब एक व्यक्ति एक पेड़ को दूर करना चाहता है तो वह सिर्फ शाखाओं को नहीं काटता है वह जड़ को भी निकलता है।

यदि जड़ों का सफाया नहीं किया गया तो शाखाएँ पहले की तुलना में मजबूत होकर वापस आ जाएँगी। वास्तविक समाधान सिर्फ क्रोध की अभिव्यक्ति से छुटकारा पाने में नहीं लेकिन बढ़ती और कड़वाहट की जड़ से निपटने में है जिससे वह बढ़ती है।

आइये देखते हैं कि कड़वाहट की बुराई आपके और मेरे जैसे सामान्य लोगों कैसे बढ़ती है।

कड़वाहट के विनाशकारी होने का कारण है कि वह मतलबी होने के लिए ,ठंडे ,गर्म स्वभाव या दूसरों को अप्रिय जानने के लिए औचित्य प्रदान करता है। कड़वाहट खुद को वैध बनाने के माध्यम से ही पोषित होता है। अधिकांश लोग यह जानते हैं कि दूसरों से नफरत करना गलत है। हमारी अंतरात्मा की आवाज हमसे कहती है कि दूसरों के लिए बुरा करना गलत है। यह दूसरों के प्रति हमारी नफरत की अभिव्यक्ति को सीमित करती है। यदि लोग किसी के प्रति उनकी नीचता को जारी रखते हैं तो उन्हें अपने विवेक के विरुद्ध निर्णय लेने की जरूरत है। अन्यथा यह अपराध होगा।

..वे इसके बारे में काफी बुरा (दोषी) महसूस करना शुरू कर देंगे। कड़वाहट हमें न केवल छोटा रास्ता अपनाने की अनुमति देता है लेकिन अपने विवेक को भी टाल कर दूसरों से बुराई करने के लिए प्रेरित करता है ,और इससे आत्मसंतुष्ट महसूस करता है।

⁵³ कृपया ध्यान दें कि कड़वाहट इसे हर प्रकार के रिश्तों में करता है। क्यों किशोर अपने माता-पिता के खिलाफ गुस्से में इतनी बार कर रहे हैं? देखिये असंतोष और कड़वाहट के लिये। हर रिश्ते में कड़वाहट को सुधारना अत्यावश्यक है।

#7 विवाह की कड़वाहट को क्षमा से बदलना

कड़वाहट यह कैसे करती है? कड़वाहट उसकी अंतरात्मा के द्वारा व्यक्ति को मूर्ख बनाती है। उसे केवल इस बात पर ध्यान केंद्रित करने की जरूरत है कि किसी ने हमें किस तरह नाराज किया ,और वह अपनी अन्तरात्मा की रक्षात्मक कार्यवाही से मुक्त हो जाता है। एक व्यक्ति के शरीर पर दवाओं या अल्कोहल का प्रभाव हो सकता है जो उसके तंत्रिका तंत्र को सुस्त करने में सक्षम है और नशे में देह ऐसी हरकत करती है जो वे कभी नहीं करते। कड़वाहट आत्मा की दवा है। यह लोगों को वे बुरी बातें करने की अनुमति देती है जिन्हे वे कभी खुद करने में सक्षम नहीं होते।



मुझे एक पूर्व पड़ोसी याद है ,उसमे बहुत अधिक कड़वाहट थी जिससे उसका विवाह और बच्चों के साथ उसके संबंधो को नष्ट कर दिया वह अपनी कार में एक बंदूक के साथ घूमता था और खुद को मरने के लिए यह पर्याप्त था। यह कड़वाहट कैसे काम करता है यह जानना महत्वपूर्ण है हालांकि यह शक्तिशाली है लेकिन प्रभु यीशु मसीह की कृपा का धन्यवाद कि इसे निष्क्रिय किया जा सकता है।

कड़वाहट लम्बे समय तक इस पर ध्यान केंद्रित करके काम करता है एक व्यक्ति अपने जीवन से कड़वाहट का जहरीला विष बाहर थूक सकता है जैसे कोई खट्टे नींबू को बाहर थूकता है। लेकिन लोग उसे पकड़े रहते हैं ,क्यों ?वे जो महसूस करते हैं एक छोटी सी गलत भावना के नियंत्रण में है। ज्यादातर मामलों में ये लोग इस बात से आश्वस्त रहते हैं ,कि वे न्याय करने के लिए परमेश्वर द्वारा नियुक्त लोग है। (दिखाया गया चित्र अपराध को पोषित करता है।

आत्म दया के माध्यम सभी वेअपनी अंतरात्मा की आवाज को सुनाने में असक्षम हैं और कड़वाहट का नीरस प्रभाव जारी रह कर और भी बदतर हो

विवाह का निर्माण!

जाता है जब वे विश्वास करते हैं कि वे अच्छा कर रहे हैं जब कि वास्तव में वे बुरा कर रहे होते हैं यह उनके न्याय की दोषपूर्ण भावना है जो उन्हें अंधा कर देती है।

एक विवाह में जब ऐसा होता है तब दोनों साथी एक दूसरे के खिलाफ हो जाते हैं। घृणा और दर्द वस्तुतः विवाह की एकता को समाप्त कर देते हैं। वे विवाहित हैं लेकिन वे दो विरोधियों के रूप में काम करते हैं। कड़वाहट धीरे धीरे इस विभाजन को स्थायी बनाती है। .आइये कड़वाहट की इस बुराई की कार्य शैली पर एक करीबी नज़र डाले

कड़वाहट के अंदर झाँकना

“और ध्यान से देखते रहो, ऐसा न हो, कि कोई परमेश्वर के अनुग्रह से वंचित रह जाए, या कोई कड़वी जड़ फूट कर कष्ट दे, और उसके द्वारा बहुत से लोग अशुद्ध हो जाएं” ।
(इब्रानियों 12:15)

धर्मशास्त्र कड़वाहट के अंदर की कई बातें प्रकट करते हैं। इब्रानियों 12:15 तीन बातें बताता है। उनमें से प्रत्येक पैर आगे चर्चा की जाएगी।

- **परमेश्वर की कृपा (कड़वाहट के निशान)**
- **कड़वाहट की जड़े (कड़वाहट की प्रकृति)**
- **अशुद्ध होना (कड़वाहट के परिणाम)**

1) परमेश्वर की कृपा (कड़वाहट के निशान)

लोग परमेश्वर के हो जाने का दावा करते हैं लेकिन अभी तक उनके जीवन में परमेश्वर की आशीष नहीं होती। यह उन कड़वे लोगों के लिए भी सच है जो मसीह को जानने का दावा करते हैं। इब्रानियों 12 :15 के अनुसार कुछ लोगों में परमेश्वर की कृपा की कमी होती है। कड़वे लोगों के अनुग्रह पर रोक लगी होती है ,इसलिए उन पर दया और कृपा भी नहीं होती। यीशु ने अपने पहाड़ी उपदेशों में स्पष्ट रूप से कहा और फिर यह निर्देश दिया कि किस तरह प्रार्थना करना है।

“ इसलिये यदि तुम मनुष्य के अपराध क्षमा करोगे, तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता भी तुम्हें क्षमा करेगा। और यदि तुम मनुष्यों के अपराध क्षमा न करोगे, तो तुम्हारा पिता भी तुम्हारे अपराध क्षमा न करेगा।। ” मत्ती 6 :14 -15

यीशु ने क्षमा के बारे में बहुत कुछ बताया क्यों की यह सुसमाचार के हृदय में रहता है। यीशु हमें उस व्यक्ति के बारे में बताते हैं जिसने अपने कर्जदार को माफ़ करने से मना कर दिया जब की राजा ने उसका बहुत बड़ा कर्ज पहले ही माफ़ कर दिया था। यदि हम अनुग्रह करने में रोक लगते हैं तो हम पर भी रोक लगाई जायेगी।

सोचिये जो कड़वाहट के जाल में फंस गए हैं क्या उन्हें अपने इंतकाम की भावना को रखने का अधिकार है। वास्तव में जब यीशु स्पष्ट रूप से बताते हैं कि वो लोग जो दूसरों को माफ़ करने से इंकार करते हैं वे बहुत बड़े खतरे में हैं। हम जानते हैं कि इस अनुच्छेद से बहुत से प्रश्न उठते हैं कि वाक्यांश "परमेश्वर की कृपा की लघुता" का क्या मतलब है। क्या इसका मतलब यह है कि एक मसीही अपना उद्धार खो सकता है? यीशु ने उनके न्याय का वर्णन बहुत स्पष्ट रूप से किया है। यीशु ने जो किया हम इसे वैसे ही छोड़ देते हैं। वे प्रकट करते हैं कि एक अक्षमाशील हृदय की बहुत ऊँची कीमत चुकानी पड़ेगी। बात बिलकुल सरल है किसी को भी अपनी आत्मा में कड़वाहट को रखने का अधिकार नहीं है। हमें हमेशा अपने साथी सहित हर किसी को माफ़ करना है।

परमेश्वर की कृपा को हम लम्बे समय तक बनाये रख सकते हैं यदि हम इसे वापस एक दूसरे पर भी बनाये रखे। एक अक्षमाशील आत्मा को हमारे शरीर में स्थापित करना उस तरह है जैसे मौत से जिंदगी को वापस लेने की अनुमति पाना। इसमें कोई शक नहीं है कि कड़वे लोगो का विवाह और जीवन पृथ्वी पर सबसे दुखद होता है। क्या एक बार आप अपने हृदय में यह निश्चित करेंगे कि आप हमेशा सभी को शीघ्रता से क्षमा करेंगे फिर इससे फर्क नहीं पड़ता कि कितना दर्द और अस्वीकार आप महसूस करेंगे। यह मसीह का तरीका है।

एक दूसरे को क्षमा करने का महत्व

मत्ती 18:23-35 यीशु की ओर से

इसलिये स्वर्ग का राज्य उस राजा के समान है, जिस ने अपने दासों से लेखा लेना चाहा। जब वह लेखा लेने लगा, तो एक जन उसके साम्हने लाया गया जो दस हजार तोड़े धारता था। जब कि चुकाने को उसके पास कुछ न था, तो उसके स्वामी ने कहा, कि यह और इस की पत्नी और लड़के बाले और जो कुछ इस का है सब बेचा जाए, और वह कर्ज चुका दिया जाए। “

2) कड़वाह की जड़े (कड़वाह की प्रकृति)

इब्रानियों 12:15 'मे कड़वाहट की जड़ का उल्लेख किया गया है'। इस जड़ के दो पहलू हैं।

सबसे पहले, शास्त्र हमें बताता है कि कड़वाहट किस तरह हमारी आत्मा को जकड़ता है। एक पौधे की प्रतिरोधक क्षमता उसकी जड़ों से आती है। यदि जड़ नहीं होगी तो पौधे को आसानी से उखाड़ा जा सकता है। लेकिन यदि वहां जड़ है तो स्पष्ट है की उस पर समय पर शाखाएं पत्तियां और फूल लगेंगे। एक व्यक्ति यदि कड़वा होता है तो उसके बुरे कार्यों द्वारा उसे मालूम होना चाहिए की अतीत में उसके द्वारा कुछ समय के लिए किये गए कार्यों की कड़वाहट के बीज उसकी आत्मा के भीतर कड़वाहट को उत्पन्न होने की अनुमति देते हैं।⁵⁴ कड़वाहट को खत्म करने के लिए उसके अतीत में क्या क्या हुआ इससे ठीक तरह से निपटना चाहिये।

दूसरा, हम देखते हैं की यह जड़ सभी प्रकार की शैतानी मुसीबतों को लाती है। मेरा मानना है कि ये उनके परिणामों (पूर्व में पेड़ के चित्रों को देखें) के साथ कड़वाहट की अभिव्यक्ति कर रहे हैं। कड़वाहट की अभिव्यक्ति जितनी अधिक होगी उसकी जड़े बढेंगी। कड़वाहट कभी अच्छे परिणाम नहीं लाती है। कभी न्याय नहीं होता। अनुग्रह कभी नहीं मिलता। विवाह नष्ट हो जाते हैं।

तीसरा, हम देखते हैं कि कुछ जड़ें दूसरों की तुलना में बड़ी और गहरी हो सकती हैं कड़वाहट की जड़ का पोषण इसे विकसित करने का कारण बनता है। यदि हम विवाह को बेहतर रखना चाहते हैं तो कड़वाहट को मार्ग नहीं देना चाहिए। अनुग्रह की भावना एक कड़वी भावना (चित्र देखें) के विपरीत होती है।

दूसरों के प्रति (यह सोचकर कि यह ठीक है) अपने असंतोष को जायज़ ठहराने के लिए हम कड़वाहट की जड़ को पोषित करते हैं।

⁵⁴ यहाँ पर एक सवाल है कि यह बीज वह क्या बाहर से आया है जो इसके हृदय में बोया गया है या फिर एक दुष्ट स्वभाव ने उत्पन्न किया है, परन्तु इसका परिणाम और इलाज एक ही है। यह एक दुष्ट स्वभाव है जो कड़वाहट को पोषित व बढ़ावा देता है। हम पूर्ण रीती से क्षमा व शांति अपने हृदय केवल यीशु मसीह के द्वारा ही पा सकते हैं।

#7 विवाह की कड़वाहट को क्षमा से बदलना

इसके बजाये हम अपने हृदय की कड़वाहट को कबूल करें, वह बढ़ती जाती है। यीशु कहते हैं की यह गलत है और हमें क्षमा करने की इच्छा शुरू करना चाहिये। इस तरह पूरी कड़वाहट को खत्म किया जा सकता है।



3) अशुद्ध होना (कड़वाहट के परिणाम)

शास्त्र का ऊपर दिया गया भाग अधिकारिक रूप से यह बताता है कि कड़वाहट से भरे हुए लोग अशुद्ध होते हैं और ज्यादातर मामलों में उनकी अशुद्धता दूसरों के जीवन में प्रभाव डालती है। यह स्पष्ट है कि यदि एक साथी कड़वा हो तो उससे दूसरा प्रभावित नहीं होगा ? वह कोलाहलपूर्ण उग्र शब्दों में बोलता है तो अंत में जलन की भावना आ जाती है। क्रोधित होने के द्वारा अप्रसन्नता ज़ाहिर होती है। क्रोध वह विस्फोटक है ज्वालामुखी के सामान फटता है। कड़वाहट आगे सभी प्रकार की परेशानी को प्रगट करता है और चीजों को बदतर बनाता है। जो इस तरह के कृत्यों के शिकार होते हैं वे लोग अक्सर खुद भी कड़वे हो जाते हैं।

एक व्यक्ति जिसे परमेश्वर दूसरों के लिए उनकी कृपा और दया का विस्तार करने के लिए उपयोग करता है उसके बजाये यह व्यक्ति शैतान और उसके शैतानी कामों का साधन बन जाता है। जो कोई कीचड़ में खेलता है वह मैला हो जाता है। जो मैले लोगों के साथ खेलते हैं वे भी मैले हो जाते हैं। कोई भी जो नफरत और घृणा के क्षेत्र में होता है वह अशुद्ध हो जायेगा। तलाक कड़वाहट का एक भयानक कारण है जो ना केवल साथी लेकिन बच्चों और दोस्तों को भी अशुद्ध करता है। बहुत सारे विषैले शब्दों का प्रयोग किया जाता है। यह दर्द स्पष्ट रूप से उन लोगों के जीवन में अधिक महत्वपूर्ण है जो इस कड़वाहट को अपने हृदय में आने की अनुमति देता है।

सारांश

आइये विवाह के दृष्टिकोण से हम इन बातों के बारे में सोचते हैं। लोग विवाह करते हैं एक प्यारे से रिश्ते के लिए और ऐसे रिश्ते से आनेवाले सब अच्छे परिणामों के लिए। जब कड़वा हट दम्पति के किसी एक के हृदय में स्थापित होती है तो उसका अन्त एक भयानक मुसीबत के साथ होता है। समस्याएं तब स्पष्ट होती हैं जब किसी एक की निराशा के कारण उनके गर्म और प्यारे रिश्ते में कठिनाइयाँ आ जाती हैं और वे इतनी भारी हो जाती हैं कि एक साथ जीना असहनीय हो जाता है।

बीज(अपराध) पहले लगाया जाता है। फिर जड़ें बढती हैं। यदि हम बीज को अंकुरित होने और जड़ पकड़ने की अनुमति देते हैं तो कड़वाहट का पौधा विकसित होगा और तेजी से हमारे जीवन के अन्य क्षेत्रों और हमारे आसपास के लोगों को नीचा दिखायेगा।

दूसरी ओर हम उस जड़ को उखाड़ सकते हैं। यदि हम सिर्फ छोटे मोटे अपराधों की अनदेखी करते हैं तो हम बीज के पनपने की संभावना खत्म कर देते हैं। ऐसे मामलों में हम यह भूल जाते हैं और असावधान हो जाते कि वह बीज जो लगाया गया था वह अभी भी जमीन में दबा है और धीरे धीरे जड़ पकड़ रहा है। परमेश्वर की कृपा से हमें इसे जड़ की खुदाई करके गन्दगी को दूर करके इसे बेनकाब करने की जरूरत है। यह तब हो सकता है जब हम यह स्वीकार करें कि हम ने कैसे प्रभु की प्रेम और माफ़ी के रास्ते का विरोध करना चाहिए। विशेष रूप से हमें द्वारा अपने कहे गए शब्दों, किये गए कार्यों और अपने व्यवहार पर ध्यान देना चाहिए। एक बार गंदगी को बाहर निकल देने पर जड़ को भी आसानी से बाहर निकाला जा सकता है। आइये देखें कि इसे कैसे करना है? इस बीच कड़वे बीज को पहले नहीं लगाया जाना चाहिए। हमेंशा अपराध से बचें और दूसरों के अपराधों को जान कर उन्हें माफ़ करें और अपराध करने से बचें।

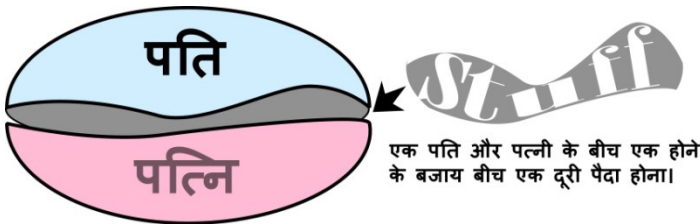
“और सब में श्रेष्ठ बात यह है कि एक दूसरे से अधिक प्रेम रखो; क्योंकि प्रेम अनेक पापों को ढांप देता है”। (1 पतरस 8:4)

जीवन के उपयोग: अपनी शादी में हमेंशा जल्दी से एक दूसरे को माफ़ करने का नियम बनायें

ब) कड़वाहट पर काबू पाने के सिद्धांत

जब हम कड़वाहट को खत्म करने पर चर्चा करते हैं तो हमें यह देखने की जरूरत है कि जड़ें मिटटी में कैसे मजबूत होती हैं। कई लोगों ने जड़ों को बहार खींचने का प्रयास किया लेकिन उन्हें कोई फायदा नहीं हुआ। एक घर के माली के रूप में मैं जानता हूँ कि खरपतवार को उखाड़ना कितना मुश्किल है जिन्हें विकसित होने की अनुमति दी गई है। आइये हमने जो सीखा है उसके मुख्य सिद्धांतों में कुछ पर नजर डालते हैं।

एक कड़वी जड़ एक बीज से बढ़ती है। बीज मूल अपराध है। अपराध एक घटना एक शब्द, एक टिप्पणी, एक चेहरे की अभिव्यक्ति या कुछ ऐसी बात जिसे गलत ढंग से किया गया हो। मुझे लगता है कि मैं उसे कभी माफ़ नहीं कर सकता। इस मुद्दे की जब तक पहचान न की गई हो यह पूरी तरह से बाहर नहीं निकला जा सकता। इस पौधे को अलग करके छोटा बनाया जा सकता है। मैं जड़ का हिस्सा हो भी सकता हूँ लेकिन उसका लगातार बढ़ना जारी रहेगा जब तक वह मिट नहीं जाती। इस अपमानजनक घटना की पहचान करने के लिए सबसे मुश्किल भागों में से एक है कि उस समय हमारे हृदय को महसूस होनेवाला दर्द बाहर आ सके। हमें फिर से इस दर्द और निराशा का सामना करने की जरूरत है ताकि हम ठीक समय पर इसका जवाब दे सकें।



- जड़ की ताकत इस पर निर्भर करती है कि कड़वाहट को कितना पोषित किया गया है। कड़वाहट बदला लेने के गुप्त आनंद से प्रेषित होती है। कड़वाहट की जड़ दूसरों को नुकसान पहुँचाने के लिए मेरे अधिकार का दावा है जो की एक दोषपूर्ण रक्षातर्क के द्वारा सुरक्षित है। जब तक यह दोनों स्थिर

रहते हैं तब तक जड़ को निकला नहीं जा सकता। जड़ को प्राप्त करने के क्रम में इन दोनों दोषपूर्ण तर्कों को उजागर किया जाना चाहिए। दोष को उजागर करने और सोच की इस पंक्ति को को नष्ट करने पर परमेश्वर अपराधबोध के माध्यम से हमारी अंतरात्मा में फिर से बात करना शुरू कर सकते हैं। बदले में वह मुझे फिर से सामान्य रूप से बहाल करना शुरू कर देता है। जब तक कड़वाहट हमारे हृदय में स्थापित रहती है हमें यह घमण्ड रहता कि जो अपराध हम कर रहे हैं उसकी हमारे जीवन में जरूरत है।

- कड़वे लोगों को समझाना मुश्किल है क्योंकि यह लगातार खुद को सही ठहराने और दूसरों पर आरोप लगाने के विचारों में फसे रहते हैं। सामान्य तौर पर सफलता तब तक नहीं मिलती जब तक चक्र नहीं टूटता। जड़ को गहराई से निकालना शुरू करने पहले से हमें यह जानने की जरूरत है कि शैतान किसी को विचारों के चक्र में कैसे उलझाता है। यह एक ढर्रे के समान है। जब हम चक्र के साथ चलने लगते हैं तो किसी भी अलग तरह से प्रतिक्रिया करना कठिन से कठिन हो जाता है। भले ही हम एक पल के लिए बाहर निकलने में सक्षम हों लें फिर से वापस फसना बहुत आसान है।
- परमेश्वर के वचनों का मेरे मन को भेदना बहुत जरूरी है जिस से मैं देख सकूँ कि वास्तव में मैं जो कर रहा हूँ यीशु उस की निंदा करते हैं। कड़वा होना हमेशा गलत है। मुझे यह स्वीकार करना जरूरी है कि यदि मैंने अपने आप को नहीं बदला तो मेरी शादी परिवार और रिश्तों के ऊपर गंभीर परिणाम होंगे। मुसीबतें एक व्यक्ति को सच दिखाने के लिए परमेश्वर का एक उपकरण है जिससे वह छल के जाल से मुक्त हो सके। वह हमें दिखाता है कि कड़वा होना कितना बुरा है। वह कड़वाहट को सहन करने के लिए हमारे निर्णय के साथ बुरे परिणाम को जोड़ देता है।

जड़ को बाहर खींचने में कठिनाई यह है कि वह कितना गुथा हुआ होता है कि उसे पहिचानना और उसे अलग करना मुश्किल है। आम तौर पर परमेश्वर संकट का उपयोग उपकरण की तरह करते हैं कि मुझे विनम्र करने और उसे उस बिंदु पर जहाँ कड़वाहट से निपटने के लिए मैं कितना तैयार हूँ। जब मैं माफ़ करने के लिए तैयार होता हूँ तो कड़वाहट की सारी जड़ से अवगत हो जाता हूँ और सुख शुरू होता है।

जब मैं माफ़ करता हूँ तो परमेश्वर भी मुझे माफ़ करते हैं आइये कुछ बुनयादी अवधारणाओं को देखें जो कि कड़वाहट से भरे हृदय को चंगा करने के लिए जरूरी हैं और वे किस तरह विवाह से संबंधित हैं।

1) यीशु हमें उदारता के साथ माफ़ करने के लिए कहते हैं

“तब पतरस ने पास आकर, उस से कहा, हे प्रभु, यदि मेरा भाई अपराध करता रहे, तो मैं कितनी बार उसे क्षमा करूँ, क्या सात बार तक? 22 यीशु ने उस से कहा, मैं तुझ से यह नहीं कहता, कि सात बार, वरन सात बार के सत्तर गुने तक।” (मत्ती 18 -21: 22)

हमें हर किसी को हर समय माफ़ करना चाहिए। यीशु ने यह बातें उपरोक्त कहानी में उस आदमी के द्वारा माफ़ नहीं करने को दर्शाने के लिए कही।

लोग अपनी कमजोरियों के कारण अक्सर दूसरे को माफ़ नहीं करने के लिए परिस्थितियों का बहाना ढूढने की कोशिश करते हैं। यहाँ परमेश्वर की ऐसी कोई भी आज्ञा नहीं है जो माफ़ी के हर संभव अवसर को निगल जाये। मैं उदारता पूर्वक प्यार के साथ लोगों का इलाज करता हूँ और मैं इस नीति को मानता हूँ। इसमें अगर सामान्य प्यार पर्याप्त नहीं है तो मुझे एक और कदम उठाने की जरूरत है मैंने जानबूझ कर अपने हृदय में उस व्यक्ति को माफ़ कर दिया। इसे कैसे करना है इस बारे में हम बाद में बात करेंगे। परमेश्वर के राज्य का राजदूत होने के नाते हमें यह अधिकार है कि हम उसकी दया और प्यार को दुनिया के लोगो में बाँटें।

“अर्थात् परमेश्वर ने मसीह में होकर अपने साथ संसार का मेल मिलाप कर लिया, और उन के अपराधों का दोष उन पर नहीं लगाया और उस ने मेल मिलाप का वचन हमें सौंप दिया है। (2कुरंथियों 5:19 -20)

माफ़ी का मतलब यह नहीं है कि किसी ने कुछ गलत नहीं किया। आम तौर पर इसका मतलब है उन्होंने किया! अंतर इतना है कि तुम्हें यीशु की आज्ञा अनुसार वह नैतिक कर्ज नहीं रखना है। हमें माफ़ करना है क्योंकि परमेश्वर ने हमें माफ़ किया है। एक दूसरे को क्षमा करके आप परमेश्वर के पवित्र अनुग्रह को अपने जीवन में कम करने की अनुमति पा लेते हैं। यहाँ हम विवाह की गंभीर कड़वाहट और असंतोष की समस्याओ को दूर करने के लिए वास्तविक रूप से उम्मीद कर सकते हैं।

विवाह का निर्माण!

विवाह: पति और पत्नी को लगातार हर गलत काम या सोचे हुए काम के लिए एक दुसरे को माफ़ करना चाहिए। यहाँ तक कि एक ऐसी एक भी स्थिति या परिस्थिति नहीं होना चाहिए जब आप अपने साथी को माफ़ न करें। जब आप शादी करते हैं तो यह बुद्धिमानी है कि आप उस दिन कुछ आपत्तिजनक बात न कहें इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि उस पल में आप का साथी आपके प्यार को कितना समझ रहा है। आप यह फैसला करें कि आप का साथी कितना भी कठोर मतलबी या स्वार्थी हो आप उसे माफ़ कर देंगे क्योंकि मसीह में आप की बहुत खराब बातों को भी माफ़ किया है। अपने अतीत के सभी विवादों को जिन्हें माफ़ नहीं किया गया उसके लिए कदम उठाएँ। वर्तमान में जिन बातों को माफ़ करने की जरूरत है उन्हें माफ़ किया जाना चाहिए। परमेश्वर के सामने आप यह वचन दे कि भविष्य में आप हर किसी को सब बातों के लिए माफ़ करेंगे।

2) शास्त्रों के अनुसार बदला लेना सिर्फ परमेश्वर का अधिकार है।

“हे प्रियो अपना पलटा न लेना; परन्तु क्रोध को अवसर दो, क्योंकि लिखा है, पलटा लेना मेरा काम है, प्रभु कहता है मैं ही बदला दूंगा। (रोमियों 12 :19)

जब मनुष्य न्याय करने का प्रयास करता है तब उससे केवल आगे नाराजगी ही उत्पन्न होती है। व्यक्तिगत प्रतिशोध परमेश्वर के फैसले से बहुत दूर है परमेश्वर हमें उन लोगों को त्यागने को कहते हैं जिन्होंने हमें अपमानित किया है। परमेश्वर स्वयं हमारा उचित न्याय करेंगे। केवल वही न्यायधीश हैं जो की उपयुक्त समय पर सही निर्णय करेंगे। किसी व्यक्ति द्वारा मेरे विरुद्ध किये गलत कार्य का बदला लेने का कोई अधिकार नहीं है। “बुराई के बदले किसी से बुराई न करो;” (रोमियों 12 : 17)

हम यह नहीं कहते की वह आदमी न्याय का अधिकारी नहीं है लेकिन हम भी इस काम के लिए पृथ्वी पर नहीं है। इसके बजाय हमारा दायित्व यह है की हम दूसरों को प्यार करें और उन्हें परमेश्वर के अनुग्रह के बारे में बताएं। हमें अपने काम पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए। वास्तव में यह कहीं अधिक गौरवशाली है?

विवाह :हम शादी में एक हैं। यदि हम अपने जीवनसाथी को परखते हैं तो हम अपने जीवन साथी को अपना दुश्मन बनाते हैं। कई बार हमारे साथ या परमेश्वर के न्याय के योग्य होता है। यह सच है। लेकिन न्याय का मतलब है अनुग्रह का समय

समाप्त हो गया है उसके बजाय हमें परमेश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए कि वह हमारे साथी पर अनुग्रह करें। मैं पति या पत्नी के रूप में मेरे साथी की ओर से परमेश्वर के अनुग्रह के लिए उससे वकालत करने के लिए सबसे उपयुक्त व्यक्ति हूं। एक क्षमाशील आत्मा की प्रार्थना को दूसरे की रक्षा करने का विशेषाधिकार है। प्रतिशोध सही तरीका नहीं है। यीशु मसीह बदला लेने से इंकार करते हैं, इसलिए हमें वहीं करना चाहिए” (यूहन्ना 3:17)

3) परमेश्वर ने हमें क्षमा और प्रेम सिखाया है और सभी तरह की घृणा और अपमान से दूर रहने को कहा है

“इसलिये परमेश्वर के चुने हुए लोगों की नाईं जो पवित्र और प्रिय हैं, बड़ी करुणा, और भलाई, और दीनता, और नम्रता, और सहनशीलता धारण करो। और यदि किसी को किसी पर दोष देने को कोई कारण हो, तो एक दूसरे की सह लो, और एक दूसरे के अपराध क्षमा करो: जैसे प्रभु ने तुम्हारे अपराध क्षमा किए, वैसे ही तुम भी करो।” (कुलुस्सियों 3:12-13)

“पर अब तुम भी इन सब को अर्थात् क्रोध, रोष, बैरभाव, निन्दा, और मुंह से गालियां बकना ये सब बातें छोड़ दो।” (कुलुस्सियों 3:8)

हमें एक पल के लिए भी नफरत को गले नहीं लगाना चाहिए। हम परमेश्वर के लोग हैं और उसके अनुग्रह के लिए पैदा हुए हैं। मैं प्रतिक्रियाएं हममें मसीह को नहीं दिखाती हैं। मसीह हमारे द्वारा काम करते हैं। हमें अनुग्रह के विस्तार पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। हमें माफ कर दिया गया है इसलिए हमें भी माफ कर देना चाहिए।

विवाह :- विवाह हमें परमेश्वर के प्यार और अनुग्रह को दिखाने के लिए बहुत से अवसर देता है जिसमें हम स्वर्ग में हमारे पिता की तरह होने के लिए प्रशिक्षित होते हैं। प्रत्येक दिन हम प्रभु से मिलते एवं सभी लोगों के लिए जिनमें पति भी शामिल है प्यार और दया मांगते हैं। फिर हम उनके प्यार को दिनभर बाटेंगे।

4) उत्पीड़न के मुश्किल समय में हमें परमेश्वर पर विश्वास करना चाहिए

“धन्य हैं वे, जो धर्म के कारण सताए जाते हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है। धन्य हो तुम, जब मनुष्य मेरे कारण तुम्हारी निन्दा करें, और सताएं और झूठ बोल बोलकर तुम्हारे विरोध में सब प्रकार की बुरी बात कहें। आनन्दित और मगन होना क्योंकि तुम्हारे लिये स्वर्ग

विवाह का निर्माण!

में बड़ा फल है इसलिये कि उन्होंने उन भविष्यद्वक्ताओं को जो तुम से पहिले थे इसी रीति से सताया था”। (मत्ती 5:10-12))

हम कभी-कभी दूसरों के प्रति हमारी नीतियों में परिवर्तन करने की कोशिश करते हैं तो, वह हमसे दुर्व्यवहार करते हैं। सत्य यह है कि हम से आशा की जाती है कि हम प्यार करें यह परमेश्वर की आज्ञा है कि। हम सभी को एक दूसरे को प्यार देना है। जब एक मतलबी और कड़वे हृदय के माध्यम से इस पर रोक लगाई गई हो तो परमेश्वर अपने समय पर उसका न्याय करेंगे। यीशु ने हलाकि हमें उत्पीड़न के बारे में सोचने के लिए दुनिया से पूरी तरह अलग एक रास्ता दिखाया है। उन्होंने कहा कि यह आनंद लेने के लिए एक अलग परिस्थिति है। हम अपने आसपास के लोग जो हमसे नफरत करते हैं उनके चारों और बुराई के उद्देश्यों को बदल सकते हैं।

हम सेवा के लिए एक अवसर बना सकते हैं। बजाए कड़वा होने के हम परमेश्वर के अनुग्रह को वापस धारण करें और हम जानबूझकर उस व्यक्ति को माफ़ कर दे और उस व्यक्ति से प्यार करने के लिए परमेश्वर का अनुग्रह प्राप्त करें। यह अपने साथी की कठोरता को तोड़ने का हमारे पास सबसे मजबूत हथियार है। रोमियों 12 :20 -21 में हम से कहा गया है कि कड़वाहट का उत्तर हम प्यार की प्रतिक्रियाओ से देने के लिए हमें अपने विवेक को विवेक को पूरी तरह से काम करने की अनुमति देना चाहिए।”

“परन्तु यदि तेरा बैरी भूखा हो तो उसे खाना खिला; यदि प्यासा हो, तो उसे पानी पिला; क्योंकि ऐसा करने से तू उसके सिर पर आग के अंगारों का ढेर लगाएगा। बुराई से न हारो परन्तु भलाई से बुराई का जीत लो”। (रोमियों: 12:20-21)

विवाह :जब हमारे साथी का व्यवहार हमारी प्रति बदल जाता है तब भी परमेश्वर ने हमें स्पष्ट योजना दी है :-

1) सबसे पहले हमें माफ़ करना है।केवल क्षमा करके ही हम अगले कदम उठा सकते हैं।

2) वह वास्तव में इसके लायक नहीं है, हमें प्यार से अपने साथी का इलाज करना है। जब एक पति अपनी पत्नी के साथ आपा खो देता है ,तो हम सब जानते हैं कि पति किसी भी दया के लायक नहीं है।लेकिन अपनी दया को कायम

रखते हुए शायद बहुत अच्छा भोजन बनाने के द्वारा एक मतलबी पति को बदलने का हमारे पास एक ही मौका हो।

3) बहुत कठिन परिस्थितियों में प्यार दिखाने के इस अवसर के लिए मैं आनंदित हूँ। क्यों? प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया है कि हर कोई जानता है कि प्यार में इस तरह की हल्का करने वाली परिस्थितियां परमेश्वर की ओर से हैं। यह हमारे रहने वाले कमरे या शयन कक्ष में होने वाले आधुनिक चमत्कार हैं।

परमेश्वर की सच्चाई हमें दुश्मन की सबसे बड़ी योजना को नष्ट करने के लिए जरूरी हथियारों को प्रदान करता है। कड़वाहट कोई अपवाद नहीं है। कड़वाहट की गहरी जड़ों को परमेश्वर की सच्चाई के द्वारा है लोगों के जीवन से बाहर खींच निकाल सकते हैं। यह लोग सिर्फ वैसे नहीं रहेंगे। शैतान का कड़वाहट के साथ उनके दिमाग पर प्रभुत्व था ,लेकिन वह ऊपर उल्लेखित परमेश्वर की सच्चाई के द्वारा स्वतंत्र हो गए हैं। हालांकि ,हमें यह सच पता है कि हमें कड़वाहट की जड़ को नष्ट करने के लिए काम करने की जरूरत है। हमारे पास युद्ध के उपकरण गोला बारूद है। अब इसे हमारे जीवन में लागू करने की जरूरत है।

स) एक कड़वे हृदय को समाप्त करने के लिए कदम

निम्नलिखित विचार हमारे जीवन से कड़वाहट को दूर करने के लिए अच्छे हैं साथ ही इसके गढ़ की नींव हटाने के लिए भी अच्छे हैं। आपने देखा कि कैसे हम कड़वाहट की जड़ को नष्ट करते हैं। कैसे हम परमेश्वर के वचनों को हर कदम पर कड़वाहट के पीछे की गलत सोच को दूर करने के लिए लागू करते हैं। जैसे हम सावधानी से परमेश्वर की सच्चाई को लोगों के विवेक में डालते हैं। आगे लोगों को परमेश्वर की आत्मा दोषी ठाराएगी। वे अभी भी घमंडी हो सकते हैं लेकिन यदि हम प्रार्थना करेंगे तो हम देखेंगे कि परमेश्वर मेल मिलाप के लिए दरवाजे खोलेंगे।

हम एक दम्पति को ध्यान में रख कर इस मुद्दे संबोधित करेंगे। आइये दो स्थितियों पर विचार करेंगे (1).कड़वाहट के हल्के मामले (2)कड़वाहट के चरम मामले

कड़वाहट के हल्के मामले

सबसे पहले याद कीजिये कि कड़वाहट के बीज को पहले से ही लगाया गया है और जड़ें भी निकलना शुरू हो गयी हैं। हम यह नहीं कह रहे कि इस दंपति के लिए बड़ा खतरा संचित नहीं है। सत्य यह है कि यदि वे इस छोटी सी जड़ को नहीं निकालते हैं तो वह आसानी से एक मजबूत पेड़ बन सकती है इसके लिए इब्रानियों 12:15 हमें क्या चेतावनी देता है यह हमें याद रखना है कि जितना हम कड़वाहट को स्वीकार करते हैं उतना ही अंश हम प्यार जताने में असफल होंगे। विवाह के प्यार और जोश में बहुत जल्दी गिरावट आ जाएगी।

यहाँ केवल एक फायदा है कि इस व्यक्ति का मन झूठ से पूरी तरह अवरूद्ध नहीं होने के कारण अभी भी सोचा जा सकता है। दूसरे शब्दों में दम्पति में अभी भी सामान्य बातचीत हो सकती है झूठ का चक्र केवल दिमाग की घुसपेठ का भाग है। इस मामले में हमें कड़वाहट के बीज को खोजने की जरूरत है एक प्रतिक्रिया का कारण एक छोटी सी नाराजगी होती है। नाराजगी बहुत आसानी से हो सकती है भले ही हमें लगता है कि हमने कोई भी गलती नहीं की फिर भी कड़वाहट हमारे साथी में विकसित हो सकती है कड़वाहट को कभी कभी एक गलत मकसद से स्थापित किया जा सकता है मैं सोचता हूँ कि जब उसने वह काम किया.... तब वास्तव में उसका इरादा निर्दोष होगा। अतः हमें हमेशा एक पुलिस के रूप में अतिरिक्त कार्य करना चाहिए।

जब हम अपने साथी की उदासीनता पर ध्यान देते हैं, तो हमें क्या हो रहा है इस पर विचार करने की जरूरत है। हमें पहले ही अच्छी तरह से उस बीज को बाहर निकालने की जरूरत है इसके पहले कि वह जड़े जमा ले। यदि एक बार जड़े अपनी जगह बना ले तो उन्हें दूर करना और अधिक कठिन हो जाता है। यदि हम जल्दी से जल्दी इसकी देखभाल नहीं करते हैं तो यह हमारे साथी को उदासीनता या बहुत अधिक क्रोध की भावना को व्यक्त करने की अनुमति देता है और यह उसकी नाराजगी जानने का सबसे अच्छा तरीका है। सावधान रहे !...जैसे ही कड़वाहट का बीज प्रत्यारोपित किया जाता है वह अपनी जड़ों को फैलाना शुरू कर देता है।

मुझे क्या करना चाहिए जब मुझे यह महसूस हो कि मेरे साथी व्यद्वार रूखा हो रहा है और वह अलग रहता है?

आपने कुछ गलत किया है यह जांचे

सबसे पहले प्रार्थना करे और परमेश्वर से पूछे कि यदि अपने कुछ गलत किया है तो उसके बारे में संकेत करे। इस बात पर बारीकी से ध्यान दे कि वे आपके दिमाग में क्या कहते हैं। फिर आप धीरे से अपने साथी से पूछ सकते हैं कि अपने उसे नाराज करने के लिए क्या किया ?मैं उस काम के बारे में बाद में सोचना पसंद करता हूँ लेकिन इसकी तुलना में मेरे लिए अपने अभिमान को सही करना अधिक जरूरी है। यदि मैं पहले ही परमेश्वर के प्रति पहले ही संवेदनशील होता तो शायद मैं इस नाराजगी कारण नहीं होता। लेकिन समस्या कड़वाहट में बदल जाये इसे रोकना बहुत जरूरी है। मैं अभी भी इसे तरीके से हल करना चाहता हूँ

सोने से पहले इसे हल करने का संकल्प करे

क्रोध तो करो, पर पाप मत करो: सूर्य अस्त होने तक तुम्हारा क्रोध न रहे। और न शैतान को अवसर दो। (इफिसियों 4:26-27)

शास्त्रों में काफी स्पष्ट है। गुस्सा ,जो एक सामान्य और अच्छी भावना है ,यदि इसे तुरंत हल नहीं किया गया तो यह कड़वाहट में बदल सकता है। हमें अपने गुस्से को सूरज डूबने तक नहीं रखना चाहिए। हमें किसी भी क्रोध को उसी दिन हल करना चाहिए। क्रोध हमें कुछ भी करने के लिए प्रेरित करता है। यदि हम उस व्यक्ति से भिड़ने के द्वारा समस्या को हल करने में करते हैं तो कड़वाहट जड़ पकड़ लेती है फिर क्रोध जिसे समय पर अन्कुशित करने का मेरा इरादा वास्तव ममेरे खिलाफ एक हथियार बन जाता है। हम अपने गुस्से और क्रोध का उपयोग जोर से चिल्ला कर अपने साथी को फिर से घायल कर सकते हैं।

मैं और मेरी पत्नि एक ही समय पर बिस्तर पर जाते हैं। हम सोने से पहले कुछ बहुत अच्छी बातें करते हैं। सामान्य निवेदन और दयालुता की कमी को हम आसानी से समझ सकते हैं। यह दुसरे के सवाल के जवाब में ठंडा या रूखा जवाब हो सकता है। कभी कभी हम कुछ सही नहीं है ऐसा महसूस करते हैं। यदि पति और पत्नि दोनों सोने से पहले मामलों को हल करने का संकल्प कर ले तो यह सुलह के लिए एक ठोस निर्णय है। मुझे याद है कि मैंने कई अवसरों पर देर रात की प्रार्थना में हमारे रिश्ते की चंगाई की प्रार्थना की।

परमेश्वर हमें बताते हैं कि अपनी नाराजगी को रात भर उमड़ने की अनुमति देने से कड़वाहट की जड़े पहले ही बढ़ने लगती हैं।

क्या अदभुत वृद्धि है? जब हम पाप करते हैं तो शैतान को अपने दिमाग से खेलने का अवसर देते हैं। पाप परमेश्वर और उसकी सच्चाई के प्रति हमारी संवेदनशीलता को बंद कर देता है। जब तक इस पाप का समाधान नहीं होता हम शैतान को रास्ता देते हैं। वह चालाकी से हमारे लालच को आधार बनाकर अंदर आ जाता है और हमारे विवाह को नष्ट कर देता है

पूछने की प्रतीक्षा करने से पहले माफ कर दो

माफी के लिए अपने साथी से पूछने का इंतजार मत करो। बस उसे माफ कर दो। कुछ व्यक्तियों ने ही मुझसे नहीं पूछा कि उन्हें किसी को माफ कर देना चाहिए। यीशु ने कहा हमें इसकी जरूरत है। यदि अपराधी माफी के लिए पूछता है तो यह बहुत अच्छी और अधिक पूर्ण प्रक्रिया है वह भले ही ना पूछो किंतु हमें माफ कर देना चाहिए।

कई मसीही एक अपराध को लंबे समय के लिए उनके हृदय में रहने की अनुमति देते हैं। यह हर बार होता है कि उस व्यक्ति के साथ हमारे रिश्ते में खटास आ जाती है। यदि हमारा साथ प्यार के नियम के अनुसार नहीं चलता है तो हमें उसे बस खारिज कर देना चाहिए। यदि हम ऐसा नहीं करते हैं तो हमें टकराव माफी और क्षमा की प्रक्रिया से गुजरना होगा। यदि हमारा साथी माफी मांगने के लिए नहीं पूछता है तो भी हमें उसे हृदय से माफ कर देना चाहिए जबतक उसमें घमंड हो, हमें यह कहने की जरूरत नहीं है कि "मैंने माफ किया"। फिर भी हमें हमारे प्रभु को बताना चाहिए कि हमने उन्हें माफ कर दिया है। जब हम अपने हृदय में यह करते हैं तो वस्तुतः हम अपने साथी के प्रति अपने प्यार का इजहार करने की कोशिश करते हैं। हम हमेशा उस व्यक्ति पर आशीर्वाद की एक प्रार्थना के साथ अपनी माफी की मोहर लगाते हैं।

मैं कैसे माफी के लिए नहीं पूछने पर किसी को माफ कर सकता हूँ

क्षमा एक तकनीकी शब्द है शायद हम इसे कर्ज के संदर्भ में बेहतर समझ सकते हैं यदि किसी पर आपका दस डॉलर बकाया है तो वह सका वापस भुगतान करने के

लिए नीतिक रूप से बाध्य है। हालांकि यदि आप यह चुनते हैं ,तो आप उसका कर्ज माफ़ कर सकते हैं। अब उस व्यक्ति को आपको कुछ नहीं देना होगा। अब आपके खाते में 10 डालर है। आपने माफ़ करने के लिए क्या किया? आपने स्वयं कर्ज वहन करना चुना और उसे कर्ज चुकाने के दायित्व से मुक्त किया। अधिकतर मामलों में आप भुगतान की मांग नहीं करेंगे। आपने कर्ज माफ़ कर दिया है। यही बात एक आध्यात्मिक कर्ज की माफ़ी में भी होती है। एक पति को गाड़ी चलाते समय अशिष्टता से बात नहीं करना चाहिए लेकिन वह अपनी पत्नी पर गुर्गता है। प्रेम का आध्यात्मिक नियम टूटता है। वह उसका कर्जदार है (वास्तव में उसकी दया का)

उसके हृदय पर काम करने के लिए परमेश्वर की आत्मा को दस घंटे लग सकते हैं। क्या उसे अपनी नाराजगी का पूरे समय पोषण करना चाहिए? बिलकुल नहीं! अन्यथा उसे एक ख़राब प्रतिक्रिया मिलेगी और स्वयं पाप करेगी उसे माफ़ करने की आज्ञा दी गयी है।

बजाय इसके उसे अपने हृदय में परमेश्वर से कहना चाहिए कि उसने अपने पति के आत्मिक कर्ज को माफ़ कर दिया है उसने स्वयं कर्ज को वहन करना चुना और पति को उसके दायित्व से मुक्त किया। फिर आध्यात्मिक कर्ज सिर्फ 10 डालर की तरह चला गया। उसका हृदय साथी के प्यार का इजहार करने के लिए स्वतंत्र है।

परमेश्वर हमारे साथी की ताड़ना का फैसला कर सकते हैं। लेकिन वह उसकी जिम्मेदारी है। भले ही हमने उसे माफ़ कर दिया है लेकिन वह अभी भी अपने पाप के लिए परमेश्वर के सामने जिम्मेदार है। इस कारण हमें दो बार क्षमा याचना करने की जरूरत है जब हम किसी व्यक्ति के खिलाफ पाप करते हैं ,पहले परमेश्वर से फिर उस व्यक्ति से।

एक परिपक्व मसीही होने के नाते वह स्वाभाविक रूप से हर समय अपने आसपास के लोगों को माफ़ कर देगे। यह अचेतन मन के आध्यात्मिक अनुशासन के कारण और अधिक हो जायेगा।वह बजाय इस बात पर ध्यान केन्द्रित करने के कि लोग उसे क्या देते हैं ,वह मसीह के उस महान ऋण को याद करेगा जब मसीह ने उसे माफ़ करके किया।

शिष्टता से सामना करना

जब तक किसी दंपति को इस समस्या की गंभीरता का पता न हो ,तब तक इसे लागू करना मुश्किल है। अधिकतर मामलों में अपराधी जिसने गलत काम किया है बचाव की मुद्रा में होते हैं। नाराज व्यक्ति यह सोचता है कि उसे नाराज होने का अधिकार है। तो इस मुद्दे को कौन उठाएगा? जिसने भी समस्या पर पहले ध्यान दिया। यह कैसर की तरह है जितना जल्दी पता चले हल उतनी आसानी से होगा। अधिक संभावना यह है कि नाराज साथी इस मुद्दे को नहीं उठेगा। हमें सामना होने पर सावधान रहने की जरूरत है इस प्रक्रिया के लम्बे रास्ते में प्रार्थना और विनम्रता मदद करेगी।

“तुमने किया “यह कह कर कभी आरम्भ नहीं करे। यदि आप नाराज हैं तो....यह कह कर शुरू कर”आपके द्वारा इस दोपहर के खानेके बारे में कहें शब्दों से वास्तव में मुझे बुरा लगा। मैंने इसे अपने दिमाग से निकलने की बहुत कोशिश की ,लेकिन वास्तव ने इसने मुझे परेशान किया यदि आप अपराधी है और देख रहे हैं कि आपसे दूरी बनाना चाह रहा है तो आप मुद्दे को इस तरह रखे।” मैं जानता हूँ, कि इस दोपहर मैंने तुमसे अशिष्टता से बात की ,क्या हम इस के बारे में थोड़ी से बात कर सकते हैं? मैं इस बात को माफ़ी मांग शुरू करता हूँ जो मैंने कहा....”

हमें रिश्तों को सुधारने की कोशिश करने के लिए बहुत लम्बा इंतजार नहीं करना चाहिये। सारी बातों को भूल जाना चाहिए। अन्य बातों से आप विचलित हो सकते हैं। हमें इस स्थिति में तुरंत प्रतिक्रिया नहीं करनी चाहिए नहीं तो हम रक्षात्मक हो जायेंगे।” जो प्यार में सच बोलते हैं “उनका यहाँ बहुत महत्व है। हमें यह भी याद रखना चाहिए कि इस स्थिति में सामना होने पर हमें दूसरे पर आरोप नहीं लगाना है बल्कि समस्या पर उत्साहजनक बातचीत करना है। जहाँ हमने गलती की है वहाँ माफ़ी मांगने के लिए तैयार रहना है।

यदि मैं यह देखता हूँ ,कि मेरी पत्नी मुझसे पहले की तुलना में अधिक शांत या ठंडा व्यवहार कर रही है तो मैंने किसी भी तरह से उसे नाराज किया है। मुझे नाराजगी वाली घटना या रवैया क्या है जानना चाहिए या नहीं। कभी कभी मुझे लगता है कि मैं इसे जानता हूँ ,लेकिन मुझे महसूस होता है कि वो मुझे गलत समझती है। यह वास्तव में बड़ी बात नहीं है। मैं गलत हो सकता हूँ। मैं रक्षात्मक

नही होऊंगा। यदि मैं गलत पाया जाता हूँ तो मैं माफ़ी मांगूंगा। हमारा सम्बन्ध अधिक महत्वपूर्ण है। मेरा घमंड दूर होना चाहिए। मैं उससे यह पूछ कर सुलह करूँगा "क्या कुछ गलत है"। शायद मैं कह सकता हूँ "मैंने देखा है ,कि तुम चुप हो क्या मैंने ऐसा कुछ किया है जो तुम्हे बुरा लगा? पत्नी कह सकती है "अपने हाल ही में अधिक बात नही की ,क्या मैंने किसी तरह आपको असंतुष्ट किया?

किसी भी मामले में हमें एक दूसरे की देखभाल और हमारे रिश्ते की एकता के संरक्षण के लिए समर्पित होना चाहिए।

कृपया चर्चा करें

हमें सकारात्मक बातचीत को बढ़ावा देने की जरूरत है। हम क्या सोचते हैं, हमने क्या किया ,और इस के बारे में चर्चा करे ,कि वास्तव में हमने क्या किया था। हमें सावधान रहना चाहिए कि हम एक दूसरे पर आरोप न लगाये। एक व्यक्ति को आश्चर्य हो सकता है यदि वह इस पर बात करने लायक है। "यह बेहतर नहीं है कि अभी इसके बारे में भूल जाये "यदि हमारा साथी नाराज है तो हमें उसके साथ बात करने की जरूरत है।

यदि एक दम्पति नियमित रूप से बहस करता है,तो फिर शायद पहले से ही अन्य कई अनसुलझे मुद्दों के कारण उनके हृदय में असंतोष संग्रहित हो ऐसे हालात में आसानी से संघर्ष शुरू हो जाता है। आरोप लगाने से इंकार करे। एक सच्चे दोस्त बने। तुम्हे अपने आप को सही दिखाने की कोशिश नही करना है लेकिन एक दूसरे के साथ शांति बनाये रखे। दोनों पक्षों को मुद्दे पर अपनी बात रखने का पर्याप्त समय मिलना चाहिए। याद रखे कि आप उस कांटे को देख रहे है जो नाराजगी का कारण है। यदि देख लेते है तो आप अगले कदम की ओर जा सकते है।

समय दे

हमें अपने साथी को फंसना नही चाहिए। परमेश्वर की आत्मा हमें पाप के लिए दोषी ठहराती है। हमें उनका काम लेने की जरूरत नही है। हमें केवल समस्या को लाना है जिससे वह अंकुरित न होने और धीरे धीरे आगे बढ़ने नही देगा। फिर हमें जितना संभव हो उतना बात करने की कोशिश करना चाहिए,फिर प्रार्थना करना चाहिए। जब एक व्यक्ति बचाव की मुद्रा में आने लगता है तो हमें अपनी बातचीत

की दिशा बदलना चाहिए या वापस बात पर आना चाहिए(उम्मीद है उसी दिन)। कुछ समय में पूरी तरह से मुद्दों पर चर्चा करने के बाद, मेरा सुझाव है कि “तुम नहीं सोचते कि तुम्हें माफ़ी मांगना चाहिए। इस समय वह सकारात्मक प्रतिक्रिया व्यक्त करेगी।

कबूलना और माफ़ करना

जब एक व्यक्ति कुछ गलत करता या कहता है तो पहले उसे किये गलत काम के लिए क्षमा याचना करना चाहिए और फिर क्षमा करने के लिए कहना चाहिए। उदाहरण के लिए” मैंने दोपहर के भोजन पर आपसे बेरुखी से बोलने के लिए माफ़ी चाहता हूँ यह अनुचित था। कृपया मुझे माफ़ कर दो”। बेशक हमें परमेश्वर से भी माफ़ी के लिए कहने की जरूरत है। यदि दोनों साथियों ने गलत किया है तो पति को पहल करना चाहिए यदि एक साथी जिद्दी है तो जो विनम्र है उसे शुरू करना चाहिए।

जब दोनों ने गलत किया हो और यदि केवल एक ही साथी माफ़ी मांगता है तो क्या होगा? उस समय मूर्खतावश हम जिद्दी हो जाते हैं। जहाँ तक हो सके जल्दी करे। जो व्यक्ति पहले माफ़ी मांगता है वह परमेश्वर को आनन्दित और उस भाग को स्पष्ट करता है उसका हृदय साफ़ है। अब उसे अपने साथी के लिए प्रार्थना शुरू करना चाहिए। सावधान रहे जब आप प्रार्थना शुरू करते हैं ,उस समय आपका साथी आप पर हेराफेरी का आरोप लगा सकता है। जिसे माफ़ कर दिया गया है उसे सावधान रहने की जरूरत है,नहीं तो वह माफ़ी मांगने के लिए अपने साथी की अनिच्छा से नाराज हो सकता है। वह शुरू होने से पहले ही खत्म हो जायेगा।

यदि हम माफ़ करने के लिए अपनी नीति के अनुसार काम करते हैं] तो यदि दूसरा व्यक्ति माफ़ नहीं भी करता है तो भी शैतान चोरी छुपे घुसने का लाभ नहीं उठा सकता। आप उनके प्यार के कर्ज को माफ़ करने जा रहे हैं ,भले ही उसने इसके लिए नहीं पूछा हो। अब यदि आपका जिद्दी साथी बाद में माफ़ी मांगे ,तो उसे माफ़ कर दे और एक दूसरे के लिए अपने प्यार की पुष्टि करे।

और परमेश्वर की स्तुति हो कि उस स्थिति में कड़वाहट की कोई जड़ बढ़ नहीं सकी।

2) चरम कड़वाहट को संभालना

जो हमने हल्की कड़वाहट से निपटने के लिए कहा वह चरम कड़वाहट से निपटने के लिए भी सच है हालांकि अन्य बातों पर भी ध्यान देने की जरूरत है। कड़वाहट सबको दूर करना उतना आसान नहीं है, जब की इतने सालों में वह और गहरी हो गयी है। अपराध के शुरू होने से पहले ही उससे निपटना सबसे अच्छा तरीका है।

हमेंशा हमारी आशा का केन्द्र हो “परमेश्वर हमारे साथ है

हमेंशा आशा रखे परमेश्वर क्या कर सकते हैं। कोई भी स्थिति असम्भव है हमें यह नहीं कहना चाहिए। मैंने कड़वाहट में फंसे लोगों के साथ निपटने में परमेश्वर के दो चमत्कार पूर्ण रास्तों को देखा है। एक को लम्बी अवधि के लिए मनोविकृति सम्बन्धी इकाई में भेज दिया गया दूसरा व्यक्ति जो वहां था दूसरे जानते हैं की वह क्या सोचता है। उसका घमंड बहुत ऊंचा था। लेकिन परमेश्वर कई लोगों की प्रार्थना के माध्यम से हस्तक्षेप करते हैं। उनका भरपूर अनुग्रह कुछ ही क्षणों में गर्व के उस पहाड़ को पिघला सकता है। हमेंशा आशा रखे। हमेंशा परमेश्वर को उद्धार के लिए मजबूर करे आज उद्धार का दिन है।

याद रखें दुष्ट शैतान किसी को भी इन लोगों के लिए हस्तक्षेप करने नहीं देना चाहता। इसी कारण केवल दया और कृपा ही वह माध्यम है जो ऐसी बाधाओं को तोड़ सकते हैं। यदि आप उनसे नाराज हैं तो आप उनके लिए प्रार्थना नहीं करेंगे। हमें सेवा के भाव में होने की जरूरत है। कड़वाहट में डूबे हुए अपने साथी की अंधेरी दुनिया में आप खुद को एक प्रकाश के रूप में सोचें। उस समय (एक बाहरी व्यक्ति के रूप में) आप ही उस अंधेरी गुफा में एक प्रकाश हो सकते हैं जहां दोनों साथी एक दूसरे से बहुत नाराज हैं।

मुसीबत की आशा करना : गहराई से जम चुकी मजबूत जड़ें

हमने यहां दो दोषपूर्ण धारणाओं को समझाया है -1 अपराध और अपराधी पर ध्यान केंद्रित करना। 2. एक की गलत प्रतिक्रिया की प्रमाणिकता। वह समानांतर रूप से बढ़ती हैं। हमें जितना संभव हो ऊपर वर्णित विभिन्न सच्चाईयां को अपने साथी के साझा करने की जरूरत है। एक बच्चे की तरह जो नई तरह के भोजन को थूक देते हैं। हमें परमेश्वर के समय को ढूंढना चाहिए।

विवाह का निर्माण!

कभी-कभी जब हम वास्तविक अपराध की पहचान कर पाते हैं तो यह बहुत बड़ी मदद हो सकती है वह आमतौर पर आप पर बहुत नाराज हो सकते हैं लेकिन नहीं जानते क्यों?

अन्य समय में उनकी यह अवज्ञा परमेश्वर द्वारा लाई गई होती है जो उसके भयानक परिणामों को दिखाने में मदद करता है। हमें उन्हें यह याद दिलाना चाहिए कि परमेश्वर की अवज्ञा करने पर उन्हें माफ़ नहीं किया जा सकता। इससे अलग जाते हुए उन्हें याद दिलाएं कि उनके हृदय की नफरत के कारण परमेश्वर की दयालुता के कितने कार्यों को उन्होंने खो दिया है।

यह सही है सच्चाई का उल्लेख कर के उनके अपराधों का ढेर उनकी आत्म रक्षा की प्रणाली को बहा ले जाएगा। फिर हमें यह याद रखना है कि हमें आरोप लगाते हुए नहीं लेकिन ,एक सभ्य और व्याख्यात्मक तरीके से करना है। वहां क्या है हम सिर्फ यह उजागर करें। हमें दोष लगाने की जरूरत नहीं है सिर्फ इसी उजागर करके परमेश्वर की आत्मा को उसका काम करने दें।

चमत्कारी सफलताओं के लिए देखें

हमारे जीवन को हमें यीशु के समान जीने की आवश्यकता है। जैसा उसने यशायाह 50:4-5 में कहा है

“प्रभु यहोवा ने मेरा कान खोला है, और मैं ने विरोध न किया, न पीछे हटा”। (यशायाह 50:4-5)

डराने वाले शत्रु को केवल परमेश्वर के भरोसे के द्वारा तोड़ा जा सकता है। परामर्शदाता या दोस्त को भी खुद कड़वे व्यक्ति पर अनुग्रह करने के लिए परमेश्वर की कृपा की जरूरत है। यह आसान नहीं है।

उन्हें सच्चाई की जरूरत है जो परमेश्वर उन्हें देता है। ध्यान दें कि ऊपर दिए लेखन में कैसे वह एक श्रोता है। वह पिता से सीखने के लिए एक शिष्य था। यह यीशु ने नियमित रूप से उनके सेवा के कार्यकाल में किया। इससे बढ़कर कोई साथी ना होगा जो अपने साथी की ओर से इस तरह मध्यस्थता करे।

यह सुनिश्चित करें कि वह सुसमाचार को जानते हैं और सुनते हैं

वह लोग जो अनुग्रह का अभ्यास नहीं करते हैं शायद कभी बचाए नहीं गए। वह मसीही होने का दावा करते हैं लेकिन हमें उन से यह कहना चाहिए कि वह परमेश्वर को कैसे जानते हैं। यदि हम ने परमेश्वर की कृपा का अनुभव किया है तो हम में बदला लेने की भावना नहीं होगी। सुनिश्चित करें कि उन्होंने यीशु मसीह के इस समाचार को सुना है की यीशु पापियों के लिए मरा। मैं रोमियों पांच 1 से 5 को साझा करना चाहता हूं। जहां हमने बचने से पहले के 3 तरीकों का वर्णन किया है (1)असहाय, (2)धर्म भ्रष्ट, और(3) पापी। हम बुरे से बुरे के अधिकारी थे किंतु सबसे अच्छा प्राप्त किया।

धैर्य रखें

प्रक्रिया में कुछ समय लगता है। वह आपके प्रति कड़वे हो सकते हैं। इसके बारे में इस तरह से सोचें। हालाँकि यह सुनने में उत्साह जनक कभी नहीं हो सकता, वे अपने जीवन के अंत तक उनकी कड़वाहट को स्वीकार नहीं करते। हमने कई लोगों को अपनी मृत्युशैया पर परमेश्वर के पास आते देखा है। लेकिन भले ही इसमें लंबा समय लगे। ,क्या आप अपने साथी से प्यार करने के लिए तैयार नहीं है? हम उम्मीद करते हैं। यह शादी की वाचा है जिसे हमने बांधी है। यह भी प्रेम और क्षमा के सिद्धांतों की नई वाचा है।

सच के साथ ध्यान खींचना

हम जानते हैं कि कड़वाहट दूसरे के अपराध पर ध्यान केंद्रित कर के बढ़ती है और खुद को बनाए रखती है। परमेश्वर से ज्ञान के लिए प्रार्थना करें कि किस तरह इन विषयों को अपने मन से दूर रखें। कभी-कभी दर्द इसे करेगा। दूसरे समय उन का वातावरण उन्हें दूर करेगा। अक्सर वे नए लोगों से मिलने के लिए इच्छुक नहीं होते। लेकिन उनके हालात बदलने के साथ क्षमा की शक्ति के कुछ उदाहरणों को साझा करने का प्रयास करें। अपनी कहानी से शुरू करके बताएं कैसे परमेश्वर ने आप को बचाया।

यदि आप उनके सोचने के तरीकों को बदल सकते हैं तो आप कड़वाहट के बीज का मुकाबला कर सकते हैं और सत्य के बीज का प्रत्यारोपण कर सकते हैं।

उदाहरण के लिए सब के बीज को गूँथकर बता सकते हैं कि सिर्फ परमेश्वर को दूसरों के न्याय करने का अधिकार है। ओह कैसे हमें शैतान के फन्दे में फँसे लोगों के लिए प्रार्थना करने की जरूरत है!

प्रश्न पूछें

हम उनसे कुछ महत्वपूर्ण प्रश्न पूछ सकते हैं: तुम इतने दुखी क्यों लग रहे हो? आप कहीं भी जाना क्यों नहीं चाहते ?क्या आप हमेशा इस तरह ही रहते हैं ? आपकी कड़वाहट कैसे शुरू हुई ?यदि लोगों में इस तरह की कड़वाहट है तो वह किसी समय आपको बतला देंगे। क्या गलत हुआ है लेकिन सावधान रहें। हमें सच्चाई का पता लगाने की जरूरत है। उनसे पूछें कि क्या वे अपने शादी को पुनः हासिल करने के लिए कुछ कदम उठाने के लिए तैयार हैं?

द) व्यवहारिक कदम जो विवाहित जोड़े को उठाना है

हम चाहेंगे की प्रत्येक जोड़े को कुछ महत्वपूर्ण कदम उठाने होंगे। प्रत्येक पति या पत्नी को जो यह पढ़ रहे हैं उन्हें समझना चाहिए कि, कड़वाहट हमेशा गलत होती है और कभी भी फायदेमंद नहीं होती। यह आगे के लिए मुसीबत की जड़ है। हम में से कोई ऐसी शादी नहीं चाहता। क्या आज आप कुछ महत्वपूर्ण निर्णय लेना चाहेंगे?

अपने साथी को हमेशा माफ़ करें। क्या आपके पास कुछ अन्य विचार है जो कि आप को बताते हैं कि तुम्हे उसके लिए मतलबी होना चाहिए तो ध्यान दें कि यह शैतानी प्रलोभन है। इन्हें अस्वीकार करें। परमेश्वर की आवाज हमें बुला रही है की हमें दयालु और अनुग्रहकारी होना चाहिए, जैसा कि वह आप के लिए अनुग्रहकारी है।

प्रतिबद्धता की पंक्ति में अपना नाम स्थापित करें ।

“मैं ----- आपका नाम अपनी पति/पत्नी को तुरंत माफ़ करूंगा किसी भी गलत बात के लिए जो वह मेरे विरुद्ध करता है। यह याद रखें कि आपकी माफ़ी के द्वारा आप कह रहे हैं कि आपका साथी माफ़ी का हकदार है या उसकी बुराई महत्वहीन है, लेकिन बस आपने अपने नैतिक कर्ज को माफ़ कर दिया है। अतीत को पकड़ो। आप बुराईकी जड़ को अपने हृदय से हटाना चाहते हैं। यह सत्य

है की आप अपने साथी के लिए यह नहीं कर सकते हैं। पर कम से कम आप कड़वाहट को अपने हृदय से निकाल सकते हैं। यदि आप ऐसे जोड़े हैं जो ऐसा कर रहे हैं तब आप में से प्रत्येक को एक कागज पर यह लिखना चाहिए कि आपके साथी ने आपके लिए कुछ किया, यह आपके लिए मायने रखता है। यदि आप यह भूल गए हैं तो यह आपके प्यार में ढांप दिया गया था। केवल उन चीजों पर ध्यान दें जिनके बारे में आप परेशान हैं। यदि एक जोड़ा ऐसा कर रहा है तो पति यह प्रारंभ करे। उसे ऐसी माफ़ी के लिए प्रार्थना की अगुवाई करना चाहिए जो उनके हृदय में संग्रहित कड़वाहट को दूर करे। उसके बाद पत्नी को प्रार्थना में इस बात की पुष्टि करना चाहिए। तब पति को अपनी सूची में जाना चाहिए। उसे पत्नी पर वार नहीं करना चाहिए ना ही किसी मुद्दे पर बात करना चाहिए। शायद उसकी पत्नी माफ़ी के लिए इस समय नहीं किन्तु बाद में बात करना चाहे। हो सकता है पति सबसे अपमानजनक बातों के लिए बात शुरू करना चाहें। उसे एक एक करके नाम लेना चाहिए और अपने साथी को बताना चाहिए की वह इनसे अपमानित हुआ है और अब वह इन सारी बातों को माफ़ करता है।

और अब उससे माफ़ी, प्यार और दया चाहता है। वह कह सकता है “मैं अपने असंतोष के लिए तुमसे प्यार और स्नेह चाहता हूँ” क्या तुम मुझे माफ़ करोगी? पत्नी को भी यही करना चाहिए। इसके बाद मैं प्रभु से यह मदद माँगूंगा कि आपको एक दयालु, अनुग्रहकारी और सदा माफ़ करने वाला बनाये।

हो सकता है आपका साथी आज यहाँ न हो। कोई बात नहीं। आप अभी भी अपना कम कर सकते हैं। यह अजीब है, किन्तु यह अभी भी जरूरी है। यदि आपका साथी एक मसीही है तो आपसे यह साझा करे की आपने क्या सीखा और आप क्या करना पसन्द करेंगे यहाँ तक की आप का साथी यह नहीं समझता है या हृदय में इन सब बातों के लिए सहमत है। आप फिर भी आगे बढ़ सकते हैं।

पहले परमेश्वर की सामने अपने अपराधों को माने।

उनकी सूची बनायें और स्वीकार करें। अपने असंतोष के कारण

आप पति/पत्नी के रूप में नाकाम रहे। अपने हृदय में

यह बड़ा अंतर है उन्हें माफ़ करें। जोर से अपनी असफलताओं के

लिए माफ़ी मांगें।

विवाह का निर्माण!

याद रखें कि यह आवश्यक नहीं है कि आप अपने साथी को बताएं कि आप नाराज थे और आप क्यों नाराज थे। आप उन्हें बस माफ़ कर दें। आप के लिए यह काफी हे की आप उसे माफ़ कर दें। किन्तु कम से कम परमेश्वर को बताएं। यदि आप का साथी एक गैर मसीही है और आसानी से चिढ़ता है उसे यह प्रक्रिया न बताएं वह उसका गलत मतलब ले सकता है। यदि आप उस पर वार कर रहे हैं तो यह साफ़ बताता है कि आप अपनी कड़वाहट को जाहिर कर रहे हैं। बाद में अपनी सूची को जला दें या ख़त्म कर दें। अब वह चला गया है, अपने प्यार का इजहार करें। उम्मीद है आप का साथी आपके इस परिवर्तन को देखेगा और आपसे इसके बारे में पूछेगा। यह समय है की प्रभु के कार्य को बताने का।

प्रक्रिया पर चर्चा करें। आपने वचन लिया है कि आप माफ़ी को नहीं रोकेंगे, यदि आप अपने साथी के साथ ऐसा करते हैं तब आप अपने मतभेदों को सुलझाने के लिए कुछ साफ़ नियम बना सकते हैं

- (1) माफ़ी की आवश्यकता बिस्तर के समय तक)
- (2) आप क्या बात करना चाहते हैं उसके लिए विशेष संकेतों की व्यवस्था करें (उदाहरण के लिए भोजन के कक्ष में एक निश्चित खाली बरतन रखें, अपने साथी के तकिये पर एक नीला कपडा इत्यादि)
- (3) चर्चा के लिए एक निश्चित स्थान (उदाहरण के लिए भोजन कक्ष तालिका) की व्यवस्था।
- (4) शांतिपूर्वक अपने आक्रोश का उल्लेख करें।
- (5) किसी भी चर्चा की शुरुआत से पहले एक साथ प्रार्थना करें।

निष्कर्ष

एक अच्छी तरह रखा गया पत्थर गोलिअथ को नीचे ले आया। विवाह में माफ़ी की आत्मा वह छोटा पत्थर है। जैसे की यीशु ने आज्ञा दी है जब एक व्यक्ति अपना नैतिक कर्ज उतारता है तब वह शैतान के हाथों में खेलने के बजाय, प्रभु की अनुग्रह की धारों को अपने ऊपर खोलता है। साथी प्रभु के प्यार का दिव्य एजेंट बन जाता है। एक क्षमा की भावना हृदय में जमा सभी शत्रुता की भावना को हृदय से निकालती है। एक क्षमा की भावना प्रभु के प्यार की मीठी बौछार को आपसे ओर

#7 विवाह की कड़वाहट को क्षमा से बदलना

आपके साथी से स्पर्श करने देती है। कोई अपराध इतना बड़ा या स्थायी नहीं है कि यह या माफ नहीं करना चाहिए या नहीं किया जा सकता है।

वहाँ माफ़ी में दर्द है। कभी कभी दर्द बहुत गंभीर होता है किन्तु फिर भी यीशु के शब्द और विश्वास की बुलाहट को हम ईमानदारी से पालन करें] और सभी को माफ़ करें। क्षमा की आत्मा हमारे घरों और हृदय पर राज्य करे, और हमारे विवाह और परिवार कभी सामान न हों।

यीशु उन में रहें। उदारतापूर्वक क्षमा करने की आत्मा हमारे जीवन में सीमित न रहे परन्तु हमें उसकी आत्मा में जीवित रहने के लिए स्वतन्त्र करे। हम उनकी आत्मा की शक्ति में रहते हैं। हमारा प्रचार विवाह में अनुग्रह के लिए है न कि उस में कमी के लिए। असंतोष के चले जाने पर विवाह तुरंत मीठा और सुखद है। क्या इसका कारण यह नहीं है कि हमने पहली जगह में शादी कर ली?

अध्याय # 7 अध्ययन के लिए सवाल

1. जब एक शादी कड़वाहट में रहती है तो क्या होता है?
2. कड़वाहट के 'भाई और चचेरे भाई' क्या हैं? इफिसियों 04:31 देखें।
3. क्या यह पर्याप्त नहीं है कि अपने साथी को बुरी बातें करने और कहने के लिए रोकें?
4. समझाइए कि किस तरह से कड़वाहट बढ़ती है (कड़वाहट चक्र)।
5. एक व्यक्ति परमेश्वर की कृपा प्राप्त कर सकता है, जबकि उसके हृदय में कड़वाहट है? समझाओ।
6. कड़वाहट की जड़। 'वाक्यांश से एक सत्य को समझाओ
7. कड़वाहट के बीज अपने हृदय में अपराध है। यह एक जड़ के रूप में कैसे विकसित होता है?
8. कैसे माफी पर यीशु की शिक्षा हमें बताती है कि कड़वाहट के साथ समस्याओं से कैसे निपटा जाय ?
9. प्रतिशोध के शिक्षा की लोगों की कड़वाहट दूर करने के लिए क्या मदद कर सकती है?
10. रोमियों 12:20-21 हमारे लिए नाराजगी से बचने के लिए एक विशेष कुंजी कैसे प्रकट करता है?
11. क्यों शिक्षा, "सूरज को अपने गुस्से से नीचे जाने दे" हमें कड़वाहट से बचने में मदद करता है?
12. कैसे हम माफ कर दें, भले ही दूसरे व्यक्ति ने हमें नहीं पूछा है?
13. अपनी प्रतिक्रिया दर्शाएँ जब लोग आपका अपमान करते हैं। आप कैसे प्रतिक्रिया करते हैं?

#7 विवाह की कड़वाहट को क्षमा से बदलना

14. क्या आपने हमेशा जल्दी से हर किसी को माफ करने के लिए यीशु मसीह के आदेश के अनुसार अपने को प्रतिबद्ध किया है, जिनमें आपका साथी भी शामिल हैं?

प्रभु के अनुग्रह के लिए चुनाव करे ।

विवाह का निर्माण!

विभाग #3: मित्रता

अध्याय #8-10

एक महान विवाह को बनाना!



8 विवाह के अंतरंगत यौन सम्बन्ध बनाना

हर शादी में कई उम्मीदें और सपने की पूर्ति है। आप शायद याद कर सकते हैं जब आप अपनी शादी के लिए अपने आप को तैयारी कर रहे थे। मुझे याद है मैं प्रेम कविताएं लिखा करता था। लिंडा, दूसरे तरफ ,एक जैसी पोशाकें बनाया करती थी। हम अधिकतर जोड़ों की तरह शायद बादलों के ऊपर हुआ करते थे। प्रत्येक जोड़े को अपनी शादी उन लोगों से अलग लगती



है जिनकी शादी को समस्याओं का सामना करना पड़ता है। परमेश्वर तो इच्छा है और अच्छे के लिए सपने देखने को प्रत्येक जोड़े को प्रेरित करता है। क्यों? हम इसके लिए सभी कारणों के बारे में सुनिश्चित नहीं हैं, लेकिन यह प्रतीत होता है की परमेश्वर सगाई की संक्षिप्त अवधि के माध्यम में दो महत्वपूर्ण बातों से अवगत करते हैं:

1. हृदय की सच्ची लालसा: एक सच्चे, ईमानदार प्यारा और वफादार संबंध ,अधिक से अधिक खुशी, प्यार और पूर्ति की भावना लाता है

2. प्रतिबद्धता की गहराई: एक निस्वार्थ और एकमात्र एक दूसरे से प्रेम करने की भक्ति।

परमेश्वर अपने अनुग्रह में प्रत्येक जोड़े को उनकी शादी वास्तव में कैसी हो सकती है उसका एक पूर्वानुभव अनुदान करते हैं। उन्होंने कामना करने के लिए कुछ देता है। विवाहित जोड़ों के लिए आम तौर पर शीघ्र ही शादी के बाद एक मुश्किल समय आता है। स्वार्थ की वास्तविकता सामने आ जाती है। अगर जोड़ा अनुमति देता है, तो कड़वाहट इस दंपति के संबंध को कब्र की ओर ले जाती है। युगल यीशु मसीह की सहायता, सामर्थ और उनकी योजना के बिना उनके जीवन में इस स्वार्थ को बर्दाश्त नहीं कर सकते।

परमेश्वर उनकी शादी के दिन पर प्रत्येक जोड़े को 'एक' करके घोषित करते हैं। क्या वे एक हैं? हाँ। लेकिन फिर भी युगल को अपने विवाहित जीवन में हर दिन विकसित होने की जरूरत है। विवाहित जीवन निरंतर एक अवसर है जिसमें एक पति या पत्नी आंतरिक रूप से जानते हैं की उन्हें क्या करना चाहिए। एक शादीशुदा जोड़े जब एक साथ रहता है तब उन दोनों के पास, वह बीच में आई स्पष्ट दरारें खत्म करने और अपनी शादी बनने के लिए कई अवसर होते हैं। विवाहित जीवन सारांश में, अंतरंगता में विकसित करने के लिए एक अवसर है। इस अध्याय में आप अपनी शादी में गहरी अंतरंगता पर बढ़ने के लिए क्या करें सीखेंगे।

अ) यौन अंतरंगता को समझें

अपने पिछले पढ़ने के माध्यम से, आपने एक महान शादी प्राप्त करने के लिए दो मुख्य तरीके को देखा है। सबसे पहले, आपने बाईबल के अनुसार शादी क्या है यह समझा है। आपने परमेश्वर के दृश्य से शादी क्या है का अधिग्रहण किया है। जब तक आप मनुष्य के नजरिये से शादी को देखेंगे जो एक विकृत दृष्टिकोण है, तब एक सफल शादी को नहीं समझ पाएंगे। शादी के एक मानव निर्मित व्यवस्था नहीं है। यह परमेश्वर की परिकल्पना है। हमें ध्यान से स्पष्ट रूप से उनकी परिकल्पना को देखने की जरूरत है।

दूसरा, आपने देखा है की आपको अपनी शादी में बड़ी असफलताओं से उबरने के लिए क्या करना है। पापियों के रूप में आपने अलग अलग स्तर पर अपनी

शादी के रिश्ते को नुकसान पहुँचाया है। सौभाग्य से, मसीह के माध्यम से आप इन समस्याओं की पहचान करके उनका हल कर सकते हैं। कोई फर्क नहीं पड़ता की अतीत कितना बुरा है, ठीक तरीके से समस्याओं का समाधान निकलने से, आप बेहतर करने के लिए महत्वपूर्ण परिवर्तन कर सकते हैं। संकट, अपने जीवनसाथी और उसके साथ अपने अंतरंगता को गहरा करने के लिए परमेश्वर द्वारा बनाया गया एक अवसर हैं। संघर्ष को हल करना सीखना आपको एक दूसरे के करीब लाता है।

इस तीसरे और अंतिम भाग में एक सफल शादी हासिल करने के लिए क्या करना है विषय पर चर्चा की है। हम एक शब्द में शादी के प्रयोजन संक्षेप में प्रस्तुत करें, तो वह 'अंतरंगता है।' कई लोगों को शादी में अधिक से अधिक अंतरंगता की खोज है। विवाह मात्र दोस्ती से परे जाने के लिए बनाया गया है।

अंतरंगता क्या है?

वैवाहिक जीवन में अंतरंगता की अवधारणा बाईबल की एकता के सिद्धांत से ली गई है। यद्यपि 'अंतरंगता' शब्द का प्रयोग बाईबल में नहीं है, किन्तु अवधारणा जरूर पायी जाती है।

(1) पहले, वाक्यांश में शादी के रिश्ते को परिभाषित किया गया है 'दो एकतन होंगे। अंतरंगता एक दूसरे को ध्यान में रखते हुए एक बन कर जीना है। परमेश्वर ने पति को सिर के रूप में सृजा है और पत्नी को पति के अंतर्गत समर्पित होकर जीने के लिए नियुक्त किया है। अगर वे दो के बजाय एक के रूप में कार्य करने के लिए सृजे गए हैं, तो उन्हें एक दूसरे को समझते हुए ऐसा रास्ता निकलना होगा जिसमें कोई मतभेद न हो परन्तु एक अछा तालमेल हो।



'एकता' शब्द का इस्तेमाल और बेहतर तरह से समझने के लिए शारीरिक अंतरंगता या यौन सम्बन्ध का वर्णन करने के लिए भी किया गया है। हमारी संस्कृति हमें यह दर्शाती है की पशुओं और मनुष्यों के यौन अनुभव एक ही सामान होता है। किन्तु वे पूरी तरह से गलत हैं। उससे भी ज्यादा दांव पर है। युगल गहरे रूप से यह

विवाह का निर्माण!

जानते हैं की अंतरंगता यौन सम्बन्ध से अधिक है, लेकिन उसे पाने के लिए क्या करें वे नहीं जानते। और क्यों एक जोड़ा शादी करता है?

(2) दूसरा, यौन संबंधों का वर्णन करने के लिए इस्तेमाल में आने वाला इब्रानी शब्द हमें क्या नामौजूदा है का संकेत देता है।

यह शब्द 'को जानते हैं।' इब्रानी शब्द यादाह के कई उपयोग हैं: जानना ,जानने के लिए, पता करने के लिए; देखना ; पता लगाना और विचार करना ; भेद, भेदभाव; अनुभव से पता करना ; कबूल करना , स्वीकार करना ; और यौन संघ।

जब आदम अपनी पत्नी हव्वा के पास गया तब उसने गर्भवती हो कर कैन को जन्म दिया और कहा, मैंने यहोवा की सहायता से एक पुरुष पाया है। (उत्पत्ति 4:1)।

जब यह कहते हैं, उदाहरण के लिए की, आदम हवा को जानता था, शास्त्रों के अनुसार उसका यह अर्थ है की उनके बीच यौन संघ हुआ। हालांकि इस बात में , व्यक्ति की यौन इच्छाओं की पूर्ति की तुलना में बहुत अधिक हो रहा है। इसमें आत्मा और व्यक्ति के अंतरंग ,भागीदारी हो रही है। पशुओं के पास आत्मा या आत्म जागरूकता नहीं है। किन्तु मनुष्यों के पास होती है।



शादीशुदा जोड़े, तो, बस केवल अपने शरीरों को नहीं बाँट रहे किन्तु अपने हृदय की भावनाओं को भी दूसरे के साथ बाँट रहे हैं। एक जोड़े को सच में एक सच्ची अंतरंगता चाहिए, तो उन्हें एक-दूसरे के साथ अपने संबंधों को गहरा करने की जरूरत है। उन्हें उनके जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में एक दूसरे को 'जानने ' की जरूरत है। हलाकि यह बहुत पुरानी सी बात लगती है , किन्तु क्या शादी के पहले का समय ऐसा ही नहीं होता?

मुझे याद है मैं शहर भर में मेरी साइकिल की सवारी कर के, बर्फ और बारिश में, सर्दी के अंत में तीन मील की दूरी तय करके , बस अपनी प्यारी लिंडा से बात

करने और उसके साथ समय बिताने जाया करता था। मैं अभी भी यह कर सकता हूँ। मैं अभी भी उसे और अधिक 'जानना' चाहता हूँ।

(2) तीसरा, हम यह देख सकते हैं कि कैसे पूरी बाईबल में अंतरंगता को चित्रित किया गया है। कई धर्मशास्त्रियों ने सुलैमान के गीत के असली अर्थ पर बहस की है। यदि आपने अभी तक इस किताब को नहीं पढ़ा है, तो आपको इसे पढ़ना चाहिए। इस पुस्तक में एक जोड़ा कैसे एक दूसरे के जीवन में प्यार से शामिल है यह दर्शाया गया है। आपको इसमें कुछ बहुत ही रोचक प्रेम भरी कविता भी मिलेगी।



हे मेरी प्रिय तू सुन्दर है, तू सुन्दर है! तेरी आंखें तेरी लटों के बीच में कबूतरों की सी दिखाई देती हैं। तेरे बाल उन बकरियों के झुण्ड के समान हैं जो गिलाद पहाड़ के ढाल पर लेटी हुई हैं। तेरे दाँत उन ऊन कतरी हुई भेड़ों के झुण्ड के समान हैं, जो नहाकर ऊपर आई हैं, उन में हर एक के दो दो जुड़वा बच्चे होते हैं। और उन में से किसी का साक्षी नहीं मरा। तेरे होंठ लाल रंग की

डोरी के समान हैं, और तेरा मुंह मनोहर है, तेरे कपोल तेरी लटों के नीचे अनार की फाँक से देख पड़ते हैं। तेरा गला दाऊद के गुम्मत के समान है, जो अस्त्र-शस्त्र के लिये बना हो, और जिस पर हजार ढालें टंगी हुई हों, वे सब ढालें शूरवीरों की हैं। श्रेष्ठगीत (4: 1-3)।

श्रेष्ठगीत में उनकी शादी, विवाह के बाद उनकी सुहागरात और जीवन की बातों को जारी किया है। कुछ धर्मशास्त्री ऐसे ज्वलंत कामुक भाषा को स्वीकार नहीं कर पाते। इसके बजाय की पवित्र शास्त्र की सहायता से वैवाहिक रिश्तों पर उनके विचारों को आकार दें, वे एक "आध्यात्मिक केवल" व्याख्या के साथ कामुक, अंतरंग भाषा का अनुवाद करते हैं। हमें वैवाहिक अंतरंगता के इस ज्वलंत तस्वीर को दूर करने की जरूरत नहीं है।

यह पुस्तक में हमें परमेश्वर अपने लोगों के साथ कैसे एक करीबी सम्बन्ध को चाहता है इसे समझने में मदद करती है और एक अंतरंग शादी के एक स्वस्थ

विवाह का निर्माण!

चित्र की पुष्टि भी करती है। परमेश्वर और उनके लोगों और एक पति और पत्नी के बीच प्रेम सम्बन्ध में बहुत समानताएं हैं। एक बार फिर से, हमें अंतरंगता यौन अभिव्यक्ति के साथ क्या करना ही है कि उथली सोच से परे जाना चाहिए। अंतरंगता, वाचा सीमा के भीतर गहरे रिश्ते में बढ़ने के बारे में है।

यीशु भी हमें बताते हैं की वे अपने लोगों के साथ कैसे आध्यात्मिक रिश्ते को चाहते हैं। वे यहाँ यौन संबंध के बारे में बात नहीं कर रहे हैं। किन्तु वे एक अंतरंग संबंध की बात कर रहा है।

"तुम मुझ में बने रहो, और मैं तुम में: जैसे डाली यदि दाखलता में बनी न रहे, तो अपने आप से नहीं फल सकती, वैसे ही तुम भी यदि मुझ में बने न रहो तो नहीं फल सकते। मैं दाखलता हूँ: तुम डालियाँ हो; जो मुझ में बना रहता है, और मैं उस में, वह बहुत फल फलता है, क्योंकि मुझ से अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते।" यूहन्ना 15 :4 -5

हम उद्धारकर्ता की पहचान और उद्देश्य में खो जाते हैं, वे हमारे साथ एक रिश्ते में घुल मिल जाते हैं और वह रिश्ता हमारे जीवन में बहुत फल का उत्पादन करेगा। यह फल या वह काम हमारे जीवन से एक बहुत ही सुन्दर गवाही को ले कर आते हैं जब हम एक मसीही होकर अपने जीवन को जीते हैं। क्या हम देख सकते हैं की दोनों बातें एक दूसरे के समानांतर कैसे हैं? दोनों महत्वपूर्ण और सच्चे हैं। यह वह रहस्य है जिसके बारे में प्रेरित बोलते हैं।

इस कारण मनुष्य माता पिता को छोड़कर अपनी पत्नी से मिला रहेगा, और वे दोनों एक तन होंगे। यह भेद तो बड़ा है; पर मैं मसीह और कलीसिया के विषय में कहता हूँ। (इफिसियों 5: 31-32)

(4) चौथा, हमें एक पति और उसकी पत्नी के बीच अंतरंगता के साथ क्या करना है कि बाईबल में कुछ स्पष्ट आदेशों पर ध्यान दें। यह चार दृष्टिकोण दिखाएंगे की एक पति या पत्नी को एक दूसरे की ओर कैसा होना चाहिए और यह हमारी समझ को आकार देने में मदद करेंगे। ध्यान दे। आप हैरान हो सकता है!

विवाह के चार व्यावहारिक दृष्टिकोण

1) कब्ज़ा

8 विवाह के अंतरंगत यौन सम्बन्ध बनाना

परन्तु व्यभिचार के डर से हर एक पुरुष की पत्नी, और हर एक स्त्री का पति हो। (1 कुरि 7:2)

पति के पास अपनी पत्नी है, और पत्नी के पास अपना पति है। वे एक दूसरे के हैं। वे एक दूसरे के पास है। एक-दूसरे के स्वामित्व में है। (यह एक यूनानी शब्द का साधारण अर्थ है - किसी का होना या स्वामित्व में होना।

2) दायित्व

पति अपनी पत्नी का हक पूरा करे; और वैसे ही पत्नी भी अपने पति का। (1 कुरि 7:3)

पति और पत्नी का एक दूसरे की ओर पूरा करने के लिए कुछ दायित्व है। इस मामले में वह यौन संबंधों की बात कर रहा है। दोनों में से किसी के पास भी अपने पति या पत्नी को मना करने का अधिकार नहीं है। उनकी इच्छा उनकी शादी की वाचा के रिश्ते से विवश हैं। उन्होंने उनके अधिकार को की वे स्वाम कया करना चाहते हैं त्याग दिया है।

3) नियंत्रण

पत्नी को अपनी देह पर अधिकार नहीं पर उसके पति का अधिकार है; वैसे ही पति को भी अपनी देह पर अधिकार नहीं, परन्तु पत्नी को। (1 कुरि 7:4)

पति और पत्नी अपने साथी की इच्छाओं के लिए आत्मसमर्पण कर दिया है। उनकी इच्छा और खुद को एक-दूसरे की पसंद की उपज से है। अपनी स्वयं की इछायें एक दूसरे की सेवा में खो जाती है।

4) भक्ति

परन्तु विवाहित मनुष्य संसार की बातों की चिन्ता में रहता है, कि अपनी पत्नी को किस रीति से प्रसन्न रखे। विवाहिता और अविवाहिता में भी भेद है: अविवाहिता प्रभु की चिन्ता में रहती है, कि वह देह और आत्मा दोनों में पवित्र हो, परन्तु विवाहिता संसार की चिन्ता में रहती है, कि अपने पति को प्रसन्न रखे। (1 कुरि 7:33-34)

पति और पत्नी दोनों सकारात्मक रूप से एक दूसरे के लिए अच्छा करना चाहते हैं। जीवन के निर्णय हमेंशा एक दूसरे को ध्यान में रखते हुए 'प्रसन्न' करते हुए न की अपनी पसन्द के लिए, लेकिन दूसरे के लिए चाहे वह यौन सम्बन्ध, स्थानांतरण,

खरीदारी, हो। शादी पति और पत्नी को एक करती है की वह अब दो अलग व्यक्ति हो कर नहीं वरन एक हो कर जियें।

मुश्किल विवाह

बुरा विवाह नियंत्रण के मुद्दों के साथ जूझता है। प्रत्येक पति या पत्नी, अपने "अधिकार" पर ध्यान केंद्रित करते हैं और अपने स्वयं के मांगों या इच्छाओं को पूरा करना चाहते हैं। एक अच्छे विवाह में, हालांकि, प्रत्येक स्वेच्छा से एक दूसरे के लिए क्या सबसे अच्छा है, अधिक से अधिक आगे बढ़ा के दूसरे के अच्छे के बारे में सोचते हैं। यह प्रतिबद्धता शादी को और मजबूत बनाता है। एक परिपक्व मसीही होने के नाते यह बात एक महान शादी की जरूरतों को पूरा करता है। उदाहरण के लिए, एक मसीही खुद की अभिलाषाओं के लिए मर गया है और मसीह की सेवा करने के लिए प्रतिबद्ध है। वह दूसरों की सेवा के द्वारा मसीह का कार्य और सेवा करता है और विशेष रूप से अपने साथी की सेवा करता है।

एक अच्छा उदाहरण दो मैग्नेट के बीच का कार्य है। विपरीत ध्रुवों एक दूसरे को आकर्षित हैं। एक जैसे ध्रुव एक दूसरे से दूर भागते हैं। एक ही दिशा में ध्रुवों को प्रणाली में रखें और वे एक दूसरे से चिपके रहेंगे। लेकिन अगर आप उन्हें उत्तर को उत्तर के खिलाफ रखें, तो मैग्नेट एक दूसरे को पीछे हटा देते हैं। आप उन्हें एक साथ जुड़ने के लिए मजबूर कर सकते हैं, लेकिन वे फिर भी एक दूसरे की उपस्थिति से लड़ेंगे। उसी तरह, अंतरंगता आकर्षण का लाभ लेता है। यह आत्मसमर्पण की शक्ति से काम करता है। अंतरंगता आपकी मदद करता है की आप एक दूसरे से जुड़े रहें। अपनी अंतरंगता को समझने के लिए खुद से पूछें "मेरे फैसलों और व्यवहार से क्या मेरे पति या पत्नी आशीषित होते हैं?"

कल रात मेरा परिवार घर देर से आया। बच्चे अपने बिसरों ओए सोने जा चुके थे। मेरी पत्नी ने कहा की वह थक गयी है। वह थकी थकी लग रही थी। लेकिन मैंने इस से भी अधिक देखा है। मुझे समझ में आ रहा था की वह इतना थक गयी है की वह रसोई घर की सफाई के बारे में भी भूल जाना चाहती थी। वह आमतौर पर साफ करने के लिए उसमे अतिरिक्त ऊर्जा रहती है। मैंने उसे कहा की मैं सकता हूँ। हम रात के खाने के बाद घर से बाहर गए। यह बर्तन साफ करने के लिए सबसे कठिन बर्तन थे। कुछ में वसा (ब्रायलर पैन) जमा हुआ था और दूसरों के किनारों

पर जला हुआ भोजन चिपका था। यह मेरा कर्तव्य नहीं था, लेकिन मैं जानता था कि मेरे स्वेच्छा से काम करने के द्वारा एक महत्वपूर्ण रीति में उसकी मदद कर सकता था। वह सोने के लिए रवाना हो गई। मुझे उसके लिए बर्तन सफाई और रसोई काउंटर साफ करने में आनन्द आता था। सुबह में घर की रसोई की सफाई के लिए नीचे आने के लिए उसकी इच्छा का मैं सम्मान करता हूँ। मैंने आगे भी थका देने वाले काम को करने में उसकी मदद करनी है ऐसा उस लक्ष्य बनाया है।

सच्ची अंतरंगता कितना हम हमारे जीवनसाथी के साथ हमारे हृदय साझा करते है। यह साझा करना, एक दूसरे को जीवन साथी की प्रतिबद्धता की गहराई पर प्रासंगिक है। बातचीत और अनुभव एक जोड़े को पास लाना के लिए इस तरह कार्य करना चाहिए की वे एक सा सोचते हुए एक साथ जिए। आगे एक मजेदार तरीके से इस बात का आइये पता लगाएं। इस सत्र को समाप्त करने के लिए आइये हम एक सात सवाल के अंतरंगता प्रश्नोत्तरी लेने के द्वारा करें। देखें आप अपने पति या पत्नी के साथ कितना अंतरंग हैं। 'ह' या 'न' का उत्तर हाँ या 'ना' में दें।

एक अंतरंगता प्रश्नोत्तरी

ह न 1- आप ने पिछले तीन दिनों में किसी एक समय में अधिक से अधिक 15 मिनट अपने पति या पत्नी के साथ बातचीत करते हुए सुखद रीती से बिताये हैं।

ह न 2- क्या आप अपने पति या पत्नी के मन की दो सबसे महत्वपूर्ण बातों को बता सकते हैं?

ह न 3- क्या आप संभोग के दस मिनट के बाद पूरी तरह से संतुष्ट और शांति महसूस करते हैं ?

ह न 4- क्या आपके पति ने आपसे पिछले तीन महीनों में अपने भविष्य के सपनों की चर्चा की है?

ह न 5- क्या आप अपने जीवनसाथी के साथ अकेले वक़्त बिताते हुए, बात करते हुए घूमने गए हैं?

ह न 6- क्या आप और आपके पति के बीच आपको कोई अवरोध महसूस होते है?

ह न 7- आखिरी सप्ताह में आप होशपूर्वक अपने पति या पत्नी के लिए अच्छी तरह से बात करने में आपने अपने शब्दों को नियंत्रित किया है?

आपने कैसा किया? अगर तुम्हारी शादी अंतरंग है, एक ठेठ सप्ताह में आपके जवाब हां में होना चाहिए। अगर अपना हृदय एक है, तो अपनी इच्छाएं भी एक हैं। आप आत्मा के साथी रहे हैं। अच्छी साझेदारी आप के बीच में जगह लेता है। अपने जीवन को एक साथ साझा करने के लिए अपनी इच्छा हनीमून के बाद बंद नहीं होनी चाहिए! अंतरंग युगल अच्छी रीति से एक साथ होने के लिए समय अलग निर्धारित करते हैं। आपके रिश्ते बढ़ना एक प्राथमिकता है।

ब) अंतरंगता में बढ़ना

कई जोड़ों उन उत्साह के शादी से पहले की सुन्दर यादों को याद करते हैं जब वे एक दूसरे में रुचि रखते थे। वे हर तरह से एक दूसरे को देखने का प्रयास किया करते थे। कैसे एक जोड़ा उसी समय में वापस आ सकता है? एक अर्थ में आप ऐसा नहीं कर सकते क्योंकि आपकी प्रेरणा अब वह नहीं है। दूसरे अर्थ से, हालांकि, आप ऐसा कर सकते हैं।

जैसा की अंतरंगता प्रश्नोत्तरी में यह प्रगट है, की आपको एक साथ विकसित होने के लिए समय को प्राथमिकता करने की जरूरत है।

आपको वास्तव में अपने कार्यक्रम में समय बनाने के लिए एक साथ रहने की जरूरत है। यह पत्नी को पोषण करने के लिए पति की और से किया गया आज्ञाकारिता का एक सरल कार्य है। वह अपनी पत्नी के साथ समय बिताएगा की उसे अधिक जान सके। इस समय को निकलने के लिए आपको अपने मनोरंजन और जीवन के अन्य क्षेत्रों के दूसरे कामों की कटौती करने की आवश्यकता होगी। माता-पिता को अपनई कई गतिविधियों और समय जो की वह अपने बच्चों के लिए इस्तेमाल करते हैं में से कुछ कम करने की आवश्यकता हो सकती है। अपने रिश्ते को एक प्राथमिकता बनाने की आवश्यकता है।



चाहे वे कुछ करना चाहते हैं या नहीं पर अपने पति या पत्नी के साथ बात करने के लिए समय बिताने का निर्णय जरूर लेते हैं। अगर उनका जीवन साथी इस तरह महसूस नहीं करता है, तो वह बस इस का पालन नहीं करता है। इसके बजाय, अपने सामान्य शादी प्रतिबद्धता के आधार पर वह अपने पति के साथ बातचीत करने के लिए अपना निर्णय लेती है। भावनाओं सही निर्णय के प्रतिकूल होंगी न की उसका उल्टा।

व्यक्तिगत साझा करना, आपसी समझ और वचनबद्धता यह तीन बातें आपकी शादी को और मजबूत करेंगे और उसे बढ़ने में सहायता भी करेंगी।⁵⁵ यह एक चक्र है जिसमें प्रत्येक दौर के साथ प्रेम और गहरी से बढ़ता जाता है। आइये हम इन तीन मुख बिन्दुओं पर विचार करें :

• व्यक्तिगत बंटवारे

एक जोड़ा अगर सिर्फ एक दूसरे से अधिक बात करेगा, तो वे अपने अंतरंगता में विकसित हो सकता है। जाहिर है, हमारी आधुनिक दुनिया में अंतरंगता के लिए यह एक बड़ी चुनौती है। जब तक एक आदमी और एक औरत अपने समय इस व्यस्त दुनिया से बचा नहीं सकते, वे अच्छी तरह से मान ले कि वहाँ बहुत अच्छा विकास नहीं होगा।

ये विचार पवित्र शास्त्र से टिप्पणियों के साथ-साथ आध्यात्मिक और वैवाहिक संबंधों को दर्शाते हुए आए हैं।

लिंडा और मैं शादी के पहले एक घंटे हर शाम एक साथ बात करने और एक साथ प्रार्थना करने में बिताते थे। यह आदत सब बातों में सबसे अच्छी साबित हुई है। इस शाम का नियुक्ति समय हमारे लिए सबसे अच्छी बात साबित हुई है।

शुरुआत में यह मात्र केवल समय था जब मैं उसे देख सकता था। मैं उसे उसके माता पिता के घर पर मिलने जाया करता था। हम बाईबल का अध्ययन, प्रार्थना और साझा करने में एक साथ समय बिताया करते थे। शादी के बाद यह जारी रहा। हमारी शादी हर साल बेहतर हो रही है। हमारी शादी इतनी अद्भुत है कि

⁵⁵ ये विचार हमारे आत्मिक प्रभव व वैवाहिक रिश्तों से आता है वचन के अवलोकन के साथ।

यह कल्पना करना कि यह वास्तव में भी बेहतर हो सकती है मुश्किल है, लेकिन हर बीतते हुए समय से यह साबित होता है कि यह हो सकती हैं।

पति और पत्नी के बीच वार्तालाप, ईमानदार और सच्चा होना चाहिए। मैं समझाता हूँ।

एक ईमानदार बातचीत दिखावा समाप्त कर देती है। हमें नाटक करने की जरूरत नहीं है कि सब कुछ ठीक है जब यह नहीं है। वास्तव में, हम बेईमान हैं अगर हम अपने पति या पत्नी को ऐसा लगने की अनुमति देते हैं। हमारा काम है कि हम अपने पति या पत्नी को वास्तव में हम कौन हैं समझने में मदद करें। हम



ईर्ष्या, अश्लील साहित्य, या क्रोध के साथ हमारे व्यक्तिगत संघर्ष को बता सकते हैं। जब हम उस ईमानदार कदम को आगे लेते हैं तो गोपनीयता की घूंघट दूर हो जाती है, और हम अंतरंगता में विकसित कर सकते हैं। हम एक 'नाटक' करने वाले व्यक्ति के करीब नहीं हो सकते। यह उसका वास्तविक व्यक्ति नहीं है। क्योंकि वे ईमानदार नहीं हैं आपसी बातचीत बहुत उथली है। इमारतों, जातियों और स्कूल के बारे में बात करना ठीक है, लेकिन अंत में, हमारी असली भावनाओं के दर्द, इच्छाओं और कुंठाका की साझा करने की जरूरत है। यह ही वह जगह है जहाँ वास्तविक विकास की शुरुआत होती है।

वार्तालाप अन्य विषयों में केंद्रित होना चाहिए। जैसे बातचीत सतही हो सकता है, यह स्वार्थी भी हो सकता है। अगर आप केवल हमेशा खुद के बारे में बात करते हैं ना कि अपने पति या पत्नी की चिंताओं के बारे में, तो यह आश्चर्य की बात नहीं कि अभी तक आप और आपकी पत्नी की अभी तक मित्रता का रिश्ता क्यों बढ़ नहीं पाया। किसी को भी ऐसे लोग पसंद नहीं जो केवल खुद के बारे में बात करना पसंद करते हैं। यह शादी में भी सच है। व्यक्ति जो केवल खुद पर केंद्रित होता है वह सिर्फ अपनई भलाई की चिंता करता है। अगर जीवनसाथी से किसी बात की जरूरत है, यह केवल एक श्रोता होता है। हम कितना एक व्यक्ति बोलता है उसके

विषय में नहीं बोल रहे लेकिन क्या वह वास्तव में अन्य व्यक्ति के बारे में अधिक

आपसी साझेदारी



पता लगाना चाहता है यह कह रहे हैं। यह सरल प्रेम है। अंतरंगता किसी के पति या पत्नी के जीवन में चल रहा है की जांच की मांग करता है। हम अपने पति या पत्नी के जीवन का पता लगाने इस लिए चाहते हैं क्योंकि हम उसके या उस व्यक्ति में रुचि रखते हैं। बस पिछली रात, मैंने अपनी पत्नी से कहा कि मुझे कुछ उसके बारे में बताये जो मुझे पता नहीं है। वह लंबे तक सोची, लेकिन अंत में उसके पास ऐसा कुछ था जो मुझे पता नहीं था।⁵⁶

हमारी बातचीत सची होनी चाहिए। ईमानदारी और सच्चाई बहुत निकट से संबंधित होते हैं। हम उन्हें थोड़ा अलग करेंगे जिससे हमें एक समस्या जो कई शायदियों है को पहचानने में मदद हो सके। आमतौर पर जब हम एक व्यक्ति की ईमानदारी के बारे में सोचते हैं तो केवल यह सोचते हैं की उनके शब्दों में ईमानदार हैं या नहीं। सच्चाई किन्तु एक गहरे स्तर तक पहुँचती है। सत्य शब्दों से अधिक गहरा होता है ताकि एक अन्य की गहराई को जान सके। ऐसी कई चीजें हैं जो एक पति पसंद या नापसंद कर सकते हैं, लेकिन उल्लेख नहीं कर रहे हैं। ऐसी बातों के बारे में सोचो जो आप एक साथ कर सकते हैं। विनम्रता के कारण आप कुछ बातें जो पसंद नहीं करते हैं उसका उल्लेख नहीं करते होंगे। आप सिर्फ इसको सेह लेते हैं। आप सोच सकते हैं कि यह उल्लेख से आप अधिक प्यार दिखाते हैं, लेकिन इस रिश्ते की निकटता के लिए, आप एक बेहतर तरीका पा सकते हैं, और आपको एक और अधिक वास्तविक दृष्टिकोण की जरूरत है। (अगर आप कहीं जाने के लिए तैयार नहीं हैं तो यह उल्लेख कर सकते हैं। "मैं जानता हूँ कि आपको कितना जाने का मैं है क्यों न हम एक साथ जाएं!")

उदाहरण के लिए, पुरुष और महिलाये बहुत अलग हैं। हम में मतभेद है कि हम कैसे अनुभव और जीवन को देखते हैं। मेरी पत्नी को उनकी पीठ खरोंचना पसंद

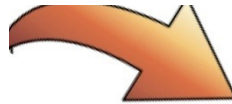
⁵⁶ मेरी एक बेटी अभी एक प्रेम सम्बन्ध में है। वह और उसके दोस्त ने एक खेल बनाया है जो आसानी से विवाहित जोड़ों के द्वारा खेला जा सकता है। वे उस खेल को 'खतरा' कह कर पुकारते हैं। एक व्यक्ति सवाल पूछता है और दूसरा जवाब देने के लिए प्रयास करता है। फिर दूसरे व्यक्ति को सवाल पूछने का मौका मिलता है।

है। अगर मैं खुजली जगह के आसपास खरोंचूं, तो वास्तव में मुझे इसमें क्या अछा लगेगा। मैं उसे शांत शील नहीं करना चाहते, लेकिन मार्गदर्शन के साथ मैं ऐसा करता हूँ और कहता हूँ "ओह, हाँ!" तो फिर मुझे पता है कि खुजली खरोंच अब नहीं है। चुप शील पर्याप्त सच नहीं है। मैं समझता हूँ कि हम अपमान करने के लिए नहीं बल्कि अन्य को खुश करना चाहते हैं नहीं। अन्य व्यक्ति के बारे में सोचना अच्छा है; समय महत्वपूर्ण है। लेकिन अगर वह कुछ आपको खुशी देने के लिए करे लेकिन वास्तव में आपको उसे खुशी ना मिले तोह कृपया यह बात बोलें। अगर यह एक क्षणिक बात होती, तो हम यह अलग रख सकते हैं, लेकिन शादी जीवन के लिए होती है। रिश्ते को सत्य में विकसित होने के लिए अनुमति दें। "प्यार में सच बोल" (इफिसियों 4:15)

हमारे पति या पत्नी के साथ बातचीत सबसे बुनियादी कदम होता है और यह हमें सक्षम बनाता है की हम जान सके की वह अलग अलग मुद्दों में क्या सोचते हैं। हम यह जानने की शुरुआत कर रहे हैं कि हमारा जीवनसाथी किस बात से प्रेरित होता है। हम उसके संघर्षों और इच्छाओं में गहराई से जानकारी हासिल कर लेते हैं। जैसे जैसे हम उनके बारे में अधिक ज्ञान प्राप्त करते हैं, हम उनकी बेहतर सेवा कर सकते हैं और उनके लिए बेहतर रूप से परवाह कर सकते हैं।⁵⁷ व्यक्तिगत रूप से एक दूसरे को जानना हमें आपसी समझ की ओर जाता है।

• आपसी समझ

निजी बातचीत हमें रिश्ते की गहराई में ले कर जाती है और हमारे पति या पत्नी के जीवन के अनुभवों में गहरा गोता लगाने के लिए अनुमति देती है। कभी कभी जब मेरी पत्नी मुझे पूरी कहानी बताने में सक्षम नहीं हो पाती है, तो वह इसे एक या दो पेज में लिख कर मेरे लिए हाथ में दे देती है। इस समस्या को हल करने का एक रास्ता है। इस तरह वह चुपचाप मुद्दे पर ध्यान केंद्रित कर सकती हैं,



**आपसी
समझ**

⁵⁷ परमेश्वर के साथ हमारे आत्मिक जीवन में, यह आवश्यक है कि हम सामान्य रूप से परमेश्वर से बात करे व उसकी सुनें प्रार्थना व वचन पर मनन करने के द्वारा।

और मैं उसके विचार प्रक्रिया के बीच में नहीं आ सकता है। और यह भी की उसके पास अपने विचारों को स्पष्ट करने के लिए परमेश्वर के पास जाने का भी एक मौका होता है।

जब एक पति और पत्नी अपने जीवन के बारे में और अधिक बातचीत करने की शुरुआत करते हैं तो, वे एक दूसरे का बेहतर अनुभव करने लगते हैं, और अपने पति या पत्नी को वास्तव में जानने में सक्षम होते हैं। एक पति अपनी पत्नी को अच्छी तरह से प्यार नहीं कर सकता है अगर वह नहीं जानता है कि उसकी पत्नी को वास्तव में एक निश्चित विषय के बारे में क्या सोच है।

पत्नी एक अच्छी सहायक नहीं हो सकती है अगर वह नहीं जानती की परमेश्वर उसके पति के जीवन में क्या कर रहे हैं। इसी स्थान पर एक जोड़े की तरह हम सिख सकते हैं की हम एक हैं और रिश्ते को अस्थिर कर सकते हैं और एक-दूसरे को कमजोर कर सकते हैं अगर हम एक दूसरे को नहीं समझे तो।

मेरा मानना है कि यह यहाँ है कि पत्नी के 'दाग और झुर्रियाँ', के बारे में प्रेरित पौलुस कहता है, समाप्त हो जाते हैं। पति के निस्वार्थ प्रेम के माध्यम से, एक पत्नी अधिक से अधिक एक खूबसूरत गुलाब की तरह खिलने में सक्षम हो जाती है।

"हे पतियों, अपनी अपनी पत्नी से प्रेम रखो, जैसा मसीह ने भी कलीसिया से प्रेम करके अपने आप को उसके लिये दे दिया। कि उस को वचन के द्वारा जल के स्नान से शुद्ध करके पवित्र बनाए। और उसे एक ऐसी तेजस्वी कलीसिया बना कर अपने पास खड़ी करे, जिस में न कलंक, न झुर्रि, न कोई ऐसी वस्तु हो, वरन पवित्र और निर्दोष हो"। (इफिसियों 5:25-27)

आपसी समझ का एक महान पक्ष लाभ है जिससे हम अक्सर अनजान होते हैं। शैतान अक्सर एक बुराई रणनीति जो अविश्वास, हलचल, गलतफहमी और झूठी मान्यता है का उपयोग करके रिश्ते को खराब करता है। जितना अधिक और बेहतर रीती से पति और पत्नी वास्तव में एक दूसरे को जानेंगे, उतना कम वे एक दूसरे व्यक्ति के इरादों को गलत समझेंगे। जब एक व्यक्ति का अतीत पूरी तरह से अन्य को पता चल जाता है, तो वह जानता है कि वे पूरी तरह से स्वीकार किये गए हैं,

उसी तरह जैसे परमेश्वर ने उन्हें स्वीकार किया है। जीवन से वह दर निकल जाता है (क्या होगा अगर मेरे पति या पत्नी को यह पता चल जाये तो ... क्या अब वह मुझे प्यार करेंगे?)। अब कुछ भी नहीं छिपा है। यह एक मांसपेशियों के तनाव से आराम की तरह है।

हमारे प्रभु के साथ हमारी आध्यात्मिक रिश्ते में, प्रार्थना और उनके वचन पर ध्यान के माध्यम से बात करना और परमेश्वर को सुनना महत्वपूर्ण है।

जब मांसपेशियों में तनाव आपको परेशान कर रहा हो तब आप विश्राम नहीं कर सकते। मानसिक रूप से आराम करने के लिए मांसपेशियों को मानसिक आदेश देने की जरूरत होती है। (यह कोशिश करें अपने आप को अपने कंधे की मांसपेशियों को आराम करने के लिए बोलें)। इसी समान तरीके में, एक जोड़े के लिए पूरी तरह से एकता में नए होने के लिए जब तक वे अपने आरक्षण के सभी क्षेत्रों को गिरा न दें यह संभव नहीं हो पायेगा। इन चिंताओं और शंकाओं की वजह से कई जोड़े कई वर्षों से उनके मन में विचलित है। पत्नी, उदाहरण के लिए, सभी क्षेत्रों में अपने पति की आधीनता में हैं, लेकिन एक क्षेत्र में सक्षम नहीं है। हालांकि, बात यह है कि वह एक क्षेत्र में हिचकती है क्योंकि वह उस पर विश्वास नहीं कर पा रही हैं। हो सकता है जैसे ही पति सभी क्षेत्रों में अपनी पत्नी से प्यार करता हो लेकिन एक बात में वह रुक जाता है, क्योंकि उसे लगता है कि वह उसके प्यार का दुरुपयोग कर सकती हैं। संभावना यह भी है की यहाँ एक से अधिक क्षेत्र हो, लेकिन जब तक वे उस पिछले अतीत को दफना ना दें वे ठीक तरीके से एक दूसरे की जरूरतों के सभी अनुभव कर सकते हैं।

पूर्ण विश्वास से खुद को रोकने से यह पता चलता है कि किसी के निजी जीवन में 'तनावपूर्ण' भागों में वे अभी भी बंधे हुए हैं। वे डर और चिंता कर रहे हैं। डर, गलतफहमी और अज्ञानता के माध्यम से आपसी समझ को अपंग कर देता है। दूसरी तरफ विश्वास स्वतंत्र रूप से एक-दूसरे को अपने जीवन को खोलने के लिए प्रोत्साहित करता है।

अंतरंग विवाह एक दूसरे में विश्वास के द्वारा मजबूत बनाने सक्षम होता है। अंतरंगता सामान्य और अच्छा है।⁵⁸ जैसे विश्वास गहरा होगा परमेश्वर आपको एकता में बढ़ाएगा जिसे आपकी शादी के दिन पर घोषित किया गया था है। शब्द "पता" महत्वपूर्ण है। बातचीत प्रकाशन के बारे में बोलती है। समझ विश्वास के मुद्दा को बतलाता है, अपने आप के ज्ञान को स्वीकार करना और एक के नजरिए का सम्मान देना है।

जब एक अन्य बेहतर समझता है, तब वे काम करना शुरू कर सकते हैं, साझा और प्यार को एक साथ अधिक निकटता से शुरू कर सकते हैं। वे 'एक' किया जाना पसंद करते हैं और उनका हृदय और जीवन साझा में रहता है।

साझा ज्ञान एक दूसरे पर भरोसा बढ़ाने के लिए मददगार होता है और इस तरह आपसी समझ में बढ़ने में जोड़े को सक्षम बनाता है। आपसी समझ आपको शैतान की कई योजनाओं से भी बचाता है। शैतान दोनों के बीच संघर्ष पैदा करने के लिए गलतफहमी का उपयोग करता है। आपसी समझ के साथ एक जोड़ा गहरी प्रतिबद्धता की और कदम उठाने के लिए सक्षम होता है।

• गहरा प्रतिबद्धता

जैसे एक बच्चा एक वयस्क के रूप में रात भर में विकसित नहीं हो सकता है, वैसे ही एक जोड़ा शादी की तरह के एक या दो विशेष अनुभवों के माध्यम से उनकी अंतरंगता में परिपक्व नहीं हो सकती हैं। यह एक जीवन लंबी प्रक्रिया है। एक जोड़े को आपसी विश्वास में विकसित होने के लिए विशेष बातचीत के हजारों अनुभव और साझा के अनुभव के संलग्न करने की आवश्यकता होती है। डर पर काबू पाने और एक दूसरे में एक अटूट विश्वास के साथके लिए प्रेम जरूरी है। इस आपसी समझ परिणाम के रूप में, एक मजबूत प्रतिबद्धता विकसित होती है। यह प्रतिबद्धता सब प्रतिबद्धताओं की तुलना में थोड़ा अलग है। यह अधिक सूक्ष्म और नरम है लेकिन असली है।

⁵⁸ कृपया यह याद रखें कि कई प्रकार के डर व चिन्तायें हम माता-पिता से सीखते हैं, और हम इसी परिस्थितियों को गलत रीती से अपने साथी के साथ प्रत्याशित करते हैं। जैसा हमें साझा मिलता है और आपसी समझ हमें बढने में मदद करता है। अगर हम साझा न करें, तो डर हमारे अन्दर जगह बनाते जाता है और जो छिपा नहीं सकता।

विवाह का निर्माण!

यह प्रतिबद्धता एक हृदय होना , बलिदान करने की इच्छा और एक दूसरे के प्रेम करना दर्शाती है। एक जोड़ा इस स्तर तक आने की आवश्यकता है जहां पर उन्हें केवल एक ही प्रेम करना आना चाहिए। वे एक दूसरे को और कोई अन्य के लिए प्रतिबद्ध नहीं हैं। यह तब ही संभव है जब हर प्रकार की मानसिक सोच और परिकल्पनाओं को एक व्यक्ति अलग कर सकता है। यहां तक कि अगर एक पति या पत्नी की एक घृणित आदत भी है, तब भी अन्य अपने पति को प्यार करने के लिए प्रतिबद्ध होकर हल निकल सकती है। यीशु कहते हैं कि किसी और के पति या पत्नी के लिए किसी भी यौन इच्छा को रखना व्यभिचार है। एक-हार्दिकता उन अवचनबद्ध क्षेत्रों को हटा कर इतना है अपने पति या पत्नी को पूरी तरह से अपने साथी को पोषित कर सकते हैं।

बलिदान करने के लिए तैयार : एक बार जब आप प्रतिबद्ध है, तब पति या पत्नी आगे खुद को बलिदान करने के लिए और एक दूसरे के लिए देखभाल करने के लिए तैयार होते हैं। यह जीवनसाथी का जीवन है। अपने जीवनसाथी के बेहतर के लिए उनकी सच्चाई अपने स्वयं की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण होती है। एक जोड़ा को एक महान शादी के लिए , कदम से कदम मिल कर बनाते हैं। पति का प्यार व्यापक हो सकता है और गहरा हो सकता है। पत्नी का समर्पण और अधिक वास्तविक और स्वयंसेवा की भावना से प्रेरित हो सकता है।

अधिक शौकीन: प्रतिबद्धता के साथ, हम स्वीकार किये गए है और पोषित किये गए हैं के एक गहरे भावना में बढ़ते हैं। जितना अधिक हम अपने जीवनसाथी से प्यार करने के लिए निर्णय लेते हैं , उतना ही अधिक उत्साह और खुशी रिश्ते में आता है। हमें अपने जीवनसाथी को आगे बढ़ने और कुछ क्षेत्र में मदद करने में उत्साहित करे। हमारे जीवनसाथी का भला हमारे लिए सबसे महत्वपूर्ण हो जाता है। तो मैं अपने पति या पत्नी के लिए प्रार्थना करता हूँ। मैं सिर्फ अपने पत्नी जो जो अच्छा महसूस नहीं कर रही है के लिए एक ई-कार्ड भेज दिया करा हूँ।

यह गहरी प्रतिबद्धता प्रेम का सार है। प्यार अन्य के लिए बिना शर्त का और वास्तविक चिंता की अभिव्यक्ति है। प्रेम महज एक सिद्धांत नहीं है लेकिन व्यावहारिक, दयालु और क्षमा है। प्रेम एक दूसरे के लिए अंतर्निहित भक्ति है जो

इस तरह के शब्दों, उदार कार्यों और विशेष एहसान से एक मेजबान उत्पन्न करता है।

इन प्रतिबद्धताओं के विषय में अक्सर कोई बात नहीं करता न ही कोई ध्यान देता है किन्तु वे होती हैं। यह विवाह के विकास के दूसरे चक्र में खत्म होने करने के लिए अनुमति देता है। पति और पत्नी उनकी बातचीत में और ईमानदार होते हैं। पूरे चक्र खुद को दोहराता है।

निष्कर्ष



एक अंतरंग शादी इस समझ के द्वारा बढ़ती है कि मेरे पति मेरे लिए महत्वपूर्ण है। हम सिर्फ एक दूसरे की बुनियादी जरूरतों को पूरा नहीं कर रहे हैं। हम परमेश्वर के वचन की सत्यता पर विश्वास करते हैं और कि हमारे संघ रहना हमारे अलगाव की तुलना में अधिक धन्य है। जब हम हमारे जीवन के लिए अपने पति के मूल्य के प्रति आश्वस्त हो जाते हैं, तब हम बड़े "लिंग के अंतराल" को भूल कर वास्तव में हमारे जीवन साथी को जानने के लिए तैयार होते हैं।

जितना अधिक मेरा यह मानना होगा कि मेरी पत्नी मेरी कल्याण के लिए महत्वपूर्ण है, उतना ही अधिक हम समझने की कोशिश करेंगे कि वह कौन है और कैसे वह मुझे अपने जीवन में मदद कर सकती हैं। पत्नी, उसी समान, आगे एक विश्वास से अपने पति के लिए खुद को प्रतिबद्ध करने में सक्षम हो सकती है। परमेश्वर के प्रारूप पर हमारा विश्वास हमारे नजरिए और कार्यों को आकार दे सकता है।

वैवाहिक अंतरंगता हृदय के स्तर पर साझा करना होता है। वहाँ तक पहुँचने के लिए समय और उद्देश्यपूर्ण वास्तविक संचार की जरूरत होती है, लेकिन यह रास्ता नीचे की ओर जाता है। प्रत्येक पति या पत्नी अन्य के महत्व के प्रति

आश्वस्त होता है और उतनी शानदार रीती से अपनी पत्नी को रखता है। प्रत्येक जीवनसाथी यह मानता है कि परमेश्वर ने विशेष रूप से उसके साथी को उसके साथ काम करने के लिए उपहार में दिया है।

यह केवल यह विश्वास है जो हमें मजबूर करता है एक गहरे अंतरंगता की ओर कदम उठाने के लिए और उन की आदतों में परिवर्तन लाने के लिए। यह प्रतिबद्धता के हर कदम पर दूसरे साथी की ओर से एक गहरी प्रशंसा लाता है। यह अपने जीवन का हिस्सा में आगे के परिवर्तन को लाता है।

अंतरंगता का विकास के लिए प्रश्न

- ◆ आप अपने पति या पत्नी के साथ एक अंतरंग संबंध को बढ़ने के लिए अपने कार्यक्रम में नियमित रूप से समय बाहर निकलते हैं? इस के बारे में बताएं।
- ◆ क्या आप कहेंगे की अपने पति के साथ अपनी बातचीत सतही है या हृदय के मामलों के बारे में हैं?
- ◆ क्या आपने कभी यह सोचा है की आप ने सही व्यक्ति से शादी करी है या नहीं या आप तहे हृदय से अपने पति या पत्नी के लिए एक आशीष होने के लिए खुद को समर्पित करा है? यदि हां,तो आपको यह कैसे पता चलाता है?

अंतरंगता के बारे में परेशानी?

इसमें कोई शक नहीं है कि मन में कई सवाल आते हैं की हम हमारे जीवन साथी को कमजोर बनाने की बात तो नहीं बन रहे हैं। एक पत्नी अपने पति पर भरोसा नहीं कर सकती हैं अगर उसके हृदय का हिस्सा किसी और के साथ बट रहा है तो। एक और पत्नी का एक व्यभिचारी पति है। क्या उसे नाटक करना चाहिए की वह सच्चा है? एक और जोड़ी कड़वाहट से भरा हुआ है। वे सब पूछ रहे हैं कि क्या अंतरंगता संभव भी है। और पहले की तरह, हम जवाब न में दें, आइये देखीं एक विकल्प जिससे बड़ी उम्मीद है।

तुम उसे धक्का देकर दूर कर सकते हो या उसे आमंत्रित करने का चुनाव कर सकते हो। शब्द, दृष्टिकोण और कार्य एक अच्छी और सुंदर शादी के लिए

इच्छा प्रदर्शित करते हैं। एक साथी को प्रतिक्रिया देने के लिए मजबूर नहीं किया जा सकता है, लेकिन आप एक वातावरण बना सकते हैं जिससे आपके साथी को आप के करीब होना की इच्छा हो जाये। दूसरी ओर, आप एक, ठंडा बर्ताव, या निंदा के रवैया के माध्यम से अपने पति का दूर कर सकते हैं।

हजारों गृहिणियों ऐसा कर सकती हैं (और करती हैं!) अपने पति के दोष के बारे में शिकायत करती हैं। आप उनमें शामिल हो कर अपने पति को एक दुश्मन के रूप में देख सकती हैं या एक दोस्त बना सकती हैं। अगर आप उनके साथ एक दुश्मन की तरह व्यवहार करती हैं, तो वह दुश्मन की तरह ही कार्य करेगा। अधिकतर समय हम यह पहचान नहीं पते हैं कि हमारे ही अपने बुरा व्यवहार की वजह से हमारे रिश्ते में जहर फैल गया है।

क्या फर्क पड जायेगा ,अगर आप अपनी शिकायत निगल उसे माफ कर दो और उसे उसके साथ परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार एक सौम्य और शांत भावना के साथ बर्ताव करने लगे। तभी तो आपके पति को एहसास होगा कि व घर में रहना उसे पसंद है! केवल जब आप दोनों को यह एहसास होगा हैं कि आप दोनों एक ही पक्ष पर हैं, तब आप अपने टिप्पणियों और विचारों को दूर रखा कर एकता के लिए अपनी प्रतिबद्धता को नवीनीकृत करेंगे। यह तो तब ही केवल संभव है जब कि आप अपने पति या पत्नी से पूरी तरह खुल के उसे जानने की कोशिश करें।

और मुझे पता है कई ऐसे पति हैं जो इच्छा रखते हैं कि वे किसी और से शादी करे होते तो अच्छा होता ।और जब तक आप इस इच्छा को रखते हैं तब तक आप बुराई चाहते हैं। आप कभी भी इस हताशा से बहार आ कर पूर्णता के जीवन नहीं जी पाएंगे।

इसके बजाय की आप स्थिर होयें और कड़ी मेहनत करे उस एक औरत से प्यार करने की , आप सब कारणों को ढूंढते हैं की से वह आपके प्यार के लायक क्यों नहीं है। आप इस तरह रह सकते हैं या आप विश्वास के स्तर को बढ़ाने के लिए शुरुआत कर सकते हैं। फिर वह धीरे धीरे उसके अविश्वास से निरस्त्र हो जाएगी (यह हमेंशा की तरह लगेगा)। वह महसूस करती है कि वह वांछित नहीं है तो वह खुद को वांछनीय कर देती है। उसकी इच्छा करें , उसके शरीर के लिए ही

नहीं बल्कि वह कौन है उसके लिए , और वह प्रतिक्रिया करने के लिए शुरुआत करें।

कई शादियां, जैसा कि ऊपर संकेत दिया है, अपंग और सतही स्तर पर जारी हैं। वे सिर्फ शांति से एक घर में रहने से खुश हैं। परमेश्वर इससे कितना अधिक चाहते हैं। परमेश्वर हमें अंतरंगता के स्तर में गहरा और गहरा जाने देना चाहते हैं। वहाँ हमारे पास और अधिक स्वतंत्रता है जिससे की हम अपने पति या पत्नी के लिए हमारी गहरी भावनाओं को प्रकट कर सकते हैं।

स) यौन अंतरंगता

युगल सेक्स का उपयोग करते हैं की अपनी तत्काल भौतिक जरूरतों को पूरा कर सके। पति के पास बहुत तीव्र शारीरिक आग्रह की भावना होती है ; पत्नी की एक गहरी चाहता महसूस करने की जरूरत होती है। शारीरिक संबंध उन्हें वे क्या चाहते हैं उसका बहुत काम भाग देता है लेकिन अधिक बार वह भी नहीं, सेक्स केवल वे वास्तव में क्या नहीं है की उन्हें याद दिलाता है।



अगर शारीरिक संबंध एक अच्छा सामाजिक रिश्ते और शादी प्रतिबद्धता पर नहीं बनाया गया हो , तो कड़वाहट और अपराध की पुरानी भावनयें ,सेक्स के बाद वापस आ जाएगी। यहाँ तक कि यौन संबंध अपने स्वयं की अपराध की भावना उत्पन्न कर सकता है क्योंकि यह एक की अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए एक स्वार्थी तरीके से इस्तेमाल किया जाता है।

यौन संबंध किस तरह होना चाहिए? शारीरिक अंतरंगता एक अच्छी शादी के रिश्ते के आधार पर बनाया जाना चाहिए जहां युगल एक दूसरे के लिए अपनी आत्मा खोल देते हैं। हम सिर्फ सहमति या इच्छा की बात नहीं कर रहे हैं, लेकिन एक हृदय जिसमें मैं एक दूसरे को 'जानने' के इच्छा हो। सेक्स तक पहुंचने के लिए का तब एक लक्ष्य नहीं है। यह संघ तब पहले से ही एक गहरी और अधिक सुंदर

अभिव्यक्ति का भाव है। अत्यंत सुखद भावनाओं और पूर्णता की भावना का एक उत्कृष्ट कृति में एक मिश्रण है।

कई जोड़ों अपनी जरूरतों की सेवा से परे कभी नहीं जा पते। उनके लिए सेक्स वे क्या करन चाहते हैं के लिए एक माध्यम है न की अन्य को देने के बारे में है। इस्तेमाल किया जाना और प्यार किया जाने के बीच में एक बहुत बड़ा अंतर है। एक शादी में जहां पति अपनी पत्नी के साथ मोहित और पूरी तरह से समर्पित होकर रहता है ,और एक जिसमें पति अन्य महिलाओं के बारे में सोचता है के बीच एक बड़ा अंतर है। क्या पति वास्तव में अपनी पत्नी से प्यार करता है? क्या वास्तव में वह उस पर ध्यान केंद्रित है?

सबसे बड़ी परीक्षाएं उसके साथ बिस्तर में आएंगी। आइए कुछ उदाहरणों पर नजर डालते हैं। उन्होंने शाम के लिए कुछ योजना बनायीं है, लेकिन वह अच्छा महसूस नहीं कर रही है, शायद उसकी अवधि शुरू है (महीने के समय) या बस थक गयी है। क्या वह इंतजार करेगा या चिढ़से भर जायेगा? क्या वह अपने शब्दों और कार्यों के माध्यम से उसके कल्याण की बातें बोलेगा या अपनी इच्छाओं को संतुष्ट करने को ज्यादा महत्वपूर्ण समझेगा। या फिर एक और स्थिति में, क्या होगा अगर वह बस उस पर फेर कर सो जाती है क्योंकि वह कुछ बात से नाराज़ है जो सुबह में उसके करने के लिए कहा और नहीं किया? पति की प्रतिक्रिया क्या होगी? क्या उसका ध्यान अपने ही यौन लालसा को पूरा करने पर होगा या उसके साथ अपने रिश्ते को मजबूत बनाने के बारे में अधिक है? हर बार जब वह उसके लिए खुद से इनकार करता है, वह उसके लिए उसके विश्वास को और गहरा करता है। वह यह मनेगी की कि वह उसे सिर्फ वह कौन है उसके लिए प्यार करता है और न की वह क्या दे सकती हैं उसके लिए। (क्या होगा जब वह बूढ़ी हो जाएगी और वह अधिक नहीं दे सकती है?)

पत्नी भी उसकी खुद ही परीक्षण करना जानती है। अपने पति के प्रति आधीनता में रहो आसान नहीं है जब आपका पति असंवेदनशील है हो! वह नाराजगी बनी हुई है, तो वह यौन सम्बन्ध के लिए अपनी अनिच्छा व्यक्त कर सकती है। यहां तक कि अगर वह खुद को तैयार करती भी है, तब भी वह एक साथी के लिए काफी नहीं है।

विवाह का निर्माण!

बिस्तर अक्सर एक युद्ध का स्थान हो जाता है। हर तरफ संघर्ष होता है। पत्नी को अपने कड़वाहट को हटा माफी देने की जरूरत है और उसके पति का स्वागत करने की बजाय उसे भी अपने स्वार्थी क्षणों में दूर करने की जरूरत नहीं है। गैर-मसीही पति मसीह के बारे में नहीं सोच रहे हैं जब वे बेडरूम में चले जाते हैं। उसे कोमल और बिस्तर में एक शांत आचरण रखने की जरूरत है। अगर वहां वह एक सबसे उदार और दयालु महिला को पाता है ,तब उसका हृदय धीरे धीरे बदल जाएगा। (देखें 1 पतरस 3:1)

केवल हमारा बुलाहट के लिए वफादार होने के द्वारा , हम शादी को आगे ले जाने में सक्षम हो सकते हैं। बिस्तर की आदतें बाहर नहीं जनि चाहिए हैं। यहां तक कि अगर हमारे जीवन साथी, जिद्दी मूर्ख या आलसी हैं, हमें प्यार करने की जरूरत है उससे जिसे हम प्रतिबद्ध है। कुछ लोग कह सकते है कि यह असंभव है। लेकिन यह अधिक कहने के लिए सही होगा की यह मसीह के बिना असंभव है , लेकिन यह उसकी पवित्र आत्मा के माध्यम से मसीह की तरह प्यार करना संभव है। हम दूसरों को माफ कर सकते हैं और वे जिसके लायक नहीं दे सकते हैं।

यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि हर कोई वास्तव में एक अंतरंग एक दूसरे के लिए एक गहरी प्रतिबद्धता के आधार पर बनता है। इस का एक ही तरीका है कि शुरू करने के लिए आप जो मसीह में हैं उत्तरदायी हो कर पूरी तरह से अपने पति या पत्नी के प्रति वफादाहो कर इसकी शुरुआत करें। कोई बहाने न बनाएं। प्रार्थना करो और उपवास रखो अगर जरूरत है। निर्धारित करें कि, भले ही आपके पति कभी भी ठीक से नहीं प्रतिक्रिया देते लेकिन आप उनसे वफादार साथी हो कर रहेंगे। मेरा मानना है कि ज्यादातर स्थितियों में पति जवाब देंगे। यही कारण है कि आपने शादी की। एक व्यक्ति की सच्चाई की आशा शादी में वापस आ सकती है लेकिन केवल परमेश्वर की शक्तिशाली प्रेम के माध्यम से।

कुछ लोगों का मानना है कि यौन क्रियाआत्म-पूर्ति के लिए है। यही पूरी तरह से गलत है। यौन क्रिया अपने साथी को पूरा करने के लिए बनाया गया है। हमें दूसरे की जरूरतों पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है बजाय अपने आप पर। आप का क्या मानना है ?परमेश्वर हमारी जरूरतों का ख्याल रखेंगे जब हम भक्तिपूर्वक

दूसरों की सेवा के लिए समर्पित होंगे। इस एक तरह से हमें परमेश्वर में विश्वास करना चाहिए है।

सच्चे प्यार की बिस्तर में जरूरत है। धैर्य, दया, और क्षमा अद्भुत समय ल सकता है। केवल परमेश्वर के प्यार के साथ ही संभव है की, पति आवश्यक हो तो सेक्स के बिना जाने के लिए भी तैयार हो सकता है। केवल परमेश्वर की कृपा से ही पत्नी अपने पति के भले के लिए ही हाल ही में अपने प्रति किया गया दुर्व्यवहार को भूलकर उसके शरीर को खोलने के लिए अनुमति दे सकती है।

पति को अपनी खुशी के लिए भागना नहीं है और उसकी जरूरतों को नजरअंदाज करना नहीं है। महिलाओं धीरे धीरे जवाब देती हैं। तो पति को बातें धीमी से लेन ही ताकि वे अपनी पत्नी की जरूरतों पर ध्यान केंद्रित कर सके। पत्नी भी अपने पति को खुश करने के लिए आक्रामक होना चाहिए। उन्हें ईमानदार और सच्चे बातचीत की जरूरत है साथ ही प्यार के तकिये के साथ संयुक्त खुशी की भावनाओं अधिकतम तक पहुँचने के लिए प्रयास की जरूरत है।

ये बातें सुझाव या कहने के लिए आसान हो सकती है, लेकिन मुझे पता है कि कई बार हमें मदद के लिए परमेश्वर से रो कर प्रार्थना मांगने की आवश्यकता होती है। केवल वह ही कर सकते हैं। यह ठीक है। हमारे प्रभु हमारी प्रार्थना सुनन पसंद करते है। वह एक शरणस्थान के रूप में देखा जाना चाहता है।' हमें अपने आप को ठीक प्रतिक्रिया में रखने के लिए मदद की जरूरत होती है, खासकर जब हम ऐसा महसूस नहीं करते।

हमें अपने पति या पत्नी के हृदय और विकल्पों को बदलने के लिए उसकी मदद की जरूरत होती है। हमें उसके जवाब देने के लिए प्रतीक्षा करने के लिए मदद की जरूरत होती है!

यौन अंतरंगता का विकास पर सवाल

1 क्या आप कहेंगे कि आप सेक्स के दौरान अपने खुद के लिए या अपने पति की जरूरतों को पूरा करने पर ध्यान केंद्रित?

2 आप अपनी पत्नी के लिए एक पति के रूप में कैसे प्रतिक्रिया देते हैं जब वह बीमारी, असुविधा, थकान के कारणों के लिए या परेशान होने से दूर रहती है?

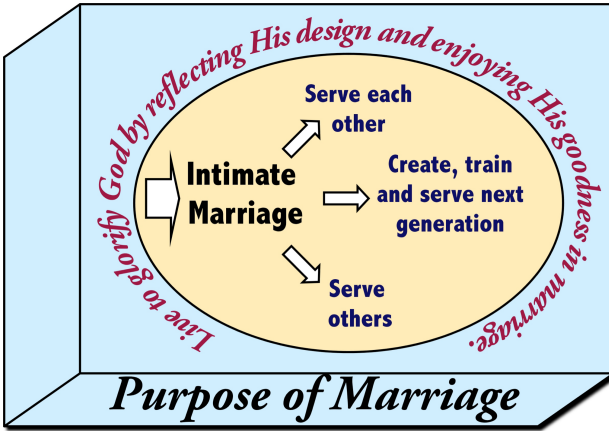
विवाह का निर्माण!

3 यदि आप अपने पति को कैसे जवाब देती हैं अगर आप यौन सम्बन्ध में हृदयचस्पी नहीं कर रही हैं तो?

4 क्यों एक मसीही साथी को तब भी उसे या खुद उसके साथी के लिए समर्पित करना चाहिए?

द) अंतरंगता का कारण

एक शादीनष्ट हो जाएगी अगर यह अंतरंगता और एकता में नहीं बढ़ सकती हैं। अंतरंगता, तथापि, एक अंतिम लक्ष्य नहीं है। यह आपके जीवन के लिए परमेश्वर के उद्देश्य को पूरा करने के लिए है।



विवाह का स्वयं से परे एक उद्देश्य है। एक व्यक्ति का खाने और रहने की तुलना में अधिक अस्तित्व मौजूद है। उनके जीवन में एक उद्देश्य है। एक कारखाने का उद्देश्य सिर्फ लोगों को आने के लिए और काम करने के लिए एक जगह उपलब्ध कराने की तुलना में अधिक है। वे चीजों का निर्माण कर रहे हैं। परमेश्वर ने एक समान तरीके से शादी की परिकल्पना किया है। शादी के प्रयोजन हमेंशा अपनी ही से पर है हमें दूसरों की सेवा करने के लिए है।⁵⁹ हमारे अंतरंगता का विस्तार करने के आईएए हम तीन तरीके पर चर्चा करें।

⁵⁹ परमेश्वर की सही धनिष्टता है त्रिआत्मा जो परमेश्वर का मुख्य है, और अभी तक खुद को दुनिया में बाहर बढ़ाया है।

1) अपने पति की सेवा

विवाह, जैसा कि पहले ही उल्लेख किया गया है, पति और पत्नीका परमेश्वर की सेवा के लिए एक अंतहीन अवसर है। चूंकि रिश्ते इतनी बारीकी से जोड़ा हुआ है , वे परीक्षण किया और तरीके हैं कि सामान्य रूप से शादी के बाहर नहीं होने के लिए परीक्षण किया जाता हैं।

पति अपनी पत्नी की सेवा करने के लिए अपने सुनहरा मौका के एहसास को पहचानना चाहिए। उन्हें भक्तिपूर्वक रहने के लिए विशेषज्ञ होना चाहिए की वह कैसे पत्नी के लिए रहने से उसे भाता रहे।

चिंता मत करो; वह मना नहीं करेगी! इतना ही नहीं वह उसके लिए काम ही नहीं करता है, लेकिन वह भी अपने मन में उसे महत्व देता है। वह पूरी तरह से उसके हृदय पर अपने अविभाजित ध्यान केंद्रित करने के लिए तैयार है। वह संतुष्ट है। यह उसका महान विशेषाधिकार है , खुशी और पृथ्वी पर इनाम हो जाता है। परमेश्वर त्रिएक देवत्व में अंतरंगता था किन्तु खुद को दुनिया में बाहर ल कर दे दिया।

“इसी प्रकार उचित है, कि पति अपनी अपनी पत्नी से अपनी देह के समान प्रेम रखें। जो अपनी पत्नी से प्रेम रखता है, वह अपने आप से प्रेम रखता है। क्योंकि किसी ने कभी अपने शरीर से बैर नहीं रखा वरन उसका पालन-पोषण करता है, जैसा मसीह भी कलीसिया के साथ करता है इसलिये कि हम उस की देह के अंग हैं”। (इफिसियों 5:28-30)

पत्नी को भी पता होना चाहिए कि परमेश्वर को उसके प्यार को दिखाने के लिए उसका यह एक सुनहरा अवसर है की एक सहायक होने की दृष्टि को पकड़े रहे।

वहउस प्रमुख पद के लिए रची की गयी है। कई अलग-अलग स्थितियों जो उठती है कि उसकी भावनाओं परे होती हैं। वे आज्ञाकारिता के मुद्दे पर जाती हैं। उसके वफादार सेवा से, परमेश्वर की ओर से एक खूबसूरत चमक उसके जीवन से निर्गत होने लगेगी।

“और पुरुष स्त्री के लिये नहीं सिरजा गया, परन्तु स्त्री पुरुष के लिये सिरजी गई है”।

(कुरिन्थियों 11:9)।

“भली स्त्री अपने पति का मुकुट है, परन्तु जो लज्जा के काम करती वह मानो उसकी हड्डियों के सड़ने का कारण होती है। (नीतिवचन 12:4)।

परमेश्वर नहीं चाहते हैं कि हमें यहां अपने आप को हमारी सेवा में बंद करने के लिए रोकना है। उन्होंने कहा कि इस से परे जाना है।

2) अपने बच्चों की सेवा करो

शादी के रिश्ते का सबसे स्पष्ट फल बच्चे होते हैं। प्रत्येक बच्चा माता-पिता की एकता का एक आदर्श फल होता है। परमेश्वर उनकी लोगो के बहुत सारे बच्चे चाहता है। उन्होंने कहा कि और हमें आज्ञा दी है, की विवाहित जोड़ों के रूप में, हमें बच्चों को दिया है। धन्य घर में कई बच्चे होते हैं। यहाँ तक कि यूसुफ और मरियम के भी यीशु के होने के बाद कम से कम पांच अन्य बच्चे थे।

अंतरंग विवाह स्वाभाविक रूप से बच्चों को पैदा करते हैं।⁶⁰ हमें हृदय से बच्चों को बनाने में परमेश्वर के हाथ का स्वागत करना चाहिए। वह अकेले ही गर्भ बंद करता और खुलता है और देता है। इस जीवन देने वाली अंतरंगता में न केवल पति और पत्नी है लेकिन परमेश्वर भी शामिल है। हम परमेश्वर क्या चाहता है उस के लिए खुले हैं। हम खुद के लिए नहीं, लेकिन वह हमारे जीवन के माध्यम से क्या करना चाहता है उस के लिए जीते हैं। चूंकि यह एक बहुत अप्रत्याशित प्रक्रिया है, अगर हम पूरी तरह से नहीं प्यार और परमेश्वर पर भरोसा नहीं रखते हैं, तो हम भयभीत और चिंतित जीते हैं बजाय पूरा भरोसा और खुशहाल होने के।

जन्म नियंत्रण में कम से कम पांच स्पष्ट समस्या है।

1) मनुष्य को अपनी जिम्मेदारियों के बिना सेक्स के विशेषाधिकार चाहिये है।

⁶⁰ यहाँ पर कुछ खास अपेक्षा है जैसे सारा, हनाह और कुछ दूसरे जिन्हे बच्चा नहीं हुआ जैसा वे चाहते थे कुछ खास वजहों से। इन साधियों को समझना है कि परमेश्वर का उद्देश्य उनके जीवन के लिये कुछ खास है।

2) आदमी सोचता है कि बच्चों के बिना एक शादी बच्चों के साथ एक से बेहतर है। कम बेहतर हैं।

3) मनुष्य दुनिया में कई बच्चों को नहीं ला कर परमेश्वर की आज्ञा को तोड़ता है।

4) आदमी अक्सर बच्चों को मारता है ताकि उन्हें होने से बचा सके।

5) आदमी सोचता है कि परिवार नियोजन के लिए अपनी योजनाये परमेश्वर की तुलना में बेहतर हैं।

कई जोड़ों को खुद के लिए और अधिक पैसा और समय चाहिये हैं। वे बच्चे नहीं करना का निर्णय लेते हैं। उनके लिए शादी एक स्वार्थी संस्था बन गई है। शादी न करने के लिए बेहतर होगा।

माता पिता अपने बच्चों की देखभाल के लिए उनके जीवन का ज्यादा समय खर्च करते हैं। इस निवेश में कई वर्षों की आवश्यकता है। उन्हें लगातार और याज्ञिक, ऊर्जा, शरीर, धन, संपत्ति और अपने समय के देना चाहिए ताकि उन्हें परमेश्वर के लिए बढ़ा सके। एक सच्चे अर्थों में, क्या वे माता-पिता के रूप में अपने बच्चों को करते हैं वे होते हैं। हम एक वफादार पत्नी और मां को प्रशंसा के इस गाने को समर्पित करते हैं।

वह बुद्धि की बात बोलती है, और उस के वचन कृपा की शिक्षा के अनुसार होते हैं। वह अपने घराने के चाल चलन को ध्यान से देखती है, और अपनी रोटी बिना परिश्रम नहीं खाती। उसके पुत्र उठ उठकर उस को धन्य कहते हैं, उनका पति भी उठ कर उसकी ऐसी प्रशंसा करता है "बहुत सी स्त्रियों ने अच्छे अच्छे काम तो किए हैं परन्तु तू उन सभी में श्रेष्ठ है।" (नीतिवचन 31:26-30)।

जन्म नियंत्रण कई तरीके में से है जिसके द्वारा हम अपने स्वार्थी रास्ते को पकड़ कर अपने जीवन को स्वयं नियंत्रित करते हैं और पूरी तरह से परमेश्वर के हाथ में नहीं सौंपते। गर्भाधान को रोकने का अर्थ है हम अपने जीवन के इस क्षेत्र से परमेश्वर को बाहर रखते हैं। जब हम परमेश्वर को इस क्षेत्र में, "नहीं" कहते हैं, तो हम अपने पति या पत्नी के साथ अंतरंग होने की क्षमता को सीमित कर देते हैं। मेरी पत्नी और मैं इस बाड़ के दोनों किनारों पर रह चुके हैं, और हमारे दूसरे और तीसरे

बच्चों के बीच में सात साल का अंतराल है। यह आंशिक रूप से जन्म नियंत्रण के तरीकों का उपयोग करने के कारण है। हम गवाही दे सकते हैं की एक बार हम परमेश्वर की कृपा से, हमारे जन्म नियंत्रण की सामग्री को बहार फेंके और उसके के बाद परमेश्वर ने एक गहरी और अधिक घनिष्ठ स्तर पर हमारी शादी को लाया हैं। हमने एक साथ परमेश्वर पर भरोसा करना सीखा। हमारे जीवन में अब अधिक स्वतंत्रता है की हम पूरी तरह से उसके सामने खुल सकते हैं।

3) अपनी दुनिया की सराहो

विवाह दुनिया में परमेश्वर के प्रेम के लिए मार्गबना रहा है। परमेश्वर द्वारा प्रारूपित शादी इस दुनिया में सच्चे प्रेम को दिखती है। विवाह सेवा लेने का नहीं किन्तु सेवा करने का स्थल है। शादी की खुशियां केवल उन पति और पत्नी को मिल सकती हैं जो उनके आसपास के लोगों की सेवा के लिए प्रतिबद्ध हैं। एक परिवार के रूप में वे दूसरों की सेवा से परमेश्वर की अच्छाई को फैलाते हैं और दुनिया को प्यार दिखाते हैं।

यह कई रूप ले सकते हैं, लेकिन इसकी शुरुआत अपने पड़ोसियों और जिन लोगों से आप मिलते हैं होती है। कभी कभी एक पति और पत्नी पैसा बनाने में या अपने बच्चों की गतिविधियों में अधिक व्यस्त हो जाते हैं और अपने घर को घर बनाना चाहते हैं। परिवारो को सेवा के लिए जगह बनाने के लिए अपने जीवन को धीमा करने की जरूरत है। क्या ऐसे कई कोग नहीं जो घर से दूर हैं और उन्हें घर की जरूरत है? हो सकता है कि परमेश्वर इन लोगों के लिए आपके परिवार का उपयोग करना चाहते हैं।

हम यह भी सुझाव देते हैं की इस बारे में आप एक साथ प्रार्थना करें की परमेश्वर इस दुनिया में आप का उपयोग कैसे करना चाहता है। हम अक्सर परमेश्वर की सबसे अच्छी आशीष को खो देते हैं सिर्फ इसलिए क्योंकि हम ने उसे अभी तक नहीं पूछा है। अपने प्रत्येक वरदानों और बोझ (चिंताओं) के बारे में सोचो।

कैसे परमेश्वर इन का उपयोग करके इस दुनिया के लिए एक बड़ी आशीष ल सकता है? लेकिन शायद आपके पास अज्ञात वरदान भी हो सकते है जिससे वह

अभी भी धीरे धीरे प्रकट कर रहा है। प्रार्थना करें और उसे मांगते रहे। वह अक्सर ऐसे दरवाजे खोलता है जिससे हम कभी भी जानते ही नहीं थे की है भी!

उन पर ध्यान केंद्रित करें।

जैसे हम परमेश्वर के सामने हमारे जीवन को खोलते हैं हम उसे महिमा देने लगते हैं। प्रत्येक मुद्दा जिससे हम निपटने की कोशिश करते थे परमेश्वर की महिमा का कारण हो जाता है। लेकिन आज्ञाकारिता विश्वास का एक मुद्दा है। जब हम उस पर भरोसा या विश्वास करते हैं हम उसमें और आपने साथी के साथ अपने जीवन में गहरे हो जाते हैं। विवाह एक जगह है जहाँ कि परमेश्वर उनकी महिमा प्रकट करना चाहता है। वह चाहते हैं की विवाह सुन्दर हो जाये ताकि दूसरे इसे देख कर परमेश्वर के प्रेम की एक झलक पा पाएं। शादी एक अद्भुत संस्था है।

दूसरों की सेवा के बारे में प्रश्न

1. क्या आपने इसके बारे में सोचा है की आप एक जोड़े (या परिवार) के रूप में कभी भी दूसरों की सेवा करें ?
2. क्या आपने बच्चों को परमेश्वर के अधिक से अधिक उद्देश्यों को पूरा करने के लिए मांगा है ?
3. क्या आपने जन्म नियंत्रण (परिवार नियोजन) किया है? क्यों? आप इसे कैसे बदल सकते हैं?
4. अगले सप्ताह के लिए तीन बातें बताएं जिससे आप अपनी शादी की बातों के माध्यम से परमेश्वर को महिमा दे सकें हैं?

अंतरंगता बारे में एक सवाल

एक स्वाभाविक प्रश्न उठता है जब सेवा के बारे में हम बात करते हैं। क्या हमारे पास एक जोड़ी के रूप में खुद के लिए समय बचता है? छोटे बच्चों का ख्याल रखने में, और पिता का चर्च और काम में व्यस्त होने और देखभाल करने के साथ, कई बार यह असंभव है की एक जोड़े के पास एक साथ समय बिताने के लिए वक्त नहीं बचता। आपात स्थिति के पैदा होने पर अलग होने की आवश्यकता होती है, लेकिन वे आपात स्थिति है हर दिन की स्थिति नहीं। अगर एक पत्नी किसी दूसरे शहर में

दूर काम कर रही है तो यह एक आपात स्थिति नहीं है। पत्नी पति के लिए बनाई गयी है। वह उसके साथ होनी चाहिए। महिलाओं के लिए उनका पेश ,वैवाहिक अंतरंगता के लिए परमेश्वर की योजना को खराब करता है।

एक नियमित और निरंतर रूप से एक साथ कुछ समय बिताना बहुत ही महत्वपूर्ण है। हम बच्चों के बिना एक सप्ताह में एक बार बाहर जाने के लिए प्रयास करते हैं। लिंडा को पसंद है की मैं योजना बनाऊँ , या कम से कम सप्ताह के बाहर जाने के विषय में चर्चा करूँ। अब मैं समझ क्यों (अंत में इस बात को समझने के लिए मुझे कई साल लगे।) वह सिर्फ यह नहीं चाहती की मेरे साथ रहे ,लेकिन वह भी चाहती है कि मैं उसके साथ होने की इच्छा रखूँ। मेरी योजना में पहल हमारे प्रेम में एक विशेष स्पर्श देता है।

हाल ही में, वह शुक्रवार को दोपहर में बाहर जाना चाहती थी। वह जानती है कि मैं शुक्रवार रात को पढ़ाने के लिए जाता हूँ और तैयारी सामग्री में व्यस्त होकर विचलित हो सकता हूँ। मैं इस तरह चीजों की व्यवस्थित करता हूँ कि मैं विचलित नहीं हो पाऊँ। अन्यथा, हमारे एक साथ संबंध बनाने का समय की सेवा व्यर्थ हो जाएगी।

क्या हमें बहुत सारा पैसा खर्च करने की जरूरत है? नहीं, किन्तु वास्तव में पैसे अक्सर रिश्ते के रास्ते में आ जाता है। कई बार हमने एक साथ पिकनिक मनाया है और उसके बाद टहलने गए हैं। ये हमारे सबसे मधुर समय में से कुछ किया है (अगर कोई सक्रिय हस्तक्षेप के बिना)।

सारांश

कोई भी शादी अगर खुद को आईने में लंबे समय तक देखे तो उसकी उम्र और क्षय शुरू हो जाएगा। हम यहाँ हैं दूसरों की सेवा करने के लिए: हमारा पति या पत्नी, अपने बच्चों और अन्य शामिल हैं। दूसरों की सेवा करने के द्वारा , हम परमेश्वर की बड़ाई कर रहे हैं।

मैं व्यक्तिगत रूप से कहीं न कहीं शिक्षण देता रहता हूँ , जबकि वह घर में रह कर बच्चों की देखभाल करती है। वास्तव में हम एक साथ सेवा कर रहे हैं। हमें यह कभी नहीं लगन चाहिए की सेवा एक अन्य की तुलना में कम महत्वपूर्ण है।

8 विवाह के अंतरंगत यौन सम्बन्ध बनाना

हमको मिलने वाला इनाम हृदय के रवैये पर और परमेश्वर ने हमें किस संदर्भ में सेवा के कार्य में रखा है के पर आधारित होगा। हम एक साथ सेवा कर रहे हैं। हम हमारी शादी में हमारी अंतरंगता का उपयोग सच का एक प्रकाशस्तंभ, चमता हुआ प्यार की आग का गोल और विश्वास का निर्माण करने के लिए एक जगह की तरह करते हैं।

हमें विश्वास से जीवित रहना होगा अगर हम उस अच्छी महान शादी के स्टार तक पहुंचना चाहते हैं तो। हमें कड़ाई से परमेश्वर के मानकों के द्वारा रहने की जरूरत है बजाय हमारी भावनाओं के। लेकिन कदम से कदम, जब हमारे हृदय प्रकट कर के हम बढ़ते हैं ,तब एक गहरी, समृद्ध और अंतरंग शादी के फूल की सुंदरता की तरह बन जाते हैं।

अध्याय # 8 अध्ययन के लिए सवाल

1. क्या 'शब्द अंतरंगता' बाईबल में से है? यह कहां से आया है?
2. पुराने नियम में कौन सा शब्द यौन संबंधों का वर्णन करने के लिए उपयोग किया जाता है? उसका और क्या मतलब है?
3. कैसे अंतरंगता मसीह के साथ एक मसीही रिश्ते में खुद को दिखाता है?
4. आपने अंतरंगता प्रश्नोत्तरी में कैसा प्रदर्शन किया? वह कौन सा एक ऐसा क्षेत्र है जहाँ अधिकांश काम करने की जरूरत है?
5. विवाहित जोड़ों के बारे में 1 कुरिन्थियों 07:33:34 से चार सिद्धांतों के बारे में आपको सबसे हैरान करने वाली कौन सी बात लगी?
6. एक शादीशुदा जोड़े के लिए अंतरंगता में बढ़ने के कौनसे तीन भाग होते हैं?
7. यौन संबंधों को पूरा करने के लिए एक कुंजी क्या है?
8. अंतरंगता का उद्देश्य क्या है?
9. तीन क्षेत्रों को बताएं जिसमें इस उद्देश्य को व्यक्त किया जा सकता है।
10. एक जोड़े को अपनी बातचीत की शैली को कैसे बेहतर बनाना चाहिए की वह एक दूसरे को बेहतर जान सके ?
11. जन्म नियंत्रण वैवाहिक अंतरंगता को रोकती है। वह तीन कारण क्या हैं जिससे परिवार नियोजन परमेश्वर के उद्देश्य के विपरीत है?



9 विश्वास और अंतरंगता का विकास

कोई भी किताब ने मेरे जीवन को इतना अधिक प्रभावित किया है जितना श्रेष्ठगीत ने किया है। किसी भी किताब के लिए, एक व्यक्ति के जीवन को इतना प्रभावित करने के लिए वहाँ कुछ तो महत्वपूर्ण परिवर्तन करने लायक होना चाहिए। यह निश्चित रूप से मेरे मामले में सच है। हलाकि कोई नहीं देख कर निरीक्षण कर सकता की, मेरे भीतर धीरे-धीरे कितना गहरा र्थात्मक परिवर्तन आया है।

परमेश्वर के वचन ने फिर से साबित किया है कि चाहे कुछ भी हमारी आत्मा की जरूरत क्यों न हो यह धन की एक अंतहीन खजाना है जो हमें सक्षम करने के लिए पर्याप्त है। श्रेष्ठगीत सोने की डली है जो प्रेम, आत्मीयता और विश्वास का रहस्य को खोल देता हैं। इन सोने की डली एक बढ़ती हुई शादी के लिए कुंजी हैं।

बाईबल के अन्य किताबों में, हमें हमें हिदायत, आदेश और उदहारण दिए हैं की हम कैसे एक अच्छी शादी को बना सकते हैं। अगर हम उनका पालन करते हैं तो हम अच्छी तरह से खुश रहेंगे। लेकिन वहाँ कुछ अन्य चीजें हैं जो हमें उसकी आज्ञाओं में विश्वास होने से रोकता हैं। हम वास्तव में विश्वास नहीं करते की वे काम कर पाएंगे हम यह परिप्रेक्ष्य में नहीं होना चाहिए, लेकिन कई होते है। आत्मविश्वास की कमी एक प्रमुख कारण है कि हम उन्हें पूरा नहीं कर पते है और अनाज्ञाकारिता के कारण, हमारे विवाह पीड़ित होता हैं।

शादी की समस्याओं की संख्या निरंतर रूप से बढ़ रही है। ऐसा लगता है कि हर सप्ताह मुझे महत्वपूर्ण वैवाहिक जीवन में कठिनाइयों की एक और परत है का

विवाह का निर्माण!

पता चलता है जो लोगों को सामना करना पड़ रहा है। आपका अनुभव शायद इसी तरह हो सकता है।

मेरी शादी को भी इसका सामना करना पड़ चुका होता अगर परमेश्वर के वचन की सामर्थ्य श्रेष्ठगीत पर ध्यान करने के समय के दौरान मुझे पता नहीं चला होती। मैंने इस किताब का अध्ययन करने की योजना नहीं बनाई थी, लेकिन परमेश्वर के आत्मा की याद दिलाने की क्रिया के लिए धन्यवाद की जनवरी 1975 में आखिर मैंने समय निकल कर इसे पढ़ा। और फिर मेरा जीवन बहुत बदल गया है।

मैं मानती हूँ कि सभी परिवर्तन और मुख्य प्रभाव तुरंत आये, लेकिन नीचे दिए गए सत्य एक नींव है जिसके द्वारा सभी परिवर्तन लाये जा सकता है स्थापित कर रहे हैं। हो सकता है कि आप आश्चर्य कर रहे होंगे है कि आखिर क्या है वह जिसने कि मेरे जीवन में इस तरह के एक अंतर को लाया।



सबसे मूल रूप से मुझे लगता है कि यह वह है की कैसे मैं अपने आप को कथित में एक परिवर्तन के साथ देखना चाहता हूँ। हर कोई स्वीकृति चाहता है, और मैं कोई अलग नहीं था। रिश्ते में एक व्यक्ति खुद को एक अलग नजरिए से देखने के लिए सक्षम हो जाता है प्रेम संबंधों में एक व्यक्ति अपने जीवन में अन्य व्यक्ति की आंखों के माध्यम से खुद को अधिक बेहतर रूप में देखने के लिए सक्षम हो जाता है। मैंने बढ़ते हुए कभी प्रेम और स्वीकृति के बारे में नहीं सीखा। तलाक, कड़वाहट और आलोचना ने मुझे और मेरे परिवार को भावनात्मक रूप से अपंग कर दिया है। मैं आसानी से दूसरों से संबंधित नहीं हो पता था। मुझे व्यक्तिगत रूप से हकलापन और असुरक्षा के अन्य रूपों के सहित असंख्य समस्याओं का सामना करना पड़ा। समस्याओं के बीच में बढ़ने वाले बच्चों की संख्या और इस तरह के दुख में बढ़ाने के

विवाह की संख्या अधिक प्रकट हो रही हैं। अध्ययन के बाद अध्ययन में, इन तरह की समस्याओं की पहचान की जा रही है।

श्रेष्ठगीत की पुस्तक , ताजी हवा के झोंके की तरह मेरे जीवन में आयी। उस किताब के विचारों को खोलने की सोच मेरी प्रेमिका की थी , और अब वह मेरी पत्नी है। भले ही हमारी दोस्ती एक हजार मील की दूर से अलग हो गयी हो लेकिन मैं उसकी मुस्कान के लिए बेताब होता था। मैं उसकी एक मुस्कान के प्रकाश के तहत को देख सकता था। उसे स्वीकृति और मेरे साथ रहने की इच्छा मेरे लिए बहुत मायने रखती है। यह वही सत्य था जिससे परमेश्वर ने मुझे पवित्र शास्त्र में सिखाया था - परमेश्वर का प्रेम।

SONG OF SOLOMON

सवाल यह है कि परमेश्वर मुझे अपने प्यार के के इस ज्ञान को कैसे पैदा कर सकता था। परमेश्वर का प्रेम हर जगह मौजूद है, लेकिन भतेरी आवाज मुझे भरमाती थी कि मैं अवांछित और अपर्याप्त हूँ। शैतान मेरे परमेश्वर के प्रेम और दूसरों से प्रेम को समझने में दखल देता था। बेशक, जब एक अप्रिय महसूस करता है, वह अस्वीकृति के डर से दूसरों को अपने सच्चे आत्म को नहीं बताता है।

मेरे साथ क्या होता और क्या आम तौर पर होता है , कि मेरी प्रतिक्रिया अपने आप की मेरी धारणा में इतनी पक्की होती है कि मैं किसी भी रिश्ते में शामिल हुआ हूँ मैं उसे नष्ट कर सकता था। और यह ही उन कई बच्चों को जिनका पालन बुरा विवाह में हुआ है होता है। वे अंत में अपने माता-पिता की तुलना में उनके जीवन साथी के साथ संबंधों में और भी बदतर होते हैं।

केवल परमेश्वर की कृपा और ज्ञान मुझे एक और आंकड़ा होने से बचा सकी है। मुझे अब बताने दीजिये की कैसे हमारे सबसे अनुग्रहकरी परमेहस्वर ने ऐसा किया है। मैं इस प्रक्रिया ज्यादा सरल कर सकता है, लेकिन वह कुंजी ने जो मेरे जीवन में समझ के कुछ दरवाजे खुली है और कुछ मुझे स्थानों में ले गयी है जो मैं अन्यथा स्वयं से पहुँचने के लिए सक्षम था। आप भी इस कुंजी का उपयोग कर सकते हैं। लेकिन पहले प्रार्थना करते हैं।

विवाह का निर्माण!

“प्रिय परमेश्वर ,क्या आप कृपया हमारे जिद्दी और अंधा हृदय को तोड़ने में सहायता करेंगे। हम आपके प्यार के लायक नहीं हैं। हम यह समझ भी नहीं सकते हैं। सूरज की तरह, यह बहुत उज्ज्वल है कि हम धूप का चश्मा पहन कर उसके प्रकाश दूर रहते हैं। हमने अंधेरे के साये में जीना सीख लिया है बजाय आपके प्यार के गौरव के। हमें करीब ले आइये , प्रिय परमेश्वर , हमें अपने और करीब ले आइये इतना कि बदले में हम महान विवाह के भागिदार हो सके। मसीह के गौरवशाली नाम पर हम प्रार्थना करते हैं, आमीन।

सुलैमान के श्रेष्ठगीत ने मेरे जीवन को बदलने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वहाँ कुछ पढ़ है जिससे परमेश्वर ने मुझे दिखाया है की वे मुझसे प्रेम करते हैं और उन्होंने



मुझे स्वीकार किया है। जब एक बच्चा आलोचना और कड़वाहट के साथ बढ़ता है, तब वह वास्तव में प्रेम क्या है नहीं जानता। इस बच्चे के एकांत में एक भीतरी जीवन है जो कड़वे रहस्य और गुस्से से भरा हुआ है। यह हालात बाहर पर तो ठीक प्रतीत हो सकता है, लेकिन समस्या भीतर की हैं। यह समस्यायें दूसरों के

साथ और विशेष रूप से शादी में रिश्तों में और अधिक स्पष्ट हो जाती हैं।

सुलैमान के श्रेष्ठगीत के तीन पदों के दो वर्ग हैं जो एक से बढ़ता प्रेम और विश्वास का वर्णन करते हैं। पहले त्रय के प्रथम खंड में (1:1-3:5) से पुस्तक की। यह जोड़ी के प्रेम प्रसंग या नवोदित रोमांस की चर्चा करता है। दूसरी त्रय सुलैमान की बाकि पूरी किताब पर फैला हुआ है। इन गीतों में से एक दोनों भाग में है।

शक्तिशाली तरीका है परमेश्वर ने मुझे इस सत्य के साथ अवगत कराया कि उसके साथ हमारे संबंध एक आदमी और औरत के सफर के संबंध के सामान है , जो शादी में प्रवेश करने और एक के रूप में एक साथ रहते हैं।

मेरे जीवन के इस बिंदु पर मैं परमेश्वर से एक ही भावना से भरे प्रेम से प्रेम करता था। मैं कॉलेज के बाहर निकलने के बाद शादी करने की गहरी आशा को

किया करता था। हर पद कुछ महत्वपूर्ण दृष्टिकोणकी बात को खोलता था जो की कि एक अंतरंग संबंध में जरूरी है। यह दोनों परमेश्वर के साथ और साथ ही हमारे साथी के साथ का सच है। आइये उन पर एक नज़र डालें।

सत्य # 1: विश्वास का पथ

हम यह सच इस पहले त्रय में मिलेगा 1:5, 2:1 और 2:16। प्रत्येक बयान होने वाली दुल्हन-का प्रतिबिंब है। वह उसकेहोने वाले पति के प्यार की रोशनी में खुद को दर्शाती है (हालांकि ऐसा लगता है कि 1: 5 और 2:16 वह उसकी उपस्थिति में वास्तव में नहीं था)। पुरुषों को दुल्हन से सीखने में थोड़ा अजीब लग सकता है। उन्हें लगता है, "मैं कोई दुल्हन हूँ" और बस बंद कर देते हैं। लेकिन रुकिए।

याद रखें कि यह पुस्तक एक आध्यात्मिक और भौतिक दोनों के नजरिए से लिखी गयी है। इस मामले में, जब दुल्हन बोल रही है, खुद के बारे में ऐसा सोचें जैसे आप मसीह की दुल्हन के रूप में हैं। आदमी, औरत को प्यार करता है , यह प्रतिनिधित्व करता है की मसीह चर्च के लिए अपना प्यार दिखा रहे हैं। होने वाली दुल्हन सभी मसीहों का प्रतिनिधित्व करती है। जैसे इफिसियों 5 कहते हैं, कलीसिया मसीह की दुल्हन है। इससे हमें कुछ लिंग के अंतराल को हटाने में मदद मिलेगी अन्यथा हमारे हृदय अधिकार से इन सत्य को नहीं समझ पाएंगे।

स्वीकार किए जाना > मूल्यवान > संबंधित

1) स्वीकृत (श्रेष्ठगीत 1:5)

हे यरूशलेम की पुत्रियों, मैं काली तो हूँ परन्तु सुन्दर हूँ, केदार के तम्बुओं के और सुलैमान के पर्दों के तुल्य हूँ। मुझे इसलिये न घूर कि मैं साँवली हूँ, क्योंकि मैं धूप से झुलस गई। मेरी माता के पुत्र मुझ से अप्रसन्न थे, उन्होंने मुझ को दाख की बारियों की रखवालि बनाया; परन्तु मैं ने अपनी निज दाख की बारी की रखवाली नहीं की! (श्रेष्ठगीत1:5-6)

कुंजी वाक्यांश है, "मैं काले लेकिन सुंदर हूँ।" इन शब्दों के माध्यम से और निम्नलिखित विवरण से हमें पता चलता है उसकी प्रारंभिक स्वयं की धारणा क्या हैं। निम्नलिखित पदों में हमें उसकी विकसित होती हुयी स्वयं की धारणा का पता चलता है।

विवाह का निर्माण!

ध्यान दें इस शब्द 'धारणा' के उपयोग पर, क्योंकि कई बार जो हम खुद के बारे में जो जानते हैं वह हमेशा सच नहीं है। उदाहरण के

अनुभूति

मेरी अपने बारे में क्या अनुभूति है अक्सर वह सही नहीं होता परमेश्वर की सच्चाई यह है कि वह हमें स्वतन्त्र करता है उसकी अनुभूति बताती है कि, क्या सही और वास्तविक है और हमें इन सच्चाईयों को प्राप्त करने की आवश्यकता है।

<u>स्वयं की धारणा</u>	<u>परमेश्वर की अनुभूति हमारे लिये</u>
ग़लत हम मानते हैं कि हम बुरे नहीं हैं।	सही हम पूर्ण रूप से परमेश्वर के सामने स्वीकार्य नहीं हैं हमारे पापों के कारण।
ग़लत हम अनाड़ी अस्वीकार्य एवं अकेला महसूस करते हैं।	सही बहुमूल्य जीव के रूप में हम एक के उद्देश्य लिए गए हैं।

लिए, हम पापी हैं, लेकिन कई लोग इसे इनकार करते हैं। दूसरी ओर, हम अनाड़ी और अकेला महसूस करते हैं किन्तु हम एक उद्देश्य के साथ रचे गए बहुमूल्य जीव हैं। मैं अपने बारे में अक्सर क्या सोचता हूँ वह ज्यादातर सच नहीं होता। यह परमेश्वर की सच्चाई है जो हमें मुक्त कर सकती है। हमारे बारे में उसकी धारणा क्या है ही सही है और वास्तविक है। यह वह सत्य है जो हमें प्राप्त करने की आवश्यकता है कि हम खुद के साथ ही उसके बारे में भी एक सही परिप्रेक्ष्य हासिल कर सके। सवाल यह है कि "कैसे?"

कई मसीही लोगों ने परमेश्वर के प्रेम के बारे में सुना है, लेकिन वह उसे अछूता हैं। उन्हें लगता है कि वे परमेश्वर के प्यार के लायक हैं। वे अपने जीवन में कुछ घटनाओं के होने पर पर गुस्सा करते हैं और उनके लिए परमेश्वर के प्यार पर शक करने लगते हैं। ये लोग इस युवती से बहुत अलग हैं। वे नहीं कहते 'मैं काली हूँ लेकिन सुंदर हूँ,' लेकिन कहते हैं 'मैं गोरी हूँ और सुंदर हूँ।' मुझे इसकी शुरुआत के साथ कोई समस्या नहीं है।

परमेश्वर ने पहले ही मेरे भयानक स्वार्थ और पापों से मुझे अवगत करा चूका है जब उसने मुझे बचाया था। बाद में, उन्होंने मुझे अपने वचन में दिखाया कि कितना सटीक मेरा पापी जीवन का उनका दृष्टिकोण था। मैं सच में गर्व, स्वार्थ और बुरे नजरिए की एक लंबी सूची के साथ भरा हुआ था, और मेरा व्यवहार कि परमेश्वर को महिमा नहीं देता था।

वहाँ स्वयं को समझने के लिए दो दृष्टिकोण हैं। वे एक व्यक्ति के जीवन में एक महत्वपूर्ण अंतर ल सकते हैं। यीशु अपने प्रसिद्ध पहाड़ी उपदेश, पर भी उनका यह ही दृष्टिकोण था जिसके साथ उन्होंने शुरुआत की, “धन्य हैं जो मन के दीन हैं”। (मत्ती 5:3)

चाहो या नहीं चाहो की हम अपने पापी जीवन के बारे में तथ्यों को स्वीकार करते हैं की नहीं लेकिन वे हमारे जीवन के दृष्टिकोण को आकार देते हैं। दुल्हन खुले तौर पर स्वीकार करती है कि कैसे 'कलंकित' वह देख रही है। उसकी त्वचा खेतों में कड़ी मेहनत करने की वजह से जल गयी है। उसके पास उसकी त्वचा की रक्षा करने के लिए साधन नहीं था क्योंकि वह महल में पाली बड़ी नहीं है, लेकिन निम्न वर्ग के होने के कारण जल गयी है और बड़ी मुश्किल से बाहर काम करती ही।⁶¹ और भी अधिक विशेष रूप से, वह परिवार में सबसे कम है क्योंकि वह खुद सबसे कठिन काम करती है। एक आध्यात्मिक अर्थ में 'काला' मसीह के प्यार को पाने की अयोग्यता और उसके पाप के कारण को प्रतिनिधित्व करता है।

मुझे इसलिये न घूर कि मैं साँवली हूँ, क्योंकि मैं धूप से झुलस गई। मेरी माता के पुत्र मुझ से अप्रसन्न थे, उन्होंने मुझ को दाख की बारियों की रखवालिन् बनाया; परन्तु मैं ने अपनी निज दाख की बारी की रखवाली नहीं की!

इन दो विचारों के वास्तविक अर्थ को समझने के लिए आइये एक दूसरे पक्ष को देखो।

⁶¹ कृपया गलत निष्कर्ष नहीं निकालें कि वह प्यारी नहीं थी क्योंकि वह काली आफ्रीका से थी। यह बात स्पष्ट है कि उसका काला रंग खेतों में काम करने की वजह से है

धर्मी दृष्टिकोण	सांसारिक दृष्टिकोण
<p>“मैं काली हूँ लेकिन सुंदर हूँ।”</p>	<p>“मैं गोरी हूँ और सुंदर हूँ।”</p>
<p>विनम्रता: एक का अपने दोष को पहचानना है।</p>	<p>सतही: स्वयं पर ध्यान दें: कम करीब है क्योंकि स्वतंत्र है।</p>
<p>अयोग्य: ध्यान देने की सराहना , क्योंकि वह एक नहीं है। ध्यान के स्रोत के बाहर आत्म है।</p>	<p>योग्य: ध्यान और प्रशंसा उम्मीद की जाती है, क्योंकि स्रोत हमारे ही अंदर है।</p>
<p>पाये जाने वाला: सौंदर्य , उम्र या उपहार के स्वतंत्र है क्योंकि वह चुनी हुई है।</p>	<p>आलोचनीय: अस्थायी व लुप्त चीजों पर निर्भर करता है।</p>
<p>सुरक्षित: तारीफ नहीं चाहती , लेकिन प्रसन्न है इस स्नेह को प्राप्त करने के बाद</p>	<p>असुरक्षा: अभिपुष्टि चाहता है: उत्सुकता अगर नहीं मिली क्योंकि रिश्ता अस्थायी पर निर्भर करता है।</p>

सभी रिश्तों की शुरुआत सतही होती है। पुरुष और स्त्री शुरुआत में सिर्फ एक दूसरे को जानते हो रहते है। जोड़े जैसे ही बेहतर परिचित होते है, तब ही एक रिश्ता और अधिक गहरा और व्यक्तिगत बनता जाता है। उनको अपने हृदय के अंतरंग बातों को प्रकट करना चाहिए।

जब एक व्यक्ति इस विश्वास पर निर्भर हो के एक रिश्ता की शुरुआत करता है की वह कुछ है या उसके कुछ करने से यह रिश्ता है तब वह रिश्ते बहुत ही सतही है।

इसके परिणाम स्वरूप में, व्यक्ति दूसरे की सेवा पर ध्यान केंद्रित नहीं कर पता लेकिन लगातार ध्यान और प्रतिज्ञान पाने के लिए तरीके खोजने लगता है। क्योंकि रिश्ते बिना शर्त स्वीकृति की स्थापना के आधार पर नहीं है यह अस्थिर है। जब तक अस्थिर रिश्ते के रूप में माना जाता है, तो सभी एक की ऊर्जा को गलत जगह लगती है। यह रक्षा। क्षुद्र , जलन संदिग्ध व्यवहार, समय के लिए मांग और उपहार इस के कुछ अभिव्यक्तियाँ है।

असुरक्षित रिश्ते हालांकि हमेंशा संकट को जन्म देते हैं, बात करने के लिये, विशेष भय से, चिंतयें व सतही रिश्ते। यह अंदरूनी प्रास शरीर को लेकर और रिश्तों को नीचे करता है। वे आलोचना को पोषित नहीं करते जो एक आपसी रिश्ते को बढाने के लिये आवश्यक है।

व्यक्ति पूरी तरह से अपने स्वयं प्रकट करने की हिम्मत अस्वीकृति के डर से नहीं करता। इस तरह की महिलाओं सौंदर्य पर अपनी स्वीकृति और उम्र और

एक जाँच चिन्ह दिये गये प्रमुख तत्वों के बगल में लगाईये जो आपके लिये सही विवाह लगता है।



- विनम्रता: एक गलती को स्वीकार कर माफी चाहते हैं।
- प्रशंसा: अयोग्य के रूप में प्यार प्राप्त करता है।
- स्वीकार किया: शांति से, अधमकी, शांत और खुशी से।
- उत्तरदायी: प्यार भरे इशारों को प्रेम से प्रतिक्रिया देना।
- भरोसा करना: अपने साथी उसका/उसकी वास्तव में फिऊ है।
- सुरक्षित: साथी प्रेम व स्नेह में प्रसन्न रहना।

झुर्रियों पर उनके डर का आधार बनाती हैं। विश्वास इसलिए कभी नहीं बढ़ता है। इसमें कोई अंतरंग बंटवारा नहीं हो पता जिससे महान विवाह का गठन किया जा सकता है।

जब एक व्यक्ति सही शुरुआत करता है, तब अलगही सिद्धांतों की स्थापना होती है। रिश्ते में सुरक्षा एक सामान्य रिश्ते पर भरोसा के विकास के परिणाम स्वरूप है। व्यसंबंध के विकसित होने के साथ व्यक्ति का विकास हो सकता है।

हमारी मसीही जीवन के लिए भी एक स्थिर नींव की जरूरत है। जो लोग अपने पाप के बारे में बहुत स्पष्ट नहीं हैं, उनहे अपने उद्धार पर पूर्ण यकीन नहीं है। प्रारंभिक शिष्यत्व प्रशिक्षण हमेशा हमारे पाप और यीशु मसीह के अनुग्रह और प्रभावी काम के बारे में से प्रारम्भ होना चाहिए।

वह केवल नहीं कहती है, "मैं काली हूँ।" लेकिन वह कहती हैं, "मैं काली लेकिन सुंदर हूँ।" हमें अपनी कमजोरियों के साथ व्यस्त होने की जरूरत नहीं है। हम समस्याओं के साथ हमेशा रहेंगे। हम पापी हैं, लेकिन कुछ महान हमारे जीवन में आ गया है जो हमारे नीच मूल के बावजूद प्रेम करता है। निम्नलिखित पदों में हम सब दासियों को खुशी से देखेंगे क्योंकि वह चुन ली गयी हैं। राजा ने उस पर अपने हृदय को लगा लिया है।

यही कारण है कि जो प्रतिबद्धता शादी में औपचारिक रूप से दिया जाता है बहुत महत्वपूर्ण है। दूल्हा ने विशेष रूप से जीवन के लिए उसे चुना है। बाह उस पर स्नेह का उसका पूरा हृदय उंडेल देगा। वह उसकी अवर पृष्ठभूमि के बावजूद लिए चुन ली गयी है। उसकी खुशी स्वीकृति से आता है और उसकी स्पष्ट खामियों के बावजूद।

यह आध्यात्मिक के साथ सांसारिक लिए भी सत्य है। समानांतर रिश्तों में ज्यादा स्पष्टता आती है। जब हम एक को समझने में कमजोर होते हैं, तब हम दूसरे से सीख सकते हैं। उदाहरण के लिए, मेरा परिवार टूट गया था, लेकिन मैं यहाँ परमेश्वर के वचन से मेरे लिए परमेश्वर के महान प्रेम को सीख सकता हूँ।

हम अपने आप में किसी भी अच्छी बात के कारण नहीं चुने गए। सुलैमान के पास कई से चुनाव थे लेकिन वह उस पर उनके पक्ष को रखा और उसे चुना है (1: 4)। वह उसे में प्रसन्न होने के लिए उसे चुना। इसी तरह, परमेश्वर ने हमें मसीह में प्रसन्न होने के लिए चुना है। उसने हर किसी का चयन नहीं किया। हम पापी हैं और तब भी उसने हमें चुना है। हमारा उद्धार हम क्या करते हैं उस पर निर्भर नहीं है क्योंकि हमारे पाप सब कुछ है। उन्होंने धर्मभ्रष्ट और दुष्ट को चुना है की उनकी विशेष धरोहर बन सके। कई मसीही चुनाव के शिक्षण को नहीं मानते क्योंकि वे अपने कालेपन को नहीं समझते।'

हमारे मसीही जीवन में आनन्द तब शुरू होता है जब हम हम मसीह के चुनाव के जश्न को मनाते हैं क्योंकि वह हम वांछित लोगो को अनंत काल के लिए उसके साथ रखेगा।

हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता का धन्यवाद हो, कि उस ने हमें मसीह में स्वर्गीय स्थानों में सब प्रकार की आशीष दी है। जैसा उस ने हमें जगत की उत्पत्ति से पहिले

उस में चुन लिया, कि हम उसके निकट प्रेम में पवित्र और निर्दोष हों। और अपनी इच्छा की सुमति के अनुसार हमें अपने लिये पहिले से ठहराया, कि यीशु मसीह के द्वारा हम उसके लेपालक पुत्र हों, कि उसके उस अनुग्रह की महिमा की स्तुति हो, जिसे उस ने हमें उस प्यारे में सेंट में दिया। (इफिसियो 1: 3-6)

हम कभी नहीं समझ सकते हैं की उसने हमें क्यों चुना होगा, लेकिन हमें आगे बढ़ें और अपनी सोच में परिवर्तन लाएं! यह मसीह में हमारी स्वीकृति है। इससे यह भी पता चलता है कि पति को क्यों यह आदेश है लगातार अपनी पत्नियों को प्यार करते रहे। यही कारण है कि पत्नी बहुत अच्छा लगता है जब उसका पति इस तरह के शब्दों और कर्मों के माध्यम से उसे अपनी प्रतिबद्धता की पुष्टि की करता है। अपने प्यार के उन अभिव्यक्तियों से उसे कुछ गहरी और विशेष और जीवन भर अपनी पसंद की याद दिलाता है।

हर कोई स्वीकृति चाहता है, लेकिन जो लोग इस स्वीकृति को बचपन में नहीं पाते (चाहे वह ठीक ही माना जाता है या नहीं) वह इसे हृदय से अपने जीवन में चाहते हैं। यह वह स्वीकृति की गहरी इच्छा है जो उन्हें इस रिश्ते और शादी में अप्रस्तुत व्यक्तियों की तरह जोड़ देती है। इस स्वीकृति के बिना, हालांकि, वे खुद को जखमी और अभी तक स्वीकृति न पाया हुआ समझते हैं और एक नए रिश्ते में जाने को प्रेरित हो जाते हैं। मैं उनमें से एक था। सौभाग्य से, परमेश्वर ने मुझ पर अनुग्रह किया और मैं वास्तव में स्वीकृति की मांग मसीह में किया है और कुछ मानव संबंध में नहीं है समझ पाया।

2) मूल्यवान (श्रेष्ठगीत 2:1)

होने वाली दुल्हन : मैं शारोन देश का गुलाब और तराइयों में का सोसन फूल हूँ।
(श्रेष्ठगीत 2:1)

होने वाला दूल्हा : जैसे सोसन फूल कटीले पेड़ों के बीच जैसे ही मेरी प्रिय युवतियों के बीच में है। (2:2)

इन स्वयं के तीन प्रकाशनों के खुलासे के बीच में, बहुत साड़ी विशेष बातें और गतिविधियों जोड़े के बीच में चल रही हैं। इस प्रेमालाप चरण के दौरान जोडा 'प्यार में' है। वे शब्दों के आदान प्रदान के रूप में अपने अंतरंगता में बढ़ रहे हैं। अगर विवाहित जोड़े इस तरह का व्यवहार को जारी कर सकते हैं, तो कई समस्याओं का

हल हो जाएगा! 1: तो क्या पता चलता है यहाँ हमें
2 :1 में दुल्हन की प्रतिक्रिया से?

हम उसे उसके काले होने में शोकित होते नहीं देखते भले ही उसकी त्वचा कोई संदेह नहीं है अभी भी काली है। अस्वीकृति का भय अब खत्म हो गया है। वह अब वह उन चीजों के बारे में नहीं सोचती है। हम उसके शब्दों से देख सकते हैं कि वह क्या सोच रही है।⁶² वह अब खुद को, "मैं शेरोन, का गुलाब हूँ।" कह रही है।



उसकी समझ विकसित हो गयी है और अब वह खुद को उस नज़र से देख पा रही है जैसा उसका पति। वह खुद को सुंदर फूलों के मार्ग मिश्रित रंग और सुगंध से भरा हुआ एक फूल कह रही है। एक कोमल स्पर्श के साथ गर्म है। जब एक व्यक्ति स्वीकृति पाता है, वे आगे बढ़ने और आगे विकास के लिए अपने जीवन को खोलने के लिए शुरुआत कर सकते हैं। हम खुद को मूल्यवान के रूप में देखने लगते हैं।

उसका कीमती मूल्य: यह है वहजो वह देखता है। हम यह अगले पढ़ के माध्यम से देख सकते हैं। वह एक सुंदर और वांछनीय फूल के रूप में खुद का वर्णन करना बंद कर देती है। वह महत्वपूर्ण रूप से वहाँ बंद नहीं करता है। वह उसके दिमाग में लाता है कि यदि हम केवल शब्द से जो हम लिखते हैं, का कहते हैं खुद का एक उद्देश्य देखें तो हम अपने भीतर के संघर्ष के बारे में हासिल कर लेंगे।

वह है "कांटों के बीच एक लिली है।" वह अपने चुनाव से खुश है। वह कहता है कि वह एक सुंदर लिली है।

लेकिन वह इस से परे जाता है और कहता है की वह कांटों के बीच एक लिली के रूप में है। वह उसके बारे में अपनी पसंद से प्रसन्न।

वह न केवल उसकी ओर अपनी प्रतिबद्धता को कहता है लेकिन उसके लिए अपने स्नेह को भी व्यक्त करता है। यह अटूट स्नेह पुस्तक के अंत तक जारी है।

⁶² अगर हम केवल एक उद्देश्य को ले जो अपने आपके लिये जो लिखा है उन शब्दों से, बोलिये और सोचिये, हम एक भारी मात्रा में अपने अन्दरूनी संघर्ष को पा सकते हैं

ऐसा नहीं है की यह आदमी अंधा है। नहीं। वहाँ कई दासियों उसके आसपास हैं। लेकिन यह इतना अधिक अद्भुत है की वह आदमी सिर्फ उसकी पत्नी एकमात्र प्रसन्न है: (4 :1)।

आप मूल्य कैसे तय करते हैं? आप कैसे तय करते हैं, की कौन सी कार सबसे अच्छी है? आप आसपास देखते ?क्या आप तुलना कर के नहीं देखते हैं कि कौन सा एक मॉडल अगले से बेहतर है? अंत में वह संतुष्ट है क्योंकि उसने खरीदारी कर ली है। यह आदमी पुष्टि करता है कि वह चारों ओर देखा चूका है। अन्य महिलाओं उसकी तुलना में बदसूरत 'कांटों' की तरह हैं लेकिन उसकी पत्नी 'लिली' है।

वह अपनी पसंद को जब बताता है तब वह और प्रसन्न हो जाती है, और आगे उसके हृदय बिच कर प्यार प्रदान करती है। वह उसे प्रेम करता है; और वह उसका उत्तर देती है। खुद की उसकी धारणा धीरे धीरे उसके लिए अपने स्नेह से आकार में आ रही है। उसकी अपनी पसंद उसके मूल्य को बढ़ा देती है। जो लोग प्यार में हैं या प्यार करते हैं यह समझते हैं। यह गलत नहीं है, लेकिन यह सच है। कुछ खास हो रहा है। मेरा मानना है कि यह वापस से परमेश्वर के महान और अमूल्य प्यार की एक तस्वीर को दर्शाता है। हमें मुश्किल होता है उनके प्यार को समझने में और इस तरह के चित्रों और अनुभवों की हमें जरूरत है ताकि हम उनके महान इच्छा जो जान सके। उनकी प्रतिबद्धता और उसकी ओर स्नेह के कारन वह ठीक से खुद के बारे में सोच सकती है और स्वयं को आकार दे सकती है।

व्यावहारिक रूप से बोल रहा हूँ

पति को अपनी पत्नी के विशेष गुण की आवश्यकता है। वे यह सुनना पसंद करती है की कैसे वे विभिन्न क्षेत्रों में विशेष हैं। नीतिवचन 31 औरत के विशेष कर्मों कि सूचीबद्ध विवरण को बताता है। चाहे वह एक भोजन, या एक तरह के मीठे शब्द या एक मुस्कान हो, उसे पता होना चाहिए की कैसे वह विशेष रूप से आप के लिए एक वरदान है। जब पति अपनी पत्नियों में उनकी खुशी का इजहार करते हैं , पत्नियों और अधिक विश्वास के साथ प्रतिक्रिया देती हैं। एक पति के सराहना के शब्द सूरज के सामान हैं जो अधिक से अधिक अपनी पत्नी के हृदय को एक फूल की तरह खिलने को प्रकट करना का कार्य करता है।

विवाह का निर्माण!

मैंने देखा कि जैसा जैसे मैं अपनी पत्नी पर ध्यान केंद्रित करता हूँ उसकी ओर मेरी प्रतिबद्धता मेरे स्नेह के साथ बढ़ता है। उसके लिए मेरी स्वीकृति वह क्या करती है पर आधारित नहीं है पर मेरी स्वीकृति पर है। अगर मैं मेरी स्वीकृति उसके मूल्य पर रखकर करूँ, तो वह असुरक्षित हो जाएगी है और शादी रूक जाएगी। शायद हम कह सकते हैं कि हमें प्यार प्यार के खातिर करना चाहिए। केवल जब सूरज चमकता है फूल प्रकट होता है, और हम भीतर के कीमती मूल्य को देखते हैं।

आध्यात्मिक सत्य

परमेश्वर वास्तव में हमें खजाने की तरह रखता है। उसने गलती नहीं की है। उन्होंने हमें अनंत काल के लिए चुना है। यह इस कारण नहीं है क्योंकि हम में कुछ अच्छा है। हमें यह निष्कर्ष नहीं निकालना चाहिए, कि वह हमें अधिक मूल्य नहीं है। यह बिल्कुल विपरीत है (और यहाँ कुछ गलत तरीके से खत्म होता है जब हम केवल अपने पाप के बारे में सोचते हैं)। उनका प्यार हमारी प्रतिक्रियाओं को जागता है और हमारे लिए उनकी प्रतिबद्धता की वजह से है, हम उनके लिए मूल्यवान हो जाते हैं। उन्होंने हमें अपने स्वयं का बनाने के लिए निर्णय लिया क्योंकि वह हमारे साहचर्य मूल्य करता है। यहां महत्वपूर्ण बात यह है कि हम उसके हैं। हम उनके प्रति वफादार रहते हैं। हम दुनिया के लालच के झांसे में आने से इंकार कर देते हैं। हमारे पास इस पहले त्रय में जाने के लिए।

3) अपनापन (श्रेष्ठगीत 2:16)

मेरा प्रेमी मेरा है और मैं उसकी हूँ। (श्रेष्ठगीत 2:16)

महिला को चुनाव हो गया है। वह केवल अपनी पसंद की पुष्टि करता है। ये बातें खुल जाती हैं जब वह देखती है कि कैसे उसकी पहचान उसके पति में लपेटी हुई है। जब हम कदम # 2 और # 3 के बीच में पढ़ पढ़ते हैं तो हम शायद देख सकते हैं क्यों उसको इस तरह से लगता है ! एक और कदम है

मेरी प्रिय ने जवाब दिया और मुझ से कहा, "मेरा प्रेमी मुझ से कह रहा है, हे मेरी प्रिय, हे मेरी सुन्दरी, उठ कर चली आ; क्योंकि देख, जाड़ा जाता रहा; वर्षा भी हो चुकी और जाती रही है। पृथ्वी पर फूल दिखाई देते हैं, चिड़ियों के गाने का समय आ पहुंचा है, और हमारे देश में पिन्डुक का शब्द सुनाई देता है। (श्रेष्ठगीत 2: 10-12)

अंतरंगता एकतरफा मामला नहीं है। वास्तव में, हम देखेंगे कि यह पद कैसे दूसरे चक्र के पहले कदम के रूप में कार्य करता है। एक आदमी और एक औरत के बीच सच्ची अंतरंगता का चरण केवल शादी के बाद आ सकता है। लेकिन प्रेम के प्रसंग के इस चक्र में, जवान लड़की शादी के लिए अपने आपको तैयार करती है, जो हम जल्द ही अगले अध्याय में संबोधित करेंगे। वह सुंदरता के बारे में अधिक बात नहीं कर रही है। अब उसका संदर्भ बिंदु: उसके साथ पहचान: अधिकार और अपनापन बन जाता है।⁶³

मूल्य एक बात है, लेकिन स्वामित्व प्रतिबद्धता की भाषा है। शादी के बाद, प्रतिबद्धता की सील लगने के बाद, वहाँ वापस बदल जाना संभव नहीं है। विश्वास जो पहले विकसित किया गया है अब उसके जीवन में छा गया है। उसकी स्वीकृति ने उसको एकता की बात तक ल दिया है।

हम उसे इन बातों को सीधे से नहीं कह रहे हैं। वह सिर्फ उसके पूर्व शादी के विचार को पकड़ कर उन्हें एक बोटल में डाल रही है। **व्यावहारिक रूप**

कुछ लोगों को आश्चर्य होता है क्यों शादी रोमांस को समाप्त कर देती है यह नहीं होना चाहिए। रोमांस का उद्देश्य है एक के जीवन के लिए एक प्रतिबद्धता के बड़े स्टार पर ले जाने का। शादी एक विशेष आजीवन के पहरा रिश्ता पर लता है, जहां अंतरंगता पर कोई सवाल नहीं उठता। (हम कभी तलाक की धमकी न दें)। प्रेमालाप एक रिश्ते की झलक को दिखता है जो प्रेम हमें अपने रिश्ते में बना कर रखना है। शादी विवाह में हमें दैनिक स्नेह प्रदान करता है और सिखाता है कि किस तरह हमें प्रेम करना चाहिए। अगर हम पाते हैं कि हम अब हम अपने पति का मूल्य नहीं करते तो, हमें वापस जा अपने आप से पूछना चाहिए "यह कब बंद हुआ? "और "क्यों"? शायद हमने उस बहस को अनुमति दी है,

और हम कुछ हद तक भुलक्कड़ (क्योंकि असंतोष की) हो चुके हैं या समझौता करने के लिए तैयार कर दिया है या हमारे पति के लिए हमारे प्यार का समझौता करने चाहते हैं।

⁶³ यही है जिस पर पौलुस ने सख्त तौर पर संकेत किया है (1 कुरिन्थियों 7:1-3)।

आध्यात्मिक सच

प्रभु हमसे हमारे अपने प्रतिबद्धता को देखता है। उन्होंने हमें 'हमें एक मूल्य के साथ खरीदा है।' हमारी ओर उनकी प्रतिबद्धता के बारे कोई संदेह नहीं है। यीशु हमें उसमे बने रहने के लिए एक बार नहीं लेकिन बहुत बार बोला है। उन्नीस बार 'मसीह में 'उस में ' वाक्यांशों का उपयोग अकेले इफिसियों में किया जाता है। हमारे विश्वास की ताकत निर्भर करेगी की आखिर कितना हम वास्तव में खुद को उसके साथ की पहचान देते हैं (अर्थात मसीह)।

और उसी में तुम पर भी जब तुम ने सत्य का वचन सुना, जो तुम्हारे उद्धार का सुसमाचार है, और जिस पर तुम ने विश्वास किया, प्रतिज्ञा किए हुए पवित्र आत्मा की छाप लगी। (इफिसियों 1:13)

पहला त्रय के कुछ पद प्यार और विश्वास के विकास पर केंद्रित है। उनके रिश्ते के विकास के आगे बढ़ने पर दीखता है। सच है, यह केवल रोमांटिक है और आगे शादी के परीक्षण से हो कर गुजरा है (मैं क्या प्रतिक्रिया दूँ जब वह मुझे प्यार नहीं करता है जैसा मैं चाहती हूँ वह मुझे करे?) दूसरी ओर, इस पूर्व शादी के रोमांस ने जोड़ी को जीवन के लिए एक दूसरे के साथ रहने के लिए तैयार करा है।

पूर्व शादी के रोमांस के इस समय एक अच्छी शादी में विश्वास में बढ़ाने के निर्माण के लिए बनाया गया है। जोड़ी ने एक लंबा रास्ता को तय किया है जिससे वे जीवन के लिए एक दूसरे के लिए खुद को प्रतिबद्ध करने में एक दूसरे पर भरोसा कर सके। विश्वास के तत्वों में शामिल हैं:

- ❖ एक-दूसरे की स्वीकृति करा उस तरह से जैसे वे हैं
- ❖ इस तरह के शब्दों की एक सतत धारा
- ❖ प्रेम के शब्दों का आदान-प्रदान
- ❖ एक आदमी का महिला के लिए चयनात्मक पसंद
- ❖ अन्य सभी से ऊपर उसकी एक कोषाध्यक्ष
- ❖ स्वयं को एक दूसरे के साथ 'एक' बनने के लिए आत्मसमर्पण

हम विवाह में अपने स्वयं की चिंताओं को मरने के लिए एक दूसरे से वफादार हो जाते हैं। एक की तुलना में अन्य सभी चिंताओं को एक तरफ देना पढ़ सकता है। अगर शादी से पहले यह प्रतिबद्धता है, तो हम इस बारे में कोई संदेह नहीं होना चाहिए की कैसे विश्वास में बढ़ना और विकास करना। विश्वास का बीज है जो पहले लगाया था वसंत की बारिश, तूफान और गर्मियों में और सर्दियों के माध्यम में भी अंधकारमय जारी रहना चाहिए।

यदि आप शादी से पहले इस तरह अ यह शुरुआत है, हालांकि अद्भुत और सुंदर, अभी भी अंतरंगता आने के लिए की तुलना नहीं कर सकते हैं। विवाह एकता की राह की यात्रा में एक शुरुआती बिंदु है जहां अंतरंगता बढ़ता और पनपता है। यह वही है जो हम दूसरे त्रय के निरीक्षण के पद में पढ़ेंगे।

तीनों #2: अंतरंगता की ओर की राह

आइये दूसरे त्रय पर संक्षेप में एक नजर डालते हुआ अंतरंगता का विकास को देखते हैं। क्या आपको याद है कि अंतरंगता उतना ही ज्यादा विकसित हो सकता है विश्वास करती है। पति के निरंतर प्यार के तहत, हम देखते हैं की दुल्हन उसके लिए अपने प्यार की रोशनी में खुद को देखने के माध्यम से जीवन में बढ़ता पाते हैं। यह प्रतीत होता है कि चिंतनशील सोचा की परिपक्वता में 02:16 अपने अधिकतम तक पहुँच जाता है, लेकिन स्पष्ट रूप से यह ऐसा नहीं है।

सुलैमान के गीत के दो तथ्य

<p>तथ्य #1: विश्वास का मार्ग (सु.ग १:५; २:१; २:१६)</p>	<p>तथ्य #1: इतना विश्वास विकसित करना है की पति पत्नी एक दुसरे से अपने दिल की बात कह सके</p>
<p>तथ्य #2: अंतरंगता की ओर रास्ता (सु.ग २:१६; ६:३ ७:१०)</p>	<p>तथ्य #2: एक जोड़े के लिए गहरी अंतरंगता तक पहुँचने के लिए दो परिवर्तनों को स्पष्ट किया</p>

प्रगति और अधिक परिष्कृत हो जाती है। केवल साथ में बिताये हुए साल और अनुभव है शादी के रिश्ते को आगे ले जा सकते हैं। आइये तीन समान पदो पर

ध्यान दें। हम कुछ जासूसी का काम करने की आवश्यकता होगी। पने पति की सेवा कर सकते हैं, तो आप बाद में भी कर सकते हैं।

मेरा प्रमी मेरा है और मैं उसकी हूँ। (श्रेष्ठगीत 2:16)

“मैं अपने प्रेमी की हूँ और मेरा प्रेमी मेरा है।” (श्रेष्ठगीत 6:3)

“मैं अपनी प्रेमी की हूँ। और उसकी लालसा मेरी ओर नित बनी रहती है।” (श्रेष्ठगीत 7:10)

अंतरंगता को विकसित होते हुए देखने के जो उसे हो जाना चाहिए, हम एक दूसरे के लिए एक गंभीर प्रतिबद्धता के साथ शुरू करते हैं। दूल्हा उसे बिना शर्त प्यार करने के लिए खुद को प्रतिबद्ध करता है। दुल्हन खुद को सौंप देने के द्वारा उस को प्रतिउत्तर देती है। वह उसके नाम को ले लेती है। वह उसके साथ जा कर रहने लगती है। पहले कदम के बाद, जिसकी हम हम संक्षेप में चर्चा करेंगे, हम दो अन्य परिवर्तनों जो एक जोड़े के दिमाग व हृदय में उत्पन्न होता है।

प्रतिबद्धता (श्रेष्ठगीत 2:16)

“मेरा प्रमी मेरा है और मैं उसकी हूँ।” (श्रेष्ठगीत 2:16)

इस मामले में, होने वाली दुल्हन को अपने पति होने में खुशी मिल गयी है। उसे क्या मिला है वह पर ध्यान केंद्रित किती है। वह मानती है कि वह उसके लिए है, लेकिन यह उसके मन में दूसरी बात है। (ध्यान दें की वह पहली और दूसरी पंक्तियों में क्या कहती हैं।) वह अपनी क्षमता, विशेषाधिकार या जिम्मेदारी की कम सोचता है कि उसका ख्याल रखने के लिए और उसकी सेवा करने के लिए समर्पित है। हम यह नहीं कह रहे हैं कि यह गलत है। यह केवल आगे के विकास और परिपक्वता के लिए ज्यादा स्थान और गुंजाइश को रखता है। एक फूल के खिलने की शुरुआत एक पूर्ण खिलना से अभी भी कुछ दूर है। सके पति के हृदय और दिमाग में होता है ध्यान दें।

हम ने पहले से ही विकास के लिए आवश्यक कदमों कि शादी की कसमें की प्रतिबद्धता के लिए नेतृत्व करती है आपको बताया है। कुछ जोड़ों इस बात तक तो आते हैं, लेकिन वे गलत मान्यताओं के साथ शुरुआत करते हैं: अंतरंगता आकर्षण के कारण होती है बजाय प्रतिबद्धता, सौंदर्य पर आधारित है बजाय

चुनाव। ऐसा लगता है की वे एक अच्छे संबंध में है , लेकिन यह व्यक्तिगत शिकायत, स्वार्थ और गर्व के कृत्यों से रुक जाता है। कई बार वे समझते ही नहीं हैं और सभी बातों को खोने के डर से इन असुरक्षा से निपटने के लिए प्रयास भी नहीं करते।

बहुत से लोग आश्चर्य करते हैं की कैसे "इतना अच्छा जोड़े का इतना बुरा अंत हुआ। इसके कई कारण हो सकते हैं, लेकिन परमेश्वर हमें पहले हमारे अंतरंग होने की क्षमता की जांच करना को कहते हैं। एक सच्ची अंतरंगता किसी के जीवन के खोलने की आवश्यकता पर निर्भर करती है। यह बदले में एक के अपने हृदय के अनावरण की आवश्यकता पर निर्भर होती है। एक व्यक्ति की परिपक्व शादी तब तक नहीं हो सकती जब तक कि वह व्यक्तिगत रूप से परिपक्व नहीं है। अंतरंगता विकसित तब ही हो सकता है जब एक जोड़ा व्यक्तिगत रूप से परिपक्व हो।

भक्ति के द्वारा परिवर्तन (श्रेष्ठगीत 6:3)

"मैं अपने प्रेमी की हूं और मेरा प्रेमी मेरा है।"

ध्यान से देखो और ध्यान दें कि इस पद और पूर्व पद के बीच क्या अंतर है। ध्यान से देखिए। यह एक शादीशुदा जोड़े के लिए परिवर्तन के लिए सबसे पहले आवश्यक है की वह अधिक से अधिक अंतरंगता में हो। यह सही है। इस वाक्य में यह दोनों अवधारण ने अपने स्थानों को बदल दिया है। पहले वाक्य में वह यह देखती है की उसे इस शादी से क्या मिल रहा है। वह उसके होने पर केंद्रित है। यह अभी निश्चित रूप से सच है, लेकिन यह अब उसके सामने सबसे बड़ी सोच नहीं है। थोड़ी देर के लिए, वह यह जरूर सोचती है की वह उसके साथ रिश्ते में है। यह जारी हो गया है। अब क्या सबसे महत्वपूर्ण है?

"मैं अपने प्रेमी की हूं" अब यह पहले स्थान पर आ गया है। अब वह अपनी पत्नी के रूप में उसके साथ रहने की अद्भुत बुलाहट पर केंद्रित है। यह प्रगति प्राकृतिक और अच्छी है। वह जितना अधिक इस शादी में रहेगी उतना अधिक गहराई और अपने पति के प्यार को जानेगी, वह उतना ही गहरा परमेश्वर की बुलाहट में प्रतिबद्धता होगी।

यह को अधिक वफादार भक्ति परिणाम स्वरूप है। नीतिवचन 31 हमें एक स्त्री जो उसकी पत्नी के रूप में बुलाहट के लिए वफादार है याद दिलाता है। वह इसे क्या पायेगी पर नहीं किन्तु क्या दे सकती हैं, पर ध्यान केंद्रित करती है। एक बलिदान देने वाली भावना एक महान शादी के लिए महत्वपूर्ण है। यह केवल तभी संभव है जब हम अपनी बुलाहट को पहचानते हैं और पनी बुलाहट की रोशनी में सेवा करने के लिए खुद को प्रेरित करते हैं।

आत्मसमर्पण करने के लिए परिवर्तन (श्रेष्ठगीत 7:10)

"मैं अपने प्रेमी की हूँ और उसकी इच्छा मेरे लिए है।"

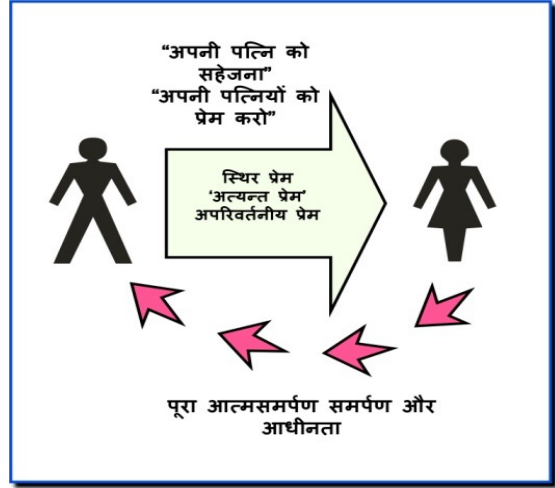
इस अंतिम वाक्यांश में हम सबसे तीव्र और परिपक्व अंतरंगता और विश्वास को देखा जाता है। इसमें और ऊपर दोनों बातों के बीच क्या अंतर है? समर्पण तीसरे परिवर्तन का प्रतीक है।

हम पहले देखते हैं कि "वह है मेरा" चला गया है। वह अब इस बात पर केंद्रित नहीं है की उसे क्या मिलेगा - उसका पति (हालांकि वह वास्तव में सही है)। न ही हमें निष्कर्ष निकालना चाहिए वह अब उसको मूल्य नहीं देती है। हालांकि मूल्य की कमी कई शादियों में होता है, ऐसी परिस्थिति में जोड़े इन शब्दों का प्रयोग नहीं करेंगे। हमें दोनों के बीच अंतर करने के लिए सावधान रहना चाहिए। उन दोनों के बीच में विश्वास बहुत बढ़ गया है, ताकि वे आत्मसमर्पण के इस पड़ाव तक पहुंच चुके हैं।

उसने इस जगह को नहीं बदला "मैं हूँ मेरे प्रिय की है।" यह वहां है जहां उसे होना चाहिए। उसके जीवन की विशेषता यह है की वह उसके के लिए समर्पित है। वह उसकी है। इस तरह 'एकता' खुद को एकीकृत करता है शादी के व्यावहारिक पहलुओं में। पत्नी को मुख्य रूप से अपने आपको एक सहायक के रूप में देखना चाहिए। वह उसके लिए है। पॉल कहते हैं, "स्त्री पुरुष के लिए बनायी गयी है।" लेकिन हम एक जोड़े के परिवर्तन के मुख्य बाटी को अभी तक नहीं देखें हैं।

वह खुद को अपने पति के निस्वार्थ प्यार में सौंप देती है। वह कहती हैं, "उनकी इच्छा मेरे लिए है।" यह अभिव्यक्ति कई वर्षों के नियमित और निरंतर प्रेम के माध्यम से आया है। वह सिर्फ यह नहीं कह रही है की वह क्या उम्मीद करती

है सच है। यह अक्सर एक अपरिपक्व प्यार में कहा जाता है। वह उसके साथ सेक्स और खूबसूरती की वजह से नहीं है। एक महान शादी में पति लगातार सच्चाई को दिखाया तब भी जब वह अच्छा महसूस नहीं कर रही है।



एक बार जब पत्नी इस बात को जान जाती है, एक बड़ा परिवर्तन उस में आ जाता है। वह पूरी तरह से सुरक्षित हो जाती है और उसके लिए अपने प्रेम के ज्ञान में पूरी हो जाती है। यह वह प्रेम है जो इफिसियों 5:27 में दिखाई देता है

और उसे एक ऐसी तेजस्वी कलीसिया बना कर अपने पास खड़ी करे, जिस में न कलंक, न झुर्री, न कोई ऐसी वस्तु हो, वरन पवित्र और निर्दोष हो। हमारी चिंताओं, भय और अन्य पाप एक सुंदर टेपेस्ट्री पर बड़े दाग से हो जाते हैं। हम इच्छा करते हैं की वह चले जाएं। अंतरंगता के कदम धीरे-धीरे बढ़ते हैं किन्तु वह असली हैं।

वह कहती है कि वह उसके साथ अपने प्यार को सब बातों में पति है। उसके पति ने एक हजार बार एक हजार तरीकों से अपने प्रेम को ज़ाहिर किया होगा लेकिन अंत में एक नया संतोषजनक और पूरा करने वाली जागरूकता आ जाती है कि वह वास्तव में उसे प्यार करता है। उन्होंने अपनी पत्नी को कोई अन्य कारण के लिए नहीं किन्तु सिर्फ इस लिए खुद को समर्पित किया है कि वह उसके साथ रहना पसंद करते हैं। यह उसको एक नये समृद्ध और संतोषजनक निस्वार्थ भक्ति की ओर लाता है।

आत्मिक

हम इन चरणों को एक मसीही जीवन के अंतरंगता में भी देख सकते हैं। हम आश्चर्यचकित हैं? हमें नहीं होना चाहिए। समानांतर इस अर्थ में पूरा हो गया है। परमेश्वर हमें चाहते हैं। उन्होंने हमें वास्तव में अनंत काल के लिए चुना है। वास्तव में एक विनम्र और आभारी भावना में हम कृतज्ञता के साथ उसके सामने रट हैं हैं की जगत के रचयिता ने हमें चुना है, बलिदान के साथ हमारे लिए अपनी जान दी और मसीह में अनंत काल के लिए परमेश्वर की छुड़ाने की योजना में हमें शामिल किया है। उनका प्यार असीम भक्ति और उल्लास को लता है।

हमारे मसीही जीवन को आत्मसमर्पण और समर्पण के चरणों से गुजरने की आव्यशकता है और उसके बाद प्रतिबद्धता चरण में जाना है। केवल बपतिस्मा और मसीही कहलाना पर्याप्त नहीं है। यही धर्म है। परमेश्वर का इसे कई बड़ा उद्देश्य है। अंत में परमेश्वर को केवल भक्ति ही नहीं कार्य भी चाहिए। यह बहुत बड़ी बात है। लेकिन जब हम यह सभी बातें उनके प्यार के ज्ञान के लिए एक साथ आत्मसमर्पण के साथ रखते हैं तो, हम कहते हैं "हे दयालु परमेश्वर, मैं क्यों " हम उनकी दिव्य प्रेम को बयां नहीं कर सकते। हम उसके आनंद से भर जाते हैं। सच मच पौलुस कुछ इस तरह लिखते हैं,

"कि वह अपनी महिमा के धन के अनुसार तुम्हें यह दान दे, कि तुम उसके आत्मा से अपने भीतरी मनुष्यत्व में सामर्थ पाकर बलवन्त होते जाओ। और विश्वास के द्वारा मसीह तुम्हारे हृदय में बसे कि तुम प्रेम में जड़ पकड़ कर और नेव डाल कर। सब पवित्र लोगों के साथ भली भांति समझने की शक्ति पाओ; कि उसकी चौड़ाई, और लम्बाई, और ऊंचाई, और गहराई कितनी है। और मसीह के उस प्रेम को जान सको जो ज्ञान से परे है, कि तुम परमेश्वर की सारी भरपूरी तक परिपूर्ण हो जाओ" (इफिसियों 3:16-19)

क्या है परिवर्तन?

शादी सिर्फ झगड़े से बाहर रहने की कोशिश नहीं है। विवाह सिर्फ एक दूसरे के अस्तित्व को बर्दाश्त करना नहीं है।

अगर यह है जहां अपनी शादी है, तो जान लीजिये कि परमेश्वर एक लंबा सफर में आपको लेकर जाने वाला है, लेकिन हर कदम इसके लायक है।

अच्छी खबर यह है कि वह आप के साथ है। वह पूरी तरह से जानता है की वहाँ आपको कैसे ले कर जाना है। हम सब कहीं न कहीं यात्रा पर हैं। मुख्य मुद्दा यह है कि हम क्या है उससे बेहतर हो सकते हैं! हम बुरे विवाह इस लिए बर्दाश्त नहीं करते क्योंकि हम सब इससे अधिक शानदार कुछ प सकते हैं, एक महान शादी और एक अद्भुत संबंध खुद परमेश्वर के साथ।

सारांश

अंतरंग विवाह शायद हीदेखने को मिलते हैं। जब तक हम इस पर ध्यान देते हैं की हमारे पास क्या है ,हमारी पुरानई पहचान (स्वयं) पता चलती है। शादी में, हम स्वयं पर हमारा ध्यान निकल दें। हम 'हमारे अपने' जीवन को दूर कर दें। जैसे "वह मेरा है" दूर हो जाता है, तो हम अब हमारे अधिकारों के बारे में बात नहीं करते हैं और न मांग करते हैं। शादी इस बारे में नहीं है की हमें हमारा उचित हिस्सा हमारे अधिकार मिलें। अंतरंगता की ओर एक बड़ा कदम यह है जब हम स्वयं पर ध्यान केंद्रित करने को त्याग देते हैं। तब ही हम उस बात पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं की परमेश्वर ने हमें क्यों चुना है: एक दूसरे की सेवा।

अंतरंग विवाह भक्ति, खुशी और देखभाल के बारे में हैं जो हम एक दूसरे के लिए करते हैं। एक प्रति क्रिया तंत्र है जो हमारे मात्र जिम्मेदारियों से परे 'सर्वश्रेष्ठ आधार-नियम एक दूसरे की सेवा अपनी क्षमता से अधिक और परमेश्वर की सामर्थ के द्वारा में एक अलग ही रोमांच है। हाँ, हम अपने जीवन साथी की सेवा कर रहे हैं, लेकिन हमारे जीवन साथी को अधिक से अधिक प्यार करने की हमारी एक गहरी प्रतिबद्धता है। परमेश्वर देवर एक बटु बुलाहट है जब हम अपने साथ को बेहतर बनाते हैं।

महान विवाह अंतरंग विवाह होते हैं क्योंकि वहाँ एक दूसरे के प्यार में प से अधिक कुछ भी नहीं होता। जिस तरह यह प्रेम एक आकृति देता है और अपने आप में एक पुरुष और एक स्त्री के लिए अलग अलग रूप ले आता है अद्भुत है। हालांकि दोनों के हृदय परमेश्वर के प्रति समर्पण और प्रेम के लिए हैं, लेकिन एक

विवाह का निर्माण!

पुरुष और स्त्री शादी के भीतर एक अलग बुलाहट के माध्यम से उनकी भक्ति व्यक्त करते हैं। पति अपनी पत्नी को निस्वार्थ प्रेम करने में प्रसन्न होता है। पत्नी उसके लिए अपने प्यार की गहराई के ज्ञान में बड़ी आनंदित होती है और एक गहरी भक्ति के साथ प्रतिक्रिया देती है। वे अलग अलग हैं किन्तु एक हैं। दोनों ही मामलों में वे अपने स्वयं की जिम्मेदारियों पर ध्यान केंद्रित करते हैं और एक ही समय में खुद की ओर और अन्य प्रतिबद्धता के माध्यम से अधिक से अधिक पूर्ति करते हैं।

शादी की दुनिया की अवधारणा बहुत टूटी हुई है, क्योंकि यह परमेश्वर की परिकल्पना से हट गयी है। उन्होंने वादे तो किये हैं, लेकिन वे उन का लाभ नहीं लेते। श्रेष्ठगीत में इन दोनों अवधारणाओं का वर्णन है जिसे एक महान शादी का निर्माण होता है। हमें परमेश्वर के साथ और एक दूसरे के साथ एक बढ़ते संबंध की जरूरत है ताकि हम अपने जीवनसाथी के साथ अंतरंगता में बढ़ सकें। अंतरंगता विश्वास के बिना विकसित नहीं हो सकती।

धारणा # 1 विश्वास में बढ़ने की बात सिखाता है जिससे हम हमारे साथी को अपन हृदय प्रकट करने के लिए सक्षम बन जाते हैं।

धारणा # 2 तीन परिवर्तनों कि जहां परमेश्वर उन्हें लेने के लिए इच्छाओं को पाने के लिए एक जोड़े को सक्षम स्पष्ट किया।

परमेश्वर इस स्वच्छंद आदमी (मुझे) जिससे प्यार कैसे करना चाहिए नहीं पता था उसे परमेश्वर के प्रेम में ले आया। इस प्रक्रिया के माध्यम से परमेश्वर ने अविश्वसनीय रूप से हमारी शादी को आशीषित किया है। मुझे और मेरे जीवन पर परमेश्वर के नजरिए पर मनन करने पर, मैं तो अधिक परमेश्वर की तरह सोचने लगा और मेरी नकारात्मक, झूठी और विनाशकारी भावना से दूर हो सका। मेरा जीवन यीशु का एक और चमत्कार बन गए है।

अपने दम पर, मैं कभी भी लगातार उस प्यार को जो मेरी पत्नी को मुझे प्रदान करन चाहिए में सक्षम नहीं हो सकता था। मेरी आलोचक भावना ने मेरे रिश्ते को जहर से भर दिया होता। इसके बजाय, प्रेम के गणनात्मक कदमों के माध्यम से, परमेश्वर ने मुझे एक मजबूत बनाने वाले विश्वास के गहरे स्तर पर ले गया, चाहे परमेश्वर के साथ संबंध या शादी में खुशी और उत्साह उसने मे किया।

9 विश्वास और अंतरंगता का विकास

व्यक्तिगत संघर्ष विकास या विश्वास के साथ हस्तक्षेप करते हैं। इस कारण शादी के बारे में एक त्रिकोणीय संबंध की सोच रखना सबसे अच्छा है: परमेश्वर, पति और पत्नी। उसके बाद ही भरोसा बढ़ सकता है और एक रिश्ता अंतरंगता को बनाए रखने के लिए सक्षम हो सकता है।

अध्याय # 9 अध्ययन के लिए सवाल

1. कैसे परमेश्वर नियमित रूप से श्रेष्ठगीत के माध्यम से अपने लोगों के जीवन में काम करता है?
2. क्यों जो लोग प्यार और स्वीकृति से वंचित हैं उनके परिवार के बाहर के रिश्तों में प्रेम तलाश करते हैं?
3. अक्सर उन विवाहित जोड़ों में, जिन्होंने एक बच्चे के रूप में कड़वाहट, आलोचना और प्रतिज्ञान अनुभव किया है क्या होता है ?
4. पहले त्रय : प्यार की राह के पद को लिखें।
5. “मैं हूँ काला हूँ लेकिन सुंदर हूँ” का क्या मतलब है उल्लेख करें?
6. 6 एक शारीरिक स्तर पर (पुरुष-महिला के रिश्ते) पर व्याख्या करें? मसीह का उनके लोगों के साथ के रिश्ते के बारे में वर्णन करें?
7. दुनिया का दृष्टिकोण (मैं गोरा हूँ) और मसीही दृष्टिकोण (मैं काला हूँ) के बीच दो अंतर बताएं
8. श्रेष्ठगीत 2: 1 के पग के बारे में महत्वपूर्ण क्या है बताएं है?
9. शुरूआती रोमांस के चार उपयोगों को बताये जो एक विश्वास बढ़ने में और आगे जारी रखने के लिए जरूरी है?
10. अंतरंगता की ओर बढ़ते हुए रास्ते के सम्बंधित तीन पदों को जो दूसरे धरना को दर्शाता है नीचे लिखें।
11. 2:16 और 6:3 के बीच क्या अंतर है? इस का क्या महत्व है?

12. 6:3 और 7:10 के बीच में क्या अंतर है इस का क्या महत्व है?

13. किसी भी एक बात का चुनाव करने के बाद की कैसे यह आपके व्यक्तिगत जीवन में फायदेमंद है, लिखें की कैसे परमेश्वर आपके जीवन और आपकी शादी के बारे में आप से बात कर रहे हैं।

विवाह का निर्माण!



10 प्रेम कभी हारता नहीं

परमेश्वर ने उनके प्रत्येक बच्चों को उनके प्यार का एक नाली होने के लिए बनाया। "एक दूसरे से प्रेम करें।" शादी की तुलना में यह दिखने के लिए और कोई शानदार जगह नहीं है। जब भी परमेश्वर का प्रेम नीचे आता है और एक हृदय को छू लेता है, लोगो अच्छे के लिए बदल जाते हैं। हम यह देख सकते हैं जब यीशु उनके शहरों के माध्य से निकलते थे, तब वे लोगों के साथ घुलमिल जाते थे। वे उनके द्वारा प्यार पाते थे और उनसे प्यार करते थे और इस प्रक्रिया के मध्य उनके जीवन बदल जाते थे। हम यह तब भी देख सकते हैं एक पति या पत्नी जानबूझ अन्य के हठ के बावजूद उसके पति या पत्नी को प्यार करना चुनता है।

अ) प्रेम का मार्ग

प्रेम का चयन करना परमेश्वर को प्रतिउत्तर देना है। जब परमेश्वर का प्रेम हमारे रिश्तों में है, तब विशेष बातें होती हैं। जीवन साथी के रूप में हमें अपने साथियों को परमेश्वर के प्रेम लाने के लिए प्रतिबद्ध होने की जरूरत है। हमें रणनीतिक होने की जरूरत है। हालांकि पतियों ने विशेष रूप से परमेश्वर की ओर से यह आज्ञा पायी है की अपनी पत्नियों से प्रेम करें, हम देखेंगे की दोनों पति और पत्नी में काफी परिवर्तन आ गया है जब वे जानबूच कर अपने पति से प्यार करने का चुनाव करते हैं, उनकी शादी की सुंदरता और खूबसूरत हो जाती है। हो सकता है आप आश्चर्य करते होंगे की आप यह कैसे कर सकते हैं।

एक मसीही के रूप में, हमें उसके प्यार को प्राप्त करने के लिए परमेश्वर के साथ मिलकर चलने की जरूरत है। केवल उसका प्यार ही हमें कठिन रिश्ते की

विवाह का निर्माण!

समस्याओं के माध्य से छुड़ा सकते हैं। प्रेम हमें उचित व्यक्तिगत प्रेरणा (अनाकर्षक को प्रेम करना), जरूरतमंद ताकत (व्यावहारिक प्रेम के कार्य के माध्यम से और परिकल्पना (व्यवहारिक सोच) रखने में हमें मदद करता है। सभी सुसमाचार पत्रियों में यीशु ने नियमित रूप से अपने पिता के साथ अकेले रहना का समय निकला था। यह एक माध्यम था जिससे स्वर्गीय पिता उन्हें लोगों को उनके प्यार और चंगाई लाने के लिए इस्तेमाल करने में सक्षम हो सके। उसी समान , हमें परमेश्वर के साथ नियमित रूप से मिलने की आवश्यकता है की हम अपने पति या पत्नी को परमेश्वर के प्रेम को प्रदर्शित कर सके। आईए मैं आपको एक कहानी सिखाता हो जो हमें परमेश्वर के प्रेम को व्यवहारिक रूप से कैसे करे सिखाता है।



एक प्रेम कहानी

पिछले सप्ताह मैंने एक साहसी कार्य किया , एक प्रेम का साहसी कार्य। पिछले साल हमारी शादी की 25 वीं सालगिराह थी। दुर्भाग्यवश हम एक रात भर की यात्रा के लिए दूर नहीं जा सके। लेकिन हम इसके बारे में भूल नहीं गए थे। कई महीने पहले से हम बात कर रहे थे और सोच रहे थे कि हम दूर एक रात भर की यात्रा के लिए इस साल जा सकते हैं - निश्चित रूप से बच्चों के बिना। यह मुझे अच्छा लग रहा था। मुझे , पति के रूप में, तीन बातें बनाने की जरूरत थी :

(1) मुझे विश्वास करना था कि हम इसे परमेश्वर की मदद (विश्वास) के साथ कर सकते हैं।

(2) मुझे विचार और सोचना था हमारी शादी की सालगिराह की एक रात की यात्रा के विषय पर (आशा)। लेकिन मुझे एक बात और की जरूरत थी।

(3) मुझे वास्तव में प्रेम करने की योजना बनाने और उन्हें बाहर ले आने (प्रेम) की जरूरत थी।

इस मामले में हमें कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा। हमारी प्रमुख चिंता का विषय हमारे आठ बच्चों की देखभाल के लिए किसी को खोजने थी। हालांकि, हमारे लिए जीवन में इस बिंदु पर दो बड़ी बेटियों के साथ, यह एक समस्या नहीं थी। हालांकि ईमानदारी होसे, एक माँ के लिए यह एक संघर्ष था की अपने छोटे बच्चों को छोड़ कर कहीं चले जाना। यह लिंडा के लिए भी सच था। हमारी सबसे बड़ी चुनौती समय निकलना था। यह हमारे जीवन में सबसे व्यस्त समय में से एक था। मैं चार श्रृंखला शिक्षण कर रहा था और वेब के लिए उन सामग्री की तैयारी के बीच में था।

मुझे लगा हमारी शादी की सालगिरह नहीं मन पायेगी? इस बेहद व्यस्त समय के बीच में यह डूब रही थी। मेरे लिए यह कहना आसान था की हम बाद में चले जायेंगे। लेकिन मुझे विश्वास था, यह सही समय है। लेकिन उससे भी कुछ अधिक, मुझे विश्वास था कि परमेश्वर की मदद से हम हमारे काम को खत्मकर कर एक साथ पचास घंटे किसी रोमांटिक जगह में बिता सकते हैं। क्यों? क्यूंकि पिछले दो महीनों परमेश्वर जानबूझ हमें प्रशिक्षण दे रहे हैं की कैसे हम सभी बाधाओं पर काबू पा करहुं अपने काम खत्म कर सकते हैं। मैंने फैसला किया, की अगर वह मदद कर सकते है,तो इस स्थिति में भी क्यों नहीं। आखिरकार, हमारे प्रभु ने ही हमें एक दूसरे से प्रेम करने के लिए कहा है?

परमेश्वर का बेहतर मार्ग

1 यूहन्ना 4 हमें बताता है कि कैसे ने हमारी दुनिया में प्रवेश किया है। हमें लगातार अपने आप को याद दिलाने की जरूरत है कि प्यार का स्रोत खुद परमेश्वर है। उन्होंने हमसे पहले प्रेम किया।

हम इसलिये प्रेम करते हैं, कि पहिले उस ने हम से प्रेम किया (1यूहन्ना 4:19)।

उनके बच्चों के रूप में, परमेश्वर हमें यह कहने के लिए अनुमति नहीं देते है, "मैं प्यार नहीं कर सकते" या "यह बहुत मुश्किल है।" क्या तुमने ध्यान दिया कि यह पद केवल मसीह के माध्यम से हमारे लिए परमेश्वर के प्यार की बात को ही नहीं

विवाह का निर्माण!

करता है? यह स्पष्ट शब्दों में कहता है, "हम प्यार करते हैं।" न्याय के दिन पर, परमेश्वर हमारे व्यस्थता, गरीबी, अक्षमता, स्नेह की कमी, आदि के बारे में उन सब बहाने को बर्दाश्त नहीं करेंगे। जब परमेश्वर ने अपने बेटे को भेजा तो इस समस्या के लिए हमारा पूरा रुख ही बदल दिया दुनिया में यीशु मसीह के दवरा। परमेश्वर के बच्चों की तरह, अब हम अनुग्रह के उनके शक्तिशाली स्रोत के नल के द्वारा इस प्यार को बाहर ले जाने में सक्षम हैं।

अगर आप कभी भी अपने पति को प्यार करने में कमी महसूस करें, या उमीद छोड़ दिन की अब उन्हें प्यार कर सकते हैं, या आपको लगता है अपका प्यार काफी अच्छा नहीं है, तो बस अपने आप को परमेश्वर की उपस्थिति में ताज़ा कर लें। वहाँ परमेश्वर के सन्मुख आप उस प्यार को बाहर ले जाने के लिए उस दृष्टि और अनुग्रह प्राप्त कर सकते हैं। "हम प्यार करते हैं, क्योंकि उसने हमसे पहले प्यार किया।" कुछ लोग पूछते हैं, "हम अगर सिर्फ परमेश्वर के प्यार को बहार लेने के मात्र पात्र हैं, तो हम अब प्यार नहीं करते हैं, हम कर रहे हैं क्या?" बेशक हम कर रहे हैं।

ऊपर पद में कहा गया है कि परमेश्वर का प्रेम हमारे जीवन में एकीकृत हो जाता है। यह कैसे होता है? जब हम उसे हर दिन मिलते हैं, हम उसे बात करते हैं और उनका वचन पढ़ते हैं। हम उन्हें अधिक से अधिक जानते हैं। उनकी मानसिकता और भक्ति

अधिक से अधिक हमारी अपनई हो जाती हैं। हालांकि हम सफलताओं के लिए लग जाते हैं, किन्तु ज्यादा महत्वपूर्ण है कि हम परमेश्वर की उपस्थिति में बैठ के जीवन प्रतिबद्धता पर ध्यान दें, उनकी कृपा की मांग करें हमारे जीवन को भरने के लिए। हम बहुत आभारी हैं हमारे लिए परमेश्वर के महान प्यार के लिए (भजन116:1)। परमेश्वर का प्रेम जैसे हमारे अपने जीवन में बहता है, वैसे ही हमारे



जीवन और विवाह में प्रवाह कर सकता हैं। केवल परमेश्वर के साथ नियमित रूप से घनिष्ठ संपर्क में चलने से प्यार की नदी बहती रहती है।

इस कारण हम ने कहा की सबसे महत्वपूर्ण और आवश्यक चीजों में से एक है नियमित आधार पर परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत रूप से मिलना है जिससे हमारे पति के में हम बने रहे। क्या आप हर दिन प्रभु के साथ मिलते हैं। आप कैसे अपने प्यार को प्रतिबिंबित कर सकते हैं अगर आप नियमित रूप से एक निजी सम्बन्ध में परमेश्वर से नहीं मिलते ?⁶⁴

आइये एक प्रार्थना में अब हम उनके पास जाएं:

स्वर्गीय पिता, सिर्फ नकली प्यार हमारी दुनिया में नहीं बना रह सकता है। यह हमारे विवाह के लिए अच्छा नहीं है। सस्ता मानव प्रेम, सहन नहीं करता और जारी नहीं रहता है। हम अधीर निर्दयी, एकमुश्त ,और कठोर हैं। हमारे प्रेम, प्यार नहीं है। हमें गहरे में जाने जरूरत है। हमें तेरी तलाश है ताकि आप अपने दिव्य और गौरवशाली प्यार को हमारे हृदय और विवाह में उंडेल दें। अगर हम एक सस्ते प्यार के साथ संतुष्ट है, तो हमें तोड़ दाल जब तक सारी दुनिया का प्रदूषण हमसे बहार न आ जाये। स्वर्गीय प्रेम की अधिक महिमा प्रकट कर। यह समय है कि हमारे विवाह को अपने दिव्य हाँथ से छू ले।

इस समय तक आप शायद सोच रहे होंगे एक शादी में दिव्य प्रेमकी तरह सकता है। सौभाग्य से, परमेश्वर ने हमें इस प्यार का एक व्यावहारिक विवरण दिया है। 1 कुरिन्थियों 13 बाईबल का एक महान 'प्रेम' का अध्याय है। उसे यह कैसे बनता है है? मेरा मानना है इस लिए है क्योंकि एक अच्छा चरित्र और प्यार की शक्ति को दिखलाता है। यह सूरज को देखने के समान है। क्योंकि यह शक्तिशाली तरीके से परमेश्वर के प्रेम को दिखता है हम इससे मुह मोड़ लेते हैं। याद रखिया, सब वास्तविक प्रेम इस तरहकी ही होते है। यह प्यार है। स्वर्गीय प्रेम महान दबाव को भी सह सकता है जो सांसारिक प्रेम नहीं कर सकता। हमारी परवरिश एक निश्चित बिंदु तक अच्छी है, लेकिन यह वास्तव में सदा की नहीं है।

⁶⁴ अगर आप यह नहीं जानते कि व्यक्तिगत भक्ति क्या है या वे बासी हो चुकी है, BFF's के द्वारा पढ़ें "आपकी व्यक्तिगत भक्ति को का नवनिर्माण" शृंखला।

ब) प्रेम का विवरण (1 कुरिन्थियों 13:4-8)

हालांकि कई लोग प्यार करने का दावा करते हैं, उनमें से कुछ ही अपनी शानदार शक्ति, अंतर्दृष्टि और प्रतिबद्धता से इसमें स्थिर रह पते हैं। हम लोगों की प्रतिबद्धताओं की क्षुद्रता को देखते हैं जब वेह उनकी शादी के समय अपनी प्रतिज्ञा "करते हैं और कहते हैं "जब तक प्रेम रहे "।" वास्तव में, उनके पास कुछ भी नहीं है यदि आप नहीं जानते कि क्या व्यक्तिगत प्रतिबद्धता क्या होता है या वह तोह बासी हो गए हैं, बी अफ अफ के माध्यम से अध्ययन श्रृंखला "आपका व्यक्तिगत प्रतिबद्धता का पुर्नानिर्माण "पढ़ें - सच्चा प्यार क्या है की धारणा। एक सच्चे विवाह की वाचा, "जब तक हम दोनों जीवित रहेंगे " है।" प्रेम की परिभाषा से उसके कई घटक हैं और उनके बिना प्यार परमेश्वर के द्वारा सिखाया जाने वाला प्यार नहीं

प्रेम धीरजवन्त है, और कृपाल है; प्रेम डाह नहीं करता;

प्रेम अपनी बड़ाई नहीं करता, और फूलता नहीं। वह अनरीति नहीं चलता,

वह अपनी भलाई नहीं चाहता, झुंझलाता नहीं, बुरा नहीं मानता।

कुकर्म से आनन्दित नहीं होता, परन्तु सत्य से आनन्दित होता है।

वह सब बातें सह लेता है, सब बातों की प्रतीति करता है,

सब बातों की आशा रखता है, सब बातों में धीरज धरता है।

प्रेम कभी टलता नहीं;

आइये हम इन चौदह घटकों में से प्रत्येक पर एक नज़र डालें, और देखिए की वे शादी के संदर्भ में क्या कहती हैं।⁶⁵ यह उम्मीद है कि हमें कैसे परमेश्वर का प्रेम हमारे शादी के रिश्ते में बना रहकर हमारे जीवन को बेहतर बना सकता है सिखाएगा।

⁶⁵ कुछ घटक दूसरों की तुलना में समझने के लिए आसान हैं। हमें याद रखना चाहिए कि मूल संदर्भ में यह एक पत्र है जो प्रेरित

पौलुस ने एक विभाजनकारी कलीसिया को लिखा है। वह सब के कल्याण की ओर काम करने के बजाय, अपने ही कामुक विचारों पर ध्यान केंद्रित करते थे। एक जोड़ा भी इन पदों का उपयोग सच्चे प्यार की एक तस्वीर हासिल करने के लिए कर सकते हैं।

#1 प्रेम सहनशील है

“क्या मेरे पास एक धारणा रखने वाली आत्मा है जो मेरे साथी की देखभाल के लिए मुझे सक्षम बनाता है”?

प्यार का विवरण

एक प्रेम करने वाला साथी अपने खुद के समय और समय की कमी पर जोर नहीं देता। लोग, विशेष रूप से चोट खाए लोग ज्यादा समय अवशोषित कर सकते हैं। वे अक्सर असुविधाजनक समय पर समय की मांग करते हैं। एक सहनशील साथी सीमित समय, धन, ऊर्जा, आदि के साथ परमेश्वर पर भरोसा करता है सहनशील साथी ज्ञान के लिए परमेश्वर पर भरोसा करता है या अपने साथी के लिए कृपया से देखभाल करने की कोशिश करता है

परिस्थिति

- फिर रात के खाने के लिए देर
- बुरी तरह से बोलचाल
- मुझे यह (यौन अंतरंगता) की तरह अच्छा नहीं लग रहा है

प्यार की राह

- “हम हमारी योजना के बारे में बात करने के लिए समय निकल सकते हैं ?”
- “जब आप इस तरह कहते हैं तो मुझे बुरा लगता है। आप क्या इस तरह से अपना सुझाव रख सकते हैं ...? ”
- “ओह, क्या गलत है? अगर आप चाहते हैं, तो हम इंतजार कर सकते हैं। ”
- “तुम मुझे क्यों फिर से देर करा रहे हो!”

प्यार की अस्वीकृति

- “हां, ठीक है। तुम अपने आप ही में सही नहीं हो। ”
- “क्या तुम स्वार्थी नहीं हो रहे हो!”

#2 प्यार ईर्ष्या नहीं है

क्या आपको जलन या ईर्ष्या होती है जब आपके साथी को ध्यान या सामान मिलता है तो ?

प्रेम का विवरण

ईर्ष्या और जलन का यूनानी में एक ही शब्द हैं। क्या आप अपने साथी को जानने के बाद, उनके दोस्तों, स्थिति या व्यक्ति के साथ एक बुनियादी असंतोष को पाते हैं जब हमारे पास क्या नहीं है उस सोच के बाद हम अपने साथी के विरोध में आ जाते हैं। प्रेम अन्य व्यक्ति को लाभ में लाने के लिए खुद को प्रतिबद्ध करता है।

परिस्थिति

- ध्यान प्राप्ति
- मित्र
- मित्रों का लाभ
- स्वास्थ्य लाभ

प्यार की राह

- “यह अच्छा था कि आपने उसे इसा कहा।”
- “मैं उसके लिए बहुत खुश हूँ!”
- “मुझे परमेश्वर ने क्या जिम्मेदारिया दी हैं मैं उन पर उत्कृष्ट होने में ध्यान देता हूँ।”

प्यार की अस्वीकृति

- “तुमने उसे ऐसा क्यों कहा?” (संदेहास्पद)
- “उसे ही सभी का ध्यान क्यों मिलता है?”
- उसके लिए यह आसान है। “मैं तो सारा दिन इन बच्चों को देखती हूँ”। (आत्म दया)

#3 प्यार में अपनी बड़ाई नहीं है

“क्या मैं इस तरह के एक तरीका से अपनी उपलब्धियों के बारे में मेरे पति को बताता हूँ की उसे 'छोटे' महसूस हो और मैं महान लगूँ?”

प्यार का विवरण

यह व्यक्ति अपने साथी को प्रभावित करने से अपने आपको रोकता है। अपनी बड़ाई या घमंड करने के लिए, एक साथी अक्सर कहते हैं कि कितना अच्छा वह अपने पति से है और इस तरह अपने पति को हीनता का भाव दिलाता है। प्रेम अपने पति या पत्नी में महान चीजों को देखता है और इन बातों की बात करने के लिए एक पति या पत्नी में सक्षम बनाता है।

परिस्थिति

- डिग्री
- पुरस्कार
- स्थितियां
- पैसे
- प्रचार

प्यार की राह

• “क्या आपको उस के साथ परेशानी हो रही है? क्या आप चाहते हैं की मैं आपकी कुछ मदद करूँ ? ”

• “इस के बारे में चुप रहे की कैसे परमेश्वर ने आपको कुछ वरदानों से सक्षम किया है। “

प्यार की अस्वीकृति

- क्या तुमने सुना कि मैं कैसे ...?”
- तुम क्यों...? नहीं कर सकते" (अन्य बेवकूफ महसूस करना)
- ओह, मुझे ऐसी समस्या कभी नहीं थी। तुम क्यों नहीं कर सकते हैं”?

#4 प्रेम अभिमानी नहीं है

“क्या मुझे लगता है कि मेरी जरूरत मेरे पति की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण हैं?”

प्यार का विवरण

प्यार करने वाला व्यक्ति अपने पति या पत्नी के अत्यधिक सोचता है। वह अपने या अपने स्वयं के कल्याण के लिए महत्वपूर्ण है। क्योंकि अभिमानी व्यक्ति उसके बारे में अधिक सोचता है कि वह अपने पति या पत्नी से खराब व्यवहार करता है, यह सोच कर की उसकी सेवा की जानी चाहिये।

प्रेम उसका / उसकी इच्छाओं पर साथी की पसंद जो ज्यादा महत्व देता है।

परिस्थिति

- गन्दगी की सफाई
- एक सेवक की सोच होने
- अच्छी तारीफ करना

प्यार की राह

- “मैं मदद कर सकता हूँ?”
- “मैं किसी भी तरह आपकी मदद कर सकता हूँ”
- “मैं आपकी सराहना करता हूँ जैसे आप यह काम करते हैं। यह वास्तव में मुझे इतना मदद करता है।”

प्यार की अस्वीकृति

- “अगर मैं यह कर रहा होता, तो मैं नहीं ...”
- “मैं तुम्हारे बिना भी यह प्राप्त कर सकता हूँ !”
- “आपने यह किसलिए किया? वह बेवकूफी थी”।

#5 प्रेम अपनी भलाई की तलाश नहीं है

“क्या मैं उन चीजों की तलाश करता हूँ जो मेरे पति को पसंद हैं?”

प्यार का विवरण

एक प्रेम करने वाला साथी उसके पति या पत्नी का कल्याण चाहता है। अगर हम अपने आप को पसंद करते हैं, तो हम अपने आप को ज्यादा मफत्व देंगे। हम हमारे जीवन साथी के ऊपर हमारी अपनी आवश्यकताओं की सेवा के लिए झूठ धोखा, चुगली, निन्दा, आदि सब करेंगे।

परिस्थिति

- जिम्मेदारी पर ध्यान न दें ताकि खुद को खुश कर सकते।
- अपनी इच्छाओं को हासिल करने के लिए नैतिकता को तोड़ना।

प्यार की राह

“आप कहते हैं, “तुम क्यों एक झपकी नहीं लेते। तुम्हें अभी अच्छा नहीं लग रहा है। मैं आपको रसोई घर के आसपास साफ करने में मदद कर दूंगा”। (अच्छा प्रोत्साहन)

प्यार की अस्वीकृति

आप सुझाव देते हैं, “तुम क्यों ना आराम कर लो”। उसके लिए देखभाल का दिखावा जब वह वास्तव में चाहता है की एक निरंतर खेल (मकसद स्वार्थी है) देखने के लिए है।

#6 प्यार उकसाया नहीं जाता

क्या अपना पति को आसानी अपने चिड़चिड़ाहट के समय के दौरान आपको परेशान करते हैं? क्या आप हीन महसूस करते हैं, अपमानित या सिर्फ नीचा महसूस करते हैं ?

प्यार का विवरण

प्यार साथी से आसानी से परेशान नहीं होता है। वह उसे प्यार करता है। उन्हें तकलीफ़ हो सकता है या उसके आत्म सम्मान को ठेस लग सकती है , लेकिन सच्चे प्यार को आसानी से हिलाया नहीं जा सकता है। दिखावे का प्रेम जल्दी मूड बदलता है, लेकिन वास्तविक प्रेम नहीं उकसाया जाता है।

परिस्थिति

- "पति गुस्से में है और चिल्ला रहा है।"
- "पति चिड़चिड़ा है, क्योंकि यह बाहर गर्म है।"
- "अपनी पत्नी के महत्वपूर्ण मासिक धरम का समय है।"

प्यार की राह

- "हम थोड़ा बाद में इस बारे में बात कर सकते? हमारी आवाज भी तेज़ हो रही है।"
- "कुछ भी मत कहो, बस अपने दिन का आनंद लो।"
- "परेशान होने केआप उसके लिए कुछ अतिरिक्त अच्छा करना है कि ऊर्जा का उपयोग करें।"

प्यार की अस्वीकृति

- "मेरी गलती तुम कहते हो! वैसे आप यह सब गलत कहते है! "
- "क्यों तुम हमेंशा अपनी टिप्पणी के साथ एक अच्छे दिन को बर्बाद करने की क्या ज़रूरत है!"
- "अगर तुम कुछ भी ठीक नहीं कर सकते, तो तुमने क्यों शादी की?"

#7 प्रेम गलत बात का लेखा नहीं रखता

"क्या मैं जल्दी से मेरे पति को माफ कर देती हूँ और कड़वापन मनन में आने नहीं देती"?

प्यार का विवरण

एक प्यार करने वाला साथी जल्दी से कड़वाहट को आने नहीं देता ,घायल, चोटिल और वह दुर्व्यवहार नहीं करता , लेकिन प्यार हमेंशा माफ करता है।

वह गलत बातों की यादों को याद नहीं रखती या बदला लेने के लिए योजना नहीं बनती है। प्यार दैनिक रूप से गलतियों को माफ़ करता है जिससे अपने पति या पत्नी की जरूरतों के लिए देखभाल रखने के लिए सक्षम बनाता है।

परिस्थिति

- “कुछ महत्वपूर्ण करना भूल गया”
- “कुछ बुरा कहा”
- “सेक्स से इनकार”

प्यार की राह

• “मुझे बहुत चोट पहुंची थी। चीजों को सही करने के लिए बहुत बहुत धन्यवाद। यह बहुत अच्छा है।”

- “कृपया मुझे माफ़ करें।”
- मैं तुम्हें माफ़ करता हूँ

प्यार की अस्वीकृति

- “नहीं। मुझे याद है पिछली बार तुमने सब खराब कर दिया था।”
- “मुझे परेशान मत करो”
- “मैं तुमसे नफ़रत करता हूँ”।
- “मैं कभी तुमको माफ़ नहीं कर सकते हैं। यहाँ तक कि मैं कर सकता, तो भी मैं नहीं करूँगा।”

#8 प्रेम अधर्म में आनन्द नहीं करता

“मैं होती हूँ जब मेरे पति बुराई करने के लिए सहमत हो जाता है?”

प्यार का विवरण

एक अच्छा साथी अपने पति या पत्नी में किसी भी प्रकार की बुराई से दुखी होता है। वह दुष्ट व्यवहार को कभी नहीं प्रोत्साहित करती है और उसे होने वाले थोड़ी देर के लाभ को नहीं देखती।

परिस्थिति

- एक साथ एक कामुक या हिंसक फिल्म देखना
- एक साथ जुआ खेलना

विवाह का निर्माण!

- एक साथ किसी विषय में झूठ बोलना
- एक दुसरे के साथी का आदान प्रदान

प्यार की राह

- "मैं वास्तव में आप के साथ होने चाहती हूँ लेकिन मैं जो चीजें परमेश्वर को अप्रसन्न करती है, नहीं देख सकती हूँ।"
- "लेकिन हम हर कोई नहीं हैं। "मैं इस फार्म पर हस्ताक्षर नहीं कर सकती।"
- "परमेश्वर हमें उस पैसे का इस्तेमाल नहीं करना देना चाहते हैं।"

प्यार की अस्वीकृती

- "गंदा या हिंसक फिल्म तुम क्यों मेरे साथ इस को नहीं देख रही?"
- बाकी सब अपने करों पर धोखा देते हैं।
- "मैं जानता था कि यह शर्त भुगतान करेगा"

#9 प्रेम सच के साथ आनन्दित होता है

"क्या मैं देख कर की कैसे परमेश्वर सच्चाई का अवलोकन के माध्यम से हमारी शादी में मदद करता है प्रसन्न होती हूँ"?

प्यार का विवरण

एक अच्छा साथी यह देख कर की परमेश्वर के वचन पर आज्ञाकारिता के माध्यम से उसके पति या पत्नी के जीवन में काम हो रहे हैं आनंदित होता है। प्यार का साथी सच्चाई है जहां प्रकाश चमकता है और झूठ और अविश्वास टूटता है।

परिस्थिति

- चिंता
- आशंका
- आर्थिक रूप से भरोसा
- संप्रभुता

प्यार की राह

• हालांकि हम बिना उस निर्णय की वजह से जाना हो सकता है, "मुझे खुशी है कि हमने सही काम किया है"।

• "क्या तुमने देखा की किस तरीके से परमेश्वर ने भय को दूर किया है?"

प्यार की अस्वीकृति

• "मैं नहीं कर सकता। मैं भयभीत हूँ"।

• "मैं बहुत चिंतित हूँ कि मैं नहीं कर सकता हूँ जो मुझे करना चाहिये"।

• "नहीं माफी माँगने को तैयार नहीं"।

#10 प्यार सब बातें भूल जाता है

"क्या मैं मेरी शादी के दर्द और दुःख का भार उठाने को तैयार हूँ जिससे हम एक और भी बेहतर को उठा सकें"?

प्यार का विवरण

एक अच्छा साथी दर्द, अपमान और यहां तक कि सभी प्रकार की चोट को सह लेता है ताकि वह मसीह की तरह हो सके और प्रेम के साथ कडवाहट को धाप सके। प्रेम सब बातों को सह लेता है। खाद पानी से बाहर सफेद लिली का फूल बढ़ता है।

परिस्थिति

- शारीरिक दर्द
- भावनात्मक दर्द
- अपमान
- अलगाव

प्यार की राह

• "मैं तुम्हें माफ़ करूंगा। मैंने फैसला किया है कि मैं दर्द को सह लूंगा, कि मैं नुकसान उठा लूंगा, जैसे यीशु ने किया। इसके भुगतान का कोई रास्ता नहीं"।

प्यार की अस्वीकृति

- "दर्द बहुत ज्यादा है। मैं नहीं कर सकता"।
- "मुझे तुम्हें क्यों माफ कर देना चाहिए"?
- "तुमने मुझे चोट पहुंचायी। तुम्हें मुझसे कभी माफी नहीं मिलेगी"।

#11 प्यार सब बातों पर विश्वास करता है

“क्या मैं परमेश्वर की मदद, शक्ति और प्रत्येक वैवाहिक कठिनाई के नवीकरण पर भरोसा रखती हूँ?”

प्यार का विवरण

एक अच्छा साथी परमेश्वर और शादी पर भरोसा करता है। वह अपने पति की बात पर प्रतिक्रिया देने के बजाय परमेश्वर की ताकत और ज्ञान पर भरोसा करता है।

परिस्थिति

- एक विश्वासघाती साथी
- बीमारी में
- चरम कार्यरतता में
- एक पति अपनी शादी के एक निश्चित क्षेत्र को त्याग देता है

प्यार की राह

- “परमेश्वर ने मुझे विशेष अनुग्रह दिया है की मैं एक ऐसे व्यक्ति से प्रेम करती हूँ जो मुझसे प्रेम नाह करता”।
- मैं अपनी खुद की ताकत से नहीं कर सकता लेकिन परमेश्वर ने मेरी मदद की है।
- किसी न किसी प्रकार परमेश्वर एक अधिक अच्छे के लिए कार्य करेंगे।

प्यार की अस्वीकृति

- "मैं तुम पर भरोसा नहीं कर सकता"।
- "मुझे नहीं लगता कि कुछ भी अच्छा इस शादी से बाहर आ सकते हैं"।

- "मुझे इसमें नहीं रहना"।
- "यह तलाक के कागजात हैं"।

#12 प्यार सब बातों की आशा रखता है

"क्या मैं हर परिस्थितियों की चुनौती से सामना दृढ़ता से सामना करती हूँ और की परमेश्वर हर बुरी परिस्थिति पर नियंत्रण देता है"।

प्यार का विवरण

एक अच्छा साथी अपनी शादी को अच्छा करने के लिए कुछ भी कर सकता है। वह समस्याओं से अपनी आँखें बंद नहीं करता। परमेश्वर की कृपा अंधेरी जगहों में चमक कर सकते हैं।

परिस्थिति

- समिक्षात्मक साथी
- एक प्रेम संबंधन
- शराब
- अश्लील साहित्य

प्यार की राह

- "परमेश्वर किसी तरह से इसका उपाय निकालेगा"।
- "परमेश्वर की राह हमेशा हमसे बेहतर होती है"।
- "हमें सिर्फ उस पर भरोसा करने की जरूरत है"।

प्यार की अस्वीकृति

- "मैं इसके बाद उसके साथ कैसे रह सकता हूँ"?
- "मैं और नहीं कर सकता"।
- "मैं उसे कभी माफ नहीं करूँगा"।
- "मैं कुछ बेहतर का हकदार हूँ"।

#13 प्यार सब कुछ सहता है

क्या मैंने अपने साथी से प्रेम करने के लिए प्रतिबद्धता बनाई है? हाल ही में उस प्रतिबद्धता को पूरा मैंने कब पूरा किया है?

प्यार का विवरण:

एक अच्छा साथी जीवन के लिए प्यार करने के लिए निर्णय लेता है। प्रतिबद्धता एक बार ली जाती है, लेकिन उसे पूरा करने के अवसर विवाहित जीवन में कई बार आते हैं। हमारा प्यार सीमित है, लेकिन जब परमेश्वर का प्यार हमें भरता है, तो हमें कुछ भी नहीं रोक सकता। परमेश्वर का प्यार शर्म की बात है, तिरस्कार, बुराई, और विनम्रता मसीह में सह लेता है।

परिस्थिति

- वक्त
- गरीबी
- बीमारी
- परीक्षा

प्यार की राह

जो आपने कहा था मुझे उस से बहुत चोट लगी, लेकिन मैंने अपने आप को प्रतिबद्ध किया है की, मैं जीवन के लिए आप की सेवा करूँगी। कुछ भी इस बात को नहीं बदल सकता है। यह मेरी जिंदगी है। यह और अधिक सुखद या कठिन हो सकती है, लेकिन “मैं परमेश्वर के प्यार के साथ आप को प्यार करता रहूँगी”।

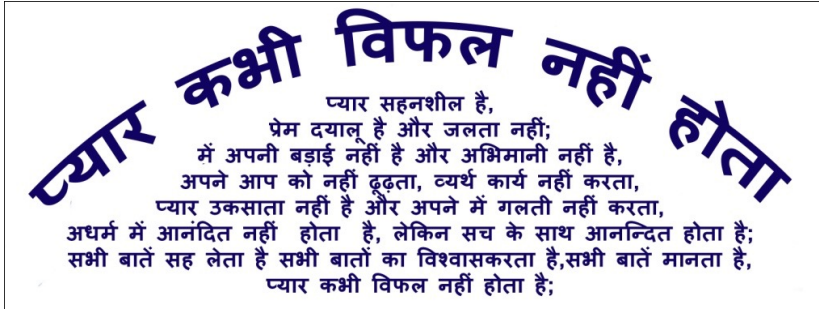
प्यार की अस्वीकृति

- “मैं हार मानता हूँ”।
- “मैं इस बात को एक और मिनट के लिये बर्दाश्त नहीं कर सकता”।
- “मैंने गलत व्यक्ति से शादी कर ली है”।

#14 प्यार कभी विफल नहीं होता

क्या मैं अपनी शादी के हर पहलू में परमेश्वर की सामर्थ पर भरोसा करता हूँ?

परमेश्वर के दिव्य प्रेम में कोई सीमाएं नहीं हैं। परमेश्वर का प्यार सूर्यास्त के साथ खतम और नए सप्ताह के साथ शुरू नहीं होता। दिव्य प्रेम हर समय और अनंत काल के लिए है। रात के अंधेरे में, वहाँ हमेशा परमेश्वर का प्रेम रहेगा प्यार की अनन्त प्रकाश होगा। प्रेम घेना और सब नफरत में भी घुस कर जय पाता है। हम अपने जीवनसाथी से ऐसा प्रेम करें जैसे मसीह ने हमसे प्रेम किया है।



प्यार कभी विफल नहीं होता है। प्यार के इस विवरण पर हम एक खंबे की स्थापना करते हुए, एक पृथ्वी पर सबसे शक्तिशाली बल का एक स्पष्ट प्रमाण दे सकते हैं। जब हम हार को चुनते हैं और प्यार के अलावा अन्य चुनते हैं, तब हम सिर्फ हमारी शादी को दुनिया के अन्धकार से हारने देते हैं। यह मेरी कार में इंजन सामान है जो अंत में 150,000 मील की दूरी के बाद खतम हो जाता है। घर्षण बहुत ज्यादा स्नेहन बहुत कम था। यह बंद पड़ गयी। परमेश्वर के प्यार के बिना हमारे विवाह के साथ भी ऐसा कुछ हो सकता है।

परमेश्वर का प्यार, हालांकि, किसी भी विनाशकारी और अंधेरी स्थिति लेने को लेकर प्रकाश चमका सकते हैं। यह वही है जो परमेश्वर ने यीशु मसीह के साथ किया है। अधेरा, अंधेरे को दूर नहीं कर सकता है।

और ज्योति अन्धकार में चमकती है; और अन्धकार ने उसे ग्रहण न किया। (यूहन्ना 1:5 फिलिपियों)

परमेश्वर के शक्तिशाली प्रेम के बल के साथ यह सच है। ध्यान दें कैसे विश्वास और प्रेम के साथ जोड़े हैं।

विवाह का निर्माण!

जब हम परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, और उस की आज्ञाओं को मानते हैं, तो इसी से हम जानते हैं, कि परमेश्वर की सन्तानों से प्रेम रखते हैं। और परमेश्वर का प्रेम यह है, कि हम उस की आज्ञाओं को मानें; और उस की आज्ञाएं कठिन नहीं। क्योंकि जो कुछ परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है, वह संसार पर जय प्राप्त करता है, और वह विजय जिस से संसार पर जय प्राप्त होती है हमारा विश्वास है। संसार पर जय पाने वाला कौन है केवल वह जिस का यह विश्वास है, कि यीशु, परमेश्वर का पुत्र है। (1 यूहन्ना 5: 2-5)

सवाल यह नहीं है की क्या आप की शादी एक अच्छी शादी हो सकती है। सवाल यह है कि आप क्या इस का चयन करते हैं। परमेश्वर के बच्चे के रूप में आप एक अच्छी शादी के लिए कुंजी को रखते हैं। यह परमेश्वर का दिव्य प्रेम है।

कई लोगों को लगता है कि आप अपने भावनात्मक प्यार के कारण टिके हुए हैं। यह वही है जो नए जोड़ों के साथ होता है। वे थोड़ी देर के लिए प्यार में रहते हैं, लेकिन भावना थोड़ी देर में खत्म हो जाती है, और फिर उनके पास अपने पति या पत्नी के पापों को नजरअंदाज करने के लिए भावनात्मक ताकत नहीं रहती है।

दूसरों को यह अपने या अपने वैवाहिक जीवन में को पूरी करने की आवश्यकता लगती है। चाहे यह लोन काटने, बर्तन धोने, या सेक्स बात हो वे दूर हो जाते हैं। उन्हें लगता है इस शादी का अंत है। 1 यूहन्ना 5: 2-3 में परमेश्वर कहते हैं की उसकी आज्ञाओं को मानना कठिन नहीं है। इसका मतलब यह है कि जब हम सेवा के हृदय को समझना शुरू हो जाते हैं, तो हर दीवार या दरवाजा एक अवसर बन जाता है। अधिक अनुग्रह पाने के लिए इन अवसरों में दूसरे की सेवा करने का कोई अंत नहीं है।

जब तक हम इमानदारी से सेवा कर रहे हैं, परमेश्वर का प्यार जिंदा है और हमारे अपने जीवन के माध्यम से और हमारी शादी में बह रहा है। ज्यादातर मामलों में यह प्यार है, हालांकि इसकी कोई गारंटी नहीं है कि कल क्या होगा अपने पति के जीवन को छूने की शुरुआत करें। लिए हमारी प्रतिबद्धता जीवन बाहर की है और यह कभी नहीं बदलती।

प्यार का चक्कर

मैंने हाल ही में हमारी वर्षगांठ समारोह के एक उदाहरण के साथ इस अध्याय को शुरू किया। मुझे एक और ठेठ दृश्य आप को दिखाने के लिए, और साझा करने के लिए अनुमति दें की कैसे प्यार ही बाहर काम करता है।

हम पहले से ही दो घंटे देर से थे, हमारी दूर की यात्रा पर जा रहे थे। सब ठीक था; और हम दोनों व्यस्त थे। हमारी चार घंटे की यात्रा बाकि थी। मैं लंबी लाइनों से बचने के लिए जल्दी निकलना चाहता था। इस दो घंटे के नुकसान के साथ, हम यातायात में सुनिश्चित फंसने वाले थे। यह वह नहीं है जो हम चाहते थे! यात्रा में लगभग दो घंटे के बाद, हम हमारी यात्रा के बाकी के बारे में बात करने लगे। लिंडा ने उल्लेख किया कि कैसे वह एरी झील के पानी में उनके पैरों को डाल कर बैठना चाहती हैं। मैं सिर्फ एक ही बारे में सोच रहा था, लंबे समय धीमी गति से आगे बढ़ रहा था, और कारों की लाइनों में हम फंसे थे। आप विश्लेषणात्मक आदमी और औरत की संघर्ष की भावना को देख सकते हैं। हम बहस नहीं कर रहे थे। संघर्ष मेरे मन में था।

उन्होंने कहा कि वह इस एक बात को करना चाहती हैं। मैं सिर्फ आगे बढ़ने के बारे में सोच रहा था। लेकिन यात्रा का उद्देश्य एक दूसरे के साथ का आनंद लेने के लिए था। तो मैं गंभीरता से उसकी वास्तविक इच्छा को मान कर सुंदर मार्ग के तट की ओर चला गया। यह, ज़ाहिर है, अब हमारी यात्रा और लम्बी हो गयी थी, लेकिन अंत में हमने पाया है कि यह वास्तव में बेहतर था। हम दोनों अच्छी तरह से इस अनियोजित चक्कर का आनंद लिया। केवल वह बात जिसकी वजह से हम दोनों ने मज़ा किया वह यह है की, कैसे परमेश्वर ने मेरी पत्नी के माध्यम से मुझसे बातचीत की। मुझे उसके सुख और प्रसन्न होने के साथ-साथ उसका मूल्य करने की जरूरत है। उस चक्कर को ले लेने और नियमित रूप से अपनी पत्नी की अंतर्दृष्टि पर ध्यान देने से, हमारी शादी अधिक जबरदस्त और अद्भुत है।

और अंदाज लगाइये क्या? सड़क के साथ हमें एक राज्य का पार्क मिला जिसमें उस दिन (हमारे पास बहुत कम पैसे थे) उनकी सुविधाओं का उपयोग करने के लिए कोई शुल्क नहीं लगा। हम किनारे नीचे चले गए और पूरा पार्क हमारा था। हमने खिले हुए बकाइन झाड़ियों के साथ अच्छी तस्वीर खिंचाई। लिंडा को एरी

विवाह का निर्माण!

झील के पानी में उसके पैरों को गीला करने के लिए मिला। हमें झील के किनारे सड़क पर सबसे सुखद ड्राइव का अनुभव मिला। इसके बजाय की हम यातायात के बारे में लादें हम शादी की हमारी 25 साल का जश्न मना रहे थे।

विल्स की कुश्ती हमेंशा लगी रहेगी कभी अन्य समय की तुलना में मजबूती से होगी। लेकिन हमें परमेश्वर के बेहतर उद्देश्य को याद करने की जरूरत है। एक दूसरे की सेवा करने का चयन करके, हम सबसे अच्छा विकल्प बना देते हैं। जब हम प्यार का सबसे अच्छा विकल्प बनाने के लिए हम इनाम पाते हैं। इस मामले में मुझे क्रम अपनी बातों को छोड़ कर उसकी बातों पर प्राथमिकता देने की जरूरत थी। मेरे लिए यह रास्ते से बाहर जा रहा था। लेकिन यह सच में प्यार के सही रास्ते पर जा रहा था। प्यार हमेंशा हमें सेवा के मार्ग पर ले जाता है।



मैं जोड़ने चाहता हूँ यात्रा के बारे में और किस तरह से हम चले गए, वह भी प्यारा था। उसने मांग नहीं की थी। वह बिल्कुल नाराज़ नहीं होती अगर मैं उस रस्ते से नहीं जाता। वह केवल मेरे साथ उसके विचारों को बाँट रही थी। उसने मुझे अपने ही मन में इस स्थिति में काम करने की अनुमति दी और परिणामों परमेश्वर के भरोसा छोड़ दिया। उसके मनोहर शब्द ने मुझे वास्तव में उसे खुश करने के लिए प्रेरित किया। अंत में मैंने उसे दोबारा से उस तात पर जाने के लिए एक रस्ते को पौचा हृदयचस्प है, हमें वह 'चक्कर' इतना अच्छा लगा कि हम घर वापस जाते हुए भी उसी रास्ते पर से चले गए।

सारांश

हमारा प्यार कभी हारता नहीं, लेकिन हम इसे खो सकते हैं। शैतान कभी-कभी हमें यह सोच में डाल देता है की, हमारा पति हमारे एक अच्छे जीवन का दुश्मन है।

यह बिल्कुल ऐसा नहीं है। परमेश्वर ने यह घोषणा की है कि हम एक हैं। प्यार हमारे पति की ओर हमारे अच्छे कर्मों और हमारे संबंधों को गहरा करने के लिए बुनियादी तरीका है।

परमेश्वर के प्यार के इस विवरण को देखने के बाद, हमें पहचान लेना चाहिए कि, हमारे प्यार करने की क्षमता कितनी है। और हम एक मसीही के रूप में बढ़ रहे हैं। हमें नियमित रूप से बढ़ते जाना चाहिये और परमेश्वर के साथ बातचीत करते रहना चाहिये। परमेश्वर ने हमारे विवाह का निर्माण इस तरह किया है की हम अपने दैनिक परेशानियों को उस में परमेश्वर के प्रेम के साथ हरा सकें।

हम सभी का एक 'अच्छा विवाह हो सकता है।' परमेश्वर जो हमें चाहिये है, उसे देने के लिए कार्य कर रहे हैं। अब अगर हम सिर्फ लगातार प्यार करने के लिए चयन करने के लिए शुरू हो जाएगा। एक समय में एक दिन के साथ शुरू करो। प्रारंभिक प्रत्येक दिन रोते हुए पुकारें, "परमेश्वर मुझे मेरे पति से प्यार करने के लिए आज मदद करें। मुझे शक्ति दे। मुझे रचनात्मकता दीजिए। "एक सप्ताह के लिए ऐसा करें। फिर से इस तरह अपने पति से प्यार करने के लिए एक सप्ताह परमेश्वर को दें फिर से अपने आप को प्रतिबद्ध करें। बने रहिए। फिर अपने पति को एक माह के लिए प्यार करने के लिए प्रतिबद्ध रहे। अंत में, फिर, अपने पूरे जीवन के लिए इस तरह से अपने पति के लिए अपने आप को उस अद्भुत स्थान तक पहुँचने दें। मेरा जीवन पूरी तरह से मेरे पति की देखभाल के लिए समर्पित है।

परमेश्वर का समाधान, "प्यार कभी विफल नहीं होता " यह काफी आदर्शवादी लग सकता है, लेकिन वह जानता है कि यह काम करता है। उन्होंने इस दुनिया को प्यार किया और लोगों के पापों के लिए क्रूस पर मरने के लिए अपने ही बेटे को भेजा। वह जानता था कि प्यार उसे महंगा पड़ेगा, लेकिन यह भी की आपूर्ति करेगा और उनकी बड़ी योजना को पूरा करने के लिए यह जरूरी था। प्यार कभी विफल नहीं होता है। परमेश्वर हमेंशा जीतता है। प्यार हमेंशा जीतता है। आज, सामरिक हो। उनके प्यार के रास्ते को चुनें, और आप एक महान शादी का निर्माण कर सकेंगे।

विवाह का निर्माण!

मुझे नगीने की नाई अपने हृदय पर लगा रख, और ताबीज की नाई अपनी बांह पर रख;
क्योंकि प्रेम मृत्यु के तुल्य सामर्थी है, और ईर्ष्या कब्र के समान निर्दयी है। उसकी ज्वाला
अग्नि की दमक है वरन परमेश्वर ही की ज्वाला है।

पानी की बाढ़ से भी प्रेम नहीं बुझ सकता, और न महानदों से डूब सकता है। यदि कोई
अपने घर की सारी सम्पत्ति प्रेम की सन्ती दे दे तौभी वह अत्यन्त तुच्छ ठहरेगी (श्रेष्ठगीत
8:6-7)

अगर प्यार एक व्यावहारिक अर्थ में खुद को पूरा नहीं कर सकता था, तो
परमेश्वर मात्र विचार में ही हमें बचाने के लिए संतुष्ट हो गए होते। सच्चा प्यार नहीं
ही जानता है कि क्या सबसे अच्छा है, लेकिन यह भी भक्तिपूर्वक यह लागू करता
है। हमें केवल सबसे अच्छा के साथ संतुष्ट होना चाहिए! वह परमेश्वर की अच्छी
योजना है।

हमें प्यार करना सबसे मुश्किल लगता है, पूरा करने के द्वारा: मांग की बजाय
इंतजार करना; जिद्दी लोगों के लिए निविदा देखभाल का विस्तार; अपनी जरूरतों
और इच्छाओं की कीमत पर दूसरों की जरूरतों को पूरा करने के लिए निर्धारित;
हमारी कमजोरियों की पावती के बजाय तारीफ करना प्रति दिन प्रेम करने के द्वारा
परमेश्वर की महिमा करें

प्यार ही परमेश्वर हैं

विवाह की सुन्दरता

परमेश्वर अभी भी
चमत्कार करता
है।

परमेश्वर एक महान शादी के
निर्माण हेतु हमारे साथ काम
करना चाहता है।

निर्माण  एक महान विवाह का!

महान शादी की निर्माण
प्रक्रिया के लिए समय की
जरूरत है।

समय लगता है
क्योंकि हमें बदले
जाने की जरूरत है।

अध्याय # 10 अध्ययन के लिए सवाल

1. हम अपने विवाह में परमेश्वर के प्यार को कैसे ला सकते हैं?
2. हम परमेश्वर के प्यार के लिए हमारे ज्ञान को कैसे बढ़ा सकते हैं?
3. वह कौन से तीन चीजें हैं जो आदमी को एक रात की सालगिरह यात्रा पर निकल पाने के लिए की जरूरत थी?
4. परमेश्वर पति को कैसे प्रशिक्षित करते हैं कि वह अपने काम के बारे में परमेश्वर पर भरोसा और विश्वास करे
5. हम प्यार नहीं करने के लिए कोई बहाना बना सकते हैं? क्यों नहीं (देखें 1 युहन्ना 4:19)
6. याद कर के नीचे 1 कुरिन्थियों 13को लिखें
7. 1 कुरिन्थियों 13 के कौन से तीन वाक्य आपको चुनौती जनक लगे बयान करें? क्यों?
8. "प्यार _____ विफल रहता है" यह इस अध्याय के लिए कुंजी वाक्यांश है। क्या आप सचते हैं की परमेश्वर का प्यार हर शादी में मदद कर सकते हैं? क्यों और क्यों नहीं?
9. आप कैसे अपने या अपने रास्ते से बाहर जा कर अपने पति की सेवा कर सकते हैं ?
10. एक मसीही विकास एक व्यक्ति की शादी के कल्याण को प्रभावित कैसे करता है?



आपके लिये हमारी इच्छा!

एक महान शादी में छोटे कृपालु कर्मों के एक मेजबान के माध्यम से, इशारों व शब्दों में सूजबुझ और उद्देश्यपूर्ण कार्रवाई की आवश्यकता है। कुछ भी तत्कालिक नहीं है। एक विवाह को निर्माण करने का अवसर अक्सर आपके छोटे कर्मों से मिलता है जिन्हे ध्यान नहीं देते। आपका साथी शायद ध्यान न दे। सबसे महत्वपूर्ण, हालांकि आपकी गहरी, अंतर्निहित प्रतिबद्धता है। इसे निरिक्षण करना व अधिक सराहना होगा।

एक महान विवाह जो हम आपके लिये चाहते है। हमेंशा केवल एक अच्छे विवाह के साथ सामग्री न हो। एक अच्छा विवाह सहनीय है लेकिन इनमें जन्मजात खामियाँ होती है जो आगे चलकर एक बड़ी समस्या बन जाती है। क्यों न उस अतिरिक्तो अहम परत को छोड़ कर एक और बड़े विवाह को आगे बढ़ायें? केवल एक महान विवाह में ही परमेश्वडर की महिमा पूर्ण रूप से प्रकट होगी। यहीं पर परमेश्वर का प्रेम उस 'एकता' के रिश्तेट में काम करता है।

हम यह नहीं कह रहे कि हमारा एक उत्त म विवाह है। 'उत्तम' शब्द असंगत से है क्योंकि हम अभी तक पापी है। पर फिर भी हम एक महान विवाह पा सकते है हमारे इस पाप से घिरी हुई दुनिया में, क्योंकि एक महान विवाह एक उत्तम जीवन पर निर्भर नहीं करता (जो हमारे पास नहीं है) या एक उत्तम साथी पर (जो हमारे पास नहीं है) बल्कि एक धैर्य, धीरज, भरोसा व प्रेम पर निर्भर करता है। प्रेम भिन्न परिस्थितियों में भी विजय होता है।

विवाह का निर्माण!

अपने साथी को संजोये। अपने हृदय को अपने साथी से प्यार करने के लिये बनायें चाहे जो भी परिस्थिति हो आपकी। दयालु कर्म से दयालु कर्म, मुस्कु राहट से मुस्कुराहट, अनुग्रह से अनुग्रह, आप कर करोगे, परमेश्वर के अनुग्रह के द्वारा, एक महान विवाह का निर्माण करें जो परमेश्वर की महिमामय प्रेम और व्यक्तित्व को प्रतिबिम्बित करेगा।

परिशिष्ट, 1: लेखक पर और

हम (पौल और लिन्डाम) दोनों एक ही शहर उत्तवरी बोस्टहन में बडे हुये, एम ए संयुक्तप अमरीका में पर हाई स्कूऔल के बाद ही एक दूसरे को जाने। हमारे शादी के 35 साल अधिक उत्तम रहे और हमारे बच्चे बढ रहे थे सबके लिये पर एक साल!



चुनौतिपूर्ण साल, आर्थिक कठीन समय, आठ बच्चेर (अब तीन नाती-पोते) और व्यस्त सेवकाई का जीवन हमें अधिक रोमांच करने की अनुमति नहीं दिया। जब परमेश्वर के बाईबल का वास्त विक सिद्धान्त समझ आया, कि काफी हद तक उसने हमारे विवाह में मदद कि।

रेवरेंड पौल बकनैल, जो कि अध्यक्ष व संस्थादपक है बिब्लि कल फाउन्डे शन फोर फ्रीडम के, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर यात्रा करते है और विवाह का पाठ्यशक्रम, पालन, और दूसरे विषयों पर पासवानों और मसीही नेताओं को शिक्षा देते है। उन्होने करीब साठ लेख केवल विवाह पर लिखी है और करीब दस से अधिक पुस्तहकें मसीहीयों के भिन्न पहलूओं पर लिखी गयीं है।

(पौल और लिन्डा की सेवकाई के बारे में और अधिक जाने के लिये)⁶⁶

⁶⁶ wwwFOUNDATIONSforFreedom.net/Help/AboutBFF/Biography.html

